श्री गणेशाय नमः!

# लाल किताब

@spiritualconce

# विषय-सूची


1. **लाल किताब का आगाज** 7
2. **लग्नानुसार फलादेश** 10
   (मेष लग्न, वृष लग्न, मिथुन लग्न, कर्क लग्न, सिंह लग्न, कन्या लग्न, तुला लग्न, वृश्चिक लग्न, धनु लग्न, मकर लग्न, कुम्भ लग्न, मीन लग्न)
3. **राशि अनुसार फलादेश** 15
   (मेष राशि, वृप राशि, मिथुन राशि, कर्क राशि, सिंह राशि, कन्या राशि, तुला राशि, वृश्चिक राशि, धनु राशि, कुम्भ राशि, मीन राशि)
4. **आकाशीय ग्रह** 27
   वार्षिक ग्रह चाल, प्रभावावधि
5. **जन्मकुण्डली के बारह घरों का आधार** 34
   (पहला घर, दूसरा घर, तीसरा घर, चौथा घर, पाँचवाँ घर, छठा घर, सातवाँ घर, आठवाँ घर, नौवाँ घर, दसवाँ घर, ग्यारहवाँ घर, बारहवाँ घर, विशेष ज्ञातव्य)
6. **ग्रह और उनकी प्रकृति** 48
   (ग्रहों की संख्या और लिंग-विचार, ग्रहों और घरों पर विचार, पक्के घर के ग्रह, बराबर की ग्रह, अन्धे ग्रह, नकली ग्रह, पापी ग्रह, कायम ग्रह, धर्मी ग्रह, मुकाबला के ग्रह, साथी ग्रह, ग्रहों की दृष्टि, सुप्त/अन्धे ग्रह तथा घर, सोये हुए ग्रहों/घरों को जगाना, योग दृष्टि, निर्देश, ग्रह एवं घरों के ग्रह, धोखे का ग्रह, बलि का बकरा, पीड़ित शनि, पीड़ित बुध, पीड़ित मंगल, पीड़ित शुक्र, पीड़ित बृहस्पति, पीड़ित ग्रह और योग दृष्टि, ग्रहों के देवता, रत्न/धातु, जानवर, शरीरांग और वस्तुएँ)
7. **बृहस्पति ग्रह** 58
8. **सूर्य ग्रह** 68
9. **चन्द्र ग्रह** 77
10. **शुक्र ग्रह** 87
11. **मंगल ग्रह** 97
12. **बुध ग्रह** 106
13. **शनि ग्रह** 118
14. **राहु (छाया) ग्रह** 131
15. **केतु (छाया) ग्रह** 146
16. **मंगलीक दोष-विचार** 159
    (मंगलीक दोष की वास्तविकता, मंगलीक दोष-निवारण के टोटके, सामान्य, विशेप, टोटकों का चुनाव, मंगलीक दोष-परिहार की टोटका स्परिणी)
    **का अनिष्ट निवारण** 163
    वक्त के उपाय, जोड़े ग्रहों की चीजें, अशुभ युति-दोष निवारण)

18. **शुभ/अशुभ ग्रहों का प्रभाव** 167
(अशुभ ग्रहों की पहचान और उपाय, विशेष ज्ञातव्य, ग्रह-दोष-परिहार के लिए देवोपासना, रत्न एवं धातु के प्रयोग, अदृष्ट अकेला ग्रह, अनिष्ट-निवारण)

19. **सहायता पाने वाले ग्रह** 171

20. **पितृ ऋण** 172
(नौवाँ घर और बुध से पितृ ऋण, गुरु से पितृ ऋण, अन्य ग्रहों से पितृ ऋण, स्व ऋण दोप, मातृ ऋण, स्त्री ऋण, सम्बन्धी ऋण, बहन-बेटी का ऋण, पितृ ऋण, निर्दयी ऋण, अजात का ऋण, देवी ऋण)

21. **घरों और ग्रहों का मेल** 178
(परस्पर शत्रु ग्रह, परस्पर मित्र ग्रह, सूर्य व चन्द्र का मेल, मंदी हालत, सूर्य व मंगल का मेल, मंदी हालत, सूर्य व बुध का मेल, सूर्य व बृहस्पति का मेल, विशेष फल, निवारण, सूर्य व शुक्र का मेल, निवारण, सूर्य व शनि का मेल, निवारण, सूर्य व राहु का मेल, निवारण, सूर्य व केतु का मेल, निवारण, चन्द्र व बुध का मेल, निवारण, चन्द्र व बृहस्पति का मेल, विशेष फल, चन्द्र व शुक्र का मेल, निवारण, चन्द्र व शनि का मेल, निवारण, चन्द्र व राहु का मेल, निवारण, चन्द्र व केतु का मेल, शुभ/अशुभ प्रभाव, निवारण, मंगल व बुधक मेल, निवारण, मंगल व बृहस्पति का मेल, निवारण, मंगल व शुक्र का मेल, निवारण, मंगल व शनि का मेल, निवारण, मंगल व राहु का मेल, मंगल व केतु का मेल, निवारण, बुध व बृहस्पति का मेल, बुध व शुक्र का मेल, निवारण, बुध व शनि का मेल, बुध व राहु का मेल, निवारण, बुध व केतु का मेल, बृहस्पति व शुक्र का मेल, बृहस्पति व शनि का मेल, बृहस्पति व राहु का मेल, निवारण, बृहस्पति व केतु का मेल, निवारण, शुक्र व शनि का मेल, निवारण, शुक्र व राहु का मेल, शुक्र व केतु का मेल, शनि व राहु का मेल, निवारण, शनि व केतु का मेल) 235

22. **अनिष्ट प्रभावों का निवारण**
(ग्रह से सम्बन्धित सावधानयाँ, बालकों से सम्बन्धित निवारण, दान और परोपकार, बच्चे को गोद लेना, विशेष ज्ञातव्य, वर का चुनाव, करामाती टोटके, सावधानियाँ व निवारण, अनिष्ट निवारण के लिए देवोपासना)

---

# 1 लाल किताब का आगाज

लाल किताब में शास्त्रीय ज्योतिष के समान घरों और ग्रहों को भविष्य कथन का आधार बनाया गया है, किन्तु इसकी पद्धति भिन्न है, इस कारण बहुत-से लोग इसकी आलोचना करते हैं क्योंकि टोटकों आदि पर उन्हें विश्वास नहीं होता। इसके अलावा ज्योतिष पर यकीन रखने वाले ऐसे लोगों की भी कोई कमी नहीं है, जो लाल किताब के टोटकों पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते।

लाल किताब की फल-कथन (फलादेश) और अनिष्ट निवारण पद्धति को शास्त्रीय ज्योतिष की कसौटी पर कसना केले में खीरे के गुण ढूँढने के समान है। एक का आधार शास्त्र है, तो दूसरे का व्यावहारिक अनुभव। शास्त्रीय ज्योतिष अथाह समुद्र है, तो लाल किताब पानी से भरी एक सुराही, किन्तु समुद्र के रहते हुए भी शीतल स्वादु जल भरी सुराही का महत्त्व अक्षुण्ण है। समुद्र के पानी से प्यास नहीं बुझती, किन्तु सुराही का पानी प्यास बुझाने में सक्षम है।

दुनिया में अगर इलाज है तो सिर्फ़ बीमारी का, मगर मौत का कोई इलाज नहीं है। ज्योतिष दिव्य मूलभूत जानकारी का इल्म जरूर है, मगर कोई जादू-मंतर नहीं। लाल किताब मदद पहुँचाने का स्रोत है, लेकिन हमला करने का हथियार नहीं है।

किस्मत के मैदान में अगर कहीं पानी की नाली पीछे से भरी आ रही हो, उसके रास्ते में कोई ईंट, पत्थर गिरकर उसकी रवानगी को रोक रहा हो, तो इस विषय की जानकारी से उस ईंट, पत्थर को दूर करके पानी की रवानगी को दुरुस्त करने की बामौका कोशिश की जा सकती है और इस काम में लाल किताब मदद पहुँचाती है।

जन्म के समय शिशु अपनी किस्मत मुट्ठी में बन्द करके लाता है। उसे कोई बदल नहीं सकता। यदि कोई महान् आत्मा इसे बदलता है, तो उसे जातक के स्थान पर अपनी बलि देनी पड़ती है। अपने भ्रमण के दौरान सभी ग्रह जातक के जीवन पर शुभाशुभ प्रभाव डालते हैं। यह प्रभाव निम्न दो प्रकार का होता है—

1. निश्चित
2. संदिग्ध

इसे जन्मकुंडली के द्वारा जाना जा सकता है। निश्चित प्रभाव भाग्य का जो संकेत देता है, वो अटल होता है।

किन्तु ग्रहों का संदिग्ध प्रभाव अटल नहीं होता। उसे सम्यक् उपायों द्वारा टाला जा सकता है, दूर किया जा सकता है। इसी के निमित्त लाल किताब की रचना हुई है।

लाल किताब के उपायों का सम्यक् प्रयोग करने से निश्चय ही राहत मिलती है। कुण्डली में स्थिति, युति (मिलाप) दृष्टि आदि के आधार पर ग्रह अपना शुभाशुभ फल

ग्रहों की अशुभता से अनिष्ट होते हैं। अतः अनिष्ट निवारक उपाय चुनने के लिए सबसे पहले कुण्डली-निर्माण पर विचार किया जाता है, क्योंकि यह प्रक्रिया कुण्डली-परीक्षा से ही शुरू होती है।

## जन्म-कुंडली परिचय

यहाँ पर नमूने के तौर पर एक जन्म-कुण्डली पेश की जा रही है। प्रायः उत्तरी भारत में इसी रूप में जन्म-कुण्डली बनाई जाती है। जन्म-कुण्डली में बारह घर (या भाव) होते हैं। इसमें क्रमशः 1, 2, 3 इत्यादि राशियों के परिचायक हैं।

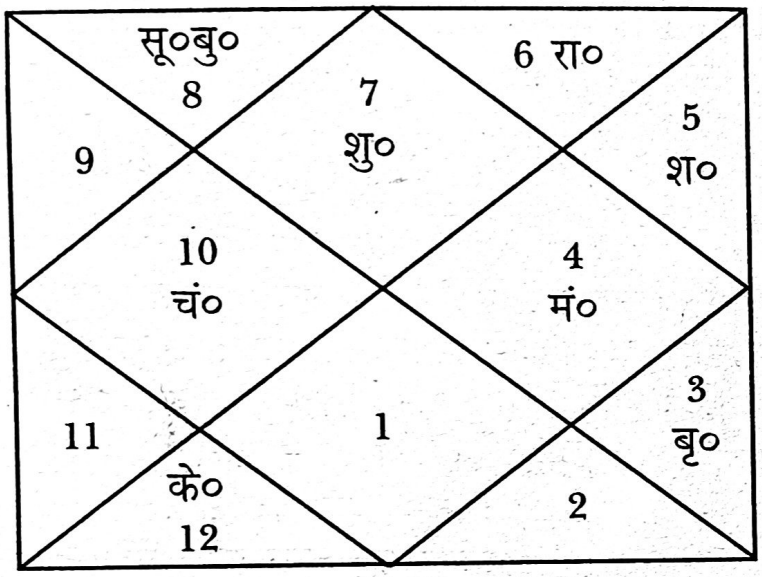


1. मेष
2. वृष (वृषभ)
3. मिथुन
4. कर्क
5. सिंह
6. कन्या
7. तुला
8. वृश्चिक
9. धनु
10. मकर
11. कुम्भ
12. मीन

राशियाँ कुल 12 होती हैं। कुण्डली में दिए गए अक्षर—सू, चं, मं, बु, बृ, शु, श, रा, के, क्रमशः नौ ग्रहों के परिचायक हैं, जैसे—सू=सूर्य, चं = चन्द्रमा, मं = मंगल, बु = बुध, बृ = बृहस्पति, शु = शुक्र, श = शनि, रा = राहु, के = केतु।

निम्न कुंडली में स्पष्ट किया गया है कि कौन-सा घर (अथवा भाव) पहला है, कौन-सा दूसरा या तीसरा है।

प्रत्येक कुंडली में सबसे ऊपर का खाना या घर पहला घर अथवा भाव कहा जाता

है। इसी घर को जन्म 'लग्न' माना जाता है। इसके बाद दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ क्रमवार बारहवाँ घर माना जाता है।

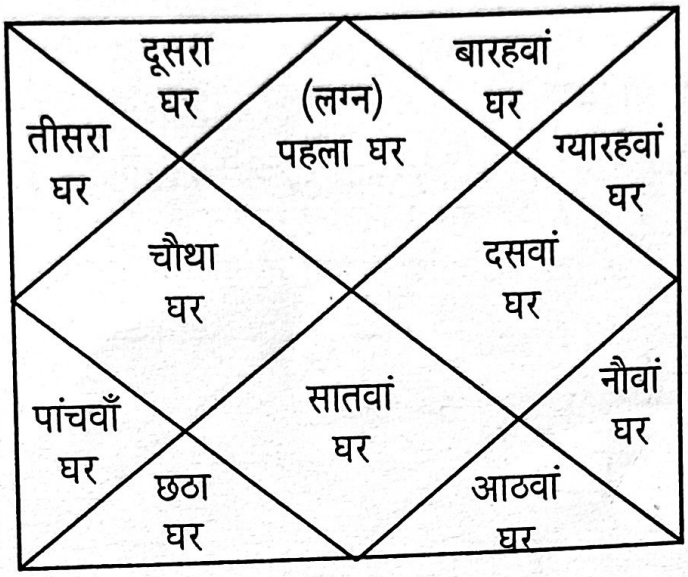


पहले घर में जो अंक लिखा हो, वो ही जन्म-कुण्डली का लग्न माना जाता है। अगर इसमें '1' लिखा हो, तो जन्म लग्न 'मेष' कहलाएगा। '2' होगा तो 'वृष' लग्न कहलाएगा। अंक के मुताबिक कौन-सी राशि बनती है। यह उपरोक्त अंक-राशि के मुताबिक मालूम किया जा सकता है। ग्रहों की उपस्थिति भी कुण्डली में इसी पर मालूम की जा सकती है कि कुण्डली के किस घर में कौन-सा ग्रह बैठा है।

किस दिन, किस समय, कौन-सा ग्रह किस राशि में है—यह विवरण पंचांग में दिया रहता है। जन्म-कुण्डली तैयार करते वक्त ग्रहों की स्थिति पंचांग से देखकर लिख लेनी चाहिए, अगर इसकी ज़रूरत पड़े तब—यों हमने पुस्तक में कुण्डली के पढ़ने/समझने, उसका फलादेश निकालने तथा दुःख पहुँचाने वाले ग्रहों का टोटकों द्वारा उपाय के बारे में ही विस्तार से बतलाया है।

**नोट**—लाल किताब से सम्बन्धित विषय को आगे बढ़ाने से पहले हम पाठकों को 'लग्नानुसार फलादेश' तथा 'राशि अनुसार फलादेश' के विषय में बता देना चाहते हैं, ताकि आगे के विषयों को समझने में उन्हें कोई असुविधा न हो। ❑❑❑

# 2 लग्नानुसार फलादेश

## मेष लग्न

मेष लग्न में जन्म लेने वाला लम्बा, दुबला किन्तु बलिष्ठ शरीर, मुख पर चिन्ह, रक्तिम, गोल नेत्र, घुँघराले किन्तु कठोर केश, गेहुएँ रंग वाला, उग्र प्रकृति, उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी स्वतन्त्र विचार वाला, सदैव नेतृत्व करने का अभिलाषी, नित्य नवीन अद्‌भुत विचारों का अन्वेषक, प्रभावशाली, हठी, चंचल, क्रोधी, असह्य, प्रयत्नशील, निर्भय, दम्भी, प्रगतिशील, भावुक एवं महत्त्वाकांक्षी, किशोरावस्था में शरारती, साहसी कार्यों में संलग्न, स्वच्छन्द विचरण करने वाला होता है।

इस लग्न के जातक सेना में इंजीनियरिंग, मैकेनिकल, सर्जरी, साहसी कार्यों में, प्रशासन सेवाओं में सफलता प्राप्त करते हैं। भाग्योन्नति कारक वर्ष 16, 22, 28, 32, 36 होते हैं। अगर ऐसे जातक सिंह, तुला एवं धन लग्न वाले स्त्री-पुरुषों से मित्रता एवं प्रेम रखें, तो सफलता मिलती है।

बृहस्पति इनके लिए शुभ ग्रह है। शनि, बुध, शुक्र इनके लिए अशुभ होता है। प्रायः शनि और बुध इनके लिए मारकेश होते हैं। शुक्र मारकेश होते हुए भी मृत्यु कारक नहीं होता। मंगल लग्नेश होने के कारण अधिक अरिष्टकर नहीं होता।

सूर्य चन्द्र का योग हो, तो राजयोग कारक होता है। गुरु मंगल का चतुर्थ स्थान पर संयोग धन-सम्पत्ति प्रदान करता है। इन जातकों को ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय एवं मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है।

## वृष लग्न

वृष लग्न में जन्म लेने वाला जातक का कद ठिगना, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। ऐसा जातक परिश्रमी, स्थिर विचार वाला, सज्जन, धीर एवं शान्त स्वभाव वाला, व्यक्तिगत स्वार्थ सुविधा वाला, इच्छानुसार कार्य करने वाला, इर्ष्यालु, प्रबल, स्मरण शक्ति, काव्य प्रेम, कामी, चतुर नीतिज्ञ, अपने सभी कार्यों को गुप्त रखने वाला होता है।

मित्रों और सम्बन्धियों की सहायता से सरलतापूर्वक सांसारिक द्रव्य तथा धन सम्पत्ति एकत्रित करने में सफल होता है। इस लग्न के जातक बैंकिंग, जवाहरात, सुगन्धित तेल, व्यवसाय, संगीत, भवन निर्माण, विज्ञापन अथवा प्रचार व्यवसाय में सफल होते हैं। इनका भाग्योदय 25, 28, 36 एवं 42वें वर्ष में होता है।

इनके लिए कन्या तथा वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों के साथ साझेदारी तथा मित्रता फलदायक होती है। ऐसे जातकों को कंठ सम्बन्धी रोग की सम्भावना रहती है। उत्तेजक पदार्थों का सेवन करना इनके लिए हानिकारक है।

वृष लगन वालों को सूर्य एवं बुध शुभ होते हैं। बृहस्पति और चन्द्रमा अशुभ होते हैं। शुक्र लग्नेश होने से अशुभ नहीं होता। शनि इनके लिए योगाकरक होता है।

## मिथुन लग्न

मिथुन लग्न में जन्म लेने वाला जातक दुबला, किन्तु लम्बा, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक, अस्थिर किन्तु मौलिक विचार वाला, तीक्ष्ण बुद्धि, प्रसन्न चित्त, विनोदी स्वभाव, चपल, मधुर एवं स्पष्ट वक्ता, तार्किक लज्जाशील, दूरदर्शी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, शीघ्र गतिवान, आत्मविश्वास हीन तथा प्रायः चिन्तित रहता है। ऐसे जातक बड़ी शीघ्रता से मित्र बना लेते हैं।

इनमें बुद्धि और भाव दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। मित्रों और सम्बन्धियों के सहयोग से इनकी भाग्योन्नति होती है। इनका भाग्योदय 22, 32, 35, 36, 42वें वर्ष में होता है। साहित्य, क्रय-विक्रय वाणिज्य, चित्रकारी, संगीत, यात्रा, वैज्ञानिक शोध, योजना, गणित, प्रचार-प्रसार, एकाउन्ट्स, पत्र-व्यवहार, सम्पादक, लेखा और अध्यापन व्यवसाय में ये सफलता प्राप्त करते हैं।

तुला, धनु एवं कुम्भ लग्न वाले स्त्री-पुरुषों के साथ इनको प्रेम व मित्रता में सफलता मिलती है। इनको फेफड़े एवं स्नायु सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है। शुक्र ग्रह इनके लिए शुभ है मंगल, सूर्य एवं चन्द्रमा अरिष्टकर होते हैं किन्तु चन्द्रमा मारक नहीं होता।

## कर्क लग्न

कर्क लग्न के जातक प्रायः मध्यम आकृति वाले, सुगठित शरीर, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, गतिशील, परिवर्तनशील, अस्थिर स्वभाव, उदार विशाल एवं स्वच्छ हृदय वाले होते हैं।

यात्रा एवं प्रकृति प्रेमी, नवीन तथा जलज वस्तुओं में विशेष रुचि रखने वाले विलासी, भावुक मन, कल्पनाशील मस्तिष्क, परिश्रमी, बुद्धिमान, समय अनुसार काम करने में चतुर, नीतिज्ञ, स्त्री वर्ग से विशेष हर्ष एवं लाभ प्राप्त करने वाले, वाचाल, मितव्ययी और प्रायः दो व्यवसायों से लाभ प्राप्त करने वाले होते हैं।

ऐसे जातक अधिकतर नेता, मन्त्री, राज्याधिकारी, डाक्टर, प्राध्यापक, जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी, इतिहासज्ञ, नाविक बनते हैं। इनका भाग्योदय 16, 22, 24, 25, 28, 32वें वर्ष में होता है। इनकी वृश्चिक, मकर एवं मीन लग्न वालों से प्रेम मित्रता अथवा साझेदारी शुभ होती है।

इनको उदर, हृदय, कफ, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए मंगल ग्रह सर्वश्रेष्ठ होता है। बृहस्पति मिश्रित फलकारक तथा शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं।

## सिंह लग्न

सिंह लग्न में उत्पन्न होने वाला दृढ़ अस्थि एवं पुष्ट शरीर, चौड़ी छाती, बली भुजाएँ, प्रभावशाली आकर्षक एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्त्व, क्षमाशील, निर्भय, पराक्रमी महत्त्वाकांक्षी, निष्ठावान्, अपने पिता से भी उच्चस्तर का, प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल, सत्ता एवं स्वातन्त्रय प्रेमी, हठी, अध्ययनशील, विश्वासपात्र, आडम्बरपूर्ण रहन-सहन एवं रईस मिजाज वाला, स्पष्टवक्ता, अतिव्ययी उदार दयालु किन्तु क्रोध आने पर भयंकर रूप धारण करने वाला, नेतृत्व का अभिलाषी होता है।

इसे केवल शांति अथवा प्रेम से ही वश में किया जा सकता है। यह व्यक्ति प्रबन्धक,

प्रशासक, सैनिक, वकील, अभिनेता, सफल कलाकार, क्लर्क, वन सम्बन्धी व्यवसाय करने वाला होता है। इनका भाग्योदय 16, 22, 24, 26, 28, 32वें वर्ष में होता है।

धनु, कुम्भ, मेष लग्न वालों से इनकी मित्रता, प्रेम अथवा साझेदारी शुभ होती है। इन जातकों को ज्वर एवं मस्तिष्क सम्बन्धी पीड़ा होती है।

इनको उत्तेजित वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। इनके लिए सूर्य और मंगल ग्रह शुभ होते हैं। बुध एवं शुक्र अशुभ तथा राहु-केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्यु कारक होते हैं।

## कन्या लग्न

कन्या लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक नाटे कद का कोमल शरीर, छोटे बाजू वाला, स्त्री स्वभाव वाला, मधुर भाषी, विचारशील, तीव्र स्मरण शक्ति वाला, तार्किक मनोविज्ञान तथा साहित्य प्रेमी, आलोचक, गणितज्ञ, धैर्यवान, लज्जाशील, वाणिज्य व्यवसाय में निपुण, अति नम्र, सावधानी से कार्य करने वाला, अपने सभी कार्य गुप्त रखने वाला, वृद्धावस्था में भी पूर्ण युवक दिखाई देने वाला होता है।

इसमें आत्मविश्वास की कमी होती है। यह जातक बिक्रीकर्त्ता, व्यापारी, गणितज्ञ, खजाँची, सचिव, दलाल, साहित्यिक अथवा मनोवैज्ञानिक हो सकता है। इसको नौकरी में विशेष लाभ की सम्भावना हो सकती है। इसका भाग्योदय 16, 22, 25, 32, 33, 35, 36वें वर्ष में होता है।

इनको उदर रोग से सावधान रहना चाहिए। वृष, मकर, मीन लग्न वालों से प्रेम व मित्रता इनके लिए हितकर होगी। इसके लिए बुध एवं शुक्र शुभ होते हैं तथा मंगल एवं बृहस्पति अशुभ होते हैं।

## तुला लग्न

तुला लग्न में जन्म लेने वाला जातक दुबला, लम्बे कद का, न्याय एवं शान्तिप्रिय, प्रसन्नचित्त, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, आध्यात्मिक वृत्ति वाला, सत्य वक्ता, धार्मिक तीक्ष्ण बुद्धि, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, स्त्री वर्ग एवं कला संगीत प्रेमी, बच्चों का विशेष स्नेही, प्रतिष्ठित, कोई निश्चय करने से पहले किसी भी बात के गुणों व अवगुणों का भली प्रकार विचार करने वाला होता है।

ऐसा जातक वकील, तार्किक, कलाकार, साहित्य प्रेमी, न्यायाधीश, परामर्शदाता, नीतिज्ञ अथवा कारोबार से लाभ प्राप्त कर सकने वाला होता है। इसका भाग्योदय 24, 25, 32, 33, 35वें वर्ष में होता है। प्रेम व मित्रता इनकी मेष, मिथुन, कुम्भ लग्न वालों के साथ कामयाब रहती है।

इनको मूत्रस्थली, गुर्दा एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। ऐसे जातकों के लिए शनि, बुध, शुक्र, शुभ तथा सूर्य, बृहस्पति अशुभ होते हैं।

## वृश्चिक लग्न

वृश्चिक लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक सुन्दर, उदार, उग्र स्वभाव, स्पष्ट वक्ता, परिश्रमी, साहसी, विचारशील, शंकालु, नीतिज्ञ, विद्वान्, सन्तति वाला, गूढ़, विद्याओं का ज्ञाता, गणित, ज्योतिष, नृत्य संगीत आदि कलाओं में अभिरुचि रखने वाला, आत्म-विश्वासी, स्वेच्छाचारी, आतंककारी एवं सेवाभावी भी होता है।

ऐसे जातक मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। अगर लग्न पाप ग्रहों में दुष्ट हो, तो जातक अत्यन्त झगड़ालू, असंयमी कुविचारी, निर्दयी, चतुर, अपराधी और गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। प्रायः वृश्चिक लग्न वाली स्त्री भी विषैली प्रवृति एवं पुरुष स्वभाव की होती है।

इस लग्न वाले जातक डिक्टेटर, जासूस, कैमिस्ट, सर्जन, दन्त विशेषज्ञ, पुलिस अधिकारी, सेनापति, राजनीतिज्ञ, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, ठग, आलोचक, गणितज्ञ, संगीतज्ञ, बनते हैं। इनका भाग्योदय 22, 24, 28, 32वें वर्ष में होता है।

कर्क, मीन, वृष लग्न वालों से प्रेम व मित्रता हितकर होती हैं। इनको प्रायः कण्ठ, छाती, गर्मी, वायु एवं अर्श आदि गुप्त रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ होते हैं। बुध और शुक्र अशुभ होते हैं।

## धनु लग्न

धनु लग्न में उत्पन्न होने वाला जातक प्रायः लम्बी गर्दन वाला, बड़े कान, बाल्यावस्था में स्थूल, न्यायप्रिय साधु स्वभाव, निःस्वार्थी, मेधावी, स्वाभिमानी, धनवान्, उदार, शान्तिमय, अनेक भाषाओं का ज्ञाता, आडम्बरहीन जीवन, धर्म, कानून, विज्ञान दर्शन, गुप्त विद्या, काव्य, साहित्य में रुचि रखने वाला, सृजनात्मक एवं तीव्र बुद्धि विश्वासपात्र, दयालु, गम्भीर, विवेकशील, सदाचारी, कुलभूषण, व्यंगवाणी का प्रयोग करने वाला, उत्तेजित अवस्था में क्रुद्ध एवं स्पष्ट वक्ता, जन्मजात भाग्यवान्, निष्कपट तथा अवसरवादी होता है।

यह प्रेम एवं शान्ति से ही वशीभूत हो सकता है। यदि लग्न और लग्नेश पाप पीड़ित हो, तो दम्भी, आडम्बरपूर्ण, भीरू एवं कठोर स्वभाव का होता है। यह जातक बैंकर, प्रोफेसर, राजनीतिज्ञ, अच्छा सलाहकार, वकील, अध्यापक, महंत, संन्यासी, उपदेशक तथा उच्चकोटि की व्यवसायी बनता है।

इनका भाग्योदय 16, 22, 32वें वर्ष में होता है। इनको फेफड़ों तथा वायु सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। मेष, मिथुन एवं सिंह लग्न वाले स्त्री-पुरुषों से प्रेम व मित्रता इनके लिए हितकर होती है।

इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुभ तथा शनि, चन्द्र अशुभ कारक होते हैं।

## मकर लग्न

मकर लग्न के अंतर्गत उत्पन्न हुआ जातक लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, गम्भीर, मननशील, आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाला, धैर्यवान, सतर्क, संयमी, महत्त्वाकांक्षी, नीतिज्ञ, अनेक विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी परिश्रमी एवं कार्यशील, व्यापार, व्यवसाय एवं राजनीति में अपनी चतुरता, व्यवहार कुशलता के कारण सफल, उदासीन, गृहस्थ जीवन से असन्तुष्ट, आत्म प्रशंसा में विश्वास नहीं करने वाला होता है।

यह जातक भूमि और भूमि से उत्पन्न कृषि अथवा खनिज आदि पदार्थों एवं व्यवसाय मण्डलों से सम्बन्धित अथवा कार्यालयों सम्बन्धी कार्यों में सफल हो सकता है। इसका भाग्योदय 25, 33, 35, 36, 42वें वर्ष में होता है। वृष, कर्क, कन्या लग्न वाले जातकों से इनको प्रेम व मित्रता में लाभ हो सकता है।

## कुम्भ लग्न

कुम्भ लग्न में जन्म लेने वाला जातक का मध्यम कद, माँसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्त्व, तीव्र बुद्धि होती है। यह जातक दयालु, महान् दर्शनिक, मिलनसार, प्रभावशाली, परोपकारी कार्यों में रत, बहुत मित्रों वाले, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, प्रगतिशील, क्रान्तिकारी विचारक, रोचक वक्ता साहित्य एवं ज्योतिष में रुचि रखने वाले होते हैं।

अगर जन्म-कुण्डली में शनि निर्बल हो, तो दम्भी, कामी, अपयश और लांछना प्राप्त करने वाला, निर्लज्ज एवं उद्दण्ड होता है। ऐसे जातक प्रायः सुधारक, क्रान्तिकारी, लेखक, वैज्ञानिक, इंजीनियर, प्राध्यापक, ज्योतिषी, दार्शनिक, बिजली तथा प्रिंटिंग उद्योग में कार्य करने वाले, रेडियो, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी सेवाओं में कार्य करने वाले बनते हें।

इनका भाग्योदय 25, 28, 36, 42वें वर्ष में होता है। सिंह, तुला, मिथुन लग्न वालों से इनकी मित्रता व प्रेम हितकर रहती है। इनको सिर, पेट दर्द, उदर व्याधि एवं वायु रोगों की सम्भावना रहती है।

## मीन लग्न

मीन लग्न में उत्पन्न हुआ जातक का कद छोटा, स्थूल शरीर होता है। यह जातक चिन्ताओं से दूर शान्त और विनम्र स्वभाव वाले, रूढ़िवादी, धार्मिक, परोपकारी, लज्जाशील, बड़े कुटुम्ब वाले, सद्गृहस्थी, सच्चे मित्र, सुसंस्कृत, पुरातन वस्तुओं, ललित कलाओं में अभिरुचि रखने वाले होते हैं।

अगर जन्म-कुण्डली में सप्तम भाव अथवा सप्तमेष पाप दृष्ट हो, तो दो पत्नियों के होने की सम्भावना रहती है। ऐसे जातक तरल पदार्थों के द्वारा धन लाभ करने वाले, आध्यात्मवादी, चलचित्र के व्यवसाय, औषधि-विषयक, जल परिवहन, जनकल्याण सम्बन्धी सेवाओं में कार्य करने वाले बनते हैं।

इनका भाग्योदय 16, 22, 28, 33वें वर्ष में होता है। प्रेम व मित्रता इनके लिए कर्क, कन्या एवं वृश्चिक लग्न वाले स्त्री-पुरुषों से हितकर रहती है।

इनको छुआछूत की बीमारियों की सम्भावना रहती है। इनके लिए चन्द्र, मंगल शुभ तथा सूर्य, बुध, शुक्र, शनि अशुभ कारक होते हैं।

❑❑❑

वृष राशि के व्यक्ति पुरुष हो अथवा स्त्री हो, अपने घर में ज्यादा रुचि लेते हैं। अतः शादी के बाद अपनी पत्नी अथवा पति को छोड़कर किसी दूसरी स्त्री अथवा पुरुष से प्रणय सम्बन्ध नहीं रखते।

अपने बच्चों की देख-रेख तथा उनके कैरियर का इनको विशेष ध्यान रहता है। यह लोग उत्तम घर, उत्तम भोजन के शौकीन होते हैं।

ऐसे जातक अधिकतर सरकारी कर्मचारी, व्यापारी, फाइनांसर, एकाउण्टैन्ट, बैंकर, दलाल, प्रापर्टी एजेन्ट, अभिनेता, गायक, ज्वैलर, आर्चिटैक्ट, कलात्मक वस्तुओं के विक्रेता बनते हैं। यह लोग रूढ़िवादी एवं आराम पसन्द होते हैं। अतः बड़े जोखिम नहीं उठा सकते।

## मिथुन राशि

राशि चक्र की यह तीसरी राशि है। इस राशि के व्यक्ति मिलनसार और दूसरों के साथ मिलकर काम करने वाले होते हैं। ये व्यक्ति विद्याप्रेमी और अध्ययनशील होते हैं। इनको आये दिन नये विचार सूझते हैं और यह एक जगह टिक कर काम नहीं कर सकते।

ये बातचीत में चतुर होते हैं तथा इनमें व्यापारिक बुद्धि भी होती है। ऐसे जातक घूमने-फिरने के शौकीन होते हैं और समाज में नये दोस्त बनाते हैं। इनके विचारों में स्थिति के अनुसार परिवर्तन होता रहता है।

अगर इनको क्रोध आ जाए तो बाद में पश्चाताप करते हैं। इनकी आर्थिक स्थिति में भी परिवर्तन होता रहता है तथा ये अधिक धन इकट्ठा नहीं कर सकते। न ही बहुत ऊँचे पद पर पहुँचने की इनमें इच्छा होती है। यह लोग हँसी-खुशी, राग-रंग से अपना जीवन बिताते हैं।

ये लोग रेडियो, दूरदर्शन, टेलीफोन एक्सचेंज, ट्रांसपोर्ट, समाचार-पत्रों में अधिकतर काम करते हैं। लेक्चरर, वकील, डॉक्टर, राजदूत भी बनते हैं। यह लोग सेल्समैनशिप में विशेषकर सफलता प्राप्त करते हैं।

ऑफिस में ये वृष राशि वालों की तरह ओवर टाइम में बैठकर काम नहीं कर सकते। दिन में थोड़ी देर काम करने के बाद उक्ता जाते हैं और फिर इधर-उधर घूमकर, बातें करके फिर अपनी सीट पर बैठ जाते हैं और स्पीड से अपना काम खत्म कर लेते हैं। ये कामचोर नहीं होते। इनके आमदनी के साधन प्रायः एक से अधिक होते हैं, एक मुख्य और एक गौण।

अगर ये जातक कम्पनी अथवा ऑफिस के मैनेजर नियुक्त हो जाएँ तो सारा काम अपने से नीचे काम करने वालों के सुपुर्द कर देते हैं और स्वयं खाली बैठते हैं। इस प्रकार कर्मचारियों को आगे बढ़ने का मौका मिलता है।

परिवर्तनशील प्रकृति के होने के कारण ये जातक प्रणय-सम्बन्धों में स्थिर नहीं होते। ये विपरीत सेक्स वालों को शीघ्र ही अपनी बातचीत से अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। इसलिए इनके कई लव अफेयर (Love affairs) चलते हैं। इनके प्रेम-सम्बन्धों में वासना का आधार कम होता है। अध्ययनशील ज्ञानयुक्त हाली-डे-मूड में रहने वाले यह लोग, कला साहित्य, राग-रंग में रुचि रखने वाले, अपने जैसा परिवर्तनशील विचारों वाला साथी ढूँढ़ते हैं।

मिथुन राशि की जातक स्त्रियाँ भी मिलनसार तथा बातचीत में तेज होती हैं। इनके भी प्रणय-सम्बन्ध एक से अधिक लोगों से होते हैं, क्योंकि यह पुरुषों से किसी भी विषय

में बात करने में नहीं झिझकतीं, इनको अपनी सोसायटी में अक्सर गलत समझ लिया जाता है। मिथुन राशि की स्त्रियाँ ऑफिस में रिसैपशनिस्ट, स्टैनो, टाइपिस्ट अथवा सैल्ज-गर्ल्स के रूप में अधिक सफल हो सकती हैं।

मिथुन राशि वाले पति अपनी पत्नियों को तथा इस राशि वाली पत्नियाँ अपने पति पर शक नहीं करते। यह लोग एक-दूसरे को प्रणय-सम्बन्धों के मामले में कुछ छूट दे देते हैं, जिससे घरेलू जीवन में झगड़ा नहीं होता। ये अपनी असल आयु से बहुत कम आयु के लगते हैं।

ऐसे जातक स्वयं अनुशासन में रहना पसन्द नहीं करते। अतः बच्चों को भी अनुशासन में रहने से छूट दे देते हैं, जिससे बच्चों की आदत बिगड़ सकती है। इनके सन्तान अधिक होती हैं।

मिथुन राशि के जातकों को प्रायः मलेरिया, खसरा, मोती झरा, मसानों की कमजोरी इत्यादि रोग लग सकते हैं। इनके सहयोगी, पड़ोसी, सुसराल पक्ष इनके विरुद्ध षड्यंत्र रचने की कोशिश करते रहते हैं।

## कर्क राशि

राशि चक्र की यह चौथी राशि है। इस राशि के जातक भावुक प्रकृति के होते हैं और इनको सदा कोई-न-कोई चिन्ता लगी रहती है। इनका चित्त चलायमान रहते हुए भी ये उतने मिलनसार नहीं होते। ये निरन्तर क्रियाशील रहते हैं और अलग रहकर विचारों में हवाई किले बाँधने की इनमें प्रवृत्ति होती है। मन की बात किसी को नहीं बताते।

ये जातक विवेकशील, स्वतंत्र प्रकृति के अपने कार्य में दक्ष, व्यापार में कुशल होते हैं तथा धन और सम्मान पाने के लिये लालायित रहते हैं। इनकी जुबान में मिठास होती है तथा इनको क्रोध कम आता है। इनमें दया और सहानुभूति की भावना कूट-कूट कर भरी होती है।

इनकी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र होती है तथा पुरानी बातों को अच्छी तरह याद रखते हैं। ये जातक धन तथा अन्य भौतिक वस्तुओं के संग्रह में लगे रहते हैं। घर में चाहे कितनी पुरानी व निकम्मी वस्तु पड़ी रहे उसको बाहर फिजूल समझकर नहीं फेंकते।

पुरानी एवं ऐतिहासिक वस्तुओं को घर में रखने का इनको शौक होता है। जीवन में मिलने वाले हर व्यक्ति का नाम, पता तथा उसकी पूरी जानकारी रखते हैं। अतः ये अच्छे व्यापारी सिद्ध हो सकते हैं। यह लोग, होटल कर्मचारी, मॉडल स्कूल टीचर, होम साइंस टीचर, पुरातत्त्व वस्तु विक्रेता, अजायबघर में काम करने वाले, इतिहास लिखने वाले बन सकते हैं।

इन लोगों में हर समय असुरक्षा की भावना रहती है जिसके कारण अपने भविष्य में आने वाली विपत्तियों से बचने के लिए निरन्तर मेहनत करके धन संग्रह में लगे रहते हैं।

कर्क राशि की जातक स्त्रियाँ आदर्श पत्नी सिद्ध होती हैं। इनको घर प्यारा होता है तथा भोजन बनाने में यह दक्ष होती हैं। अगर किसी जातक को नौकरी करने वाली पत्नी नहीं चाहिए, तो कर्क राशि वाली पत्नी को अपनाना चाहिए। ये स्त्रियाँ स्नेह की भूखी होती हैं।

कर्क राशि वाले मैनेजर अथवा मालिक अपने केबिन में बन्द रहते हैं तथा कर्मचारियों

से घुलते-मिलते नहीं। उन्हें तो आपकी निष्ठा चाहिए। अगर आप थोड़ा-सा भी विरोध अथवा चुगली करेंगे, तो आप नौकरी से बाहर होंगे।

अगर इनके ऑर्डर को चुपचाप मानते जायें और इनकी उन्नति में आप सहायता करें, तो ये लोग आपका और आपके परिवार का पूरा ध्यान रखेंगे।

कर्क राशि के कर्मचारी किसी भी संस्था अथवा कार्यालय में अपने आपको अनुकूल बना लेते हैं। इनके विचारों में नयापन नहीं होता, लेकिन अपने कार्य अनुभव के आधार पर ये आगे बढ़ते हैं।

अगर कर्क राशि वालों का बॉस वृष, वृश्चिक अथवा मीन राशि का हो, तो इनको लाभदायक रहता है। अगर बॉस मेष, मिथुन, सिंह राशि का हो, तो इनको निराश होना पड़ता है।

कर्क राशि वाले स्वयं तो सुन्दर होते हैं परन्तु इनको अक्सर पति अथवा पत्नी इतनी सुन्दर नहीं मिलते। इस राशि के व्यक्ति प्रायः विवाह करना नहीं चाहते और विवाह हो जाने पर पति-पत्नी सम्बन्ध प्रेममय नहीं रहते। इनको लम्बी यात्राएँ करने का मौका भी मिलता है, जिनसे इनको प्रसिद्धि मिल सकती है।

## सिंह राशि

यह राशि चक्र की पाँचवीं राशि है। इस राशि वाले जातक लीडर (नेता) सरीखे होते हैं तथा इनका रहन-सहन, पहरावा, खाना-पीना शाही ढंग का होता है। इनके राजसी ठाठ-बाट तथा शाही खर्चे के कारण कई बार इनकी जेब खाली रहती है। ये जातक चाहते हैं कि दूसरे लोग इनका आदर करें और इनके सामने झुकें। इनको हुक्म करने की आदत होती है।

ये चाहते हैं कि हर काम में दूसरे लोग इनके नीचे अथवा पीछे रहें। यही कारण है कि कई लोग इनसे अक्सर नाराज हो जाते हैं। ये लोग खुशामद पसन्द होते हैं। अतः जरा-सी चापलूसी करके इनसे लाभ उठाया जा सकता है।

ऐसे जातक रोमाँस के बिना नहीं रह सकते। शादी के पहले इनका लव अफेयर चलता ही है। यह लोग अपनी प्रेयसी को बड़े से बड़े होटल में खाना खिलाएँगे, उपहारों की भरमार लगा देंगे, मगर इनमें ईर्ष्या की मात्रा भी होती है।

ये लोग बर्दाश्त नहीं कर सकते कि इनकी प्रेमिका किसी दूसरे के साथ फ्लर्ट करे। यह लोग अपनी पत्नी को नौकरी नहीं करने देंगे।

सिंह राशि की जातक स्त्रियाँ बुद्धिमान, हाजिर जवाब, बातचीत करने में दक्ष होती हैं। ये औरतें घण्टों सजने-सँवरने के लिये शीशे के आगे बैठी रहती हैं। इनको धन ऐश्वर्य से परिपूर्ण घर चाहिए।

ये जहाँ भी पार्टियों में जायेंगी वहाँ ही लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जायेंगी, क्योंकि यह प्रशंसा की भूखी होती हैं, इसलिए पुरुषों के साथ घुल-मिल जाती हैं। किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि पति के लिए इनमें प्यार नहीं होता। यह औरतें अपने बच्चों को भी बहुत प्यार से पालती हैं।

सिंह राशि के जातकों के यहाँ सन्तान कम संख्या में होती है। ये अच्छे सैनिक, अधिकारी, मैनेजर, डायरैक्टर, आई०ए०एस० ऑफिसर, अभिनेता, लैक्चरर बनते हैं।

इस राशि के जातक ऑफिसर अथवा मालिक अपने कर्मचारियों के गुण-अवगुण

भली-भाँति जानते हैं तथा किससे क्या काम लिया जा सकता है, यह भी जानते हैं। ये कर्मचारियों की गलतियों को निकालने के आदी होते हैं तथा उनको निरन्तर काम करने की शिक्षा देते रहते हैं।

अगर इस ऑफिसर का हुक्म न माना जाए या कोई कर्मचारी इनकी गलती निकाले तो फौरन क्रोधित हो उठते हैं। कर्मचारियों को अपने आपको सिंह राशि के बॉस के मन-मुताबिक ही ढालना पड़ता है।

सिंह राशि के कर्मचारी स्वतन्त्र प्रकृति के होते हैं तथा दूसरों के लिए काम नहीं करना चाहते। ये शीघ्र ही अपने काम के बल पर ऊँचे पद पर पहुँच जाते हैं। अगर इनका घरेलू जीवन दुःखमय हो, तो निराश होने पर इनके कैरियर पर इसका असर पड़ता है।

इनके साथी कर्मचारी इन पर शीघ्र विश्वास कर लेते हैं तथा कई बार तो यह स्टाफ एसोसिएशन अथवा कर्मचारी यूनियन के लीडर बन जाते हैं। सिंह राशि के कर्मचारी, मेष, धनु और मिथुन राशि वाले अफसरों के नीचे काम करें तो विशेष उन्नति कर सकते हैं। अगर इनके बॉस की राशि वृश्चिक, कर्क अथवा मकर हो, तो इनको निराश होना पड़ेगा।

## कन्या राशि

यह राशि चक्र की छठी राशि है। इस राशि के जातक लज्जालु स्वभाव के होते हैं तथा भीड़-भाड़ से दूर रहना पसन्द करते हैं, यही कारण है कि आप पार्टियों में इनको अगल-बगल खड़ा देख सकते हैं। इनको हर चीज, व्यक्ति देखने की, जाँच करने तथा परखने की आदत होती है तथा नुक्ताचीनी करना इनकी आदत होती है।

मित्र या प्रेयसी बनाने से पहले यह उसके गुणों अथवा अवगुणों का भली-भाँति अध्ययन करते हैं। ऐसे जातक हरदम विचारों में मग्न, चिन्ताशील रहते हैं। ये बुद्धिमान्, व्यावहारिक, बुरे-भले की पहचान करने वाले होते हैं। जीवन में इनके एक-दो मुकद्दमे भी चलते हैं।

ऐसे जातक रोमाँस के शौकीन नहीं होते। अतः इनके लव (प्रेम-सम्बन्ध) बहुत कम होते हैं। करोनिक बैचेलर इसी राशि के ज्यादा होते हैं क्योंकि इनको कोई लड़की शीघ्र पसन्द नहीं आती।

ये ग्लैमर को पसन्द नहीं करते। हां, लड़की सभ्य, सुन्दर, लजीली, साफ-सुथरे सादे लिबास में हो तो इनको पसन्द आ सकती है। पसन्द आने के बाद अथवा शादी के बाद ये लोग बहुत वफादार रहते हैं। इनकी सन्तान एक या दो से अधिक नहीं होती।

ये जातक कलाकार, लिटरेरी कृटिक, मनोवैज्ञानिक, लैक्चरर, दार्शनिक, फिलास्फर, साइंटिस्ट, स्टैटिस्टीशियन, एकाउण्टैंट, वकील बनते हैं। ये किसी भी किस्म के व्यापार में सफलता प्राप्त करते हैं। इस राशि के जातक प्रशासन अथवा प्राइवेट सेवाओं में, ऊँचे पद पर बहुत कम देखे गये हैं।

असिस्टैंट के रूप में ये बहुत सफल होते हैं तथा हर काम को सुचारु ढंग से करते हैं। ये अथक मेहनती होते हैं तथा ओवर टाइम बैठने की इनकी आदत होती है ताकि काम जल्दी खत्म हो सके। इन पर विश्वास किया जा सकता है। ऑफिस में अपने साथी कर्मचारियों में ये कम लोकप्रिय होते हैं।

कन्या राशि की जातक स्त्रियाँ लजीली, घरेलू टाइप होती हैं तथा शादी से पहले यह प्रेम-सम्बन्ध बनाने की इच्छा नहीं रखतीं।

इन जातकों को खुले हवादार मकानों में रहना सेहत के लिए अच्छा रहता है। इन लोगों को पेट की बीमरियों से बचकर रहना चाहिए। फेफड़ों की बीमारी भी हो सकती है। अगर इनको जीवन साथी अच्छा न मिले, तो ये लोग बहुत निराश जीवन व्यतीत करते हैं।

## तुला राशि

यह राशि चक्र की सातवीं राशि है। इस राशि के अन्तर्गत आने वाले जातक आदर्शवादी और रोमांटिक किस्म के व्यक्ति होते हैं। अतः समाज में जल्दी ही लोकप्रिय हो जाते हैं। ये नये विचारों के अन्वेषक, अन्याय को न सहन करने वाले होते हैं। अतः इनमें से बहुत लोग लीडर बन जाते हैं। अतः घरेलू जीवन में ये लोग थोड़ा-सा असन्तुष्ट रहते हैं क्योंकि आमतौर पर इनको पत्नी अपने विचारों के अनुकूल नहीं मिलती। अतः विचारों में असमानता रहती है।

ये जातक बड़े विद्वान् होते हैं तथा किताबों में उलझे रहने के कारण किसी-न-किसी विषय में गहराई तक खोज करते हैं। इनमें से अधिकतर लोग दार्शनिक, वकील, प्राध्यापक, गायक, कलात्मक वस्तुओं के विक्रेता, टैक्सटाइल तथा कास्मैटिक्स के व्यापारी बनते हैं।

ये धन को इकट्ठा करने के हक में नहीं होते, बल्कि जीवन के हर सुख को प्राप्त करने के लिये धन व्यय कर देते हैं।

ऐसे जातक विपरीत सैक्स के व्यक्तियों को शीघ्र ही आकर्षित कर लेते हैं। इन जातकों के लव अफेयर एक से अधिक चलते हैं। इन जातकों को सुरा-सुन्दरी से दूर रहना चाहिए। वस्तुतः ये महफिलों की जान होते हैं।

इस राशि की जातक स्त्रियाँ नौकरी करना पसन्द करती हैं, ताकि वह अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें। यह सुन्दर कपड़े, आभूषण पहनना तथा घर को सजा कर रखना चाहती हैं। अतः इन चीजों को खरीदने के लिये शादी के पहले और शादी के बाद धन कमाने के लिए नौकरी करना अधिक पसन्द करती हैं।

ये स्त्रियाँ लड़ाई-झगड़ा करना पसन्द नहीं करतीं। इनका सुन्दर स्वभाव, इनका विद्वतापूर्ण व्यवहार दूसरे को लुभा लेता है। यह स्त्रियाँ अपने पति को पूर्ण सुख प्रदान करती हैं तथा बच्चों की अच्छी देखभाल करती हैं।

बॉस के रूप में इस राशि के जातक कर्मचारियों से घुल-मिलकर कर रहते हैं तथा किसी कर्मचारी को नुकसान पहुँचाने के हक में नहीं होते। ये स्टाफ के साथ टीम बनकर काम करने में अधिक विश्वास रखते हैं।

इनके होते हुए यूनियन के झगड़े कम होते हैं। कोई भी फैसला करने से पहले अपनी असिस्टैन्ट से सलाह मशवरा करते हैं। हां, ये कोई भी फैसला करने में थोड़ी देर जरूर लगा देते हैं, क्योंकि यह कुछ सुस्त स्वभाव के होते हैं।

कर्मचारी के रूप में ये जातक अपने साथियों के मालिकों के साथ झगड़े निपटाने का काम करते हैं। इसलिए कई साथी इनके दुश्मन भी बन जाते हैं। ये मन के साफ होते हैं। काम करने के बाद थोड़ा मनोरंजन करने से पुनः यह काम करने को उद्यत हो जाते हैं। अगर इनका बॉस मिथुन, कुम्भ और मीन राशि का हो, तो इनके लिये अच्छा रहता है। कर्क, वृश्चिक तथा मकर राशि वालों के साथ इनकी नहीं बनती।

## वृश्चिक राशि

यह राशि चक्र की आठवीं राशि है। इस राशि के जातक तीक्ष्ण बुद्धि वाले निर्भीक अपनी धुन के पक्के तथा दृढ़ इच्छा शक्ति वाले होते हैं। ये जातक भावुक प्रकृति के होते हैं। एक बार क्रोध आने पर ऐसे लोग क्षमा करना नहीं जानते, जब तक दूसरा इनके आगे हाथ न जोड़ दे। इनके दोस्त भी ज्यादा होते हैं और दुश्मन भी ज्यादा होते हैं।

अगर किसी ने इनको कभी धोखा दिया हो, तो जीवन-पर्यन्त जब भी मौका लिये अपना बदला चुकाएँगे। ये दूसरों को उन्नति करते देख ईर्ष्या महसूस करते हैं, जिससे इनके मन में भी उन्नति करने की भावना जागृत होती है। तब स्वयं उनसे आगे बढ़ने की कोशिश में लग जाते हैं। अगर यह भावना जागृत न हो, तो यह लोग आलसी, आराम पसन्द बन जाते हैं। यह लोग कुछ मतलबी होते हैं।

वृश्चिक राशि के जातकों में बिच्छू की तरह डंक मारने की आदत होती है। इससे यह लोग अपनी वक्तृत्व तथा लेखन शक्ति से अपने दुश्मनों को हिट करते हैं। इन लोगों से दुश्मनी मोल नहीं लेनी चाहिए।

सेक्स के मामले में यह लोग भूखे होते हैं। इनकी आँखों में ऐसा आकर्षण होता है जिससे औरतें इनसे प्रभावित हो जाती हैं। ऐसे जातक दोहरा जीवन व्यतीत करते हैं। एक घर के समय और एक घर के बाहर।

वृश्चिक राशि की स्त्रियाँ निडर और ताकतवर होती हैं। पति के रूप में इन्हें वही व्यक्ति पसन्द आता है, जो इनसे ज्यादा ताकतवर और निर्भीक हों। कमजोर आदमी को यह पसन्द नहीं करतीं। जो भावुक और कमजोर होती हैं, उनको मिलिट्री ऑफिसर या राजनीतिज्ञ पति के रूप में अनुकूल साबित हो सकते हैं।

शादी से पहले इनके यौन सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। यह रीति-रिवाज के बंधन को नहीं मानतीं। यह जरूरी नहीं कि इनका विवाह रीति-रिवाज के मुताबिक हो। शादी के बाद यह वफादार होती हैं और पति को भी वफादार चाहती हैं।

वृश्चिक राशि के जातक चाहते हैं कि उनके आदेश का तुरन्त पालन किया जाये नहीं तो यह बरस पड़ते हैं। यह नहीं चाहते कि उनके नीचे काम करने वाला इनको क्रॉस करके इनसे आगे बढ़ जाये।

कर्मचारी के रूप में ये जातक महत्त्वाकांक्षी तथा दृढ़ निश्चयी होते हैं। अगर कोई पद प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो, तो यह कोई भी ठीक या गलत रास्ता अपना कर उसे हासिल कर लेते हैं। यह लोग अपने साथी कर्मचारियों में कम लोकप्रिय होते हैं, लेकिन यह मेहनती और वफादार होते हैं।

ऐसे जातक खोजी टाइप होते हैं। अतः अनुसन्धान कामों में अथवा छानबीन करने के कामों में अधिक सफल होते हैं। इनमें से अधिकतर लोग डॉक्टर, सर्जन, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक, जासूस, वकील और अच्छे व्यापारी बनते हैं।

इनको अधिकतर गुप्त रोग, किडनी रोग, नाक और गले की बीमारियों का डर रहता है।

## धनु राशि

यह राशि-चक्र की नौवीं राशि है। इस राशि वाले जातक न्याय पसन्द, स्पष्ट वक्ता,

उदार हृदय वाले, खुशमिजाज वाले व्यक्ति होते हैं। ये झूठ नहीं बोलते, अगर कहीं झूठ बोल जाएँ, तो साफ पता चल जाता है कि झूठ बोल रहे हैं।

ये भावनाओं में नहीं बहते, बल्कि हर काम को सोच-विचार कर करते हैं। ये लोग आशावादी होते हैं तथा लोग इनकी मित्रता तथा बातचीत पसन्द करते हैं।

इन जातकों को कुछ-न-कुछ करने की आदत होती है क्योंकि यह निठल्ले नहीं बैठ सकते। हर काम फुर्ती से करते हैं। किसी बात पर कहीं झगड़ा हो, तो यह उसे स्वाभिमान का विषय नहीं बनाते, बल्कि समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इनको कोई गलत बात कह दी जाये, तो फौरन क्रोधित हो उठते हैं, लेकिन उसके बाद बदले की भावना मन में नहीं रखते।

ऐसे जातक खेल-कूद पसन्द करते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति भी इनमें होती है। यह लोग स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने में विश्वास करते हैं तथा रीति-रिवाजों को महत्त्व नहीं देते। अपने सम्बन्धियों से दूर रहने की चेष्टा करते हैं क्योंकि यह किसी की दखलन्दाजी पसन्द नहीं करते।

प्रेम-सम्बन्धों के मामले में ये जातक बहुत तेज होते हैं तथा विवाह से पूर्व इनके अनेकों प्रेम-सम्बन्ध होते हैं। यह जरूरी नहीं सबसे शारीरिक सम्बन्ध हों। हाँ, इनके बारे में कहा जा सकता है, प्रेम किसी और से करेंगे, बाद में शादी किसी और से।

धनु राशि वाली स्त्रियाँ भी काफी आजादी पसन्द और मिलनसार होती हैं जिस कारण लोग कई बार इन पर व्यर्थ शक करते हैं। मित्र के तौर पर अच्छी साबित होती हैं, लेकिन घर के काम-काज में कम रुचि लेती हैं।

शादी के बाद आप इनको कुछ स्वतंत्रता देकर विश्वास कायम रखें तथा घरेलू काम-काज के लिए एक नौकरानी रख दें, तो जीवन अच्छा व्यतीत हो सकता है, वरना मन-मुटाव हो सकता है। बड़े होकर जातक अच्छे खिलाड़ी, पादरी, दार्शनिक, वकील, सैलानी, राजनीतिज्ञ बनते हैं।

ऑफिसर के रूप में इस राशि वाले जातक सफल होते हैं तथा नई-नई स्कीमों को तथा अपने कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते रहते हैं, लेकिन अगर उसे पता चल जाये कि कोई कर्मचारी उसे धोखा दे रहा है और हेरा-फेरी कर रहा है, तो उसको जल्दी ही नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। सबकी बात सुनने को तैयार रहता है।

कर्मचारी के रूप में ये जातक खुश मिजाज काम करने में तेज होते हैं। किसी भी ऑफिस में आप जाइए, इस राशि वाले जातक काम निकालने में आपकी मदद कर सकते हैं। व्यक्तिगत जीवन में इनके बहुत कम दुश्मन होते हैं। यदि इनका आफिसर मेष, सिंह, मिथुन राशि का हो, तो ऑफिस का जीवन अच्छा रहता है, अगर इनका अधिकारी वृश्चिक,मकर, वृष राशि का हो, तो वह इनके अनुकूल कम रहेगा।

## मकर राशि

राशि-चक्र की यह दसवीं राशि है। इस राशि वाले जातक गम्भीर, चिन्तनशील, शर्मीले होते हैं। ये अपने उद्यम से अपने भाग्य का निर्माण करते हैं तथा आयु के साथ-साथ तरक्की करते जाते हैं। ऐसे जातक अनुशासन पसन्द रूढ़िवादी होते हैं तथा किसी प्रकार का विद्रोह नहीं करते। यह लोग चुपचाप अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते जाते हैं।

जिस बात का निश्चय करते हैं, पीछे नहीं रहते और किसी किस्म के झगड़े अथवा

वाद-विवाद में नहीं पड़ते, न ही दूसरे के काम में दलखन्दाजी करते हैं। चेहरे से ये जातक उदासीन दिखाई देते हैं। इनको क्रोध देर से आता है और देर बाद ही शान्त होता है।

इनके बारे में लोग अक्सर गलत धारणा बना लेते हैं। ये बहादुरी से कठिनाइयों तथा निराशा का सामना करते हैं। भविष्य के बारे में हर समय चिन्ता करते रहना इनकी आदत-सी हो जाती है। अतः इनको सुरक्षा की भावना की आवश्यकता होती है।

प्रेम के मामले में ये जातक जिसके साथ प्रेम करते हैं अन्त तक निभाते हैं। इनके प्यार में वासना की झलक कम होती है। इनमें से कई कवि पैदा हुए हैं। प्रेम में अक्सर इन्हें निराशा मिलती है। लड़कियों से बात करते समय अक्सर इन्हें नर्वस देखा गया है।

मकर राशि की जातक स्त्रियाँ शहरों में अक्सर दफ्तरों में काम करती पाई गई हैं। देखने में सुन्दर, अपनी बोल-वाणी, चाल-ढाल से अक्सर लोगों को आकर्षित करती हैं किन्तु प्रेम के मामले में सूझ-बुझ से काम लेती हैं।

जब इनको विश्वास हो जाये कि इनको चाहने वाला योग्य पति सिद्ध हो सकता है, तभी यह आगे बढ़ती हैं। पत्नी के रूप में यह स्त्रियाँ बहुत लाभदायक रहती हैं तथा घर का काम सुचारू ढंग से चलाती हैं। बच्चों की देख-भाल अच्छी करती हैं।

ये जातक अधिकतर नौकरी की अपेक्षा व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। इनमें से लोग गणितज्ञ, वैज्ञानिक, राजनीतिक, बिल्डिंग निर्माता, इंजीनियर, संगीत निर्देशक, राजकीय कर्मचारी बनते हैं।

ऑफिसर के रूप में ये अपनी जिम्मेदारी पूर्ण तौर पर निभाते हैं, लेकिन यह बहुत चतुर होते हैं। कर्मचारियों से जरूरत से ज्यादा काम लेना पसन्द करते हैं, जो सुबह से रात तक इनका काम करें उनको यह लोग पसन्द करते हैं। ये कमाते ज्यादा हैं खर्च कम करते हैं।

कर्मचारी के रूप में ऐसे जातक नीचे पद पर भी हों, तो अपनी मेहनत, लगन से ऊँचे पद पर पहुँच जाते हैं। अपने साथी कर्मचारियों में ये कम लोकप्रिय होते हैं। दूसरों को यह लोग बोर लगते हैं। जिन मकर राशि वाले जातकों को उन्नति का चाँस दिखाई न दे, वह निराशावादी हो जाते हैं और उनका चेहरा हमेशा उतरा हुआ नजर आता है। इन लोगों को वायु विकार, पाचन शक्ति की खराबी तथा वृद्धावस्था में हृदय रोग होने का डर रहता है।

## कुम्भ राशि

यह राशि-चक्र की ग्यारहवीं राशि है। इस राशि के जातक दयालु और शान्त प्रकृति के होते हैं। ये अपने पहरावे की परवाह नहीं करते, इसके लिए इन्हें फुर्सत नहीं होती। अधिकतर यह लोग वहमी किस्म के होते हैं। यह हर प्रकार के व्यक्ति से मित्रता रखते हैं और उनके बारे में जानने की कोशिश करते हैं। बहुत-से समाज-सुधारक इस राशि के ही पैदा हुए हैं। इन्हें घर की अपेक्षा दूसरों के सुख की चिन्ता होती है। हर स्थिति को सोचने-समझने की इनमें क्षमता होती है। दूसरों का चरित्र तथा व्यक्तित्त्व भाँपने में माहिर होते हैं, किन्तु स्वयं के बारे में किसी को नहीं बताते तथा इतने मित्र होते हुए भी यह सब लोगों से अलग अपना जीवन एकान्त रखते हैं।

ऐसे जातक विद्रोही किस्म के होते हैं तथा पुराने रीति-रिवाजों का समयानुसार विरोध करते रहते हैं। परन्तु अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हिंसा का सहारा नहीं लेते।

ये अधिकतर उदार हृदय के होते हैं तथा किसी के बारे में एकतरफा गलत नहीं सोचते। जिस बात का निश्चय कर लेते हैं उसको पूरा करते हैं तथा भावना में बह कर अथवा किसी प्रकार के दबाव के अन्तर्गत अपना फैसला नहीं बदलते। ये सदा आने वाले काल की चिन्ता करते हैं। किन्तु अपने लिए धन संचय करने में कम सफल होते हैं। हाँ, दूसरों के लिए धन इकट्ठा करने में मदद करते हैं।

ऐसे जातक छल-कपट से नफरत करते हैं और किसी से पैसा उधार लेना अच्छा नहीं समझते। ये यथार्थवादी होते हैं।

प्रेम के मामले में ये आदर्शवादी होते हैं तथा अपने को कभी नहीं भूलते। इनके प्यार में वासना की इच्छा कम होती है तथा यह जातक विपरीत सेक्स के व्यक्तियों से मित्रता को ज्यादा महत्त्व देते हैं। इनको नये लोगों से मिलने की इच्छा होती है। जब तक आप इनके सम्पर्क में रहें, आपसे प्रेम व मित्रता कायम रहेगी।

कुम्भ राशि की जातक स्त्रियाँ सबसे मित्रता होने पर भी सबसे दूर रहती हैं, क्योंकि यह स्वतन्त्रता से रहना पसन्द करती हैं। सुन्दर वेश-भूषा, आकर्षक हेयर स्टाइल तथा आकर्षक चाल-ढाल से हर जगह लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

कुम्भ राशि वाले जातक फोटोग्राफर, वैज्ञानिक, लेखक, मनोवैज्ञानिक, ज्योतिषी, प्रकाशक सफलतापूर्वक बन सकते हैं।

बॉस के रूप में इनके नीचे काम करने वाले, इनके काम करने के नये और आधुनिक ढंग के कारण इनका मान करते हैं। किन्तु ये अपने कर्मचारियों से घुल-मिलकर भी उनसे दूर रहते हैं, जिससे कर्मचारियों के साथ इनके घने सम्बन्ध नहीं बनते। कर्मचारियों के सुझावों को यह महत्त्व नहीं देते, परन्तु जो अपने मन को अच्छा लगे वही करते हैं। दूसरे लोगों को अपने से कम बुद्धिमान समझते हैं।

इस राशि के कर्मचारियों को अगर आदर्शवादी अफसर मिले, तो अच्छी निभ सकती है। अपने साथी कर्मचारियों में यह कम लोकप्रिय होते हैं। ऐसे ज़ातक समझते हैं कि वह हर सीट तथा अपने अफसर का काम भी सम्भाल सकते हैं। अगर इनका अफसर तुला, मेष, मिथुन राशि का हो, तो इनके लिए अच्छा रहता है। अगर इनका अफसर कन्या, मकर अथवा वृश्चिक राशि का हो, तो ये निराश हो जाते हैं।

## मीन राशि

राशि-चक्र की यह बारहवीं राशि है। इस राशि के जातक कल्पनाशील, शर्मीले, लज्जा से युक्त, दयालु स्वभाव के होते हैं। ये जातक अपने ही ख्यालों तथा स्वप्नों में खोये से रहते हैं तथा व्यावहारिक जीवन में सफल होते हैं। बहुत पैसा कमाने की इनमें इच्छा नहीं होती है। वैसे भी पैसा जमा नहीं कर सकते क्योंकि अत्यधिक खर्च करने की आदत होती है। यह लोग मूडी किस्म के होते हैं तथा बात करते समय यह ध्यान नहीं रखते कि कौन-सी बात कहनी है और कौन-सी नहीं जिसके कारण बाद में पछताते हैं।

ये जातक अधिकतर आराम पसन्द होते हैं और इनको शराब जैसी नशीली वस्तुओं की आदत पड़ सकती है। अतः इन चीजों से इनको दूर रहना चाहिए।

वैसे ये लोग ईमानदार होते हैं, परन्तु बहुत भावुक प्रकृति के होते हैं तथा इनसे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए, जिससे इनके दिल को ठेस पहुँचे। ये जातक गरीब तथा दुःखी

व्यक्ति की हर समय मदद करने को तैयार रहते हैं। अगर आपको उधार की जरूरत है, तो इस राशि के जातक से अपनी दयनीय अवस्था बताकर माँगिए अवश्य मिल जाएगा। इन्हें अच्छा भोजन खाने तथा खिलाने का शौक होता है।

ये कला-विज्ञान तथा साहित्य में विशेष निपुण होते हैं। इनमें से ही बहुत-से लोग कवि, संगीतकार, लेखक और दार्शनिक बनते हैं। प्रेम के मामले में प्रायः यह लोग असफल देखे गये हैं।

इस राशि की जातक स्त्रियाँ एक आदर्श पत्नी साबित होती हैं। इस राशि के पुरुष जातक दूसरे व्यक्ति की बातों को बड़े ध्यान से सुनते हैं। चाहे स्वयं को अपनी बात कहने का मौका न मिले। पति की सेवा करने को यह तत्पर रहती हैं। बच्चों की देखभाल भी अच्छी करती हैं।

इस राशि वाले जातक अफसर के रूप में बहुत कम देखे गए हैं। अगर कहीं अफसर बन भी जाए, तो इनके नीचे काम करने वाले इनकी परवाह बहुत कम करते हैं क्योंकि मीन राशि वाले अक्सर इन्हें कन्ट्रोल करने में सक्षम नहीं होते। कर्मचारी इनका अनुचित लाभ उठाते हैं।

कर्मचारी के रूप में मीन राशि वाले जातक लोकप्रिय हो जाते हैं क्योंकि यह लोग हर तरह की कम्पनी में अपने आपको ढाल लेते हैं। दूसरा कारण यह कि इनकी नम्रता, सहानुभूति तथा दया की भावना सबको मोह लेती है। जो साथी कर्मचारी महत्त्वाकांक्षी होते हैं उनके साथ ईर्ष्या नहीं रखते और न ही उनके रास्ते का काँटा बनते हैं। अगर इनका अफसर कर्क, मेष, वृश्चिक राशि का हो, तो उनकी अच्छी निभ जाती है। अगर वह धन, वृष, सिंह का हो, तो उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

❑❑❑

# 4 आकाशीय ग्रह

यह प्रकृति का खेल है कि आकाश में विचरने वाले ग्रहों ने आदमी के कर्मों को अपने में समेट लिया। सूर्य, चन्द्र, शुक्र, बहृस्पति, मंगल, बुध, शनि, राहु और केतु—ये नौ ग्रह आकाश में हमेशा घूमते रहते हैं। जिस तरह सत्याग्रह का मतलब सच्चाई की ताकत है, उसी तरह नौ ग्रह नौ तरह की ताकत मानी गई हैं।

जगत् के सभी तत्त्वों को नौ हिस्सों में बाँटकर इन नौ ग्रहों से जोड़ दिया गया है। यानि हरेक तत्त्व किसी-न-किसी ग्रह से ताल्लुक रखता है। जिस तरह लोहे को चुम्बक अपनी ओर खींचता है, उसी तरह हरेक ग्रह ज़मीन पर मौजूद किसी-न-किसी तत्त्व को प्रभावित अवश्य करता है।

आकाश में ये नौ ग्रह हर समय घूमते रहते हैं, इसलिए जमीन पर इन ग्रहों के प्रभाव में भी परिवर्तन होता रहता है। बच्चा जब माँ के पेट से बाहर आता है, तो उसके शरीर पर आकाश में घूमते हुए ग्रहों सूर्य-चन्द्र आदि की परछाइयाँ पड़ती हैं, जो उसके शरीर में दाखिल होकर अपना असर कायम कर लेती हैं।

बच्चे के जन्म के समय आकाशीय ग्रहों में से किस ग्रह की कितनी ताकत बच्चे के शरीर में है, यह बात घूमने वाले ग्रहों के आधार पर नोट कर ली जाती है, जिसे जन्मकुण्डली बाँचना कहा जाता है।

हर व्यक्ति की किस्मत अलग-अलग होती है, अर्थात् जन्म के वक्त आकाशीय ग्रहों की स्थिति का नाम बच्चे की जन्म-कुण्डली या जन्म-लग्न कहलाता है (प्रत्येक लग्न के बारे में पीछे बताया जा चुका है)। अलग-अलग शरीरों में किसी एक तत्त्व की मात्रा कम या ज्यादा होने से उन शरीरों के कर्म अलग-अलग होते हैं और उनकी किस्मतों में फर्क पड़ जाता है।

आकाशीय ग्रहों के घूमने के साथ ही इन ग्रहों का प्रतिबिम्ब भी हर वक्त बदलता रहता है, जिस कारण मनुष्य के शरीर में मौजूद तत्त्वों में परिवर्तन होता रहता है।

मनुष्य के शरीर में ग्रहों की शक्ति या मात्रा का अनुपात बदलता रहता है, जिसे 'ग्रहचाल' कहते हैं। इसी तरह मनुष्य की किस्मत बदलती रहती है, चाहे वो कोई कर्म करे या न करे।

अगर मनुष्य शुरू से कोई कर्म कर रहा है और वो ही कर्म आज भी कर रहा है, लेकिन उसकी किस्मत फिर भी बदली हुई मालूम होती है, यानी पहले जैसे हालात उसके नहीं रहे, इस पर भी वह पहले खुशहाल था, तो अब वह दुःखी है।

हालांकि उसने अपने कर्मों में कोई अन्तर नहीं किया, मगर फिर भी नसीब में फर्क

हुआ, इसकी वजह आकाश में घूमने वाले ग्रह ही हैं। इन्हीं की वजह से किस्मत में भी बदलाव आता रहता है।

आकाश में ग्रहों का प्रतिबिम्ब ग्रहों की रफ्तार या चाल के साथ-साथ मनुष्य के शरीर में मौजूद शक्तियों या तत्त्वों से टकराकर मनुष्य के शरीर की ताकत में कमी-बेशी करता रहता है। इस तरह से मनुष्य के शरीर की ताकत में तब्दीली होती रहती है।

जब इस तब्दीली की वजह से मनुष्य के देह पर बुरा असर होने लगे, तो उसे ग्रहों की बुरी चाल, बदकिस्मती या किस्मत की बुराई कहा जाता है क्योंकि ग्रहों के बुरे असर की वजह से मनुष्य के सभी काम अचानक बिगड़ने लगते हैं।

अगर उस वक्त मनुष्य देह-तत्त्वों की मात्रा के अनुपात में कमीबेशी कर, उसे आकाशीय ग्रहों के अनुकूल कर ले, तो ग्रहों के बुरे असर को दूर कर सकता है। इसके लिए आगे बहुत-से उपाय सुझाए गए हैं।

यह सर्वविदित है कि आकाशीय ग्रहों की दूरी, चाल आदि को बदला नहीं जा सकता, क्योंकि यह बात मनुष्य के हाथ में नहीं है। इसलिए मनुष्य के शरीर के तत्त्वों के अनुपात या भाग में ही तब्दील करनी पड़ेगी, जिससे मनुष्य की किस्मत में बदलाव लाया जा सके।

आमतौर पर ज्योतिषी लोग कुण्डली को देखकर यह जानने की कोशिश करते हैं कि कौन-सा ग्रह कुण्डली के किस घर में मंदा हो रहा है?

यानी आकाश में घूमने वाले कौन-से ग्रह का मंदा असर हो रहा है। फिर वो कहते हैं कि अमुक तारीख को जब अमुक ग्रह अमुक ग्रह या राशि में आएगा, तो अमुक काम बनेगा, यानी कुण्डली वाले आदमी को उस वक्त या दिन तक का इन्तजार करना होगा। इन सब बातों को जानने के लिए कुण्डली पर विचार करना बहुत जरूरी हो जाता है।

प्रख्यात शास्त्रीय ज्योतिष के समान ही लाल किताब में जातक की जन्मकुण्डली को उसके भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आधार बनाया गया है। जन्मकुण्डली की निम्न दो विधियाँ बताई गई हैं–

1. हाथ की रेखाओं, चिन्हों आदि के आधार पर।
2. ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बनी हुई जन्मकुण्डली में संशोधन करके।

जैसा पहले बताया जा चुका है कि जन्म के समय शिशु अपना भाग्य मुट्ठी में बन्द करके लाता है। उस समय शिशु की मुट्ठी आसानी से नहीं खुलती। जमाने की हवा लगने पर धीरे-धीरे खुलती है, जैसे चांदनी का स्पर्श पाकर कुमुदिनी धीरे-धीरे खिलती है। समय बीतने पर जातक का हाथ विकसित होता है। पूरा विकसित होने पर उसकी रेखाओं, चिह्नों आदि के आधार पर उसकी जन्मकुण्डली बनाई जा सकती है। यह लाल किताब की सर्वथा नवीनतम और मौलिक व्यवस्था है, ज्योतिष जगत् को अद्‌भुत देन है।

**हथेली पर रेखाओं, चिह्नों, पर्वतों, शंख, चक्र आदि के माध्यम से विचार तो सभी हस्तरेखा विशेषज्ञ करते हैं, किन्तु लाल किताब एक ऐसी रचना है जिसके अनुसार बारह भावों, बारह राशियों और नौ ग्रहों सहित पूरी जन्मकुण्डली जातक के हाथ पर अंकित होती है। आगे चित्र में यह दर्शाया गया है।**

# हाथ पर राशि, भाव और ग्रह

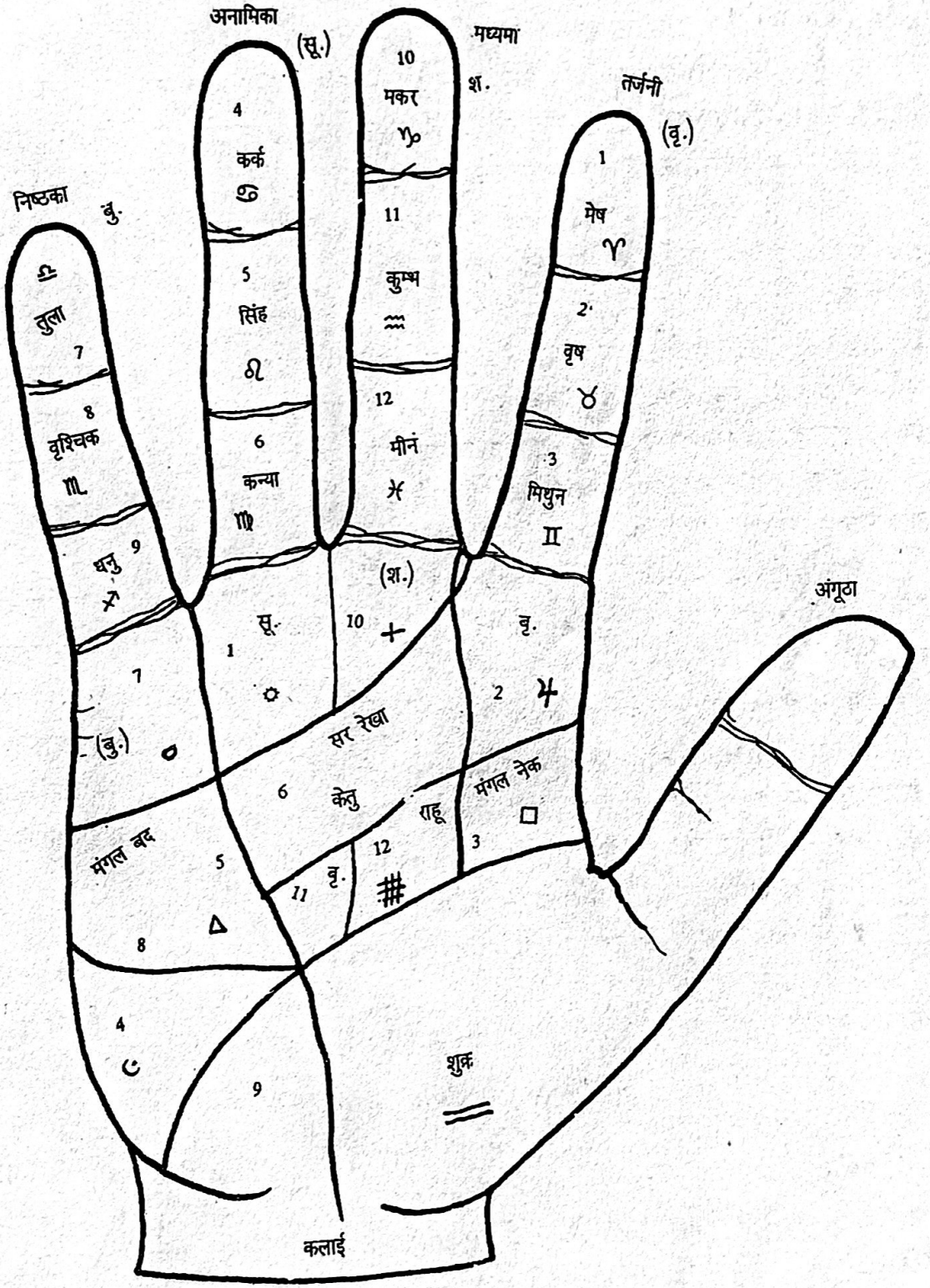

| राशियों के नं | राशियों के नाम | राशियों के चिह्न | ग्रहों के चिह्न | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मेष | ♈ | सूर्य | ☼ |
| 2. | वृष | ♉ | चन्द्र | ☽ |
| 3. | मिथुन | ♊ | मंगल नेक | □ |
| 4. | कर्क | ♋ | मंगल बद | △ |
| 5. | सिंह | ♌ | बुध | ○ |
| 6. | कन्या | ♍ | गुरु | 4 |
| 7. | तुला | ♎ | शुक्र | ≒ |
| 8. | वृश्चिक | ♏ | शनि | + |
| 9. | धनु | ♐ | राहु | # |
| 10. | मकर | ♑ | केतु | ☊ |
| 11. | कुम्भ | ♒ | | |
| 12. | मीन | ♓ | | |

उंगलियों पर एक से बारह तक के अंक राशियों के हैं। हथेली पर एक से बारह घरों के नम्बर हैं। घरों में जिन ग्रहों के नाम दिये गये हैं, वे इन घरों के कारक हैं। जातक-भेद से (जन्म-काल के अनुसार) ग्रहों के स्थान बदल जाते हैं। यह विषय हस्त-सामुद्रिक का है। हमारा विवेच्य विषय लाल किताब का ज्योतिष है। अतः अब ज्योतिष (परम्परागत) के आधार पर बनी कुण्डली में संशोधन करके, लाल किताब के अनुसार फल-कथन के योग्य बनाने की विधि पर विचार किया गया है।

## वार्षिक ग्रह चाल

ग्रहों के शुभाशुभ फल का निर्णय वर्षफल की कुण्डली से किया जाता है। अतः वर्षफल बनाने की विधि पर विचार अवश्य कर लेना चाहिए। मनुष्य के जीवन में वर्षफल का महत्त्व बहुत अधिक है। प्रायः प्रत्येक वर्ष ग्रह अपना जन्म के समय का घर बदल कर दूसरे घरों में चला जाता है। हमारे प्राचीन शास्त्रीय (वैदिक) ज्योतिष में राशि के अनुसार वर्षफल में ग्रह लिखे गए हैं अर्थात् यदि जन्म के समय किसी एक के घर में चार ग्रह इकट्ठे हैं, तो वहाँ वर्षफल में वे चारों ग्रह भिन्न-भिन्न राशियों में अपने चक्र के अनुसार चल रहे होते हैं, दर्शाए जाते हैं, लेकिन यहाँ इस पद्धति में वह ग्रह इकट्ठे ही घर बदलते दर्शाए गए हैं।

आगे दी गई वर्षफल बनाने की सारिणी में बाएँ से दाएँ 1 से 12 घर लिखे हैं, यों प्रत्येक कुण्डली में 12 घर ही होते हैं। सारिणी में बायीं ओर वर्ष लिखे हैं। जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो, उस वर्ष के सामने ऊपर दर्शाए घरों के अनुसार घरों को बदल दें अर्थात् उन घरों के जन्म के ग्रह वर्ष के सामने वाले घरों में लिखे हैं। इसी से वर्षफल तैयार हो जाएगा।

**अगर किसी के जन्म के समय किसी घर में चार या पाँच ग्रह हैं, तो वर्षफल के अनुसार दर्शाए घर में भी वे चार या पाँच इकट्ठे ही घर बदलते होते हैं।**

वर्षफल बनाने के लिए निम्नांकित तालिका का सहयोग लिया जा सकता है। वर्षफल बनाने की विधि का ज्ञान प्रत्येक जिज्ञासु को अवश्य होना चाहिए।

| आयु वर्ष | जन्मकुण्डली के भाव | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 1 | 1 | 9 | 10 | 3 | 5 | .2 | 11 | 7 | 6 | 12 | 4 | 8 |
| 2 | 4 | 1 | 12 | 9 | 3 | 7 | 5 | 6 | 2 | 8 | 10 | 11 |
| 3 | 9 | 4 | 1 | 2 | 8 | 3 | 10 | 5 | 7 | 11 | 12 | 6 |
| 4 | 3 | 8 | 4 | 1 | 10 | 9 | 6 | 11 | 5 | 7 | 2 | 12 |
| 5 | 11 | 3 | 8 | 4 | 1 | 5 | 9 | 2 | 12 | 6 | 7 | 10 |
| 6 | 5 | 12 | 3 | 8 | 4 | 11 | 2 | 9 | 1 | 10 | 6 | 7 |
| 7 | 7 | 6 | 9 | 5 | 12 | 4 | 1 | 10 | 11 | 2 | 8 | 3 |
| 8 | 2 | 7 | 6 | 12 | 9 | 10 | 3 | 1 | 8 | 5 | 11 | 4 |
| 9 | 12 | 2 | 7 | 6 | 11 | 1 | 8 | 4 | 10 | 3 | 5 | 9 |
| 10 | 10 | 11 | 2 | 7 | 6 | 12 | 4 | 8 | 3 | 1 | 9 | 5 |
| 11 | 8 | 5 | 11 | 10 | 7 | 6 | 12 | 3 | 9 | 4 | 1 | 2 |
| 12 | 6 | 10 | 5 | 11 | 11 | 8 | 7 | 12 | 4 | 9 | 3 | 1 |
| 13 | 1 | 5 | 10 | 8 | 11 | 7 | 7 | 2 | 12 | 3 | 9 | 4 |
| 14 | 4 | 1 | 3 | 2 | 5 | 6 | 8 | 11 | 6 | 12 | 10 | 9 |
| 15 | 9 | 4 | 1 | 6 | 8 | 5 | 2 | 7 | 11 | 10 | 12 | 3 |
| 16 | 3 | 9 | 4 | 1 | 12 | 8 | 6 | 5 | 2 | 7 | 11 | 10 |
| 17 | 11 | 3 | 9 | 4 | 1 | 10 | 5 | 6 | 7 | 8 | 2 | 12 |
| 18 | 5 | 11 | 6 | 9 | 4 | 1 | 12 | 8 | 10 | 2 | 3 | 7 |
| 19 | 7 | 10 | 11 | 3 | 9 | 4 | 1 | 12 | 8 | 5 | 6 | 2 |
| 20 | 2 | 7 | 5 | 12 | 3 | 9 | 10 | 1 | 4 | 6 | 8 | 11 |
| 21 | 12 | 2 | 8 | 5 | 10 | 3 | 9 | 4 | 1 | 11 | 7 | 6 |
| 22 | 10 | 12 | 2 | 7 | 6 | 11 | 3 | 9 | 5 | 1 | 4 | 8 |
| 23 | 8 | 6 | 12 | 10 | 7 | 2 | 11 | 3 | 9 | 4 | 1 | 5 |
| 24 | 6 | 8 | 7 | 11 | 2 | 12 | 4 | 10 | 3 | 9 | 5 | 1 |
| 25 | 1 | 6 | 10 | 3 | 2 | 8 | 7 | 4 | 11 | 5 | 12 | 9 |
| 26 | 4 | 1 | 3 | 8 | 6 | 7 | 2 | 11 | 12 | 9 | 5 | 10 |
| 27 | 9 | 4 | 1 | 5 | 10 | 11 | 12 | 7 | 6 | 8 | 2 | 3 |
| 28 | 3 | 9 | 4 | 1 | 11 | 5 | 6 | 8 | 7 | 2 | 10 | 12 |
| 29 | 11 | 3 | 9 | 4 | 1 | 6 | 8 | 2 | 10 | 12 | 7 | 5 |
| 30 | 5 | 11 | 8 | 9 | 4 | 1 | 3 | 12 | 2 | 10 | 6 | 7 |
| 31 | 7 | 5 | 11 | 12 | 9 | 4 | 1 | 10 | 8 | 6 | 3 | 2 |
| 32 | 2 | 7 | 5 | 11 | 3 | 12 | 10 | 6 | 4 | 1 | 9 | 8 |
| 33 | 12 | 2 | 6 | 10 | 8 | 3 | 9 | 1 | 5 | 7 | 4 | 11 |
| 34 | 10 | 12 | 2 | 7 | 5 | 9 | 11 | 3 | 1 | 4 | 8 | 6 |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 35 | 8 | 10 | 12 | 6 | 7 | 2 | 4 | 5 | 9 | 3 | 11 | 1 |
| 36 | 6 | 8 | 7 | 2 | 12 | 10 | 5 | 9 | 3 | 11 | 1 | 4 |
| 37 | 1 | 3 | 10 | 6 | 9 | 12 | 7 | 5 | 11 | 2 | 4 | 8 |
| 38 | 4 | 1 | 3 | 8 | 6 | 5 | 2 | 7 | 12 | 10 | 11 | 9 |
| 39 | 9 | 4 | 1 | 12 | 8 | 2 | 10 | 11 | 6 | 3 | 5 | 7 |
| 40 | 3 | 9 | 4 | 1 | 11 | 8 | 6 | 12 | 2 | 5 | 7 | 10 |
| 41 | 11 | 7 | 9 | 4 | 1 | 6 | 8 | 2 | 10 | 12 | 3 | 5 |
| 42 | 5 | 11 | 8 | 9 | 12 | 1 | 3 | 4 | 7 | 6 | 10 | 2 |
| 43 | 7 | 5 | 11 | 2 | 3 | 4 | 1 | 10 | 8 | 9 | 12 | 6 |
| 44 | 2 | 10 | 5 | 3 | 4 | 9 | 12 | 8 | 1 | 7 | 6 | 11 |
| 45 | 12 | 2 | 6 | 5 | 10 | 7 | 9 | 1 | 3 | 11 | 8 | 4 |
| 46 | 10 | 12 | 2 | 7 | 5 | 3 | 11 | 6 | 4 | 8 | 9 | 1 |
| 47 | 8 | 6 | 12 | 10 | 7 | 11 | 4 | 9 | 5 | 1 | 2 | 3 |
| 48 | 6 | 8 | 7 | 11 | 2 | 10 | 5 | 3 | 9 | 4 | 1 | 4 |
| 49 | 1 | 7 | 10 | 6 | 12 | 2 | 8 | 4 | 11 | 9 | 3 | 5 |
| 50 | 4 | 1 | 8 | 3 | 6 | 12 | 5 | 11 | 2 | 7 | 10 | 9 |
| 51 | 9 | 4 | 1 | 2 | 8 | 3 | 12 | 6 | 7 | 10 | 5 | 11 |
| 52 | 3 | 9 | 4 | 1 | 11 | 7 | 2 | 12 | 5 | 8 | 6 | 10 |
| 53 | 11 | 10 | 7 | 4 | 6 | 6 | 3 | 9 | 12 | 5 | 8 | 2 |
| 54 | 5 | 11 | 3 | 9 | 1 | 1 | 6 | 2 | 10 | 12 | 7 | 8 |
| 55 | 7 | 5 | 11 | 8 | 3 | 9 | 1 | 10 | 6 | 4 | 2 | 12 |
| 56 | 2 | 3 | 5 | 11 | 9 | 4 | 10 | 1 | 8 | 6 | 12 | 7 |
| 57 | 12 | 2 | 6 | 5 | 10 | 8 | 9 | 7 | 4 | 11 | 1 | 3 |
| 58 | 10 | 12 | 2 | 7 | 5 | 11 | 4 | 8 | 3 | 1 | 9 | 6 |
| 59 | 8 | 6 | 12 | 10 | 7 | 5 | 11 | 3 | 9 | 2 | 4 | 1 |
| 60 | 6 | 8 | 9 | 12 | 2 | 10 | 7 | 5 | 1 | 3 | 11 | 4 |
| 61 | 1 | 11 | 10 | 6 | 12 | 2 | 4 | 7 | 8 | 9 | 5 | 3 |
| 62 | 4 | 1 | 6 | 8 | 3 | 12 | 2 | 10 | 9 | 5 | 7 | 11 |
| 63 | 9 | 4 | 1 | 2 | 8 | 6 | 12 | 11 | 7 | 3 | 10 | 5 |
| 64 | 3 | 9 | 4 | 1 | 6 | 8 | 7 | 12 | 5 | 2 | 11 | 10 |
| 65 | 11 | 2 | 9 | 4 | 1 | 5 | 8 | 3 | 10 | 12 | 6 | 7 |
| 66 | 5 | 10 | 3 | 9 | 2 | 1 | 6 | 8 | 11 | 7 | 12 | 4 |
| 67 | 7 | 5 | 11 | 3 | 10 | 4 | 1 | 9 | 12 | 6 | 8 | 2 |
| 68 | 2 | 3 | 5 | 11 | 9 | 7 | 10 | 1 | 6 | 8 | 4 | 12 |
| 69 | 12 | 8 | 7 | 5 | 11 | 3 | 9 | 4 | 1 | 10 | 2 | 6 |
| 70 | 10 | 12 | 2 | 7 | 5 | 11 | 3 | 6 | 4 | 1 | 9 | 8 |
| 71 | 8 | 6 | 12 | 10 | 7 | 9 | 11 | 5 | 2 | 4 | 3 | 1 |
| 72 | 6 | 7 | 8 | 12 | 4 | 10 | 5 | 2 | 3 | 11 | 1 | 9 |



| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 73 | 1 | 4 | 10 | 12 | 11 | 7 | 8 | 2 | 5 | 9 | 3 | |
| 74 | 4 | 2 | 3 | 8 | 6 | 12 | 1 | 11 | 7 | 10 | 5 | 9 |
| 75 | 9 | 10 | 1 | 3 | 8 | 6 | 2 | 7 | 5 | 4 | 12 | 11 |
| 76 | 3 | 9 | 6 | 1 | 2 | 8 | 5 | 12 | 11 | 7 | 10 | 4 |
| 77 | 11 | 3 | 9 | 4 | 1 | 2 | 8 | 10 | 12 | 6 | 7 | 5 |
| 78 | 5 | 11 | 4 | 9 | 7 | 1 | 6 | 2 | 10 | 12 | 3 | 8 |
| 79 | 7 | 5 | 11 | 2 | 9 | | 4 | 6 | 3 | 1 | 8 | 10 |
| 80 | 2 | 8 | 5 | 11 | 4 | 7 | 10 | 3 | 1 | 9 | 6 | 12 |
| 81 | 12 | 1 | 7 | 5 | 11 | 10 | 9 | 4 | 8 | 3 | 2 | 6 |
| 82 | 10 | 12 | 2 | 7 | 5 | 3 | 4 | 9 | 6 | 8 | 11 | 1 |
| 83 | 8 | 6 | 12 | 10 | 3 | 5 | 11 | 1 | 9 | 2 | 4 | 7 |
| 84 | 6 | 7 | 8 | 12 | 10 | 9 | 3 | 5 | 4 | 11 | 11 | 2 |
| 85 | 1 | 3 | 10 | 6 | 12 | 2 | 8 | 11 | 5 | 4 | 9 | 7 |
| 86 | 4 | 1 | 8 | 3 | 6 | 12 | 11 | 2 | 7 | 9 | 10 | 5 |
| 87 | 9 | 4 | 1 | 7 | 3 | 8 | 12 | 5 | 2 | 6 | 11 | 10 |
| 88 | 3 | 9 | 4 | 1 | 8 | 10 | 2 | 7 | 12 | 5 | 6 | 11 |
| 89 | 11 | 10 | 9 | 4 | 1 | 6 | 7 | 12 | 3 | 8 | 5 | 2 |
| 90 | 5 | 11 | 6 | 9 | 4 | 1 | 3 | 8 | 10 | 2 | 7 | 12 |
| 91 | 7 | 5 | 11 | 2 | 10 | 4 | 6 | 9 | 8 | 3 | 12 | 1 |
| 92 | 2 | 7 | 5 | 11 | 9 | 3 | 10 | 4 | 1 | 12 | 8 | 6 |
| 93 | 12 | 8 | 7 | 5 | 2 | 11 | 9 | 1 | 6 | 10 | 3 | 4 |
| 94 | 10 | 12 | 2 | 8 | 11 | 5 | 4 | 6 | 9 | 7 | 1 | 3 |
| 95 | 8 | 6 | 12 | 10 | 5 | 7 | 1 | 3 | 4 | 11 | 2 | 9 |
| 96 | 6 | 2 | 3 | 12 | 7 | 9 | 5 | 10 | 11 | 1 | 4 | 4 |

**नोट**–उपरोक्त सारिणी के पहले कॉलम ऊपर से नीचे (Vertical) में जातक की आयु के वर्ष लिखे हैं। बाएँ से दाएँ (Horizontal) कॉलमों के भावों के नम्बर लिखे हैं।

## प्रभावावधि

एक निश्चित समय से पहले शुभ या अशुभ ग्रहों का प्रवाह देखने को नहीं मिलता। ग्रहों के फल देने का जो निश्चित समय है, उसमें 40 दिन पहले और 40 दिन बाद का समय बहुत खास होता है। जब एक ग्रह का प्रभाव पूरा होकर दूसरे ग्रहों का शुरू होता है, तो इनके बीच का समय 40 दिनों का होता है। ये 40 दिन फलादेश में बहुत अहम् भूमिका निभाते हैं।

अशुभ ग्रह के प्रभाव का समय पूरा होने के बाद 40 दिनों तक अशुभ प्रभाव ही देखने में आता है। यदि शुभ ग्रह का शुभ प्रभाव शुरू होने वाला हो, तो वह 40 दिन पहले ही शुरू हो जाता है। तात्पर्य यह हुआ कि निश्चित प्रभाव की अवधि केवल 40 दिनों की होती है। दोनों ग्रह का शुभ और अशुभ फलादेश अलग-अलग 40 दिनों के लिए नहीं होता।

❑❑❑

# 5 जन्मकुंडली के बारह घरों का आधार

लाल किताब के अनुसार प्रत्येक घर से वृक्षों, मकान, शारीरिक शक्ति, स्वभाव, पक्षियों, देवताओं का सम्बन्ध ध्यान में रखकर अनगिनत चीजों का सम्बन्ध जोड़ा गया है। प्राचीन शास्त्रीय ज्योतिष की तुलना में लाल किताब में घरों का महत्त्व कुछ कम आँका गया है। घरों की अपेक्षा ग्रहों को अधिक महत्त्व दिया गया है। उदाहरण के लिए, पाँचवाँ घर संतान का है लेकिन बेटे के बारे में जानने के लिए केतु की दशा पर ध्यान देने की बात लाल किताब में कही गई है। बुआ या बहन के बारे में फलकथन के लिए बुध की स्थिति को देखना पड़ता है। इस तरह घर की स्थिति के मुकाबले में ग्रह की स्थिति को अधिक महत्त्व दिया गया है।

किन्तु इसका मतलब यह कतई नहीं है कि घर का महत्त्व या घर से सम्बन्धित चीजों का महत्त्व है ही नहीं, वस्तुतः ग्रह के महत्त्व को घर के मुकाबले में अधिक महत्त्व दिया गया है। जो ग्रह 'राशिफल' के होते हैं उनका उपाय हो सकता है, परन्तु जो ग्रह 'ग्रहफल' के होते हैं, उनका कोई उपाय नहीं हो सकता।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही यहाँ बारह घरों के बारे में बताया जा रहा है।

## कुंडली का पहला घर

जातक की कुंडली में सूर्य जहाँ कहीं भी स्थित हो, उसकी दशा से पता चलेगा कि पहले घर का फल क्या होगा? इसी प्रकार सभी घरों में घरों के कारकों का वृतान्त आएगा, तो वह कहीं भी स्थित हो, उसकी अवस्था देखकर ही उसके घर का पक्का फलादेश स्पष्ट हो जाएगा।

कुंडली के पहले घर से हम जिस तरह किसी व्यक्ति का नाम, उसकी हैसियत जान सकते हैं, उसी तरह उस व्यक्ति के मकान की चारदीवारी तथा मकान-जमीन के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। पहले घर से ही व्यक्ति की भूख और उसके स्वभाव का सम्बन्ध है। आदमी दूसरों का कितना परोपकार करेगा इसके बारे में केवल पच्चीस प्रतिशत जाना जा सकता है।

पहले घर से हमें यह भी ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति पुरानी रस्मों पर कितना चलता है? यह घर हमारे बचपन के समय से ज्यादा सम्बन्धित है। बचपन का अर्थ सीमित है। यह 25 वर्ष तक की आयु के हिस्से से विशेष सम्बन्ध रखता है।

पहले घर का हमारे इस जीवन में पिछले जन्मों से चले आए कर्मों, यानी वह कर्म जिसका फल हमें इस जन्म में भोगना है, का भी सम्बन्ध है। हमारे भाग्य का जितना अधिकार हम पर रहेगा, उसका सम्बन्ध भी इसी घर से है।

पहला घर पूर्व दिशा का कारक है। फलादेश करते समय मानवीय चीजों का महत्त्व बहुत ही सहायक होता है। संक्षेप में, जिस व्यक्ति का सूर्य बहुत अच्छा है उसके लिए पूर्व दिशा में उसका मकान होना उसके लिए बड़ा लाभप्रद रहेगा। इसी तरह जिस व्यक्ति



का मंगल बहुत अच्छी दशा में होगा, उस व्यक्ति के लिए दक्षिण दिशा का मकान शुभ फल देगा।

पहला घर हमारे व्यवसाय से सम्बन्ध रखता है। हमारे कार्यक्षेत्र का ज्ञान, उसकी पहचान भी पहले घर से होती है। हम धन-दौलत किस साधन से कमाएँगे यह बात भी पहला घर ही बताएगा। जहाँ हम बैठकर दूसरों लोगों से बात करते हैं उस कक्ष से भी इसका सम्बन्ध है, विशेषकर तख्त (आसन) से। यह घर बताता है कि हम जीवन में किस जगह, किस ऊँचाई पर पहुँचेंगे। उदाहरण के लिए पहले घर में बैठे बृहस्पति को 'गद्दीनशीन साधु' कहते हैं। ऐसा साधु जो गरीबी का मारा हुआ या भिखमंगा न हो, बल्कि एक बादशाह जैसा हो और ऊँचे घर पर अपनी गद्दी पर बैठा हो। इसी तरह हम अपनी नौकरी या कारोबार के बारे में कितने ऊँचे स्तर पर रहेंगे या पहुँचेंगे यह बात भी पहला घर ही बताएगा।

पहले घर का सम्बन्ध हमारे वाहन (स्कूटर, कार, साइकिल, घोड़ा, घोड़ागाड़ी आदि वाहनों) से भी है। आदमी जो धन अपने परिश्रम और प्रयत्नों से कमाता है, उस धन का सम्बन्ध भी पहले घर से ही है। वर्तमान के बारे में भी पहले घर से जाना जा सकता है। पहला घर हमारे इस जन्म के कर्मों का तो है ही, साथ ही हमारी तरुणावस्था के समय का भी इस घर से निकटता का सम्बन्ध है।

पहले घर का सम्बन्ध हमारे शरीर के अंगों से भी है। यह उन जड़ी-बूटियों से भी विशेष सम्बन्ध रखता है, जो औषधियों के काम आती हैं। इस घर में बैठे ग्रह से उस जन्मकुण्डली वाले को कौन-सी औषधि लाभदायक हो सकती हैं, यह भी जान सकते हैं। उपचार का कौन-सा उपाय उस व्यक्ति के लिए उपयोगी होगा, इसका ज्ञान भी पहले घर से ही प्राप्त होगा। पहले घर का सम्बन्ध हमारे ग्रह से भी है। गृह चाहे बना-बनाया हो, पुराना ही खरीदा गया हो या नया बनवाया हो—दोनों प्रकार के गृहों का सम्बन्ध पहले घर से रहता है।

पहले घर का सम्बन्ध हमारे शरीर के भागों, विशेषकर माथे या चेहरे से भी है। पहले घर से ही व्यक्ति के अहं का पता चलता है। अहं और अभिमान की उसमें कितनी मात्रा है, यह बात भी हम जान सकते हैं। हमारी आध्यात्मिकता का मापदंड भी इसी घर से होता है।

पहला घर हमारे वर्तमान का दर्शक है। हम पिछले जन्म के अपने कर्मों के अनुसार कैसा भाग्य लेकर जन्मे हैं, उसको भी यह घर दर्शाता है। पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार हम क्या-क्या भोगेंगे? आर्थिक स्तर पर क्या कमाएँगे? इन दोनों बातों का इस घर से विशेष सम्बन्ध है।

पहले घर का कारक ग्रह सूर्य है। इस घर में सूर्य ग्रह उच्च का फल देता है। पहले घर में शनि नीच माना जाता है। उसका शुभ फल कभी नहीं मिलता। प्राचीन ज्योतिष के आधार पर कालपुरुष की जन्मकुंडली के अनुसार पहले घर का मालिक मंगल है। यहाँ मंगल शुभ फल देता है।

## कुंडली का दूसरा घर

कुंडली के दूसरे घर का सम्बन्ध उत्तर-पश्चिम दिशा से है। इस घर में बृहस्पति अपना उत्तम फल प्रदान करता है। इस घर में बैठे हुए प्रायः सभी ग्रह शुभ फल देते हैं। बशर्ते कि उस समय आठवें घर में कोई अन्य ग्रह न हो। इस ग्रह का कारक बृहस्पति को माना

गया है। वस्तुतः यह घर मान-सम्मान का भी है और ये दोनों बातें बृहस्पति की कारक हैं।

कुंडली का दूसरा घर हमारी इज्जत-आबरू और धन-संपदा का बोधक भी है। हमारा सम्मान किस सीमा तक होगा और हमारे पास कितना धन होगा? धन का मतलब शुभ तरीकों और साधनों से कमाया हुआ धन है। रिश्वत या अन्य बुरे मार्गों से कमाया धन का सम्बन्ध छठे घर से हो सकता है, किन्तु दूसरे घर से नहीं। मकान के बारे में कुछ संकेत इस घर से मिलते हैं, जैसे—मकान किस प्रकार का होगा, छोटा या बड़ा होगा? हम कितना ऐशो-आराम तलब कर सकते हैं, उससे भी यह घर सम्बन्ध रखता है। यह घर हमारे अंदर की नेकी-वदी, भीतरी ज्ञान, हमारा जो संसार से सम्बन्ध है, उस विषय की हमारी मोहमाया या हमारा दूसरों से काम निकलवाने का तरीका आदि का भी संकेत देता है। किसी सीमा तक मानसिक रूप से प्रेम भी इस घर से सम्बन्ध रखता है।

दूसरे घर का कारक बृहस्पति है, किन्तु कालपुरुष की जन्मकुंडली के अनुसार दूसरे घर में वृष राशि आती है। वृष शुक्र की राशि है। बृहस्पति इस घर का कारक होने के कारण यह घर भी हमारी आध्यात्मिकता के बारे में ज्ञानकारक है। इस ज्ञान का सम्बन्ध हमारे जीवन के पहले भाग से है, यानी 25 वर्ष तक की आयु। जीवन के इस भाग में जो ज्ञान हम प्राप्त करते हैं, उसका सम्बन्ध भी दूसरे घर से है। हमारे अपने भाग्य यानी संसार से जो धन-सम्मान हम प्राप्त करेंगे उसका भी सम्बन्ध इसी घर से है। इस दूसरे घर का सम्बन्ध मिट्टी यानी खेती आदि की भूमि से भी है। इसके अतिरिक्त उड़नशील पदार्थों पेट्रोल आदि गैसों का सम्बन्ध भी इस घर से है। हमारी अपनी कमाई से की हुई बचत के धन का और साथ ही अपनी पत्नी से मिला धन या आध्यात्मिक रूप से 'संन्यासी के धन' का कारक भी यही घर है अर्थात् जो धन शुभ साधनों द्वारा कमाया गया हो।

दूसरा घर हमारे जन्म-मरण का द्वार भी है। इसका कोई-न-कोई सम्बन्ध हमारे पिछले या अगले जन्म से भी है। यह सम्बन्ध फलकथन की राशि से कोई महत्त्व नहीं रखता। यह घर हमारे ससुराल का भी है। इसका मतलब ससुराल कैसी होगी, उसके साथ हमारे सम्बन्ध कैसे होंगे? यह बताने का काम भी दूसरे घर का है।

हम अपने घर में कोई जानवर पालते हैं, तो उसके बारे में भी इस घर से ही जाना जा सकता है। दूसरे घर को 'धर्म घर' की संज्ञा दी गई है। यह 'धर्म घर' का घर तो है लेकिन पूर्व समय में जहाँ गौ बाँधी जाती थी, उस जगह का सम्बन्ध भी इस घर से है। मनीप्लांट जैसे शाखा काटकर उगाए जाने वाले पौधों का सम्बन्ध भी दूसरे घर से है। दूसरे घर पर शुक्र का अधिकार है।

हमारे शरीर के अंगों में गर्दन और माथे की बीच के तिलक लगाने के स्थान का सम्बन्ध भी इस घर से है। यह घर हमारे परिवार से भी सम्बन्धित है। लेकिन यह युवावस्था के समय का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त हम अपने रिश्तेदारों से जो कुछ हासिल करेंगे या जो कुछ हमें उन्हें देना पड़ेगा उसका सम्बन्ध भी दूसरे घर से है। किसी सीमा तक आध्यात्मिक प्राप्ति का सम्बन्ध भी दूसरे घर से जुड़ा हुआ है। संभव है कि इस घर पर बृहस्पति का अधिकार होने से ही यह घर अध्यात्म का कारक बन गया है।

## कुंडली का तीसरा घर

यह घर हमारी शक्ति का प्रतीक है। बाजुओं का कारक भी यही घर है। इसके



अतिरिक्त आँखों की पलकों, यकृत तथा देह में रक्त की मात्रा तथा रक्त-दोपों का पता भी इस तीसरे घर से चलता है। हमारी आयु तथा युवावस्था से भी इस घर का सम्बन्ध है। यदि इस ग्रह में शुभ ग्रह स्थित हों, तो जातक युवावस्था में बहुत अधिक उन्नति करने में सफल होता है।

कुंडली के तीसरे घर का कारक ग्रह मंगल है। यहाँ पर पड़ने वाली मिथुन राशि का स्वामी बुध है, लेकिन इस घर में मंगल का अधिक प्रभुत्व होने से बुध यहाँ अच्छे फल देने में असफल रहता है। शायद इसका कारण यह है कि संगत का प्रभाव बुध में बहुत बड़ी खामी या कमजोरी पैदा कर देता है।

तीसरे घर से हम व्यक्ति की जिम्मेवारी जान सकते हैं। व्यक्ति में कितनी शूरता या बहादुरी है, इसका पता भी इसी घर से चलता है। यहाँ व्यक्ति की बहादुरी का मलतव है कि वह दूसरे लोगों की कहाँ तक मदद कर सकता है और दूसरे लोगों के बर्ताव में वह अपनी बहादुरी कहाँ तक प्रकट कर सकता है।

तीसरे घर का सम्बन्ध हमारे मकान में रखे हुए आराम के साधनों से भी है। यहाँ शुभ ग्रह होने से व्यक्ति के घर में आराम के साधन बहुतायत में होंगे। यदि अशुभ ग्रह यहाँ बैठा हुआ हो, तो आराम के साधनों में कमी आएगी। तीसरा घर हमारी शारीरिक जाग्रत अवस्था का घर है। यानी हममें किसी काम के विषय में कितना उत्साह-स्फूर्ति है या उदासीनता है, इसका अंदाजा इस घर से लगता है। यही घर हमारी दृष्टि में किस प्रकार की शक्ति है, इस बात का भी कारक है। इससे नजर लगने का मतलब नहीं है। इसका अर्थ केवल इतना ही है कि किसी व्यक्ति की दृष्टि की शक्ति कितनी प्रभावी है? यही घर चोरी या बीमारी का भी है। कुछ हद तक दूसरों के साथ हमारी शत्रुता का भी सम्बन्ध इस घर से है।

यह घर हमारे भाग्य के उतार-चढ़ाव को भी प्रकट करता है। भाग्य के दायरे में हम किस सीमा तक आगे बढ़ सकते हैं, नीचे गिर सकते हैं या किस्मत के दायरे में सिमटे रह जाते हैं, यह बात इस घर में ही स्पष्ट होती है। दिशा के अनुसार यह घर दक्षिण दिशा का कारक है। दक्षिण दिशा का कारकत्व इस घर को इसलिए मिला है कि इस घर का कारक मंगल जहाँ काफी बलशाली है, वहीं वह दक्षिण दिशा का भी कारक है। इसलिए तीसरे घर में मेष, वृश्चिक या मकर राशि का मंगल बहुत ही शुभ फल देने वाला होता है और इसी कारण व्यक्ति के घर का दरवाजा दक्षिण में होने पर भी इसका कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

इस घर का सम्बन्ध हमारे घर में रखे शस्त्रों, आयुधों से भी है। यदि यहाँ बहुत ही शुभ ग्रह हो, तो घर में बिना तेज धार के या टूटे हुए शस्त्रों का रखना अशुभ फलदायी होगा। जन्मकुंडली का तीसरा घर उसके सम्बन्धी या मित्र, धन या आर्थिक दशा के अनुसार किस योग्यता के होंगे—यह बात भी स्पष्ट करता है। यहाँ कोई शुभ ग्रह हो, मंगल यहाँ अच्छी हालत में हो, तो उनके भाइयों की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी।

तीसर घर व्यक्ति की माया के बाहर जाने का मार्ग है। वैसे बारहवाँ घर हमारे खर्च का घर है, किन्तु तीसरा घर भी अशुभ हो, तो आर्थिक हानि का सम्बन्ध इस तीसरे घर से रहता है। इसलिए इस घर को चोरी होने का घर भी कहा जाता है। तीसरे घर में हमें भाई-बहन आदि की दशा का ज्ञान भी होता है।

इसके अलावा साले-बहनोई के बारे में भी इस घर से बहुत कुछ जाना जा सकता

है। साले का कारक गहु तीसरे घर में हो, तो अपने साले से हमारे सम्बन्ध अच्छे रहेंगे और उससे किसी-न-किसी रूप में लाभ भी होगा।

तीसरा घर लड़ाई-झगड़े और लेन-देन का घर भी है। हमारे जीवन में लड़ाई-झगड़े की हालत क्या होगी, यह इस घर से जाना जाता है। हमारा दूसरों के साथ जो आर्थिक लेन-देन होगा, उसके शुभ-अशुभ परिणामों का पता भी इस तीसरे घर से ही लगेगा।

तीसरे घर का सम्बन्ध मृत्युपूर्व अवस्था से भी है। वैसे मौत का घर आठवाँ है, लेकिन तीसरा घर मौत की हालत को बयान करता है और मौत से पहले के समय को उजागर करता है, अतः तीसरे घर का सम्बन्ध मृत्यु से जुड़ा हुआ है। फलदार वृक्षों का कारक भी यह घर है। यहाँ शुभ ग्रह होने पर घर में फलदार वृक्षों का होना अच्छा फलदायी होगा। किन्तु यह घर अशुभ या खराब हो, तो घर में फलदार वृक्ष लगाना अशुभ फलदायी रहेगा।

## कुंडली का चौथा घर

चौथे घर का रात्रि से गहरा सम्बन्ध है। इस घर में शुभ ग्रह हों, तो रात्रि में किए कार्यों का पूर्ण फल प्राप्त होता है। इस घर में स्थित शुभ ग्रह हमारे जीवन में आने वाली कठिनाइयों के समय जाग्रतावस्था में रहकर हमारी सुरक्षा करेंगे।

धन-संपदा के सम्बन्ध में भी यह चौथा घर हमारे पूर्व जन्म से लाई हुई बंद मुट्ठी का कारक है। पूर्व जन्म के अनुसार हमारा जो भाग्य है, उसके फल की प्राप्ति का सम्बन्ध भी चौथे घर में रहता है।

कुंडली के चौथे घर का स्वामी तथा कारक ग्रह चंद्र है। इस घर में चंद्र उच्च फल देता है। चंद्र या बृहस्पति का चौथे घर में होना अपने आप में शुभ है। प्राचीन ज्योतिष में चौथा घर माता का माना गया है, तो लाल किताब के अनुसार चौथा घर पिता का होता है। पिता से क्या मिलेगा? उसकी दशा का जायजा चौथे घर से मिलता है। पिता के साथ हमारे सम्बन्ध कैसे रहेंगे इसके संकेत भी चौथा घर देता है।

जन्मकुंडली का चौथा घर पानी रखने के स्थान से सम्बन्धित है। नल, कुआँ आदि का कारक चौथा घर है। हमारी शारीरिक दृष्टि से हमारे शरीर में सर्दी-गर्मी की जो तासीर है, उसका सम्बन्ध भी इस चौथे घर से रहता है। हमारे मन की शांति का चौथे घर से विशेष सम्बन्ध है। यहाँ पर अशुभ ग्रह होने से मन की शांति पर बुरा असर पड़ता है। कई बार यह बात देखने में आती है कि सब कुछ होते हुए भी मन की प्रसन्नता विचलित रहती है। समस्या न होते हुए भी मन उदास रहता है।

चौथे घर का सम्बन्ध हमारी आयु के दूसरे भाग यानी 25 वर्ष से 50 वर्ष की आयु से है। अपने गृहस्थ जीवन और युवावस्था के समय में हम किस सीमा तक लाभान्वित हो सकते हैं, की जानकारी चौथे घर से प्राप्त होगी। यह घर हमारे भाग्य से जुड़ा हुआ है। पिछले जन्म के कर्मों का फल इस जन्म में कितना मिलेगा यह भी चौथे घर से स्पष्ट होता है।

दिशा के हिसाब से चौथा घर पूर्व और उत्तर दिशा का कारक है। हमारे कार्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में भी चौथा घर संकेत करता है। कपड़े, पानी और दूध के व्यवसाय से यह घर जुड़ा हुआ है। चौथे घर में चंद्र हो, तो खर्च करने पर बढ़ने वाला 'आमदनी का दरिया' चौथा घर है। चौथे घर में शुभ ग्रह होने पर कपड़े के व्यवसाय में लाभ मिलता है, बशर्ते



कि दसवें घर में कोई अशुभ ग्रह न हो। इसके पीछे तर्क यह है कि चौथे घर की सातवीं दृष्टि दसवें घर अर्थात् हमारे कर्म घर पर पड़ती है।

चौथा घर हमारी आमदनी के उपायों से जुड़ा हुआ है। जीवन में हम जो कमाएँगे उस कमाई का प्रवाह किस ओर से किस रूप में हमारे जीवन में बहेगा, इसका निर्देशन यही करेगा। यह घर हमारी गर्भावस्था या माता के पेट से सम्बन्धित है। माता के गर्भ से बाहर आने पर शैशवकाल का प्रतिनिधित्व भी चौथा घर करता है। चंद्र के दुर्बल होने की अवस्था में शैशवकाल में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।

चौथा घर हमारी माता से सम्बन्धित है। यहाँ खराब ग्रह होने पर माता के लिए अशुभ है। माता का मन अशांत एवं स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। यहाँ राहु-शुक्र हो, तो माता की सेहत पर बुरा असर होता है। इस घर में मंगल और केतु भी माँ के स्वास्थ्य को बिगाड़ते हैं। माता के भाई-बहन, माता के माता-पिता यानी नाना-नानी का भी सम्बन्ध इस घर से है। यहाँ पर अशुभ ग्रह होने पर माता पर उसका बुरा असर होता है। कई बार यहाँ बैठा नीच मंगल मामा की मौत का कारण बन जाता है या उसके जीवन में कई कठिनाइयों का कारक बनता है।

चौथा घर पानी में रहने वाले जीव-जंतु, दूध देने वाले पशु, जैसे—गाय, भैंस, बकरी आदि से भी सम्बन्ध रखता है। वाहन के सम्बन्ध में यह घर घोड़े का कारक है।

चौथा घर लक्ष्मी का निवास भी है। यानी व्यक्ति के धन-संग्रह का घर! इस घर में शुभ ग्रह हो, तो मकान के उसी भाग में धन रखने से काफी शुभ रहता है। किस साधन से हम धन कमाएँगे और कितना जोड़कर रखेंगे, इस बात का संकेत चौथा घर करता है।

पौधों और दरख्तों में रसभरे फलों के वृक्षों का कारक भी चौथा घर है। तरबूज, आम, अंगूर, अन्नास जैसे रसभरे फलों का कारकत्व इस चौथे घर के पास है।

शरीर के अंगों में से छाती और दिल का ताल्लुक चौथे घर के साथ जुड़ा हुआ है। मुख्य रूप-से चौथे घर में अशुभ ग्रह आने से दिल की बीमारी हो सकती है। स्त्री की जन्मकुंडली में चौथा घर नाभि या पेट के अंदरूनी हिस्से से सम्बन्ध रखता है। स्त्री की जन्मकुंडली में चौथे घर में अशुभ ग्रह रहने से प्रसव के समय में या गर्भावस्था के दिनों में स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

## कुंडली का पाँचवाँ घर

हमारे भाग्य की चमक-दमक कैसी रहेगी? इस बात का ज्ञान हमें इसी घर से प्राप्त होता है। पाँचवें घर में अच्छा फल होने पर जातक अल्प-श्रम से बहुत उन्नति करता है। यहाँ अशुभ ग्रह होने पर लाख श्रम के बावजूद भी उन्नति नहीं होती। यह घर हमारा भाग्य का पैमाना है।

पाँचवाँ घर औलाद का घर भी कहा गया है। लाल किताब के अनुसार हमें अपने पुत्र से क्या मिलेगा? यह बात इस घर से निर्देशित होती है। बेटी बाप को क्या देगी? इस प्रश्न के उत्तर का सम्बन्ध इस पाँचवें घर से नहीं है। जहाँ से वायु और प्रकाश हमारे मकान के अंदर आता है उस हिस्से का पाँचवें घर से सम्बन्ध है। पाँचवाँ घर हमारी मानसिक चेतना का प्रतीक है। हमारे मन में किस सीमा तक ईमानदारी है, इस बात का संकेत भी पाँचवाँ घर करता है। जमाने में हमारा नाम और जनमानस में हमारा कितना और

कैसा सम्मान होगा, यह बात भी इस घर से सम्बन्ध रखती है। कुछ अंशों में हमारी उन्नति और कमाई का भी सम्बन्ध इस घर से जुड़ा हुआ है।

दिशा बोध के अनुसार यह घर हमारे अपने घर की पूर्व दिशा की दीवार का कारक है। यहाँ शुभ ग्रह हो, तो घर की पूर्वी दीवार के पास उस ग्रह की चीज स्थापित करने से लाभ मिलेगा।

यह घर विद्या से भी सम्बन्ध रखता है। विद्या से सम्बन्धित पुस्तकों-कापियों-ग्रंथों आदि का इस घर से लगाव है। यह घर अपनी विद्या और शिक्षा के आधार पर कमाए धन का द्योतक है। किसी सीमा तक औलाद द्वारा कमाए धन का सम्बन्ध भी इस घर से है।

यह घर भविष्य का कारक है। आने वाले कल से तात्पर्य यहाँ अगले जन्म से है। हमारे जीवन में इस घर में बैठे ग्रह का असर औलाद की पैदाइश से लेकर बुढ़ापे तक रहता है। कौन देवी-देवता हमारा कल्याण करेंगे, इसका बोध भी इसी घर से होता है।

यह घर ज्ञान का मंदिर है। यहाँ बैठकर ज्ञान प्राप्त किया जाता है। ज्ञान की पुस्तकें-ग्रंथ पढ़े जाते हैं, मनन-चिंतन किया जाता है और यहाँ बैठकर ही उपदेश भी दिया जाता है। जिन पौधों की पौध लगाई जाती है, ऐसे पौधों का कारक यही घर है। अपनी औलाद के सम्बन्ध में एवं उसके मकान के सम्बन्ध की जानकारी भी यही घर देता है।

शरीर के अंगों में से पेट का सम्बन्ध इस घर से है। आध्यात्मिक प्रगति का भी सम्बन्ध इस घर से जुड़ा हुआ है। यह घर औलाद के पैदा होने से भी सम्बन्ध रखता है। हम दूसरों से क्या प्राप्त करेंगे, इसका सम्बन्ध भी यह घर रखता है।

## कुंडली का छठा घर

इस घर को गृहस्थी का शिवाला कहा गया है। अपना गृहस्थ जीवन चलाते हुए भी अपने जीवन में साधुपन निभा सकते हैं। दूसरों के साथ धर्मात्मा जैसा व्यवहार जो हम करते हैं, उसका संकेत भी यह घर देता है।

हमारे शरीर के अंगों में से खाने की चीजों को पचाने की शक्ति का सम्बन्ध इस घर से ही है। हमारे शरीर में स्थित खुश्की या गर्मी-सर्दी की मात्रा का सम्बन्ध भी इस घर से है। यह घर हमारी बुद्धि का भी है। इसी कारण कुछ चीजों को बिना तर्क के जान लेना फायदेमंद रहता है। इस घर का सम्बन्ध हमारी दूरदर्शिता से भी है।

भाग्य के सम्बन्ध में यह घर हमारे भाग्य के उतार दिखलाने वाला है। यहाँ बैठे ग्रह का सम्बन्ध भाग्य की चमक-दमक या किस्मत की ऊँचाई से नहीं रहता। हमारे भाग्य से जन्म स्थिति के अनुसार हमारे जीवन में आने वाली गिरावट का मापदंड यह घर है।

दिशाओं की दृष्टि से यह घर उत्तर दिशा का कारक है। हमारे व्यापार-व्यवसाय से भी यह घर सम्बन्ध रखता है। बुध का पक्का घर होने से इस घर को व्यापार से सम्बन्धित माना गया है।

छठे घर में हमारे सम्बन्धियों की आर्थिक स्थिति का पता चलता है। हमारे सम्बन्धी हमारे जीवन में कितना सहयोग देंगे, हमारे साथ उनका बर्ताव कैसा रहेगा, वे हमारे काम आएँगे या हमारी हानि करेंगे, इन बातों की जानकारी हमें इसी छठे घर से प्राप्त होगी।

जानवरों के सम्बन्ध में कुत्ता और बकरी का सम्बन्ध इस घर से है। इस घर में बुध हो, तो बकरी, तोता-मैना पालना शुभ रहेगा।



हमारे गृहस्थ में परिवारजनों के बारे में भी विशेष संकेत यह घर देता है। यह घर हमारे पुत्र-पुत्रियों के सम्बन्धियों से भी सम्बन्धित है। इस घर में शुभ ग्रह होने पर लड़के या लड़की के ससुरालवालों से मधुर सम्बन्ध रहेंगे।

यह घर साग-सब्जी एवं फूलों का कारक है। मकानों के संदर्भ में यह घर हमारे नाना के घर से या भानजे के मकान से सम्बन्ध रखता है। इस घर में शुभ ग्रह होने पर निःसंदेह हमारे नाना और भानजे का घर बहुत अच्छा और सुंदर होगा।

शारीरिक अंगों में कमर और पुट्ठों से इस घर का गहरा सम्बन्ध है। हमारे शरीर की नाड़ियों से भी यह घर जुड़ा हुआ है। हमारे मरने के बाद हमारे पीछे सम्बन्धियों या परिवार की हालत क्या होगी, इसका संकेत भी इस घर से मिलता है। घर के सदस्यों की संख्या का फैसला यह घर ही करेगा। रोगों का सम्बन्ध भी इस घर से है।

इस घर का कारक बुध है और मालिक भी बुध ही है। ढलती उम्र का कारक भी यह घर है। जीवन में दैविक सहायता किस हद तक हमें प्राप्त होगी इसका संकेत भी यही घर देता है।

## कुंडली का सातवाँ घर

इस घर का सम्बन्ध हमारे सांसारिक मान-सम्मान, हमारी बुद्धि एवं आयु से है। लाल किताब के लेखक के अनुसार इस घर का व्यवसाय आदि से गहरा सम्बन्ध है। वस्तुतः कृषि-कार्य भूमि से उत्पन्न हुई चीजें, जैसे—अनाज, फल, सब्जी आदि के व्यापार का भी यह विशेष घर है। अपनी या पराई संपत्ति का ज्ञान भी इसी घर के द्वारा होता है। बुध-शुक्र, ये दोनों ग्रह इस घर के कारक हैं।

दुनिया में अपने काम, अपनी जायदाद के लिए हम कितनी जद्दोजहद करेंगे, इसका पता यह घर देता है। हमारी अपनी मेहनत एवं कोशिशों से प्राप्त जायदाद का सम्बन्ध भी इस घर से है। सातवाँ घर विशेष रूप-से पत्नी का कारक है।

कालपुरुष की जन्मकुंडली के अनुसार यहाँ शुक्र की राशि तुला का निवास है। बुध भी इस घर का कारक होने के कारण लड़की, पोती एवं बहन का सम्बन्ध भी इस घर से है। फलादेश के समय बुध यदि सातवें घर में हो, तो बहन और बुआ के विषय में अधिक जानकारी मिलेगी। ऊपर की तरफ जिनके सींग उठे हुए नहीं होते ऐसे सभी पशु इस घर से सम्बन्ध रखते हैं।

हमारे जन्म घर का अता-पता भी इस घर से मालूम होता है। इस घर का सम्बन्ध हमारी जेब के पैसों से भी है। बिना कमाए बुजुर्गों से मिला धन, बचत करके जमा किए गए धन का द्योतक भी यह घर है।

गूदे वाले फल के वृक्ष इस घर से सम्बन्ध रखते हैं। मकान के हिसाब में यह घर हमारी लड़कियों के रिश्तेदारों के मकान की हालत बयान करता है। स्त्री के मायके के मकान की हालत भी यह घर बताता है।

हमारे शारीरिक अंगों में शरीर की त्वचा का इस घर से विशेष सम्बन्ध है। शुक्र के त्वचा का कारक होने से किसी-न-किसी तरह के त्वचा रोग होने की संभावना रहती है। कुछ सीमा तक पैरों का सम्बन्ध भी इस घर से रहता है। स्त्री के उरोजों से भी इस घर का विशेष सम्बन्ध है। विवाह कितने होंगे, इस बात की जानकारी इसी घर से प्राप्त होती है।

इस घर में बैठे ग्रह, उनकी शुभ-अशुभ स्थिति से पिछले जन्मों से अपने साथ लाए भाग्य का स्वरूप जाना जा सकता है। आपकी किस्मत की जानकारी भी यह घर देता है। हम कौन-कौन से क्षेत्रों में अपने पैर मजबूती से जमा सकते हैं, इसकी जानकारी इसी घर से मिलेगी।

दिशाओं की दृष्टि में यह घर दक्षिण-पश्चिम दिशा का द्योतक है। सातवें घर में कोई शुभ ग्रह हो, तो दक्षिण-पश्चिम दिशा का मकान सुख दे सकता है। अपने घर की दक्षिण-पश्चिम दिशा में उस ग्रह की चीजें दवाना फायदेमंद रहता है।

## कुंडली का आठवाँ घर

हमारी मृत्यु किस प्रकार होगी? इस बात की जानकारी इस आठवें घर से मिलती हैं। लाल किताब के लेखक ने इसे मुसीबतों का घर तथा वैदिक ज्योतिष में इस घर को मौत का घर कहा है।

दूसरों के साथ दुश्मनी और बीमारी पर भी यह घर रोशनी डालता है। विषैले जीव-जन्तु के विष एवं काटने का कारक भी यह आठवाँ घर है। ऊँट आदि का सम्बन्ध भी इस घर से है।

शरीर के अंगों में यह पीठ के भाग का कारक है। पीठ की पीड़ा एवं दर्द तथा पीठ की अन्य व्याधियों के बारे में भी इस घर की हालत से अंदाजा लगाया जा सकता है। हमारे शरीर की त्वचा का एवं चर्बी का घर भी यही है। रोग का प्रारंभ, रोग का कारण भी यही घर है। पूर्व जन्म के रोगों एवं अच्छे-बुरे सम्बन्धों के शुभ/अशुभ फलदेशों का ज्ञान भी इस घर से होता है।

हमारे मकान में यह घर आग और छत का है। शारीरिक अंगों में यह घर मेदे में पित्त एवं पाचन-प्रक्रिया का है। जीवन में दूसरी औरतों या पत्नी के सम्बन्धों से यह घर जुड़ा हुआ है। दूसरी औरतों के साथ क्या और कैसे सम्बन्ध रहेंगे? उनके बारे में प्रतिविंब दिखाने वाला यह दर्पण है।

यह घर आयु से सम्बन्ध रखता है। साधुपन की संभावना यही घर पैदा करता है। उपदेश या संचरण अवस्था का भी यही घर है।

हमारे भाग्य के हिसाब से यह घर किस्मत के धोखे, गड्ढे और धक्के दिखाता है। हम अपने जीवन में किस हद तक प्रयत्नशील रहेंगे, इसका ज्ञान इस घर से होता है।

दिशाओं की दृष्टि से यह घर हमारे मकान की दक्षिणी दीवार का कारक है। हमारे घर के उस हिस्से से भी यह सम्बन्धित है जहाँ दवाइयाँ आदि रखी जाती हैं।

आर्थिक विषय में इनकी स्थिति का परिचायक भी यही घर है। हमारी आर्थिक हानि कितनी होगी या हमारे धन का उपयोग दूसरों द्वारा कितना होगा, इससे भी यह घर सम्बन्धित है।

हमारा कार्यक्षेत्र या हमारा मकान कैसा होगा—यह बात भी इस घर से मालूम होती है। हमारा मकान और कार्यक्षेत्र दुःख भरा होगा या बूचड़खाने जैसा, श्मशान जैसा वीरान होगा या किसी अच्छी जगह पर रौनकदार होगा, इसकी जानकारी हम इस घर से प्राप्त कर सकते हैं। हमारी पूर्णायु कितनी होगी इस प्रश्न का उत्तर भी यही घर होगा। फल-फूलवाले वृक्षों का इस घर से विशेष सम्बन्ध रहता है।



## कुंडली का नौवाँ घर

कुंडली का यह नौवाँ घर हमारे जीवन की व्यस्तता और संघर्ष का प्रारूप है। हमारी व्यस्तता शुभ कामों के लिए खर्च होगी या जीवन का काफी समय बेकार की बातों में बीतेगा, इसका पता यह नौवाँ घर ही देता है।

यह घर हमारे बुढ़ापे और उम्र से भी जुड़ा हुआ है। हमारी किस्मत की बुनियाद यह घर है। हमारी किस्मत की बुनियाद कितनी पक्की या कच्ची है, यह भी यही घर बताता है। इस घर की शुभ स्थिति हमारे भाग्य की कारक है। हम जहाँ बैठकर अपना कार्य करते हैं या वैद्य-हकीम जहाँ बैठकर अपना काम करते हैं, उसका कारक भी नौवाँ घर है।

हमारे मकान के भीतरी हिस्से में, हमारे बुजुर्गो के घर से, इस घर का सम्बन्ध है। हमारे मकान के अंदर का नाप भी इसी घर से जाना जाता है। हमारी मानसिक जागरूकता का कारक यह घर है। आध्यात्मिक साधन का पता भी इसी घर से लगाया जा सकता है। इसी घर से यह भी जाना जा सकता है कि उसकी आध्यात्मिक प्रगति कितनी होगी। कर्म-धर्म, परोपकार का ज्ञान का भी यह घर है। पहला घर केवल पचीस प्रतिशत परोपकार का है, तो यह नौवाँ घर पचहत्तर प्रतिशत का है।

वृक्षों और पौधों की दृष्टि से वृक्ष या पौधे की जड़ का सम्बन्ध इस घर से है। भूमि के अंदर फैलने वाली जड़ों से इस घर का सम्बन्ध है। मकान के हिसाब से यह घर बुजुर्गों के घर का कारक है।

शारीरिक अंगों में से नाक के नथुने और शरीर के अंदर के वीर्य का कारक भी यह घर है। पूर्व जन्म के अनुसार जो लेना-देना होगा उसका आधार यह घर है।

हम अपने बाप-दादा-पुरखों से क्या प्राप्त करेंगे? इसका उत्तर इसी घर से मिलेगा। हमारे बीते जमाने, भूतकाल का कारक भी यह घर है। हमारे पिछले जन्म का कच्चा चिट्ठा यह घर ही पढ़ सकता है। हमारे बचपन का सरोकार भी इसी घर से है।

यह घर हमसे आयु में बड़े-बुजुर्गों का है। ये बुजुर्ग हमारे रिश्तेदार भी हो सकते हैं तथा अन्य भी। इनसे हमें कितना लाभ होगा, इसका ज्ञान हमें नौवें घर से होगा। हंस, बुलबुल, नीलगाय और पानी एवं खुश्की (सूखे) पर चलने वाले पशुओं का इस घर से विशेष सम्बन्ध है। हमारे घर में या हमारे जीवन में धर्म घर कैसा रहेगा या हम अपना धर्म घर कैसा रखेंगे, इसके बारे मे इसी घर से जाना जा सकेगा। हमारे बुजुर्गों की हालत कैसी रही होगी या उनके जीवन के अंत तक कैसी रहेगी, इसका पता भी नौवें घर से ही चलता है।

## कुंडली का दसवाँ घर

दसवें घर से हमें इस प्रश्न का उत्तर मिलता है कि हमारी शोहरत कम होगी या उस पर कोई दाग लगेगा? इस घर में शुभ ग्रह होने से पिता की हालत अच्छी रहेगी और अशुभ ग्रह होने से हालत खस्ता होगी, इसका सम्बन्ध इसी घर से है। पहले जन्म के अनुसार खुराक तथा दौलत की जो मात्रा हम लेकर आए है, उसका सम्बन्ध भी इस घर से है।

कुंडली का यह दसवाँ घर दुनियादारी से हमारा सलूक बताने वाला भी है।

व्यापार-व्यवसाय, नौकरी में जिनसे हमारा वास्ता पड़ता है, उनसे हमारा वर्ताव कैसा रहेगा, यह ज्ञान इस घर से प्राप्त होता है।

मकान के भीतरी हिस्सों में या घर मकान में लगे काष्ठ-लोहा, ईंट-पत्थर तथा मलवे से सम्बन्ध रखता है। हमारी शारीरिक शक्ति और स्वास्थ्य से भी इस घर का सम्बन्ध है। रोगों में काली खाँसी का विशेष सम्बन्ध इस घर से है। स्वभाव की चालाकी, चतुराई, दूसरों को धोखा देने की सीमा आदि का कारक भी यह घर है।

हमारी आयु के चौथे और आखिरी भाग का कारक भी यह घर है। हमारे जीवन का अंतिम समय कैसे गुजरेगा—यह हम इस घर में बैठे शुभ-अशुभ ग्रहों से जान सकते हैं। इस घर की हालत अच्छी होने से आसानी से हम अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे, इसकी झलक हमें इसी घर में मिलेगी।

दिशाओं की दृष्टि से दसवाँ घर पश्चिम दिशा का कारक है। इस घर का विशेष सम्बन्ध हमारी खुराक, खाने-पीने की चीजों तथा मशीनों से है। धन के अतिरिक्त पिता की जायदाद का लेखा-जोखा भी यह घर देगा। पिता के सुख-दुःख के बारे में यह सब कुछ बताता है।

पशुओं की दृष्टि से मगरमच्छ या सर्प से इस घर का सम्बन्ध है। पूँछ वाले सभी पशु भी इस घर के संपर्क में आते हैं। जीवन के मैदान में इस घर को 'ठगी का दरवाजा' कहते हैं। हम धन कमाने या अपनी उन्नति साधने के लिए किस हद तक दूसरों को धोखा दे सकते हैं, इस बात का ज्ञान इस घर से होगा। हमारा भाग्य कैसा होगा, यह बात भी इसी घर से ज्ञात हो सकती है।

बबूल जैसे काँटे वाले वृक्ष इस घर से सम्बन्धित हैं। दसवें घर का कारक शनि है और बबूल आदि काँटेदार पेड़ शनि के कारक हैं। तीन वर्ष से अधिक समय में बने मकान का कारक यह घर है। यदि किराये का मकान हो और उसमें हम बीस वर्ष से अधिक समय से रह रहे हैं, तब भी वह मकान इसी घर के अन्तर्गत आता है।

शारीरिक अंगों में हमारे घुटने या शरीर के पूरे अस्थि-पिंजर का कारक यह घर है। जादू-टोना तथा दुनियावी क्षेत्र में हमारी अंदरूनी सियासत का भी गहरा सम्बन्ध इस घर से है।

## कुंडली का ग्यारहवाँ घर

कुंडली का ग्यारहवाँ घर हमारे भाग्य का शिखर है। अपने भाग्य को लेकर हम अपनी जिंदगी में किस ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं, इसका जवाब सिर्फ ग्यारहवाँ घर ही दे सकता है। अगर सातवाँ घर भाग्य के फैलाव का है, तो ग्यारहवाँ घर उसकी बुलंदियों का है। हमारी आर्थिक स्थिति कैसी रहेगी, इसका ज्ञान भी हमें ग्यारहवें घर से ही होगा।

ग्यारहवाँ घर लाभ का घर भी है। इस घर को 'लालच का घर' भी कहा गया हैं। हम अपने स्वार्थ के लिए किस हद तक लालची बन सकते है? दूसरों से लाभ उठाने के लिए उनकी हानि की चिंता किए बिना कितने आगे बढ़ सकते हैं? इन दोनों प्रश्नों के उत्तर देने में यह घर सक्षम है।

हमारे मकान की बाहरी शोभा का कारक भी यह घर है। बाहर से देखने पर मकान अच्छा लगता है, अमीर आदमी का लगता है या गरीब आदमी का? इस बात का कारण ग्यारहवाँ घर है।



हमारे जिस्म की ताकत, हम किस हद तक अपना फर्ज पूरा करने में लापरवाह हो सकते हैं? इनका उत्तर ग्यारहवें घर में मिलता है। इस घर में कोई अशुभ ग्रह बैठा हो, तो सुस्ती और लापरवाही के कारण जीवन में आए शुभ अवसरों को हम खो देते हैं। हममें कितनी शुभता और कितनी अशुभता है? इन सब बातों का खुलासा ग्यारहवें घर से मिलता है। हमारी जिंदगी की आखिरी अवस्था का सम्बन्ध भी इसी घर से है। 75 वर्ष की आयु के बाद के जीवन का जो भाग है, उसका हाल इसी घर में मिलता है।

पशुओं के सम्बन्ध में दो मुँहे सर्प का कारक यह घर है। हमारे रोजी कमाने के क्षेत्र, कमाई के साधन आदि का कारक भी यह घर है। हमारा धर्म की ओर नैसर्गिक झुकाव कितना रहेगा? हम आस्तिक होंगे या नास्तिक? इनका ब्यौरा हमें ग्यारहवें घर से मिलेगा। धार्मिक होने से आर्थिक हिसाब-किताब में कितना नफा या नुकसान होगा, इसकी रूपरेखा का संकेत हम इस घर से प्राप्त किया जाता है।

यह घर हमारे खरीदे हुए मकान का कारक है। मकान न हमें बुजुर्गों से मिला, न ही हमने बनवाया। यह मकान बना-बनाया ही हमने खरीदा। उसका प्रतीक यह ग्यारहवाँ घर है।

शारीरिक अंगों में यह घर हमारे माथे एवं गुदा के ऊपरी भागों से सम्बन्धित है। दिशाओं की दृष्टि से यह घर हमारे घर की पश्चिमी दीवार का कारक है, जो दुनिया के भले के लिए काम आ सके, ऐसे सामानों का यह घर है। यह हमारी आमदनी का घर है। कितना धन हम अपने प्रयत्नों से कमाएँगे, उसके बारे में इस घर से जाना जा सकता है। संसार के अंदर प्रविष्ट होने का यह घर प्रवेश द्वार है। हमारे जन्म समय में हमारे माता-पिता की हालत पर रोशनी भी इसी घर से पड़ती है। इस घर में अशुभ ग्रह बैठे हों, तो हमारे जन्म समय में हमारे माता-पिता की आर्थिक अवस्था कमजोर ही रही होगी।

## कुंडली का बारहवाँ घर

बारहवाँ घर हमारे स्वप्नों का महल है। हमारे सोने तथा आराम से इस घर का गहरा सम्बन्ध है। पड़ोसी से हमें दुःख मिलेगा या सुख—इस बात का ज्ञान भी यह घर कराता है। मकान के संबध को लेकर यानी पड़ोसी का घर कैसा होगा, इसका उल्लेख भी यह घर करता है।

कुंडली का बारहवाँ घर हमारे मस्तिष्क में अचानक उत्पन्न होने वाले विचारों से सम्बन्ध रखता है। आशीर्वाद या शाप का सम्बन्ध भी इस घर से है। इस घर की हालत अच्छी होने पर किसी को दिया आशीर्वाद खरा उतरेगा। इस घर की दशा अशुभ होने पर किसी को दिया शाप सच होगा।

हमारे मकान के अंदर के हिस्से में यह घर इस बात का प्रतीक है कि इस मकान के अंदर कितनी रौनक होगी? कितनी खुशियाँ उस मकान में होंगी? अशुभ दशा में यह सुंदर मकान भी वीराना लगेगा। यह घर बिना सोचे-समझे किए खर्च का है। पारंपरिक ज्योतिष में भी इस घर को व्यय का घर माना गया है। इस घर की हालत में हम कितने फिजूलखर्च या कंजूस हैं, इसका पता चलता है। साथ ही हमारे घर में होने वाली बरकत का इशारा भी यह घर करता है।

जानवरों में बिल्ली, चमगादड़ एवं मछली से इस घर का सम्बन्ध रहता है। यह घर साधु और समाधि का भी है। इस घर की अच्छी अवस्था हमें ध्यान मार्ग में सफलता देगी। छिलकेदार वृक्षों का कारक यह घर है।

यह घर दूसरों की खुशामद या चापलूसी करने की माया को जाहिर करता है। साथ ही दूसरों से हमें सम्मान मिलेगा या बदनामी मिलेगी, इसका भी संकेत यह घर देता है।

भाग्य के सम्बन्ध में हम अपने भाग्य के अनुसार कितना सुख-दुःख भोगेंगे, इसका जिक्र भी यह घर करता है। जीवन के अंतिम समय को यह घर सूचित करता है।

दिशाओं के सम्बन्ध में यह घर दक्षिण-पूर्व दिशा का कारक है। धन के बारे में इस घर का विशेष सम्बन्ध माया से भी है। हम स्त्री से और स्त्री अपने पति से कितना सुख प्राप्त करेगी, आपसी सम्बन्ध कैसे रहेंगे? इसका हिसाब-किताब इसी घर से मिलता है। हम आने वाले जीवन में या अगले जीवन को कैसे जीएँगे, इस पर यह घर प्रकाश डालता है।

## विशेष ज्ञातव्य

हरेक ग्रह उसकी अपनी राशि में, भले ही वह राशि अन्य ग्रह की कारक क्यों न हो, शुभ फल ही प्रदान करेगा। हर ग्रह के कारक ग्रह, स्थायी घर, उच्च-नीच आदि निश्चित हैं। फिर भले ही वह ग्रह 'अतिथि' बने या किरायेदार! ग्रह का समय पूरा होने पर ग्रहरूपी प्रकाश लोप हो जाएगा।

ग्रह जिस घर में बैठा होगा, उस ग्रह की चीजें स्थापित करने से उसका प्रभाव बढ़ेगा। उदाहरण के लिए केतु नौवें घर में बैठा हो, तो कुत्ता पालने से केतु के प्रभाव में वृद्धि होगी।

नैसर्गिक जन्मकुंडली में शुक्र की राशि रहती है एवं दूसरा घर वृहस्पति का कारक है। यहाँ शुक्र बैठा हो, तो उसके शुभ फल प्राप्त होंगे।

तीसरे घर में बुध की राशि रहती है। तीसरा घर मंगल का कारक है। मंगल शुभ हो, तो यहाँ बुध का शुभ फल प्राप्त होगा।

चौथे घर में चंद्र की राशि कर्क आती है। राशि स्वामी चंद्र है। यहाँ राहु का अशुभ फल नहीं मिलता।

वर्ष कुंडली में राहु चौथे घर में बैठे तो राहु के कार्य—मकान की छत बदलना, कोयले की बोरियों का संग्रह करना, नया पाखाना बनवाना, काले आदमी को साझेदार बनाना जैसे काम नहीं करने चाहिए अन्यथा झगड़े होते रहेंगे।

पाँचवें घर में सूर्य की राशि सिंह रहती है। इस घर के कारक ग्रह वृहस्पति तथा सूर्य हैं। इस घर में इसके शुभ फल ही प्राप्त होंगे।

छठे घर में केतु की राशि कन्या पड़ती है। यह केतु का कारक घर है। यहाँ बुध के शुभ फल मिलते हैं। यहाँ केतु होने पर उसकी चीजों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बुध-केतु साथ में बैठे हों, तो बुध के अच्छे और केतु के बुरे फल प्राप्त होंगे।

सातवें घर में शुक्र की राशि तुला रहती है। यह घर शुक्र एवं बुध का कारक घर है। यहाँ शुक्र के शुभ फल मिलते हैं एवं बुध दूसरे ग्रहों की सहायता करता है।

आठवें घर में मंगल की राशि वृश्चिक रहती है। यह मंगल, शनि एवं चंद्र का कारक घर है। ये तीनों ग्रह जन्मकुंडली में अलग-अलग घरों में बैठे हों, तो अच्छा फल प्राप्त होता है। संगठित होने पर अशुभ फल देते हैं। वर्षफल में आठवें घर में अशुभ ग्रह आने पर उसके अशुभ फल ही मिलेंगे।

लाल किताब के अनुसार नौवाँ घर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। सारी जन्मकुंडली के



फल को नौवाँ घर प्रभावित करता है। जातक के पुरुषार्थ रूपी कर्मों का अंतिम निर्णय भाग्य से ही होता है। काल के तीनों खंडों में भूतकाल इस घर का विषय है।

नौवें घर में बृहस्पति की राशि धनु पड़ती है। इसका कारक बृहस्पति है तथा शनि राशिफल का है और बृहस्पति ग्रहफल का। शनि का कोई उपाय नहीं, बृहस्पति का उपाय है। इस घर में बृहस्पति और सूर्य के अच्छे फल प्राप्त होते हैं। भूमि के नीचे रहने वाली वनस्पति का यह कारक घर है।

दसवाँ घर विश्वासघाती माना जाता है। इस घर में बैठे ग्रह विश्वासघाती होते हैं। विश्वासघाती ग्रह दूसरे एवं ग्यारहवें घर में लाभदायक बनते हैं।

ग्यारहवाँ घर वृहस्पति का स्थायी घर है। यहाँ शनि शुभ फल देता है। शनि के अलावा काफी ग्रह अशुभ फल प्रदान करते हैं। ग्यारहवें घर में शनि की राशि कुंभ पड़ती है। इस घर का कारक ग्रह शनि है।

जन्मकुंडली में शुभ या अशुभ ग्रह जब खुद की अपनी राशि में या कारक घर में आते हैं, तब शुभ फल प्रदान करते हैं।

जन्मकुंडली में बैठा उच्च ग्रह जब वर्ष जन्मकुंडली में भी उच्च का होकर बैठे, तब उच्च शुभ फल देता है। वृहस्पति जन्मकुंडली में उच्च का हो और वर्ष जन्मकुंडली में दूसरे या चौथे घर में हो, तब शुभ फलप्रद होगा।

सूर्य, चंद्र, मंगल ये पुरुष ग्रह दिन में, बुध, शनि, राहु, केतु ये नपुंसक ग्रह सवेरे एवं शाम को प्रभावी बनते हैं।

कोई भी अशुभ या शुभ ग्रह चाहे जिस घर में बैठा हुआ हो, वह निम्नानुसार अन्य घरों में भी फलदायक होगा।

1. बृहस्पति-शुक्र अशुभ असरदार हों, तो दूसरे और चौथे घरों मे भी वे अशुभ फल करेंगे।

1. पहले घर में बुध होने पर सूर्य, मंगल तथा शनि भी फलकारक होंगे।
2. दूसरे घर में वृहस्पति होने पर शुक्र भी फलकारक होगा।
3. तीसरे घर मे बुध होने पर मंगल एवं शनि भी फलकारक होंगे।
4. चतुर्थ घर में वृहस्पति होने पर सूर्य और चंद्र भी फलकारक होंगे।
5. पाँचवें घर में वृहस्पति होने पर सूर्य, राहु एवं केतु भी फलकारक होंगे।
6. छठे घर में केतु होने पर शुक्र भी फलकारक होगा।
7. सातवें घर में शुक्र होने पर बुध भी फलकारक होगा।
8. आठवें घर में मंगल होने पर शनि, चंद्र भी फलकारक होंगे।
9. नौवें घर में बृहस्पति होने पर अन्य ग्रह फलकारक नहीं होगा।
10. दसवें घर में शनि होने पर राहु-केतु भी फलकारक होंगे।
11. ग्यारहवें घर में शनि होने पर वृहस्पति फलकारक होगा।
12. बारहवें घर में राहु होने पर बृहस्पति, शनि फलकारक होंगे।

विशेष—यदि बृहस्पति और शुक्र अशुभ प्रभावकारी हों, तो दूसरे व चौथे घरों में वो अशुभ फल ही प्रदान करेंगे।

❑❑❑

# 6 ग्रह और उनकी प्रकृति

लाल किताब में ग्रहों के अनेक नये रूपों की उद्‌भावना मिलती है। जैसे—ग्रह फल का ग्रह, घर फल का ग्रह, बराबर का ग्रह, पाप और पापी ग्रह, नकली ग्रह, कायम ग्रह, धर्मी ग्रह, मुक्कावले का ग्रह, अन्धा ग्रह, साथी ग्रह, बलिदान का बकरा, सुप्त ग्रह, जाग्रत ग्रह, अदृष्ट अकेला ग्रह इत्यादि।

ग्रह-मैत्री, ग्रहों की दृष्टि, योग-दृष्टि, कारकत्व, स्वामित्व आदि के बारे में भी कुछ नई बातें देखने को मिलती हैं। इन सब बातों पर एक-एक करके विचार करते हैं—

## ग्रहों की संख्या और लिंग-विचार

लाल किताब सहित प्रायः सभी पुस्तकों में ग्रहों की संख्या नौ ही मानी गई है। सूर्य से शनि पर्यन्त सात ज्योति-पिण्ड और राहु-केतु दो छाया ग्रह भी ग्रह मान लिये गये हैं।

लिंग विचार की दृष्टि से सूर्य, मंगल और गुरु पुरुष ग्रह हैं। चन्द्रमा और शुक्र स्त्री ग्रह तथा शनि और बुध नपुंसक ग्रह हैं। राहु और केतु शनि के साथी हैं। इन्हें निर्लिंग माना गया है।

## ग्रहों और घरों पर विचार

लाल किताब में मुख्यतः अंगलियों के बारह पेरुओं पर बारह राशियों को स्थान दिया गया। उन्हें 1 मेष, 2 वृष, 3 मिथुन ..... 12 मीन के क्रम से नम्बर दिये गये। फिर उन्हें बारह घरों के सागर में डाल दिया गया। राशियाँ डूब गईं, नम्बर तैरते रहे। वे ही घरों के नम्बर बन गये। इसी कारण लाल किताब में राशियों के वजाय घरों का स्वामित्व और घरों का ही कारकत्व दिया गया है। राशियों के उच्च-नीच स्थान भी राशियों में न मानकर घरों में ही माने गये हैं। निम्नांकित तालिका द्वारा इस विषय को स्पष्ट किया गया है—

| घर नं० | स्वामी ग्रह | कारक ग्रह | उच्च का ग्रह | नीच का ग्रह |
|---|---|---|---|---|
| 1 | मंगल | सूर्य | सूर्य | शनि |
| 2 | शुक्र | गुरु | चन्द्र | — |
| 3 | बुध | मंगल | राहु | केतु |
| 4 | चन्द्र | चन्द्र | गुरु | मंगल |
| 5 | सूर्य | गुरु | — | — |
| 6 | बुध, केतु | केतु | बुध | शुक्र, केतु |
| 7 | शुक्र | शुक्र, बुध, | शनि, राहु | सूर्य |
| 8 | मंगल | श०, मं०, च० | मंगल | चन्द्र |
| 9 | गुरु | गुरु | केतु | राहु |
| 10 | शनि | शनि | मंगल | गुरु |
| 11 | शनि | गुरु | — | — |
| 12 | गुरु, राहु | राहु | शुक्र, केतु | बुध, राहु |



## पक्के घर के ग्रह

ग्रहों के पक्के घर निम्नांकित हैं—

| ग्रह | पक्का घर (भाव) |
|---|---|
| सूर्य | 1 |
| चन्द्र | 4 |
| मंगल | 3, 8 |
| बुध | 7 |
| गुरु | 2, 5, 9, 12 |
| शुक्र | 7 |
| शनि | 8, 10 |
| राहु | 12 |
| केतु | 6 |

## बराबर का ग्रह

कुछ ग्रह फल देने की दृष्टि से एक-दूसरे के बराबर होते हैं। इसलिए इन्हें बराबर का ग्रह कहा गया है—

| विवेच्य ग्रह | बराबर के ग्रह |
|---|---|
| सूर्य | बुध |
| चन्द्र | शुक्र, शनि, गुरु, मंगल |
| मंगल | शुक्र, शनि, राहु |
| बुध | शनि, केतु, मंगल, गुरु |
| गुरु | राहु, केतु, शनि |
| शुक्र | मंगल, गुरु |
| शनि | केतु, गुरु |
| राहु | गुरु, चन्द्र |
| केतु | गुरु, शनि, सूर्य, बुध |

**विशेष**—जब बुध और सूर्य एक घर में हों, तो बुध कोई फल नहीं देता।
राहु और मंगल एक घर में हों, तो राहु कोई फल नहीं देता।
राहु के साथ एक घर में होने पर चन्द्र का बल घट जाता है।

केतु के साथ एक घर में होने पर सूर्य का बल घट जाता है।

## अन्धे ग्रह

दसवें घर में स्थित ग्रह यदि नीच के हों, दुष्ट, पाप या पापी हों, या एक-दूसरे के नैसर्गिक शत्रु हों, तो वे अन्धे हो जाते हैं। तब उनकी कार्य-प्रणाली अनिश्चित होती है। उनके बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

## नकली ग्रह

दो ग्रहों का बल मिलकर किसी तीसरे ग्रह के बल के बराबर हो, तो तीसरा ग्रह अकेला ही उन दो ग्रहों का स्थान ले सकता है। इसलिए उसे नकली ग्रह कहा जाता है। नकली इसलिए कहा जाता है कि उस नाम का असली ग्रह तो पहले ही कुण्डली में मौजूद होता है।

| ग्रह युगल | नकली ग्रह |
|---|---|
| बुध और शुक्र | सूर्य |
| सूर्य और गुरु | चन्द्रमा |
| सूर्य और बुध | मंगल नेक |
| सूर्य और शनि | मंगल बद |
| गुरु और राहु | बुध |
| सूर्य और शुक्र | गुरु |
| राहु और केतु | शुक्र |
| गुरु और शुक्र | शनि (केतु के समान) |
| मंगल और बुध | शनि (केतु के समान) |
| मंगल और शनि | राहु (उच्च का) |
| सूर्य और शनि | राहु (नीच का) |
| शुक्र और शनि | केतु (उच्च का) |
| चन्द्र और शनि | केतु (नीच का) |

उपरोक्त वर्गीकरण का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि लाल किताब के लेखक ने ग्रहों की प्रकृति का, विशेषकर राहु, केतु और शनि की प्रकति का गहन अध्ययन किया है। अशुभ निवारणार्थ उपचार का निर्णय करने में नकली ग्रहों की सूची अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है।

## पापी ग्रह

लाल किताब के लेखक ने राहु-केतु को 'पाप-ग्रह' की संज्ञा दी है। राहु-केतु-शनि को सामूहिक रूप में 'पापी' कहा गया है।

## कायम ग्रह

जो ग्रह निर्वाण गति से अपना शुभाशुभ फल देने में सक्षम हो उसे लाल किताब



में 'कायम ग्रह' कहा गया है। यह तभी होता है जब कि विवेच्य ग्रह के स्वगृह, उच्च, नीच और कारक भाव में कोई शत्रु ग्रह न हो। उस पर किसी दूसरे ग्रह की दृष्टि न हो, न ही वह किसी दूसरे ग्रह का नेता हो।

## धर्मी ग्रह

राहु, केतु और शनि पापी ग्रह हैं; किन्तु विशेष स्थिति में ये धर्मी बन जाते हैं। राहु-केतु चतुर्थस्थ होने पर धर्मी बन जाते हैं और चन्द्रमा के साथ स्थित होने पर किसी भी घर में धर्मी बन जाते हैं। शनि ग्यारहवें घर में धर्मी बन जाता है। गुरु के साथ स्थित होने पर यह किसी भी घर में धर्मी हो सकता है।

धर्मी ग्रह किसी घर को या अन्य ग्रह को पीड़ित नहीं करते। अपनी ओर से बुरा फल भी नहीं देते। दूसरा ग्रह बुरा फल उत्पन्न करता है, तो उससे सरोकार नहीं रखते। धर्मी ग्रह द्वारा अच्छा फल दिये जाने का कोई आश्वासन नहीं।

## मुकाबला के ग्रह

दो मित्र ग्रहों में से कोई एक-दूसरे के पक्के घर में पहुँच जाता है; किन्तु दूसरा ग्रह पहले के पक्के घर में नहीं पहुँच पाता, तो वे दोनों मुकाबला के ग्रह बन जाते हैं। तब वे ग्रह मित्रों जैसा आचरण नहीं करते। जो ग्रह अपने मित्र के पक्के घर में पहुँच जाता है उसका आचरण सन्देहास्पद हो जाता है। वह दूसरे ग्रह के फल को बिगाड़ देता है। उदाहरण के लिए सूर्य और मंगल मित्र हैं। मंगल लग्न में पहुँच जाता है; किन्तु सूर्य न तो तीसरे घर में पहुँच पाता है, न ही आठवें घर में। तब मंगल की नीयत बिगड़ जाती है। वह मित्र जैसा आचरण नहीं करता। तब दोनों ही एक-दूसरे का फल बिगाड़ सकते हैं।

## साथी ग्रह

जब दो ग्रह एक-दूसरे के घर में पहुँच जाते हैं, तो वे साथी बन जाते हैं। यदि दो मित्र ग्रह साथ-साथ के घरों में पहुँच जायें अर्थात् पड़ोसी हो जायँ, तो वे साथी ग्रह बन जाते हैं। शत्रु ग्रह पड़ोसी होने पर भी साथी नहीं बनते।

## ग्रहों की दृष्टि

विद्वान् ज्योतिषियों की मान्यता के अनुसार प्रत्येक ग्रह की अपनी दृष्टि होती है। वह जिस किसी घर में बैठा होता है उसी से सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखता है। मंगल, गुरु और शनि की विशेष दृष्टि भी होती है। किन्तु लाल किताब की चाल निराली है। उसके ग्रह निम्न तालिका के अनुसार देखते हैं—

| जिस घर में ग्रह बैठा है | जिस घर को ग्रह देखता है |
|---|---|
| 1 | 7 |
| 2 | 6 |
| 3 | 9. 11 |
| 4 | 10 |
| 5 | 9. 11 |
| 6 | 12 |
| 8 | 2 |

यह व्यवस्था इस नियम पर आधारित है कि ग्रह जिस घर में बैठा होता है उससे आगे के घरों को भी देखता है, पीछे के घरों को नहीं देख पाता। केवल आठवाँ घर इस नियम का अपवाद है।

उदाहरण के लिए—पाँचवें घर में स्थित ग्रह अपने से आगे (9. 11) घरों को ही देखता है, वहाँ से पीछे 4, 3, 2 आदि घरों को नहीं देख सकता। आठवाँ घर इसका अपवाद है। वहाँ बैठा हुआ ग्रह अपने से पीछे की ओर द्वितीय घर को देखता है।

## सुप्त/अन्धे ग्रह तथा घर

इस व्यवस्था के अनुसार 7, 9, 10, 11, 12 घर दृष्टिहीन होते हैं। बाकी घरों में से किसी में भी स्थित ग्रह जिस किसी घर को देखता है उसमें कोई ग्रह न हो—कमरा खाली हो—तो द्रष्टा ग्रह अन्धा (प्रस्तुत) हो जाता है। जिस घर पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो, वह घर उदास होकर सो जाता है।

## सोये हुए ग्रहों/घरों को जगाना

सोये हुए ग्रहों तथा घरों को कष्ट-निवारण हेतु पूजा उपचारादि के द्वारा जगाया जा सकता है। ग्रहों को जगाने के लिए तो उन्हीं ग्रहों का पूजा-उपचार किया जाता है, जो सोये हुए हों। घरों को जगाने के लिए निम्न व्यवस्था दी गई है—

| जिसे जगाना है वह घर | जिसका उपचार करना है वह ग्रह |
|---|---|
| 1 | मंगल |
| 2 | चन्द्रमा |
| 3 | बुध |
| 4 | चन्द्रमा |
| 5 | सूर्य |
| 6 | राहु |
| 7 | शुक्र |
| 8 | चन्द्रमा |
| 9 | गुरु |
| 10 | शनि |
| 11 | गुरु |
| 12 | केतु |

## योग दृष्टि

ग्रहों तथा घरों की सामान्य दृष्टि के अतिरिक्त योग दृष्टि भी होती है। जिस घर पर दुर्भाग्य की मार पड़ती है, वह अतिरिक्त बल प्राप्त करने के लिये दूसरे घरों की ओर देखता है। इस देखने (दृष्टि) को लाल किताब में योग दृष्टि कहा गया है। विभिन्न घरों में स्थित ग्रह योग दृष्टि द्वारा निम्नांकित सारिणी के अनुसार अन्य घरों में बैठे हुए ग्रहों से विभिन्न प्रकार की सहायता प्राप्त करते हैं—



| विवेच्य घर (1) | दृष्टि (2) | पारस्परिक सहायता (3) | सामान्य स्थिति (4) | संघर्ष (5) | मूल सहायता (6) | अनिश्चित (7) | अप्रत्याशित क्षति (8) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | A | 5 | 7 | 8 | 9 | 10 | |
| 1 | B | 9 | 7 | 6 | 5 | 4 | 3 |
| 2 | A | 6 | 8 | 9 | 10 | 11 | |
| 2 | B | 10 | 8 | 7 | 6 | 5 | 4 |
| 3 | A | 7 | 9 | 10 | 11 | 12 | |
| 3 | B | 11 | 9 | 8 | 7 | 6 | 1 |
| 4 | A | 8 | 10 | 11 | 12 | 1 | |
| 4 | B | 11 | 10 | 9 | 8 | 7 | 10 |
| 5 | A | 9 | 11 | 12 | 1 | 2 | |
| 5 | B | 1 | 11 | 10 | 9 | 8 | 7 |
| 6 | A | 10 | 12 | 1 | 2 | 3 | |
| 6 | B | 2 | 12 | 11 | 10 | 9 | 4 |
| 7 | A | 11 | 11 | 2 | 3 | 4 | |
| 7 | B | 3 | 1 | 12 | 11 | 10 | 1 |
| 8 | A | 12 | 12 | 3 | 4 | 5 | |
| 8 | B | 4 | 2 | 1 | 12 | 11 | 10 |
| 9 | A | 1 | 3 | 4 | 5 | 6 | |
| 9 | B | 5 | 3 | 2 | 1 | 12 | 7 |
| 10 | A | 2 | 4 | 5 | 6 | 7 | |
| 10 | B | 6 | 4 | 3 | 2 | 1 | 4 |
| 11 | A | 3 | 5 | 6 | 7 | 8 | |
| 11 | B | 7 | 5 | 4 | 3 | 2 | 1 |
| 12 | A | 4 | 6 | 7 | 8 | 9 | |
| 12 | B | 8 | 6 | 5 | 4 | 3 | 10 |

**निर्देश :**

- A का संकेत—विवेच्य घर में स्थित ग्रह कॉलम 3 के ग्रह की मदद करेगा।
- B का संकेत—कॉलम 3 में स्थित ग्रह विवेच्य घर के ग्रह की सहायता करेगा।
- 'मूल सहायता' का तात्पर्य यह है कि ग्रह अधिमित्र हैं। उनका मैत्री-मिलन दूध-पानी की तरह अभिन्न है। कॉलम 6 में स्थित ग्रह विवेच्य घर की सहायता के लिए अपना अस्तित्व तक मिटा देंगे।
- विवेच्य घर के ग्रह और कॉलम 5 द्वारा निर्दिष्ट ग्रह सदा शत्रुता का वर्ताव करेंगे—उनके नैसर्गिक सम्बन्ध चाहे जो भी हों।
- विवेच्य घर के ग्रहों के लिए कॉलम 7 द्वारा निर्दिष्ट ग्रह बहुत अच्छे भी हो सकते हैं, बहुत बुरे भी हो सकते हैं।
- 'अप्रत्याशित क्षति' से तात्पर्य यह है कि कॉलम 8 द्वारा निर्दिष्ट ग्रह विवेच्य

घर के ग्रह पर बिल्कुल अचानक ऐसी चोट करेंगे कि वह जान भी नहीं पायेगा कि बिजली किधर से गिरी।

## ग्रह एवं घरों के फल के ग्रह

ग्रह कभी तो अपने खुद के फल देते हैं और कभी जिस घर में बैठे हों उस घर के फल देते हैं। नीचे ऐसे ग्रहों और घरों की तालिका दी जा रही है।

| घर | ग्रहों का फल | घरों का फल |
|---|---|---|
| 1 | मंगल | राहु |
| 2 | राहु और केतु राहु | — |
| 3 | शनि | शनि (धन के लिए) |
| 4 | चन्द्रमा | मंगल, शुक्र और केतु |
| 5 | गुरु और रवि | — |
| 6 | बुध और केतु | सूर्य, मंगल, गुरु, शनि |
| 7 | शुक्र | — |
| 8 | मंगल | — |
| 9 | गुरु | शनि |
| 10 | शनि | बुध और केतु |
| 11 | गुरु और शनि | — |
| 12 | राहु | बुध |

ग्रह जब घर का फल दे रहे होते हैं तभी उपचार प्रभावी होते हैं। वे जब अपना खुद का फल देते हैं तब उपचार व्यर्थ जाते हैं। उदारहणार्थ लग्न में स्थित राहु के घर का फल करता है, वहाँ सम्यक् उपचार से फल में सुधार अवश्य होगा; किन्तु बारहवें घर में वह अपना फल देता है। उस स्थिति में सब उपचार व्यर्थ होंगे।

## धोखे का ग्रह

कभी-कभी ग्रह स्वयं ऐसा कोई संकेत नहीं देता कि वह अच्छा फल देने वाला है या बुरा। वह जो भी फल (अच्छा या बुरा) देता है वह बहुत ही शीघ्रता से देता है। ऐसा प्रायः तब होता है, जब ग्रह दसवें घर में गोचर करता है। ग्रहों के इस आचरण के सम्बन्ध में लाल किताब में निम्नांकित सिद्धान्त दिये गये हैं—

ग्रह जब दसवें घर में गोचर करता है, तो उसका फलाफल बिल्कुल अनिश्चित हो जाता है। वह अपना फल-प्रदान बन्द तो नहीं करता, किन्तु यह भविष्यवाणी नहीं की जा सकती कि वह फल अच्छा देगा या बुरा। यदि कोई ग्रह आठवें घर में बुरे फल देता रहा है, तो वह दसवें घर में भी बुरे ही फल दे देता है। यदि दूसरे घर में शुभ ग्रह बैठा हो, तो दसवें घर में बैठा ग्रह भी शुभ फल दे देता है। यदि तीसरे घर में शुभदायी और आठवें घर में अशुभ फलदायी हो, तो दसवें घर में बैठा ग्रह मिश्रित फल देगा। वह शुभ फल पहले देगा, अशुभ बाद में।

दसवें घर के ग्रह के फल 3, 5, 9 घरों पर निर्भर होते हैं। यदि 2, 8 खाली हों, 3, 5, 9 भी खाली हों, तो ग्रह स्वयं अपनी घर-स्थिति के अनुसार फल देता है। यदि



दसवें घर में शत्रु ग्रह हों, तो वे आपस में झगड़ते हैं और अन्धे हो जाते हैं। तब उनके फल के सम्बन्ध पहले से कुछ नहीं कहा जा सकता। वे तख्त या तख्ता कुछ भी कर सकते हैं। ऐसी दशा में उनके फल चन्द्रमा पर निर्भर होते हैं। घरों की स्थिति, बल, दृष्टि आदि सब प्रकार से चन्द्रमा शुभ हो, तो शुभ फल हो सकते हैं। अन्यथा अशुभ ही होंगे।

यदि दसवाँ घर खाली हो, तो चाथे घर का ग्रह कोई फल उत्पन्न नहीं करता। इस घर से शुभ फल प्राप्त करने के लिए जातक को अपने बाप दादा की सेवा करनी चाहिए। अथवा दस अन्धे व्यक्तियों को भोजन देना चाहिए।

दसवें घर में बैठे हुए राहु, केतु और बुध सदा ही धोखे के ग्रह होते हैं। इनका फल कुछ हद तक शनि की स्थिति पर निर्भर होता है।

## बलि का बकरा

शत्रु ग्रह परस्पर झगड़ते रहते हैं। वे एक-दूसरे को पीड़ित करने में गुरेज नहीं करते, बल्कि एक-दूसरे के फल को बिगाड़ देते हैं। पीड़ित होने पर कमजोर, ग्रह अपनी अलामत किसी तीसरे ग्रह की ओर फेंक देता है। फलतः उस ग्रह का फल अशुभ हो जाता है। ऐसे ग्रह को लाल किताब में 'बलि का बकरा' कहा गया है। इसके कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

## पीड़ित शनि

सूर्य-शनि के झगड़े में शनि को पत्थर लगता है। पीड़ा होती है। शनि वही पत्थर उठाकर शुक्र को मार देता है। शुक्र पत्नी का प्रतीक है। जातक की पत्नी मर जाती है।

## पीड़ित बुध

पीड़ित होने पर बुध भी अपने कष्ट शुक्र को दे देता है। बुध के कष्टों का भार, शुक्र अपने ऊपर ले लेता है। परिणाम फिर वही! जातक रँडुआ हो जाता है, अर्थात् उसकी पत्नी मर जाती है।

## पीड़ित मंगल

षष्ठस्थ सूर्य दशमस्थ मंगल को पीड़ित करता है। मंगल अपनी पीड़ा केतु की तरफ कर देता है। जातक का पुत्र (भतीजा भी) महाकष्ट अथवा मृत्यु का शिकार हो जाता है, क्योंकि केतु पुत्र का कारक कहा गया है।

## पीड़ित शुक्र

यदि शुक्र ग्रह शुक्र को घातक गेंद मारता है, तो वह शुक्र के घर में टप्पा खाकर चन्द्रमा को जा लगती है। जातक की माँ मर जाती है; क्योंकि चन्द्रमा माता का कारक है। लाल किताब में इसे 'जगत की जननी' कहा गया है। यदि शुक्र-चन्द्र 'मुकाबले के ग्रह' हुए, तो जातक की माँ मरती नहीं, अन्धी अथवा कानी हो जाती है।

## पीड़ित बृहस्पति

पीड़ित बृहस्पति की पीड़ा भी केतु की ओर बहती है। बृहस्पति पंचमस्थ हो, तो गुरु और केतु की दशा में जातक के मामा को पीड़ा होती है।

सूर्य की पीड़ा भी केतु को मिलती है। फलतः जातक का मामा दुःखों का शिकार होता है।

चन्द्रमा की पीड़ा → गुरु → मंगल → सूर्य की ओर जाती है।

राहु-केतु ऐसी शरारत नहीं करते। वे अपनी पीड़ा स्वयं ही सहते रहते हैं।

तात्पर्य यह है कि प्रभावित ग्रह जातक के जिन सम्बन्धियों का कारक होता है, वे ही पीड़ा या अनिष्ट के शिकार होते हैं।

## पीड़ित ग्रह और योग दृष्टि

सभी ग्रह अपने से आठवें घर में बैठे ग्रहों को पीड़ित करते हैं। पीड़ित ग्रह सहायता पाने के लिए अपने से पाँचवें घर में बैठे हुए ग्रह की ओर देखते हैं। इस देखने को 'योग-दृष्टि' कहते हैं। 'योग-दृष्टि' से देखने वाले ग्रह की, दृश्य ग्रह सहायता अवश्य करते हैं। इस विषय को निम्नांकित तालिका द्वारा समझ लेनी चाहिए–

| पीड़ित करने वाला ग्रह जिस घर में बैठा हो | पीड़ित होने वाला ग्रह जिस घर में बैठा हो | योग दृष्टि द्वारा दृश्य ग्रह जिस घर में बैठा हो |
|---|---|---|
| 1 | 8 | 12 |
| 2 | 9 | 1 |
| 3 | 10 | 2 |
| 4 | 11 | 3 |
| 5 | 12 | 4 |
| 6 | 1 | 5 |
| 7 | 2 | 6 |
| 8 | 3 | 7 |
| 9 | 4 | 8 |
| 10 | 5 | 9 |
| 11 | 6 | 10 |
| 12 | 7 | 11 |

## ग्रहों के देवता, रंग, रत्न/धातु, जानवर, शरीरांग और वस्तुएँ

| ग्रह | देवता | रंग | रत्न/धातु | जानवर | शरीरांग | वस्तुएँ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | विष्णु | गेहुआँ | लाल ताँबा | पहाड़ी गाय बन्दर | पूरा शरीर, चेहरे का दायाँ भाग | गेहूँ, लाल, ताँबा |
| चन्द्र | शिव | दूधिया सफेद | दूधिया मोती, चाँदी | घोड़ा, घोड़ी | हृदय, चेहरे का बायां भाग | |
| मंगल (नेक) | हनुमान | लाल | चमक रहित लाल कीमती पत्थर | चीता | जिगर, ऊपर का होंठ | चावल, दूध, चाँदी |
| मंगल (बद) | भूत-प्रेत | लाल | चमकीला लाल कीमती पत्थर | ऊँट, हिरण | जिगर, नीचे का होंठ | लाल मसूर की दाल |



| बुध | दुर्गा | हरा | हीरे, पन्ने | भेड़, बकरी चमगादड़ | दिमाग, स्नायु नासाग्र जीभ, दाँत | साबुत मूँग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | ब्रह्मा | पीला | सोना, पुखराज | शेर, शेरनी | गर्दन, नाक | चने की दाल, सोना |
| शुक्र | लक्ष्मी | दही जैसा | चिकनी मिट्टी, सफेद मोती | गाय, बैल | स्वर यन्त्र, गाल | मक्खन, छाछ, कपूर सफेद मोती |
| शनि | भैरों | काला | लोहा, इस्पात | भैंस | आँखें, भौंह, बाल | साबूत उड़द |
| राहु | सरस्वती | नीला | नीलम, गोमेद | जंगली चूहे | मस्तिष्क के कंपन सिर, ठुड्डी | सरसों, नीलम |
| केतु | गणेश | चितकबरा | वैदूर्य | कुत्ता, सूअर गधा, छिपकली | धड़ पूरा, रीढ़ की हड्डी, घुटने, टखने पंजे, कान | तिल |

❑❑❑

# 7 बृहस्पति ग्रह

जिस प्रकार वायु को कहीं भी आने-जाने से कोई रोक नहीं सकता, उसी प्रकार बृहस्पति को भी ब्रह्मांड में कहीं आने-जाने से कोई नहीं रोकने वाला है क्योंकि बृहस्पति साक्षात् ब्रह्माजी का प्रतीक है। मित्र ग्रहों चन्द्र-मंगल का साथ होने पर बृहस्पति का बल बढ़ जाता है। पुत्र-सुख के लिए पहले बृहस्पति को ही देखा जाता है।

बृहस्पति जिस जातक की जन्मकुंडली में उच्च का हो वह जगतगुरु कहलाता है। उसका कद ऊँचा, रंग सुनहरा और माथा चौड़ा रहता है। उसे कभी भी श्वास के रोग का कष्ट नहीं होता। राहु, केतु या बुध के साथ बैठे हुए बृहस्पति का प्रभाव पिघले हुए सुवर्ण की तरह होता है। इसे उपाय द्वारा ठीक किया जा सकता है। संतान, विद्या, बुद्धि, शासन द्वारा सम्मान, बड़प्पन आदि बातें बृहस्पति के शुभ होने पर प्राप्त होती हैं।

जब बृहस्पति मिथुन राशि में आता है, तब चारों तरफ अव्यवस्था फैल जाती है। अप्रत्यातिशत घटनाएँ होती हैं। उसके सामने धनु राशि का शनि बैठा हो, तो उत्पात होते हैं।

1, 4, 5, 6, 8, 9, 12वें घर में बृहस्पति बैठा हो, तो जातक उत्तम विद्या प्राप्त करता है और विद्या के माध्यम से ही उसकी आजीविका चलती है।

1, 4, 10वें घर का बृहस्पति जातक का साथ लाया धन होता है, बशर्ते वह किसी ग्रह से मंदा न हो रहा हो।

बृहस्पति के मित्र सूर्य-चंद्र ठीक अवस्था में न हों, तो जातक का भाग्य सोया रहता है।

बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों के घरों में भी बुरा प्रभाव नहीं करता। किन्तु बुध-शुक्र बृहस्पति के घर में आ जाएँ, तो बुरा फल करते हैं।

पापी ग्रह शनि, राहु, केतु के साथ बृहस्पति भी मंदा फल देने वाला हो जाता है।

1-11वें घरों में बैठा बृहस्पति केवल शनि को सहयोग करता है।

अकेला बृहस्पति जन्मकुंडली में किसी भी घर में बैठा हो, वह शुभ फल ही देगा। जब बृहस्पति मंदा हो, तो केतु पर उसका बुरा प्रभाव होता है। 1, 2, 3 घरों में राहु बृहस्पति से पहले घरों में हो, तो जातक जगतगुरु होता है।

जब पापी ग्रहों का फल नीचा हो रहा हो, तो बृहस्पति का फल भी नीचा हो जाता है। जब मंगल अशुभ हो, तो बृहस्पति भी अशुभ हो जाता है। बाप-दादा, ब्राह्मण का अपमान करने पर भी जातक का बृहस्पति नीच हो जाता है।

## मंदा बृहस्पति

मंदे बृहस्पति की पहचान निम्नांकित है–

- ❑ जातक की चोटी के स्थान के बाल उड़ जाएँ।
- ❑ जातक हमेशा गले में माला डाले रखे।



- ❑ जातक का सोना (आभूषण) खो जाए या वह चोरी हो जाए।
- ❑ जातक झूठी अफवाहों का शिकार हो जाए।
- ❑ जातक की शिक्षा बीच में ही बंद हो जाए।

बृहस्पति जब 1, 5, 12वें घर में हो, तो सूर्य और शनि को एवं 6-11वें घर में हो, तो केवल शनि को मदद पहुँचाता है।

## कुंडली का पहला घर

जातक अत्यन्त विद्वान्, क्रोधित होने वाला, किन्तु हृदय का साफ होता है। पहले घर में बैठा बृहस्पति 5, 7, 9 घरों को अपनी दृष्टि से देखता रहता है। जातक का संतान, पत्नि एवं भाग्य पक्ष अच्छा होता है। यदि जातक कम पढ़ा-लिखा हो, तो गद्दी पर बैठा साधु होता है। वैसे जातक की शिक्षा अच्छी होती है और वह शिक्षा प्राप्त दयालु होता है। सोलह वर्ष की अवस्था में ही जातक पर परिवार की जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं। सत्ताइसवें वर्ष में वह पिता से अलग अपना स्वयं का कार्य करता है। वर्षफल के अनुसार शनि सातवें घर में आता है, तो पिता को मृत्युतुल्य पीड़ा होती है।

पाँचवें घर में शनि बैठा हो, तो शिक्षा, संतान के लिए अच्छा असरदार नहीं होता। विवाह के बाद भाग्योदय होता है, किन्तु पिता से कोई सहयोग प्राप्त नहीं होता। इस घर का शनि सत्ता, जमीन-जायदाद की दृष्टि से उत्तम होता है।

दूसरे या चौथे घर में मित्र ग्रहों की सहायता पहुँच रही हो, तो धनागम होता है।

वर्षफल के अनुसार जब शनि पहले घर में आए तब पिता को पीड़ा रहती है। माँ अलग हो जाती है। 54वाँ वर्ष माता के लिए भारी होता है।

पाँचवें घर में शनि बैठा हो, तो अधिक मंदा होता है।

आयु का हर आठवाँ वर्ष बुरा फल प्रदान करता है।

शत्रु अधिक होते हैं लेकिन वे जातक का कुछ बिगाड़ नहीं पाते।

बड़ी और छोटी संतान में आठ वर्ष से अधिक का अंतर नहीं रहता।

जातक की आयु 75 वर्ष से कम नहीं होती।

जातक को अपने से छोटों से प्यार रहता है। संतान से वह सुखी रहता है। जितनी शिक्षा प्राप्त करता है उतना ही धन बढ़ता है।

## निवारण

1. अपने भाग्य पर विश्वास और श्रद्धा रखा करें।
2. पितृऋण चुकाने के उपाय किया करें।
3. किसी से किसी भी प्रकार का दान कभी न लें।
4. बहते पानी में तेल, बादाम, नारियल अवश्य बहाएँ।
5. सोने की जंजीर गले में पहना करें।
6. केसर का तिलक लगाया करें।
7. अपनी नाक हमेशा साफ रखा करें।
8. सोना, पुखराज, कांस्य पात्र, चीनी, घी, पीला रंग, चने की दाल, हल्दी, पुस्तक इनमें से किसी चीज का दान करना आवश्यक है।

## कुंडली का दूसरा घर

यह घर संपत्ति और ससुराल से सम्बद्ध माना गया है। यहाँ स्थित बृहस्पति सचमुच

का गुरु होता है। बृहस्पति चाहे भक्तों का हो, चाहे स्त्रियों का हो, शत्रु ग्रहों का उस पर नीच प्रभाव कभी नहीं पड़ता। 2, 8, 6, 12वें घरों पर बुरा असर पड़ता है। ये चारों घर दृष्टि के अनुसार आपस में एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। 27 वर्षों तक जातक शासन से जुड़ा रहता है। अकेला बृहस्पति इस घर में हो, तो उसका सदा अच्छा फल मिलता है। किन्तु वर्षफल में जब शनि दूसरे घर में आता है, तो जातक की सेहत में खराबी आती है। ससुराल में भी धन-संपत्ति की हानि होती है।

बृहस्पति अपने पक्के घर यानी दूसरे घर में स्थित हो, तो जातक को किसी निःसंतान की संपत्ति या गड़ा हुआ धन मिलता है। जातक सोने का कारोबार करे, तो उसमें घाटा सहना पड़ता है। इसके अलावा किसी भी अन्य कार्य द्वारा वह धन कमाता है। यह शुक्र का भी घर है। शुक्र मिट्टी को भी कहते हैं। यहाँ बैठा बृहस्पति सोने का प्रतीक है, किन्तु सोने का कारोबार करे, तो वह सोना मिट्टी हो जाएगा।

बृहस्पति और शुक्र दोनों एक घर में हों, तो जातक आशिकमिजाज होता है। जहाँ शुक्र के साथ का बृहस्पति इश्क की खुमारी को बढ़ाता है, वहीं वृहस्पति-ब्रह्मा, शुक्र-लक्ष्मी अपने-अपने स्थान पर ही उत्तम होते हैं।

दूसरे घर में बृहस्पति हो, छठे घर में सूर्य, चन्द्र या शनि हो और पाँचवाँ घर खाली हो, तो जातक को अवश्य ही मान-सम्मान प्राप्त होता है। इसी प्रकार दूसरे घर में वृहस्पति और छठे घर में केतु हो, तो जातक को अपनी मृत्यु का पहले ही अहसास हो जाता है।

## निवारण

1. माथे पर हल्दी या केसर का तिलक लगाया करें।
2. घर के सामने रास्ते पर गड्ढा हो, तो उसे बंद अवश्य कर दें।
3. दूसरों के साथ हमेशा अच्छाई करें। ज्यों-ज्यों अच्छाई करते जाएँगे, त्यों-त्यों अपनी भी उन्नति होती रहती है।
4. जब बृहस्पति वर्षफल में दूसरे घर में आ जाए, तो साँप को दूध पिलाना चाहिए।
5. पीले वस्त्र में चने की दाल बाँधकर मंदिर में देने से सदा अच्छा फल प्राप्त होता है।
6. अतिथियों का स्वागत और सम्मान करने से लाभ होगा।
7. दूसरों के साथ सदा भलाई करें।

## कुंडली का तीसरा घर

जन्मकुंडली के तीसरे घर में बैठा बृहस्पति 'त्रिलोकपति' माना गया है। स्वभाव से ऐसा जातक जिस पर मेहरबान हो जाए उसका भला कर दे और जिस पर बिगड़ जाए उसका सब कुछ नष्ट कर दे। किन्तु यदि जातक खुशामदी हो, तो बृहस्पति का प्रभाव नष्ट हो जाता है। यदि किसी भी तरह से मंगल का साथ हो रहा हो, तो अत्युत्तम फल मिलता है। भाई उसकी सहायता करते हैं। उसकी आजीविका नौकरी से चलती है। चालीस वर्ष तक बच्चे सेवा करते रहते हैं।

अशुभ मंगल होने पर प्रभाव भी नीच होगा। ऐसा जातक लूटपाट से निर्वाह करता है। वह झगड़ालू होता है। 31वें वर्ष में रोग जकड़ लेते हैं।



जन्मकुंडली में मंगल शुभ हो और बृहस्पति का साथी बन रहा हो, तो जातक न्यायप्रिय होता है और ससुरालवालों तथा भाइयों से वह सुख प्राप्त करता है।

यदि वृहस्पति के साथ बुध हो, तो संतान के लिए ठीक नहीं होता किन्तु जातक स्वयं बुद्धिमान होता है।

वृहस्पति तीसरे घर में और शनि चौथे घर में हो, तो जातक का मित्र ही जातक के साथ धोखाधड़ी करके उसका धन लूटकर खुद धनी हो जाता है।

## निवारण

1. कन्याओं को मिठाइयाँ खिलाकर और उनसे आशीर्वाद पाएं।
2. दुर्गा पूजन किया करें।

## कुंडली का चौथा घर

चौथे घर पर हर तरह से चंद्र की प्रभुसत्ता रहती है। वृहस्पति का यह चौथा घर ऊँचा होता है। यहाँ बैठा हुआ वृहस्पति चंद्र को भी सदा उच्च करता है। यदि पहले घर में वुध आ जाए, तो यह प्रभाव उल्टा हो जाता है। जातक वेशक लोगों का भला कर दे, किन्तु अपना बेड़ा गर्क ही करता है। लॉटरी से उसे धन प्राप्त होता है। चौंतीस वर्ष की आयु के बाद का समय विपरीत रहता है।

बृहस्पति और चंद्र के मिलने से जातक को उत्तम फल प्राप्त होता है। शासन से लाभ मिलता है। उसका सुंदर घर में निवास होता है। चौवीसवें वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करता है। अचानक कहीं से धन प्राप्त होता है।

बृहस्पति चौथे घर में व दूसरे घर में हो, तो जातक अति चालाक, भाग्यवान होता है।

बृहस्पति चौथे घर में व सूर्य पहले घर में हो, तो जातक को दोनों को श्रेष्ठ फल मिलता है।

बृहस्पति चौथे घर में व शनि नौवें घर में हो, तो जातक सबका तारनहार होता है।

बृहस्पति चौथे घर में व चंद्र दूसरे घर में हो, तो जातक पिता से वढ़कर होता है।

बृहस्पति चौथे घर में व चंद्र कायम, सूर्य दसवें घर में हो, तो जातक को श्रेष्ठ सरकारी नौकरी मिलती है, सरकारी यात्रा का शुभ परिणाम मिलता है।

कुंडली का चौथा घर वृहस्पति के लिए सबसे उत्तम स्थान है। बृहस्पति के इस घर में वैठने के कारण चंद्र, शुक्र, मंगल के भी श्रेष्ठ फल प्राप्त होते हैं। ताऊ, चाचा अधिक सुखी होते हैं। माता-पिता दीर्घायु होते हैं।

अगर दसवें घर में बुध हो, तो जातक निकम्मा साबित होता है। वह दुनिया को तार देता है पर अपना बेड़ा गर्क करता है।

चौथे घर में बैठे बृहस्पति का चंद्र से सम्बन्ध हो, तो जातक का आलीशान मकान होता है। वह राज्य सरकार द्वारा लाभान्वित होता है।

## निवारण

1. कमीज के नीचे लाल वनियान पहना करें। वनियार पर स्वास्तिक का चिह्न लगाया करें।
2. बुजुर्गों की सेवा किया करें।

3. किसी के सामने नहाएं नहीं और न ही अपना नंगा शरीर किसी को दिखाने की कोशिश करें।
4. भगवान के मंदिर में जाकर पूजन किया करें।
5. कुलगुरु या कुल पुरोहित से आशीर्वाद प्राप्त करना लाभ देगा।
6. पीपल का वृक्ष लगाएँ या पीपल का दो बार सिंचन करें।

## कुंडली का पाँचवाँ घर

बृहस्पति का पाँचवाँ घर पक्का घर होता है। यदि 2, 9, 11वें घर में शत्रु ग्रह बैठे हों, तो नीच प्रभाव होता है। संतान वृद्धि होती है, परन्तु भाग्य सोया रहता है। बृहस्पति और सूर्य जब मिल रहे हों, तो 32 वर्ष की आयु से 7 वर्ष तक जातक व उसके मामाओं को पीड़ा रहती है।

चंद्र नौवें घर में हो, तो जातक बहुत भाग्यवान होता है।

शनि नौवें घर में हो, तो जातक बृहस्पति की समयावधि में उन्नति करता है। 16 वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है। 36 वर्ष की आयु में संतान पक्ष से सुख मिलता है।

बृहस्पति पाँचवें घर में हो और यदि उस समयावधि में शनि किसी भी तरह वर्षफल में या किसी अन्य तरह से नौवें घर में आ जाए, तो बृहस्पति के बेअसर होने पर शनि निष्क्रिय तो हो जाता है, किन्तु निष्प्राण नहीं। बाद में संतान के जन्म के अवसर पर वह पुनः सक्रिय होकर जातक को 60 वर्ष तक श्रेष्ठ फल देता है, लेकिन संतान के जन्म के बाद जातक को पिता या दादा से कोई सहयोग नहीं मिलता।

पाँचवें, नौवें घर में बृहस्पति उत्तम फल देता है। जातक को भाग्य और संतान सम्बन्धी शुभ फल प्राप्त होते हैं।

सूर्य के साथ सूर्य की महादशा के समय में यदि केतु अच्छे स्थान पर न हो, तो केतु की 6 वर्ष की महादशा जातक पर सदा भारी पड़ती है।

चंद्र नौवें घर में हो, तो जातक को श्रेष्ठ फल मिलता है।

सूर्य नौवें घर में हो, तो बृहस्पति की महादशा के समय में भाग्य का सितारा उज्जवल होता है। वर्षफल में शुक्र नौवें घर में आ जाए, तो जातक को काहिल बना देता है।

## निवारण

1. मंदिर में बँटने वाले प्रसाद का सेवन न किया करें। दान में कभी कोई वस्तु स्वीकार न करें।
2. कोई भी चीज कभी मुफ्त में न लें।
3. सिर पर चोटी (शिखा) रखना लाभदायक होगा।
4. साधुओं की सेवा करना अनिवार्य है।
5. पूजा स्थान की सफाई करते रहने से भाग्य साथ देगा।
6. केतु के उपाय करें, कुत्ता पालें। गणेश पूजन से परहेज न किया करें।

## कुंडली का छठा घर

कुंडली का छठा घर बुध का है। केतु का भी इस घर पर प्रभाव है। इसको रहम का खजाना यानी गुप्त सहायता का घर माना गया है। यहाँ बैठा बृहस्पति पिता, पुत्र, पुत्री के लिए अच्छा नहीं है। यह घर केतु का पक्का घर है। यहाँ बृहस्पति राशिफल का



है, केतु की सहायता से उसके बुरे प्रभाव को ठीक किया जा सकता है। जातक साधु-स्वभावी, मुफ्तखोर, रोगी, ऐयाश होता है। गृहस्थी में भी वह साधु की तरह रहता है। यों ऐसे जातक को कोई काम करने की जरूरत महसूस नहीं होती, यदि करना भी पड़े, तो वह करेगा नहीं। मुफ्त में बिना किसी प्रयास या परिश्रम के उसका जीवन-यापन होता रहता है। उसका पिता छोटी आयु में चल बसता है, यदि जीवित रहा, तो जातक धनवान बनता है। धन की उसे कोई कमी नहीं रहती है।

40 वर्ष की आयु तक वह अपने मामा से शत्रुता करता है। दूसरे या बारहवें घर में मित्र ग्रह हों, तो बहुत ही उत्तम रहते हैं और आठवें में केतु हो, तो संतान पक्ष दुर्बल रहता है।

साथ में बुध दूसरे घर में हो, तो 16 वर्ष की आयु में ही गृहस्थी का बोझ उसके कंधों पर आ पड़ता है। धन-संपत्ति भी नष्ट हो जाती है।

साथ में बुध बारहवें घर में हो, तो संचय किए हुए धन का नाश होता है।

इस घर का बृहस्पति ननिहाल पक्ष के लिए विशेष रूप से मौसियों के लिए अशुभ रहता है। बुध की समयावधि में जातक के पिता को पीड़ा भोगनी पड़ती है। आर्थिक कष्ट सदा बना ही रहता है।

## निवारण

1. बृहस्पति सम्बन्धी चीजें—चने की दाल और गुड़ मंदिर में दान करें।
2. बच्चों के साथ साझे में व्यापार करना लाभप्रद होगा।
3. मंदिर के पुजारी को वस्त्र आदि दान करें।
4. कौओं को रोटी खिलाया करें।
5. घर में कुत्ता पालना अच्छा रहता है।
6. सोना पहनना शुभ फलकारक होगा।
7. पीपल का पानी से सिंचन किया करें।
8. 600 ग्राम चने की दाल मंदिर में दें। यह प्रयोग 8 दिन अवश्य करें।
9. राशिफल का उपाय केतु के उपायों से करें।

## कुंडली का सातवाँ घर

यह 'गृहस्थी की चक्की' का घर कहा गया है। यहाँ बैठा बृहस्पति राशिफल का है। इसे चंद्र के उपायों द्वारा ठीक किया जा सकता है। जातक भाइयों से दुःखी रहता है। यदि बुध-शनि 5, 6, 11, 12वें घर में हों, तो जातक डाकू बनता है। संतान-पक्ष भी निर्बल हो जाता है। परन्तु 44 से 45 वर्ष की आयु में संतान होती है और उसके साथ ही पिछले कष्ट भी दूर हो जाते हैं। फलस्वरूप जातक सुख पूर्वक जीवन बिताया करता है।

पत्नी की कमाई से घर में धनवृद्धि होती है, किन्तु अपनी कमाई मिट्टी के बराबर होती है।

रमते साधु का साथ करना मंदे भाग्य की निशानी होती है। चंद्र पूजन से सहायता ली जा सकती है। जातक को पूर्ण शारीरिक और पत्नी का सुख मिलता है। वह दूसरों की संपत्ति में साझीदार बनता है। पिता से अलग होकर वह अपना व्यवसाय करता है।

यदि घर में मंदिर हो और घंटियाँ बजाकर पूजा होती हो, तो निश्चय ही जातक निःसंतान होता है।

साधु-संतों से दूर रहें। वस्त्र आदि का दान भी न करें।

सातवें घर में बैठा वृहस्पति सबका तारनहार होता है लेकिन खुद के लिए मंदा असर करता है। पिता और संतान-सुख हल्का होता है।

छठा स्थान शुक्र का होने से जातक को 40 वर्ष की आयु तक ऐयाश बनाता है। साथ में शनि नौवें घर में हो, तो जातक डकैत या चोर होता है। बुध नौवें घर में हो, तो गृहस्थी में रुकावटें, शादी में गड़बड़ होती है।

## निवारण

1. गले में माला न पहनें और न ही घर में तुलसी का पौधा रखें।
2. सोना और सोने के आभूषण पीले कपड़े में बाँधकर घर में रखें।
3. पीले वस्त्रधारी साधु से दूर रहें।
4. शिव-पूजन करके चंद्र से सहयोग लें।

## कुंडली का आठवाँ घर

जन्मकुंडली का आठवाँ घर शनि और मंगल से प्रभावित है। इसमें यदि बृहस्पति बैठा हो, तो ऐसा जातक पिता से अलग रहकर उनकी सेवा से वंचित रहता है। ऐसा जातक प्रायः अफवाहों का शिकार बना रहता है। शनि-मंगल चौथे घर में होने पर जातक दुःखी, साधु होता है। बुध नौवें घर में हो, तो जातक दीर्घायु, भाग्यवान, धनवान किन्तु रोगी रहता है।

जातक के जन्म से पूर्व ही उसके दादा की मृत्यु हो चुकी होती है, किन्तु जातक की एवं उसके पिता की आयु लंबी रहती है। जातक चरित्रसंपन्न, शील स्वभावी, विवेकी, मूत्र रोगी, मित्रों के धन का दुरुपयोग करने वाला होता है। पूरे परिवार की विपत्ति को अपने सिर लेने वाला होता है। पिता, दादा या अन्य वृहस्पति से सम्बन्धित चीजों का फल मंदा रहेगा। आठवाँ घर मृत्यु का होने पर भी जातक के लिए यह घर धनवृद्धि और आयु वृद्धि करने वाला होता है।

मंगल चौथे घर में हो, तो जातक डरपोक और निर्धन होता है।

शनि-मंगल चौथे घर में हो, तो जातक सदा दुविधा में रहता है।

बुध नौवें घर में हो, तो जंगल में मंगल होता है।

## निवारण

1. सोना पीले धागे में बाँधकर हमेशा गले में पहना करें।
2. श्मशान में पीपल का पेड़ लगवाना फायदेमंद होगा।
3. आठ दिन लगातार हल्दी की साबुत गाँठें मंदिर में चढ़ाएँ।
4. यदि स्त्री शाप या स्त्री के कारण बदनामी होती हो, तो आठ हाथ कच्चे सूत को हल्दी से पीला करके पीपल के तने से बिना नागा किए निरंतर चालीस दिन लपेटें।
5. फकीर या साधु को दान देते रहा करें।
6. घी, दही, आलू और कपूर मंदिर में देना फलकारक होगा।
7. द्वार पर आया भिखारी खाली न लौटे, इसका ख्याल रखें।



## कुंडली का नौवाँ घर

यह घर जातक के नसीब को जगाने वाला होता है। ऐसा जातक अपने धर्म पर अडिग और वचन का पक्का होता है। किन्तु आलसी होने से उसके कई काम अधूरे रह जाते हैं। ऐसे जातक को अपने जीवन में कभी भी धन की कमी महसूस नहीं होती। बुरा समय आने से पहले ही वह इस संसार से कूच कर जाता है। जातक जौहरी या सर्राफ होता है। वृहस्पति नीच हो रहा हो, तो जातक नास्तिक एवं धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला बन जाता है। यदि वृहस्पति उच्च हो, तो घर की प्रतिष्ठा बनी रहती है और जातक तीर्थयात्रा का शौकीन रहता है। ऐसा जातक धर्मात्मा, ज्योतिषी, वैद्य अथवा सिद्ध पुरुष होता है। 16 वर्ष की आयु में वृहस्पति की महादशा के अत्यन्त उच्च फल उसे मिलते हैं। अपने पूर्वजों के माध्यम से वह प्रगति पथ पर अग्रसर रहता है। बृहस्पति नौवें तथा शनि पाँचवें घर में हो, तो भाग्य का श्रेष्ठ प्रभाव शनि की समयावधि यानी 36 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होता है। धन प्राप्ति भी होती है।

बुध चौथे घर में हो, तो राजयोग कारक है।

चंद्र पाँचवें घर में, बुध तीसरे घर में हो, तो उसका फल नीच होता है।

चंद्र तीसरे घर में हो, तो अच्छा फल प्राप्त होता है।

शुक्र तीसरे घर में, चन्द्र तीसरे या पाँचवें घर में हो, तो नीच फल प्राप्त होता है। मंगल तीसरे घर में हो, तो जातक को धनी ससुराल मिलती है, ससुराल पक्ष से उसे आर्थिक सहायता भी मिलती है।

मंगल तीसरे घर में, सूर्य पाँचवें घर में हो, तो जातक तीनों ग्रहों का श्रेष्ठ फल भोगता है।

## निवारण

1. प्रतिदिन मंदिर जाकर भगवान के दर्शन किया करें।
2. गंगा स्नान करें। गंगाजल का प्राशन करें।
3. तीर्थ यात्रा करें। दूसरों की सहायता करें। साधु-संतों को दान देते रहें।
4. धार्मिक बनें, सत्य बोलना कभी न छोड़ें।

## कुंडली का दसवाँ घर

कुंडली का दसवाँ घर शनि की मिल्कियत है। इसमें शनि प्रबल प्रभाव में रहता है। इस घर में बैठा वृहस्पति नीच प्रभाव वाला होता है। इसे सूर्य की सहायता से ठीक किया जा सकता है। जीवन निर्वाह के लिए जातक को अकेले ही संघर्ष करना पड़ता है। जातक स्व-पराक्रम से ही यशस्वी होता है। शनि का कारोबार जातक के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। कपड़े या दलाली के काम से यश एवं धन की प्राप्ति होती है।

दसवें घर में बृहस्पति या सूर्य हो तथा पाँचवें घर में भले ही कोई मित्र ग्रह बैठा हो, फिर भी वह शत्रुता करता है और संतान के साथ शत्रुवत व्यवहार कराता है।

जातक के पिता की आर्थिक दशा अच्छी नहीं होती। वह अपनी संतान को असहाय अवस्था में छोड़ जाता है। 27 स 36 वर्ष की आयु तक नीच फल होता है। अपनी आयु के 36 वर्ष बाद जातक हनुमान जी के मंदिर में जाना शुरू करे, तो उसे मंगल की सहायता अवश्य प्राप्त होती है।

जब शनि की सहायता नहीं मिलती, तब जातक छीन-झपटकर अपना गुजारा करता है।

जातक को 29वें वर्ष के कुछ संतोष मिलता है। 39वें वर्ष में स्थिति ठीक हो जाती है। जातक को अपने लिए संघर्षरत रहना पड़ता है, दूसरे किसी से सहयोग नहीं मिलता।

चंद्र चौथे घर में हो, तो भिखारी को रोटी देना दोषपूर्ण रहता है। सोना, चाँदी, कपड़े के व्यवसाय में जातक सफल रहता है। साथ में सूर्य पाँचवें घर में होने पर जातक के एक से अधिक विवाह होते हैं।

बुध चौथे घर में होने पर मंदा असर करता है।

सूर्य, शनि उसे देखते हों, तो अग्निकांड के कारण जातक को हानि होती है।

चंद्र चौथे घर में हो, तो शनि के कार्यों से धन प्राप्त होता है।

शनि चौथे घर में हो, तो जातक क्रूर स्वभाव का होता है।

## निवारण

1. अपनी नाक साफ रखा करें।
2. वहते पानी में ताँबे का सिक्का डालें।
3. नंगे सिर न रहा करें।
4. सूर्य ग्रहण के समय शनि की चीजें—नारियल, बादाम, उड़द, तेल आदि दान करें।
5. किसी पर विश्वास न करें। हर किसी की भलाई न करें।
6. उपदेशक, धार्मिक पुरुष या पीपल के पेड़ की सेवा न करें।
7. पीले वस्त्र धारण न करें। सोने के आभूषण भी न पहनें।

## कुंडली का ग्यारहवाँ घर

कुंडली का ग्यारहवाँ घर इंसाफ करने या करवाने का है। यहाँ बैठा कोई भी ग्रह वृहस्पति की भलाई और शनि की बदी के बारे में निर्णय करता है। यह घर बृहस्पति का पक्का घर होते हुए भी यहाँ राशि शनि की होने से दोनों बुध से चलते हैं। यदि बुध अच्छा रहे, तो दोनों का असर अच्छा रहता है। बुध के नीच होने पर दोनों का असर भी नीच होता है। जब तक जातक का पिता जीवित रहता है, तब तक सभी का सहयोग प्राप्त होता है, किन्तु पिता की मृत्यु के बाद कोई भी सहयोग नहीं करता।

शनि के मंदे काम—शराब, माँस, जुए आदि से दूर रहें। परिवार के साथ रहें, अकेले रहने से निर्धनता आती है। कारोबार में भाई का साथ भाग्य जगाने वाला है।

मित्र ग्रह तीसरे घर में हो, तो 16 वर्ष की आयु के बाद 12 वर्षों तक धन प्राप्त होता रहता है। बाद में रोग आ घेरते हैं। शुक्र का साथ मिल रहा हो, तो अपने एवं ससुराल के लिए उत्तम रहता है। धन-संपदा प्राप्त होती है। किन्तु निजी परिवार जनों से कफन भी नसीब नहीं होता। शुक्र का साथ न रहने पर भी जातक दीर्घायु रहता है।

मंगल तीसरे घर में होने पर अपने और ससुराल के लिए धन-संपत्ति के मामलों में ठीक रहता है किन्तु अपनों की मृत्यु से दुःखी होना पड़ सकता है।

## कुंडली का बारहवाँ घर

इस घर में राहु का कब्जा है, जबकि मिल्कियत वृहस्पति की है। बृहस्पति बैठा हो,



तो गले में माला डाले रखने से बृहस्पति का प्रभाव समाप्त हो जाता है। कारण—माला पहनने से बुध मिल जाता है। यहाँ बृहस्पति का प्रभाव नौवें घर में बृहस्पति जैसा रहता है। यदि पापी ग्रह उसके पाँचवें या नौवें घर में हो, तो बुध शुक्र को भी वे हानि पहुँचाते हैं। जब राहु का साथ मिल रहा हो, तो जातक वैरागी साधु लेकिन चोर होता है।

खर्च ज्यादा और आदमनी भी खर्च के अनुपात में होती है। विचार और आचरण धर्म-विरोधी हो जाते हैं।

जातक की आयु के 10 से 12 वर्ष में पिता को कष्ट होता है।

25 से 50 वर्ष आयु का समय हर प्रकार से सुखद होता है।

साथ में शनि नौवें घर में हो, तो जातक त्यागी किन्तु निर्धनता से पीड़ित होता है। जातक, धन-संपत्ति का त्यागी, ब्रह्मज्ञानी, शास्त्रवेत्ता, संतोषी, अधिक क्रोधी, मन का साफ, बुरे का भी भला करने की प्रवृत्ति वाला होता है। बृहस्पति के तीन शत्रु हैं—बुध, शुक्र और राहु। इनका साथ किसी भी प्रकार से मिलने पर बृहस्पति का फल मंदा हो जाता है। किन्तु बुध दूसरे या चौथे घर में आने पर अधिक मन्दा नहीं रहता।

बृहस्पति के शत्रु ग्रह और बुध का प्रभाव हो, तो जातक सोना पहनें। शुक्र का प्रभाव हो, तो चाँदी पहनें। राहु का प्रभाव हो, तो सोना पानी में प्रवाहित करें। राहु का साथ होने पर जातक त्यागी बनता है और उसका परलोक सुधर जाता है।

## निवारण

1. झूठी गवाही किसी की न दें।
2. किसी को भी धोखा देने की कोशिश न करें।
3. साधु-संत और पीपल की सेवा करते रहा करें।
4. बृहस्पतिवार का व्रत रखना उत्तम होगा।
5. भगवान हरि का स्मरण सदा किया करें।
6. पीपल को सींचा करें।
7. हल्दी में रंगा पीला डोरा दाएँ हाथ में बाँधें रखें।
8. चाँदी के बरतन में हल्दी और केसर पीसकर तिलक लगाया करें।
9. ब्राह्मण, कुलगुरु और साधु-संतों की सेवा किया करें।
10. गरुड़ पुराण का पाठ करें अथवा कराएँ।
11. बृहस्पति की अनिष्टता को समाप्त करने के लिए बृहस्पति की चीजों का दान अनिवार्य हैं।

❑❑❑

# 8 सूर्य ग्रह

सूर्य भी भगवान विष्णु का प्रतीक है, जो रथारूढ़ होकर प्रातः पूर्व से उदय होता है। अँधेरों को नष्ट करके प्रकाश फैलाता है। उत्तम सूर्य जिस व्यक्ति के टेवे में होगा, वो वुद्धिमान्, गुणवान, इंसाफ-पसंद, ईमानदार, झूठ से नफरत करने वाला तथा अपनी जिम्मेवारी को निभाने वाला होता है।

संपूर्ण ब्रह्माण्ड के कर्त्ता सूर्य की धर्म ग्रंथों मे आराधना की गई है। गायत्री मंत्र की रचना भी इसी की स्तुति में की गई है। जिस जातक का सूर्य 1, 4, 5, 8, 9, 12 घरों यानी मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन में से किसी एक राशि में हो, वह तेजस्वी, प्रतापी एवं शत्रुहंता होता है। अशुभ राशि में होने पर जातक क्रोधी, दूसरों का अहित करने वाला एवं नीच प्रकृति का होता है।

सूर्य से आत्मसिद्धि, वन-भ्रमण, रेगिस्तान में निवास, मानसिक चिंता, मान-सम्मान देखा जाता है। चौथे या आठवें घर में सूर्य हो, तो जातक की हानि करता है।

सत्ता, सरकारी हिसाब-किताब, सभी प्रकार की शिक्षा, शरीर के हड्डी के रोग, दिल की धड़कन आदि बातें सूर्य में देखी जाती हैं। 1, 5, 11 में बैठा सूर्य श्रेष्ठ होता है। मंगल छठे घर में और केतु पहले घर में बैठा हो, तो ये ग्रह उच्च हो जाते हैं। शत्रु ग्रह सूर्य के साथ हो, तो सूर्य से सहयोग ही करते हैं। इनका प्रभाव 22वें वर्ष से आरम्भ होता है।

सूर्य स्वयं कभी नीच नहीं होता। उल्टे अपने नीचपन का प्रभाव साथी ग्रह पर डालता है। जिस जातक का सूर्य उच्च का हो वह लम्बे कद का होता है। रंग गेहुंआ, आँखें शेर की तरह परन्तु डरावनी नहीं होतीं। उसका शरीर इकहरा और हर तरह के कष्ट सहने में सक्षम रहता है। बाहर से स्वभाव मीठा परन्तु अंदर से वो आग का शोला होता है। उसका चाल-चलन शुभ रहता है। बदचलन हो, तो सूर्य का प्रभाव क्षीण हो जाता है। वो शराब से दूर रहने वाला, हर बात में पहल करने वाला, विचारों का पक्का, आक्रमण करने वाले को मुँह तोड़ जवाब देने वाला और परिश्रमी होता है।

उसके मकान का दरवाजा पूर्व दिशा में होगा। आँगन मकान के मध्य में होगा। पानी रखने का स्थान मकान से निकलते ही दाएँ हाथ में आँगन में ही होगा।

## विशेष फल

- मंगल के साथ सूर्य होने पर मंगल एवं सूर्य की रश्मियों का प्रकाश चारों ओर व्याप्त होता है। सूर्य के साथ राहु या केतु होने पर सूर्य का ग्रहण लगता है।
- सूर्य, शनि दोनों इकट्ठे स्थित हों, तो वे आपस में कभी झगड़ते नहीं हैं, बल्कि शुक्र को नीच कर देते हैं।
- सूर्य, बुध इकट्ठा होने पर बुढ़ापा अच्छा गुजरता है। सूर्य सिंह राशि का कारक है। जातक की मौत अचानक होती है।



- जिस जातक का सूर्य श्रेष्ठ होता है वह स्वपुरुषार्थ से धन कमाकर धनी बनता है। दूसरों की सहायता उसे कभी नहीं करनी चाहिए। वो जितनी चोटें सहन करेगा, उतना ही अधिक वह चमकेगा। जो इसे सताएगा, वह स्वयं नष्ट हो जाएगा। वस्तुतः जातक की प्रसिद्धि बढ़ती ही जाएगी।
- श्रेष्ठ सूर्य वाले जातक के सभी ग्रह अपनी-अपनी समयावधि में अच्छा प्रभाव देते हैं। जैसे—बृहस्पति 16 से 21, सूर्य 22 से 23, चंद्र 24, शुक्र 25 से 28, मंगल 28 से 33, बुध 34 से 35, शनि 36 से 41, राहु, 42 से 47, केतु 48। परन्तु बुध सूर्य के समय से आधा समय यानी 17 वर्ष तक चुप रहेगा। शनि 18 वर्ष की आयु तक पिता की कमाई पर, बाद में खुद की कमाई पर असर डालेगा।

**यदि सूर्य नीच का हो, तो निम्न फल देता है—**

- मुँह से बार-बार थूक आता है।
- शरीर के अंग शिथिल हो जाते हैं।
- घर में पाली हुई लाल या भूरी भैंस मर जाती है।
- सूर्य के साथ मित्र ग्रह होने पर अपने पिता की अपेक्षा जातक अधिक भाग्यवान होता है। सूर्य के साथ शत्रु ग्रह होने पर संतान का हाल बुरा होता है।
- सूर्य के साथ राहु हो, तो जातक गंदे विचारों वाला, केतु के साथ होने पर उसके पाँव में खराबियाँ रहती हैं। सूर्य के साथ शनि हो, तो जातक के सिर पर हमेशा ही इश्क का भूत सवार रहता है।
- सूर्य जहाँ बैठा हो उसके पहले घरों में शत्रु ग्रह हों, तो शत्रु ग्रह अपना नीच प्रभाव सूर्य पर डालते हैं। लेकिन सूर्य के बाद के घरों में शत्रु ग्रह हों, तो सूर्य की वस्तुओं पर अपना नीच प्रभाव डालते हैं। समय रहते ही सूर्य के नीच ग्रह शनि, राहु, केतु एवं शुक्र के उपाय कर लेने जरूरी हैं।
- सूर्य जिस घर में जिस राशि में बैठा हो, उस घर के स्वामी ग्रह के प्रभाव को नीच कर देता है। अतः राशिफल ग्रह के उपाय कर लेने जरूरी है।
- सूर्य शुक्र और शनि के टकराव में हो, तो स्त्री को कष्ट होता है।
- सूर्य मंगल के साथ यदि चंद्र-केतु हो, तो पुत्र, माता-पिता रोगी रहते हैं।

## निवारण

1. जब सूर्य का प्रभाव अशुभता प्रकट कर रहा हो, तो सूर्य के शत्रु ग्रहों का सहयोग लेना चाहिए। यह स्थिति सूर्य के छठे या सातवें घर में होने से ही होगी। इन घरों में सूर्य हो, तो बुध के उपाय द्वारा ठीक कर लेना चाहिए।
2. यदि सातवें घर में सूर्य के साथ शनि का टकराव आ जाए, तो चंद्र को नष्ट करें। चंद्र को नष्ट करने से सूर्य को सहयोग मिलेगा।
3. गुड़ खाकर पानी पीकर कार्य आरंभ करें।
4. प्रवाहित पानी में गुड़ बहाएँ।
5. रात को चूल्हे की आग को दूध से बुझाएँ।

## पहला घर

जिस जातक के टेवे में सूर्य पहले घर में होगा, वह धर्मार्थ भवन बनवाने व नल

आदि लगवाने का कार्य करने वाला होगा। पहला घर मंगल का है। अतः मंगल की सूर्य की खासियत जब तक इस घर में रहेगी, जातक उन्नति करता रहेगा।

ऐसा जातक सत्यवक्ता, लंबी आयु वाला, कम संतानों से युक्त, बहन-भाई के आघात सहते हुए आगे बढ़ता रहेगा। यदि जातक परोपकार या सेवा न करे, तो सूर्य का प्रभाव निष्फल हो जाएगा। जातक इश्कवाजी से दूर रहेगा। सातवाँ घर खाली हो यानी उसमें कोई ग्रह न हो, तो विवाह जल्दी करना शुभ रहता है, इससे शनि अपना प्रभाव देने में सक्षम हो सकता है।

ऐसा जातक अपनी कमाई का चौथा भाग धार्मिक कार्यों तथा परोपकार में लगाए, तो उसकी बड़ी उन्नति होगी, विद्या वृद्धि होगी। संतान एवं पत्नी का सुख मिलेगा। लंबी आयु प्राप्त होगी। पहली संतान लड़का होगा। लड़के का जन्म आधी रात के बाद होगा। जातक अच्छे कामों में सदैव आगे रहने वाला एवं निर्धनों की सहायता करने वाला होता है। गुस्सा बहुत आता है। कोई बात सुनकर उस पर विश्वास नहीं करता। वह बात देखने पर ही विश्वास रखेगा।

पहले घर में सूर्य और सातवें में शुक्र हो, तो जातक के पिता की मृत्यु बचपन में होती है। पहले घर में सूर्य, दूसरे में चंद्र, ग्यारहवें में शनि हो, तो जातक मान-सम्मान और धन पाता है।

माता, पत्नी को कष्ट, नाक-ललाट ऊँचा, शरीर दुर्बल, स्वाभिमानी स्वभाव, सत्ता सम्बन्ध। यहाँ का सूर्य अच्छा फल देगा।

पहले घर में बैठे सूर्य का साथ उसके मित्र ग्रह मंगल, चंद्र दे रहे हों, तो पैतृक संपत्ति की जगह जातक स्वयं धन कमाता है और धनी होता है।

## निवारण

यदि किसी कारण से सूर्य मंदा असर कर रहा हो और सातवाँ घर खाली हो, तो विवाह जल्दी करना चाहिए। पानी का नल लगवाने से भी अच्छा फल मिलेगा। मकान के दायीं तरफ अतिम छोर में अंधेरी कोठरी बनवाना शुभ होगा।

## दूसरा घर

दूसरे घर में सूर्य, पहले में मंगल, तीसरे में चंद्र हो, तो जातक दरिद्री, निर्धन एवं आलसी रहता है।

जातक का पत्नी के कारण सम्बन्धियों से झगड़ा होता रहता है। अन्य बातों में यहाँ का सूर्य शुभ फलदायक होता है। जातक अपने दम पर प्रगति करने वाला, तीनों लोकों का सुख भोगने वाला, स्वयं उन्नति कर दूसरों की भी उन्नति करने वाला होता है।

यदि जातक पत्नी के झगड़ों से दूर रहे, तो सदा आगे बढ़ता रहेगा। सवारी (वाहन) का सुख अवश्य प्राप्त होता है। धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहकर नेता बनेगा। मंदिर-धर्मशाला का निर्माण करवाएगा। ससुराल एवं गृहस्थी से सुख प्राप्त होता है। जातक अपने माता-पिता के सम्बन्धियों का भी भाग्य चमकाता है। वह स्त्रियों के लिए भारी रहता है।

## निवारण

किसी से भी गेहूँ, बाजरा आदि जातक को नहीं लेना चाहिए। शनि का उपाय करें। शनि का उपाय है कि नारियल, बादाम एवं तेल दान में देते रहें। नारियल एवं तेल मंदिर



में दें। कोई चीज मुफ्त में न लें। चावल, दूध, चाँदी या अन्य किसी तरह का दान भी न लें।

## तीसरा घर

तीसरा घर बुध का है। अतः सूर्य-बुध का मेल गिना जाएगा। सूर्य की शक्ति दोगुनी होगी। इसका जातक छोटे भाइयों से युक्त, तीर्थयात्रा प्रेमी, खुद कमाकर खाने वाला, संपत्तियुक्त धनवान रहता है। इस घर में सूर्य शुभ फलदायक रहता है। बुध मंदा यानी नीच हो, तो मामा के लिए बुरा असर करता है।

राहु-केतु भी मंदे रहते हैं। माँ की आयु लंबी रहती है। वशर्ते कि चंद्र स्वयं नष्ट न हो। पड़ोसी मर जाए, बाप-दादा भले ही निर्धन हों पर जातक स्वयं निर्धन नहीं रहता। यदि निर्धनता आए तो वह जातक की बदचलनी के कारण आएगी, अन्यथा निर्धनता न आएगी।

## निवारण

अपना चाल-चलन जातक सदा अच्छा रखे। निर्धन बच्चों की सहायता करें। माँ एवं दादी से आशीर्वाद लेता रहे।

## चौथा घर

चौथा घर चंद्र का है। अतः सूर्य के चौथे घर में होने पर चंद्र (दरिया) पर सूर्य (चमकती धूप) अर्थात् ऐसा दरिया जिस पर सूर्य की धूप पड़ रही हो। ऐसे दरिया का पानी साफ-सुथरा और निर्मल होगा, अर्थात् नेकदिल और दरियादिल होगा।

चौथे घर में सूर्य हो, तो माता एवं बहन के सुख की वह हानि करता है। जातक को विदेश में रहना पड़ता है। साथ में दसवें घर में बृहस्पति हो, तो वृहस्पति के प्रभाव को बढ़ाता है। सत्ता में मान-सम्मान प्राप्त होता है। जो काम बाप-दादा ने नहीं किए होते, ऐसे काम जातक के हाथ से होते हैं। यदि मंगल अशुभ हो, तो पन्द्रह साल तक तंगी की हालत रहेगी। मंगल शुभ हो, तो सूर्य को बलवान बना देता है परन्तु आँख की हानि करता है।

शनि सातवें घर में हो, तो जातक नपुंसक होता है।

शुक्र सातवें में तथा चंद्र पहले घर में हो, तो जातक कायर होता है।

बृहस्पति दसवें घर में हो, तो चंद्र श्रेष्ठ रहता है, इसलिए जातक भाग्यवान रहता है।

बृहस्पति पहले घर में हो, तो बार-बार घर आदि में अग्नि लगती हैं।

वर्ष जन्मकुंडली में सूर्य बृहस्पति का मेल हो, तो बृहस्पति सोना, चंद्र चाँदी और कपड़े के व्यवसाय में लाभ देगा।

## निवारण

अंधों को भिक्षा दें या रोटी खिलाएँ। माँसाहार न करें। शराव कभी न पीएँ। सीसे का सिक्का खाकी रंग के धागे में बांध कर गले में धारण करें।

## पाँचवाँ घर

पाँचवें घर में सूर्य स्थित हो, तो जातक पढ़ाई में तेज, पेट की खराबी से पीड़ित,

क्रोधी स्वभाव का, सत्ता से विशेष लाभ पाने वाला, सुखी माता-पिता से युक्त, अपने भाग्य को जगाने वाला, इकलौते पुत्र का पिता होगा। वह भादों के महीने में एवं सिंह राशि से लाभान्वित रहता है।

जातक दीर्घायु, सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाला, शूरवीर पुत्रों वाला तथा बुढ़ापा सुख में व्यतीत करने वाला होता है। यदि दसवें घर में बृहस्पति हो, तो पत्नी की मृत्यु पहले होती है और यदि तीसरे घर में शनि हो, तो जातक सदा दुःखी रहता है। इस घर में सूर्य की समयावधि में सूर्य और बृहस्पति का प्रभाव उत्तम रहेगा। सत्ता से सम्बन्ध मधुर रहेंगे। यदि धनवान सहायक न बने तो साधु से ही उसका भला होगा। संतान सुख पूर्ण मिलेगा। यदि बृहस्पति का साथ रहा तो मान-सम्मान बढ़ता रहेगा।

साथ में, शनि नौवें या ग्यारहवें घर में हो, तो जातक के लिए शुभ रहता है और दूसरों से भी हमदर्दी रखने वाला होगा।

चंद्र चौथे तथा बृहस्पति नौवें घर में होने पर राजयोग कारक बनता है।

मंगल तीसरे और बृहस्पति नौवें या बारहवें घर में हो, तो जातक को उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

बृहस्पति दसवें घर में हो, तो जातक कें एक से अधिक विवाह होते हैं।

शनि तीसरे घर में हो, तो जातक को दुःखों का पहाड़ झेलना पड़ता है, आर्थिक मुसीबतों से सामना करना पड़ता है। संतान का नाश होता है।

## निवारण

बंदरों को चने और गुड़ खिलाएँ। झूठ कभी न बोलें। लोगों को दिए आश्वासनों की पूर्ति करें। पुराने रीति-रिवाजों का पालन करें। तीन कुत्तों को पालें। बहन के घर में भाई, ससुराल में जमाई, ताऊ के घर में उसकी कन्या का पुत्र—इन तीन रिश्तों के लिए तीन कुत्ते पालें। किसी की निंदा न करें तथा अपनी निंदा भी न होने दें।

## छठा घर

छठा घर बुध और केतु का भी है। बुध आमदनी को हटाता और केतु आमदनी बनाता है। इसका जातक अपनी हठधर्मी या जिद्द और बात पर अड़े रहने के कारण बार-बार प्रशासन से सम्बन्ध तोड़ता और परेशान होता होगा।

ऐसा जातक अपनी ननिहाल से सुख पाता है। मुकदमों पर अधिक व्यय होता है। मित्र और शत्रु दोनों ही उससे दबकर रहते हैं। जातक अपने भाग्य पर भरोसा रखता है और बेफिक्र रहता है।

यहाँ सूर्य बलहीन रहता है, ऐसे समय में यदि पहले घर में शुक्र-शनि, राहु या केतु हो, तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। राज्य से चिंता रहती है। यदि बुध और शनि बारहवें घर में बैठे हों, तो परिवार की स्त्रियाँ मरती जाती हैं। पाँव में रोग उत्पन्न होता है। जातक का जन्म अपने ननिहाल में होता है। पैतृक सुख अच्छा रहता है। किन्तु पापी ग्रहों के संयोग से बुरा समय आरंभ होता है। जीवन में एक बार तो पतन अवश्य होता है।

पुत्र जन्म के बाद व्यतीत हुआ अच्छा समय लौट आता है। अपना या पिता का राज्याश्रय एक बार खत्म होगा। मामाओं का हाल खराब रहता है। पत्नी एवं संतान का सुख कम रहता है। किन्तु जातक निःसंतान नहीं होता।



मंगल दसवें घर में होने पर लड़के मरते जाते हैं।

बुध बारहवें घर में होने पर राज्याश्रय, राजाशाही नष्ट होती है। उक्त रक्तचाप की बीमारी लगती है। शनि बारहवें घर में होने पर परिवार की स्त्रियाँ पतियों से पहले मरती हैं।

## निवारण

बंदरों को गेहूँ और गुड़ खिलाएँ। सफेद चींटियों को सात प्रकार के धान्य खिलाएँ। गंगाजल और चाँदी का चौकोर टुकड़ा सदा अपने पास रखें। माता तथा दादी के चरण धोएँ।

## सातवाँ घर

इस घर में सूर्य हो, तो जातक अपनी गृहस्थी से तंग आकर भाग जाता है और साधु बनता है। पच्चीस वर्ष तक स्त्री का सुख मंदा रहता है। पहली स्त्री रोगी होती है। व्यापार में हानि, राज्य-सरकार से परेशानी, स्वभाव क्रोधी रहता है। ऐसे जातक मित्र ग्रहों की सहायता से लाभान्वित होते हैं। शनि का टकराव होने पर दूध से आग बुझाने पर लाभ होता है। जातक के जन्म से पहले आर्थिक स्थिति अच्छी रहती है। किन्तु यदि बुध का साथ हो जाए, तो सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

पहले घर में कोई ग्रह न हो, तो सूर्य सोता है। वर्षफल में दूसरे घर में जाएँगे तब उसका भाग्य चमकेगा। परायी ममता साथ देती है। ससुरालवालों से मधुर सम्बन्ध नहीं रहते। हर ग्रह अपने से आठवें घर में बैठे ग्रहों से टकराव करता है। ऐसा टकराव हो, तो दूध से आग बुझाने से चंद्र को नष्ट करने से लाभ पहुँचता है।

शुक्र पहले घर में होने पर जातक के दिमाग में कमजोरी आती है। पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहता है। जातक का भाग्य मंदा रहता है। बुध नौवें घर में बैठा होने से बृहस्पति और बुध शत्रु होने से संतान का नाश होगा।

## निवारण

1. रसोई के बाद आग बुझाने के लिए दूध का प्रयोग किया करें।
2. शीशे के टुकड़े जमीन में दबा दें।
3. बिना सींग की गाय की सेवा करें। काली गाय को घास खिलाया करें।
4. कुछ मीठा खाकर पानी पीकर कार्यारंभ किया करें।
5. रसोई के बाहर रोटी का टुकड़ा जलती आग में डाल दें।

## आठवाँ घर

सूर्य आठवें घर में रहने से ऐसे जातक के सामने किसी की मृत्यु नहीं होती। कोई बहुत बीमार रहे और आठवें घर में सूर्य वाला जातक उसके पास बैठे, तो उस बीमार को मुक्ति मिलती है।

आठवें घर में सूर्य के होने पर जातक क्रोधी, धैर्यहीन, स्त्रियों के लिए लालायित रहने वाला, गुप्तेंद्रिय का रोगी, 'साँच को आँच नहीं' मानकर आगे बढ़ने वाला, तपस्वी तथा सत्ता से परेशानी उठाने वाला होता है। उसे सदा बीमारी लगी रहेगी। मृत्यु का घर होने से मृत्यु के समय कष्ट नहीं होगा। बड़े भाई और गाय की सेवा में लाभान्वित होकर

जातक दीर्घायु बन सकता है। जातक की आर्थिक स्थिति खराब और आँखों की रोशनी कम होती है।

जातक अपनी बहन की ससुराल में न रहे और चोरी न करे, तो अच्छा फल मिलता है। यह आठवाँ घर अशुभ मंगल एवं शनि का है, फिर भी यहाँ का सूर्य जातक की रक्षा करता है और उसे शतायु बनाता है।

### निवारण

1. मकान का मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण दिशा में न रखें।
2. सफेद गाय को पाला करें।
3. अपना चरित्र साफ रखें।
4. दामाद के साथ न रहें।
5. बड़े भाई एवं गाय की सेवा करें।

## नौवाँ घर

यह घर बृहस्पति का है जोकि सूर्य का मित्र है। यह बाप-दादा का घर है, इसलिए ऐसा जातक बाप-दादा की मशूहरी और मान-प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला होगा।

कुंडली के इस नौवें घर में सूर्य बैठा हो, तो जातक भाग्यवान होता है। वह वाहन सुख भोगता है। बड़े परिवार से युक्त रहता है। यहाँ का सूर्य हर प्रकार से अच्छा फल देता है। यहाँ बैठा सूर्य जातक को दीर्घायु एवं परोपकारी बनाता है। परिवार बड़ा रहता है जातक अपनी सात पुश्तों को तारने वाला रहता है। घर में खाली पड़े बर्तन रसोई से अलग पड़े अच्छा प्रभाव नहीं डालते।

खानदान के लिए जातक अपना पूरा जीवन न्यौंछावर कर देता है। बाइसवें वर्ष से सूर्य अपना पूर्ण प्रभाव देता है। माता-पिता के माध्यम से राजदरबार में श्रेष्ठता प्राप्त होती है। स्त्री पक्ष निर्बल रहता है, साथ ही माता पक्ष प्रबल रहता है। तीर्थ यात्रा का उत्तम प्रभाव जातक के जीवन पर पड़ता है।

जातक परंपरा से ठेकेदारी का काम करता है। पूर्व की तीन और बाद की तीन पुश्तों का उद्धार होता है। इसके बाप-दादा दीर्घायु होते हैं।

यदि बुध का साथ न हो और बृहस्पति आठवें या दसवें घर में हो, तो जातक दीर्घायु बनता है। उसकी आजीविका डॉक्टरी या हाकिमी से होती है। स्वभाव अति उग्र या अति नम्र रहने से सर्वस्व खोना पड़ सकता है।

### निवारण

1. ताँबे के बरतनों का उपयोग करें।
2. दूध, चावल और चाँदी का दान किसी से न लें।
3. अधिक क्रोधी या अधिक सहनशील न बनें।

## दसवाँ घर

दसवाँ घर शनि का है, जो कि सूर्य का शत्रु है, अतः जातक का हाल शत्रु के घर में फँसे व्यक्ति जैसा होगा। जन्मकुंडली के घर में सूर्य हो, तो जातक को नौकर-चाकरों का सुख प्राप्त होता है। वह राज्य शासन से भी लाभान्वित रहता है तथा वहमी स्वभाव



का होता है। सत्ता से परेशानियाँ भी रहती हैं। इस सूर्य के समय यदि शुक्र चौथे घर में हो, तो पिता को और पाँचवें में हो, तो माता को कष्ट होता है।

सूर्य और बृहस्पति में होते हुए पाँचवें में भले ही मित्र ग्रह बैठे हों वे शत्रुता ही करेंगे। पुरुष ग्रह मंगल और बृहस्पति के सहयोग के बिना सत्ता का फल खराब मिलेगा। दसवें घर के सूर्य में संतान पक्ष निर्बल रहता है।

यदि जातक को सत्ता से लाभ मिले, तो शनि का प्रभाव नीच का होने से धन हानि होती है। उन्नीस वर्ष की आयु तक पिता से अलग रहना पड़ता है।

### निवारण

1. सिर पर हमेशा सफेद रंग की टोपी, साफा या पगड़ी पहनें। सिर ढँपे रखें।
2. काले-नीले कपड़े न पहना करें।
3. पैतृक मकान में पानी का हैंड पंप जरूर लगवाएँ।
4. भूरे रंग की भैंस को घर में पालें।
5. नदी या दरिया में ताँबे का खोटा पैसा बहाएँ।

## ग्यारहवाँ घर

यदि ग्यारहवें घर में सूर्य हो, तो जातक पूर्णतया धार्मिक रहता है। उसे सत्ता से लाभ होता है। जातक ऐशो-आराम, शराब, माँस, अंडे का सेवन न करे, तो उसका जीवन उत्तम रहेगा और उसे तीन पुत्रों का सुख मिलेगा। सूर्य के प्रकाश को यहाँ शनि काला कर देता है। ऐसे समय में चंद्र पाँचवें घर में हो, तो मृत्यु बारहवें वर्ष में होती है। तीसरा चंद्र भी नीच प्रभाव डालता है और भाग्य को चमकने नहीं देता किन्तु वह आयु का सदा रक्षक रहता है।

जातक का पूरा परिवार धार्मिक होगा, तो ही सूर्य यहाँ शुभ फल देगा। चाल-चलन खराब होने पर और शनि के मंदे काम—शराब पीना, माँस-अंडे खाना, झूठ बोलना आदि करने पर सूर्य यहाँ जातक की बर्बादी का कारण बनेगा।

यदि जातक खराब पीए, मांस खाए या झूठ बोले तो उसके जीवन में चारों तरफ अंधेरा-ही-अंधेरा रहेगा। यह शनि का बुरा काम है। इन कार्यों से शनि सूर्य को नष्ट कर देगा और संतान का भी नाश होगा। यह प्रभाव 42-48 वर्ष की आयु तक रोक पाना जातक की शक्ति के बाहर होगा।

### निवारण

1. शनि को मंदा न होने दें।
2. शराब न पीएँ, मछली न खाएँ न ही पकड़ें और न ही पालें।
3. झूठ बोलने की कोशिश न किया करें।
4. जीवन में एक या दो बार कसाई से बकरा खरीद कर उसे खुला छोड़ दें। उसके जीवन को बचाएँ।

## बारहवाँ घर

बारहवाँ घर हर प्रकार से सूर्य के मित्र बृहस्पति का है, अतः इस घर से सूर्य सदा उत्तम फल देने वाला होगा। इसका जातक हमेशा राहु से सम्बन्ध रखने वाला कारोबार

और मंदे ख्यालात से दूर रहे। ऐसा जातक उद्दाम, नेत्ररोगी, मस्तिष्क की खराबी से युक्त, परायी आग में जलने वाला होता है। ऐसा जातक झूठी गवाही न दे, किसी की अमानत में खयानत न करे। यहाँ के सूर्य को राहु कोई हानि नहीं पहुँचा रहा हो, तो धन-परिवार बढ़ता जाएगा। हाथ की कारीगरी से सूर्य को ग्रहण लगेगा।

यदि जातक के मकान में आँगन न हो, तो सूर्य का अच्छा फल नष्ट होगा। घर का अंधेरा अच्छा नहीं होता। यदि घर में अंधेरा रहेगा, तो जातक संतानहीन रहेगा। घर के बाहर जाकर साधु नहीं बनेगा। यदि साधु बन ही जाए, तो वह जागीरदार बनेगा।

बुध के कामों से धन मिलेगा। हल्के कामों में नुकसान होगा।

अशुभ, नीच सूर्य आँखों पर बुरा प्रभाव डालता है। ऐसा जातक शनि के काम कभी न करे अन्यथा रोटी के लाले पड़ जाएँगे।

## निवारण

1. रविवार का व्रत रखा करें।
2. गेहूँ, गुड़, ताँबे का दान करते रहा करें।
3. अपना चरित्र उत्तम और सम्पन्न रखें।
4. ताँबे की अँगूठी का ताबीज पहना लाभ करेगा।
5. ताँबे का सिक्का प्रवाहित जल में बहाएँ।
6. मकान का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में रखें।
7. चोर, स्मगलरों एवं कालाबाजारियों से दो हाथ दूर रहें।
8. सूर्य नीच हो, तो सूर्य की कारक चीजों का दान न करें।
9. सरकारी महकमे में नौकरी से निर्वाह होगा पर रिश्वतखोरी न करें।
10. मैकेनिक का कार्य करने से हानि होगी।
11. बिना आँगन के मकान में न रहे।

❑❑❑



# 9 चंद्र ग्रह

चंद्र को कुंडली के चौथे घर का स्वामी माना गया है। यह शनि के शत्रु सूर्य से दोस्ती निभाने के लिए शनि के वक्त रात को भी सूर्य की तरह प्रकाश फैलाता है तथा शनि के अंधेरे को खत्म करने की कोशिश करता है।

चंद्र ग्रह माता का कारक माना गया है। माता को अपने बच्चों का पोषण करने के लिए सूर्य की उष्णता की आवश्यकता होती है। अधिक या कम मात्रा में उष्णता बालक के विकास में बाधक बनती है। यही कारण है कि चंद्र सूर्य के इर्द-गिर्द घूमता है पर उसके साथ नहीं रहता। वह अपना मार्ग भी नहीं बदलता।

बृहस्पति और केतु चंद्र के घर से पहले और बाद के घरों में फलीभूत नहीं होते। बुध अनुकूल हो, तो सोया हुआ चंद्र भी उत्तम फल देता है। अगर शुक्र का चंद्र से सहयोग हो, तो जातक को स्त्रियों का विरोध सहन करना पड़ता है, पर शुक्र चंद्र के साथ न हो, तो जातक में ऊँचे दर्जे की आध्यात्मिकता का विकास होता है। कोई भी ग्रह चौथे घर में बैठे, तो वह अकेला ही अच्छे प्रभाव देता है।

यदि घर स्वामी अपने घर में न हो, तो चंद्र उस घर का अच्छा फल देता है। बुजुर्गों के चरण स्पर्श एवं आशीर्वाद से जातक का भला होता है। बुध जिस घर में हो उसके पहले घरों में चंद्र हो, तो चंद्र आगे के घरों को लाभान्वित करेगा। किन्तु चंद्र और बुध दोनों चौथे या सातवें घर में बैठें, तो वे कभी भी अच्छे फल नहीं देते।

शनि-चंद्र का योग हो, तो चंद्र पर कोई बुरा असर नहीं होता। शनि प्रधान जातक को शुक्र के व्यवसाय से मुनाफा नहीं मिलता। चंद्र राहु या शनि से योग करता हो, तो इनका बुरा असर उन घरों से सम्बन्धित रिश्तेदारों पर पड़ेगा।

जब सूर्य और मंगल इकट्ठे होते हैं, तब चंद्र का अच्छा प्रभाव नहीं रहता। बृहस्पति चंद्र से योग करता हो और 9, 5, 8 या 12 घरों में बुध, शुक्र, राहु, शनि क्रमशः बैठे हों, तो चंद्र के अच्छे फल प्राप्त नहीं होते।

अगर जातक का जन्म शुक्ल पक्ष में हुआ हो और चंद्र मीन राशि का हो, तो वह जीवन में सुखी होता है। क्षीण चंद्र मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर या कुंभ का हो, तो जातक जीवन भर दुःखी रहता है। जन्मकुंडली में जहाँ सूर्य बैठा है वहाँ से अगले सात घरों में चंद्र बैठा हुआ हो, तो शुक्ल पक्ष होता है। प्रत्येक घर में राशिफल का उपाय करके चंद्र को ठीक किया जा सकता है।

जिस घर में चंद्र बैठता है उस घर में सूर्य का प्रभाव भी जाता है। शत्रु ग्रहों के साथ बैठने से चंद्र मंदा हो जाता है। आठवें घर में बैठा चंद्र जातक को शत्रु से बचाता है। सातवें में चंद्र धन-संपत्ति देता है। तीसरे में बैठा चंद्र युद्ध में सहायता करता है।

जब चंद्र का पक्का यानी चौथा घर खाली हो, किसी भी उच्च ग्रह की उस पर दृष्टि न हो, शेष ग्रह चाहे जितने नीच हों फिर भी अकेला चंद्र ही उत्तम शुभ फल देता है।

जन्मकुंडली में बृहस्पति 1 से 7 घरों में और केतु बाद के यानी 8 से 12 घरों में हो, तो दोनों की अपेक्षा चंद्र का फल नीच होगा।

जिसका चंद्र उच्च है वह व्यक्ति सबकी हाँ में हाँ मिलाकर उनको अपने वशीभूत कर लेता है। उच्च चंद्र का व्यक्ति शांत स्वभावी, चौड़े चेहरे वाला, घोड़े जैसी आँखों वाला एवं सफेद कपड़े पहनने का शौकीन होता है।

चंद्र के घर में बैठा ग्रह, घर का साथी ग्रह बन रहा हो, तो वह भी अच्छा फल देगा, फिर वह भले ही चंद्र शत्रु ग्रह हो।

जब चंद्र की दृष्टि शुक्र, बुध, शनि, राहु, केतु पर पड़ रही हो, तो अच्छा परिणाम होगा। किन्तु इसके विपरीत यदि उपरोक्त ग्रहों की दृष्टि चंद्र पर पड़ रही हो, तो चंद्र का अच्छा प्रभाव नहीं होगा। चंद्र में इतनी शक्ति है कि शत्रु के घरों में जाकर भी मित्रता कर लेता है।

चंद्र के साथ सूर्य होने पर दोनों का प्रभाव अच्छा मिलता है।

बुध, बृहस्पति या सूर्य चंद्र के साथ हो या उसके सामने आते हों, तो जातक की समुद्र यात्रा सफल नहीं होती। नीच का होने पर चंद्र निम्न फल देता है–

जब चंद्र पहले घरों में और शत्रु ग्रह बाद के घरों में हो, तो चंद्र अपना प्रभाव शत्रु ग्रहों को नहीं देता। जब शत्रु ग्रह और चंद्र दोनों इकट्ठे हों, तो दोनों का फल नीच हो जाता है।

जब शत्रु ग्रह पहले घरों में और चंद्र बाद के घरों में हो, तो चंद्र का बुरा प्रभाव शत्रु ग्रहों पर नहीं पड़ेगा।

चंद्र के प्रभाव के समय शुक्र और बुध चंद्र का बल आधा कर देते हैं, किन्तु अपनी पूरी शक्ति रखते हैं।

नीच का होने पर चन्द्र निम्न फल देता है–

घर में दूध देता पशु मर जाता है। अकस्मात् नल, कुआँ, तालाब सूख जाते हैं। जातक की महसूस करने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

**विशेष**–छठे घर का चंद्र माता को कष्ट देता है। खरगोश पालने से संतान सुख प्राप्त होता है। चंद्र उच्च का या अपनी राशि के घर में हो, तो जातक हिंदी, संस्कृत का विद्वान् बनता है। जातक को पैतृक मकान का सुख मिलता है।

## निवारण

शिवजी की उपासना, आराधना करें। माता की सेवा से चंद्र शुभ एवं प्रबल होता है। अपने बुजुर्ग, साधु, ब्राह्मणों के चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। रात को पानी सिरहाने रखकर प्रातः बबूल के पेड़ को उसी पानी से सींचे। सोमवार को सफेद कपड़े में मिश्री बाँधकर पानी में बहाएँ। हाथ में चाँदी की अँगूठी पहनें।

## पहला घर

कुंडली का पहला घर लग्न कहलाता है। यह घर सूर्य और मंगल से प्रभावित रहता है। यदि पहले घर में चंद्रमा हो, तो जातक को जीवनभर धन-दौलत व जायदाद की कमी महसूस नहीं होगी। दूध के विक्रय से दुःख मिलेगा। परिवार के साथ यात्रा करते समय नदी-दरिया में पैसा डालना शुभ होगा। शीशे के बर्तनों में पानी, दूध न पीएँ। संतान का



अभाव हो, तो चाँदी धारण करने से इस अभाव की पूर्ति होगी। 28 वर्ष की उम्र से पहले विवाह हो जाए, तो पुत्र संतान का सुख कम मिलता है। माता से चावल और चाँदी लेकर संभालकर रखने से पुत्र सुख मिलता है। जातक का विवाह 28 वर्ष उम्र से पहले होने पर माता की मृत्यु होती है और संतान पक्ष मंदा रहता है।

पहले घर में बैठे चंद्र को अन्य ग्रह अपनी दृष्टि से या साथ देने से कोई हानि नहीं पहुँचा रहा हो, तो परायी दौलत व संपदा मिलती है, जिससे जातक अमीर बन जाता है।

बृहस्पति चौथे एवं नौवें में शनि होने पर हर प्रकार का वाहन सुख जातक को प्राप्त होता है। शुक्र सातवें घर में हो, तो सास-बहू का सम्बन्ध माँ-बेटी जैसा होता है किन्तु विवाह के बाद संतान को परेशानी होती है।

शनि छठे घर में हो, तो जातक का हाल मंदा रहता है। सुवर्ण हानि होती है परन्तु कोई लड़का काना हो, तो उन्नीस वर्ष की आयु में सुवर्ण प्राप्ति होती है।

## निवारण

1. बच्चों के साथ नदी पार करते समय नदी में ताँबे का सिक्का डालें।
2. माता का आशीर्वाद लें, साथ ही उससे चाँदी और चावल लेकर हमेशा अपनी जेब मे रखें।
3. पलंग के पायों में चाँदी की कीलें लगवा दें।
4. चौबीस साल की उम्र में गाय पालें या काम करने वाली स्त्री रखें।
5. अट्ठाइस साल की उम्र से पहले शादी न करें।
6. चौबीस साल की उम्र से पहले मकान न बनवाएँ।
7. पानी या दूध चाँदी के गिलास में पिया करें।
8. घर में कुआँ हो तो उसे बंद न करें।
9. लाल रंग की मंगल की चीजों का इस्तेमाल करें। धनवृद्धि के लिए लाल रंग का रूमाल अपनी जेब में रखा करें।
10. बड़ के वृक्ष का जल से सिंचन करें।

## दूसरा घर

कुंडली का दूसरा घर बृहस्पति और शुक्र दोनों से प्रभावित है और चन्द्र इसमें विशेष उत्तम माना गया है। यदि दूसरे घर में चंद्र उच्च का हो जाता है। परिणाम- स्वरूप जातक के भाग्य को जगाता है और धन-संपदा से उसे संपन्न रखता है। यहाँ चंद्र उच्च है और यह घर बृहस्पति का होने से बृहस्पति का ही अच्छा फल प्राप्त होता है। जातक का भाग्य चमकता है।

ऐसे जातक के प्रायः बहनें नहीं होतीं। किन्तु भाई अवश्य होते हैं। जातक का जन्म शुक्ल पक्ष में होता है।

मकान के अंदर मुख्य द्वार से 24 कदम पर कुआँ, तालाब अवश्य रहता है। जलस्रोत ऊपरी मंजिल पर होता है। जिसके नीचे नल, पानी रखने का स्थान अवश्य होता है। बुढ़ापा अच्छी तरह नहीं कटता।

आयु 31 वर्ष होती है लकिन जब पुरुष ग्रहों का साथ मिल रहा हो, तो जातक की आयु 96 वर्ष की होती है। चंद्र दूसरे घर में हो, तो वंश चलता रहता है।

वर्षफल जन्मकुंडली में चंद्र जब पहले घर में आता है, तब भी चंद्र के फल मिलते हैं। बृहस्पति चौथे घर में हो, तो दोनों ग्रहों का अलग और उच्च फल प्राप्त होता है। शुक्र का फल भी श्रेष्ठ रहता है। जातक धनवान एवं मुखिया होठा है।

शनि चौथे घर में होने पर पैतृक सुख अवश्य प्राप्त होता है। पुश्तैनी जायदाद का सुख भी मिलता है।

शनि नौवें घर में होने से जातक धनवान और उच्चाधिकारी बनता है।

दीर्घायु प्राप्त करने के लिये मकान की बुनियाद में चाँदी का पतरा अवश्य दबाना चाहिए। पुराने चावल चाँदी की डिब्बी में बंद करके घर में रखें।

## निवारण

1. मकान की नींव में चाँदी को दबवाएँ।
2. माँ के चरण स्पर्श करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया करें।

## तीसरा घर

तीसरा घर मंगल और बुध से प्रभावित है तथा चन्द्र का मंगल मित्र है, अतः इस घर में चन्द्र आयु व धन में वृद्धि करने वाला होगा। मौत का दरवाजा बन्द होगा। अतः जातक दीर्घायु होगा। ऐसा जातक मधुर बोलने वाला, कड़ा परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्यु-रक्षक तथा भाइयों के सुख से पूर्ण रहता है। चंद्र के साथ बुध होने से कठिनाइयाँ आती हैं। किन्तु कठिनाई के समय में अचानक दैवी सहायता प्राप्त होती है। यह घर मंगल का पक्का घर है। यहाँ चंद्र के साथ मंगल होने पर उसका भी प्रभाव मिलेगा और जीवन में सफलता प्राप्त होगी। चौथे घर में मंगल होने पर भी वह अच्छा ही फल देगा।

किन्तु मंगल अशुभ हो, तो माँ से झगड़ा होते रहना जातक के लिए अच्छा सावित होगा। यहाँ का चंद्र जातक की हर प्रकार से सहायता करता है। चोरी से बचाव होता है। भाइयों से धन-संपदा प्राप्त होती है।

वर्ष का हर तीसरा महीना उत्तम रहता है। आयु अस्सी वर्ष की होती है। यहाँ बैठा चंद्र नौवें और ग्यारहवें घर को देखता है।

चंद्र तीसरे और मंगल चौथे घर में होने पर चंद्र मंगल दोनों मित्र होने से मंगल अच्छा फल देता है। जातक साहसी होता है। हर प्रकार की शरारत का जवाब देने की क्षमता इस घर में बैठे ग्रहों में है।

वर्ष जन्मकुंडली में चंद्र तीसरे घर में, बुध ग्यारहवें घर में हो, तो हर समय जातक डरपोक बना रहता है।

## निवारण

1. लड़के के जन्म दिवस पर चाँदी, चावल और दूध का दान दें और लड़की के जन्म दिवस पर गेहूँ, ताँबा और गुड़ का दान दें।
2. दुर्गा पूजन किया करें।
3. कन्यादान करने से कभी गुरेज न करें।
4. धन-संपत्ति की वृद्धि के लिए घोड़ा और चकोर को घर में पालें।
5. सूर्य की कारक चीजों का दान लाभ करता है।



जातक चौबीसवें वर्ष विवाह करे, तो भावी संतान पर भारी पड़ता है। जातक ज्योतिष शास्त्र का जानकार होता है, चाल-चलन संदेहपूर्ण होता है और ईश्वर का भक्त होता है। परन्तु चंद्र बुध का प्रभाव नष्ट कर देता है, जिससे जातक सरकारी नौकरी में उच्च पद पर होता है, उसे वाहन सुख मिलता है।

चंद्र यदि पापी ग्रहों से नीच हो, तो पन्द्रह वर्षों तक माता से अलग रहना पड़ता है। जब शनि का प्रभाव आरंभ होता है, तब दुनियादारी से मोह भंग हो जाता है।

यहाँ बैठा हुआ चंद्र जिस घर में शुक्र बैठा हो उस घर के ग्रहों के प्रभाव को दूषित कर देता है। आध्यात्मिक फल श्रेष्ठ रहता है किन्तु जातक के स्वयं के लिए पत्नी सुख अपर्याप्त रहता है।

चंद्र-शुक्र के समय में यदि चौबीसवें वर्ष में विवाह हो, तो अच्छा फल प्राप्त नहीं होता। दूध-पानी बेचने से पुत्र संतान पैदा होने में अवरोध उत्पन्न होता है।

चंद्र सातवें घर में और शुक्र, राहु या केतु सहित कहीं भी हो, तो अकल्पित घटनाएँ घटती हैं। बच्चों पर भूत-प्रेत की छाया रहती है। बृहस्पति, चंद्र घर में होने पर बच्चों को कष्ट होता है।

शनि सातवें घर में होने पर जातक की मृत्यु घातक शस्त्र से होती है।

शुक्र पहले घर में हो, तो हमेशा सास-बहू में झगड़ा होता रहता है।

बुध पहले घर में होने पर जातक नशेबाज होता है।

## निवारण

1. चौबीसवें या सत्ताइसवें वर्ष में विवाह करने की कोशिश न करें।
2. स्वयं का चरित्र स्वच्छ रखें।

## कुंडली का आठवाँ घर

आठवाँ घर शनि और मंगल से प्रभावित होता है। यदि यहाँ बृहस्पति की मदद ली जाए, तो चंद्र, मंगल, बृहस्पति आठवें घर के मंदे असर से बचाव रखेंगे और जातक लंबी उम्र को प्राप्त करेगा। किन्तु शनि को प्रबल करने से हानि ही अधिक होगी।

आठवें घर में यदि चंद्र नीच का हो, तो ऐसा जातक कम उम्र का, ईर्ष्यालु, रोगी, शिक्षा या माता दोनों में से एक के सुख से वंचित रहता है। जातक निकम्मा किन्तु भाग्य को जगाने वाला तथा ऊपरी कमाई करने में माहिर होता है।

चंद्र-शुक्र इस घर में हों, तो जातक को मिरगी का रोग रहता है। ऐसा जातक उदासीन रहता है। पहले घर में केतु या राहु होने पर मकान में छत के नीचे बना हुआ कुआँ संतान के लिए अशुभ रहता है, जातक को निःसंतान तक बना देता है। जातक यदि जुआरी या जौहरी हो, तो इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

राहु कभी नीच प्रभाव नहीं देता। यहाँ चंद्र अशुभ मंगल (चौथे या आठवें घर में) नीच का हो, तो जातक रोगी होता है, अकारण लोगों से शत्रुता होती है। जातक के जन्म समय में माता को भारी कष्ट होता है।

आठवाँ घर अशुभ मंगल और शनि का मुख्य आवास है। इसलिए ये दोनों ग्रह यहाँ तरह-तरह के कष्ट देते हैं। वे जातक को कर्म-धर्महीन बना देते हैं। उसके जीवन में बाधाएँ बढ़ती ही जाती हैं। घर से बेघर होना पड़ता है। जब तक चंद्र की चीजें घर में स्थापित रहेंगी, तब तक जातक की आयु पर नीच प्रभाव नहीं पड़ेगा।

## निवारण

1. परिवार के मृत व्यक्तियों का श्राद्ध कर उनके नाम पर दान दें।
2. अस्पताल या श्मशान में पानी का नल लगवाएँ।
3. बृहस्पति, सूर्य, मंगल की कारक चीजें मंदिर में दान करें।
4. माता से चाँदी और चावल लेकर चाँदी की डिब्बी में संभालकर पास में रखें।
5. दूध या चावल का दान कभी भी न करें।
6. श्मशान से पानी लाकर उसमें चाँदी के पतरे का चौकोर टुकड़ा डालकर घर में रखें।
7. दूसरे घर में राहु या केतु हो, तो बोतल में दूध भरकर ढक्कन लगाकर किसी वीरने में दबा दें।

## नौवाँ घर

नौवें घर में चंद्र हो, तो जातक दुखियों का रखवाला, समाज में आदरणीय, पुश्तैनी जायदाद का मालिक होता है। वह हर प्रकार से उत्तम जीवन जीता है। राहु के ग्रहण से चंद्र आधा होकर आधे ही परिणाम देता है। नवें घर का चंद्र घड़ेभर मोती समान माना जाता है। चौवीसवें वर्ष में जातक को चंद्र का श्रेष्ठ प्रभाव दिखता है।

नौवें घर में चंद्र हो, तो पाँचवें घर में बैठे ग्रह भी उसे गुप्त रूप से सहायता पहुँचाते हैं। ऐसा जातक घूमने-फिरने का शौकीन, सरल स्वभाव का, संगीत में रुचि रखने वाला, धार्मिक-कार्मिक होता है। साथ में बृहस्पति पाँचवें घर में हो, तो जातक नसीब वाला होता है।

## निवारण

1. रोज मंदिर जाया करें।
2. चरित्र स्वच्छ और सात्विक रखें।

## दसवाँ घर

दसवाँ घर चंद्र के शत्रु शनि का है। अतः इस घर में चंद्र के नीच फल मिलते हैं। ऐसे जातक की माँ से कम बनती है। जातक के लिए रात को दूध पीना जहर पीने के समान होता है। जातक प्रत्येक कार्य में निपुण होता है। दूसरे घर में कोई ग्रह न हो, तो जिस घर में बृहस्पति बैठा हो उस घर में बृहस्पति की कारक चीजें स्थापित करके सहायता प्राप्त की जा सकती है।

दसवें घर में बैठा चंद्र सर्प समान माना जाता है। ऐसा जातक भले ही डॉक्टर हो, फिर भी वह डॉक्टरी न करे। उसके द्वारा दी गई दवाइयों से मरीजों को राहत मिलने के बजाय मृत्यु आती है।

इस घर का जातक तैराक को भी डुबाने वाला होता है। उसका सम्बन्ध चोर-डाकू, जुआरी, शराबी लोगों से रहता है। जातक धोखेबाज होता है।

वर्ष फल के अनुसार जब शनि पहले घर में आता है, तब वह जातक की घोर हानि करता है। उम्र के बयालिस वर्षों तक धन-संपत्ति आती रहती है।



## निवारण

1. डॉक्टर हों, तो रोगियों को कभी मुफ्त दवाई न दें।
2. चरित्र को स्वच्छ रखें।
3. रात को दूध न पिया करें।
4. बृहस्पति से मदद लें।

## ग्यारहवाँ घर

जिसकी कुंडली के ग्यारहवें घर में चंद्र हो, तो ऐसे जातक में वीर्य की कमजोरी रहती है। सब कुछ होते हुए भी नहीं के बराबर रहता है। इस घर में स्थित ग्रह अपने शत्रु की नाक में दम करता है।

चंद्र का केतु शत्रु है। अतः पुत्र जन्म में बाधा आती है। चाँदी धारण करने से चंद्र को लाभ मिलता है। शुक्र-चंद्र का शत्रु ग्रह यदि तीसरे घर में बैठा हो, तो चंद्र का प्रभाव नष्ट होता है।

ग्यारहवें घर में चंद्र बेजान होता है। दादी-पोते का मेल नहीं रहता। जातक के पुत्र की आयु अट्ठारह वर्ष की होने तक पिता-पुत्र में से एक की अथवा दोनों की मृत्यु हो जाती है। जातक के छत्तीस वर्ष की आयु तक दोनों की मौत हो जाती है।

वर्षफल में जब चंद्र पहले घर में आता है, तो सत्ता से श्रेष्ठतम फल प्राप्ति होती है। बारह वर्ष तक निरंतर धन-संपत्ति प्राप्त होती रहती है। जातक की आयु नब्बे वर्ष की होती है। ऐसे जातक को मुख्यतः स्त्रियों से अधिकाधिक सहयोग प्राप्त होता है।

इस घर में चंद्र बृहस्पति के साथ होने पर अति श्रेष्ठ फलदायी होता है। शुक्रवार को विवाह, बुधवार को जन्मी बहन, बुआ, मौसी, शनि को आंरभ किया हुआ काम, प्रातःकाल में दिया दान, सायं को सुना हुआ बृहस्पति का उपदेश ये सब जातक को नीचा प्रभाव देंगे।

बुध तीसरे घर में होने पर भाई-बंधु एवं संपत्ति पर बुरा असर पड़ता है जबकि बुध पाँचवें घर में होने पर दोनों घरों का अच्छा फल प्राप्त होता है।

## निवारण

1. जातक की माता 43 वर्ष की आयु होने तक पोते का मुँह न देखे।
2. मंदिर में दूध दिया करें।
3. नौ वर्ष से कम उम्र में ग्यारह बच्चों को ग्यारह-ग्यारह पेड़े खिलाएँ।
4. चाँदी की ठोस गोली सदा जेब में रखें।

## बारहवाँ घर

यह घर चंद्र के मित्र बृहस्पति का है। अतः इस घर में चंद्र अपने मित्र मंगल और उससे सम्बन्धित वस्तुओं पर उत्तम प्रभाव करेगा तथा अपने शत्रु बुध और केतु की वस्तुओं को हानि पहुँचाएगा। यदि कुंडली के बारहवें घर में चंद्र हो, तो जातक के मन की बात मन में ही रह जाती है। दिमागी परेशानियों की वजह से रात की नींद हराम हो जाती है। कम पढ़ा-लिखा होते हुए भी जातक बहुत होशियार और दानी प्रकृति का रहता है। उसे मातृ सुख का अभाव रहता है, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं रहती। पढ़ाई का उपयोग

जीवन में नहीं होता। वर्तमान अच्छा गुजरता है। पानी से भय रहता है। अपनी और ससुराल की संपत्ति पर भारी रहता है। जातक के जीवन में स्त्रियाँ किसी-न-किसी रूप में दुःख का कारण बनती हैं।

दूसरे घर में सूर्य तथा पहले घर में मंगल होने पर जातक आलसी, दरिद्र, निर्धन रहता है। वह अक्सर अस्वस्थ ही रहता है।

आठवें घर में केतु हो, तो जातक पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जातक की संतान निकम्मी होती है।

इस घर में चंद्र के कारण जातक केवल इसी जन्म में नहीं अपितु पिछले जन्म में भी धनहीन रहता है। हर प्रसन्नता के वाद किसी-न-किसी प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। भविष्य की बातें स्वप्न के माध्यम से देख लेता है।

लोग इस पर इतना विश्वास करते हैं कि अपने गुप्त भेद इसे वता देते हैं और वह भी उन्हें अपने तक ही सीमित रखता है। उसकी बातें लोगों को राहत पहुँचाती हैं। जातक अपने पूर्वजों की बातें बढ़ा-चढ़ाकर सबको बताता है।

## निवारण

1. पानी का घूँट पीकर ही कार्य का प्रारम्भ किया करें।
2. वर्षा का पानी घर में स्थापित करें।
3. अपने मकान में छत के नीचे नल लगवाएँ।
4. सोमवार का व्रत रखें।
5. चाँदी, चावल और दूध का दान दें।
6. शरीर पर चाँदी धारण करें।
7. माँ, मौसी, नानी, दादी, सास का आशीर्वाद लेते रहें।
8. पलंग के पायों में चाँदी की कीलें ठोंक दें।
9. श्मशान में चाँदी या चावल रखकर आएं।
10. गंगा आदि पवित्र नदी में स्नान करें।
11. पाँच या छह महीनों में पानी की टंकी को साफ करवा लें।
12. पानी का पंप या कुआँ छत के नीचे खुदवाने की गलती न करें।

❑❑❑



# 10 शुक्र ग्रह

शुक्र ग्रह स्त्री (पत्नी), गृहस्थ-सुख तथा जर, जोरू और जमीन इन तीनों का प्रतीक है। मंदे शुक्र वाला व्यक्ति सदा कामुक विचारों में लीन रहता है। जर, जोरू और जमीन का मिश्रण शुक्र कहलाता है। इसलिए इन तीनों के स्वामी जातक के घर में शुक्र (लक्ष्मी) का सदा वास रहता है। शुक्र ग्रह की देवी लक्ष्मी को माना गया है।

शुक्र का अर्थ वलवान भी होता है। शुक्र ग्रह वाले जातक का वीर्य पुष्ट होता है, पुरुप अच्छे भोजन और सुंदर स्त्रियों पर आसक्त रहते है। उच्च शुक्र वाले व्यक्ति का रंग दही जैसा सफेद रहता है। उसका चेहरा गोल, आँखें सुंदर, चाल मस्तानी, मिजाज आशिकाना, अपने आप में प्रसन्न रहने वाला, हर समय स्त्रियों की तरह सजने-सँवरने वाला होता है। सुंदरता पर जान छिड़कने वाला होता है।

शुक्र-शनि की केवल मित्रता ही नहीं है, वल्कि उनका आपस में वड़ा स्नेह है। जव शनि पर कोई ग्रह हमला करता है, तव शुक्र उसकी जगह अपना वलिदान दे देता है।

मंगल और शुक्र का प्रभाव चंद्र जैसा होता है। शुक्र पर बुध और केतु का प्रभाव न पड़े और यदि शुक्र जन्मकुंडली में कहीं भी बैठा हो, तो वह अच्छा ही प्रभाव देता है। यदि शुक्र सातवें घर में बैठ जाए और उस घर में जिस ग्रह का प्रभाव मिल रहा हो, तो वह अपना सारा प्रभाव उसी ग्रह को दे देता है।

शुक्र वृष, तुला, धनु, मकर राशियों में शुभ और कर्क, सिंह राशियों में अशुभ रहता है तथा मिथुन राशि में योग कारक होता है।

जन्मकुंडली में शुक्र की जो स्थिति रहती है उसके अध्ययन से सगाई, विवाह, तलाक, विदेश यात्रा, प्रेमी, संगीत, चित्रकला, साफ-सफाई, छल-कपट आदि बातों का पूरी तरह पता चलता है।

शुक्र छठे व सातवें घर में अशुभ फलदायी होता है जवकि बारहवें घर में हो, तो जातक को शासक, मंत्री, नेता बना देता है। अशुभ शुक्र के कारण जातक को वीर्य का रोग होता है एवं उसकी पत्नी सदा रोगी ही रहती है।

शुक्र पहले घर में काम-शक्ति को बढ़ाता है, उसका फल दूसरे घर में होने पर ही देता है। तीसरे घर में पुरुष जैसी शक्तिशाली पत्नी देता है। चौथे में दो स्त्रियों का सुख देता है। पाँचवें में शुक्र हो, तो जातक पत्नी पर पूरी तरह आसक्त रहता है। छठे में नीच फल देता है। आठवें में इसका प्रभाव क्षीण रहता है। नौवें में मंगल अशुभ, दसवें में स्वयं शनि बन बैठता है अर्थात् पुरुष-स्त्री दब्बू स्वभाव के रहते हैं। ग्यारहवें में उत्तम प्रभाव देता है।

शुक्र किसी भी ग्रह के प्रभाव को नष्ट नहीं करता, वल्कि शत्रु के साथ मिलने पर भी अपनी ही शक्ति—कामवासना को बढ़ाता है।

शुक्र जब नीच का यानी जन्मकुंडली के 1, 6, 9 में से किसी एक घर में हो, तो पच्चीसवें वर्ष में विवाह नहीं करना चाहिए।

जब शुक्र अपनी राशि वृषभ या तुला में होता है, तो ऐसा जातक धनवान होते हुए भी परिश्रमी होता है। शुक्र सूर्य का विरोधी ग्रह है। शनि से इसका मेल गुप्त रूप से होता है। अतः जातक के मकान का मुख्य द्वार ऐसी दशा में होना चाहिए जहाँ सूर्य का प्रभाव मकान के पिछले भाग पर पड़े। साथ ही मकान में कुछ भाग लॉन जैसा होना चाहिए अर्थात्! अनिर्मित।

बिना बीमारी के अँगूठा नाकरा हो जाए, तो शुक्र को नष्ट हुआ समझना चाहिए। राहु जब शुक्र के विरुद्ध चल रहा हो, तब सूर्य की चीजें, विशेष रूप से ताँबा या ताँबे का पैसा अथवा चंद्र की चीजें दूध, चाँदी, चावल धोकर गड्ढा खोदकर उसमें दबाएँ।

जब शुक्र उत्तम स्थिति में हो, तो श्रेष्ठ होता है।

शुक्र-शनि दोनों मिलकर सूर्य को हानि पहुँचाते हैं। सातवें घर में शनि उच्च और सूर्य नीच का होता है। सातवाँ घर तुला यानी शुक्र की राशि का ही है। इसके फलस्वरूप पिता-पुत्र के झगड़ों के कारण धन-संपत्ति की नाश होता है।

शुक्र चंद्र जब आमने-सामने हों, तब माता की दृष्टि पर बुरा असर पड़ता है।

यदि शनि को कोई हानि पहुँच रही हो, तो शुक्र उसकी जगह अपनी बलि देता है। अकेला शुक्र जन्मकुंडली में कहीं भी हो, तो बुरा नहीं करता। सातवें में शुक्र के साथ जो भी ग्रह हो वह शुक्र का मित्र बन जाता है। पहले घर में सूर्य हो, तो वह शत्रु का शत्रु बन जाता है।

## मंदा शुक्र

**मंदे शुक्र की पहचान निम्नलिखित है–**

- ☐ बिना किसी बीमारी के अँगूठा काम करना बंद कर दे।
- ☐ शरीर की त्वचा में विकार उत्पन्न हो जाए।
- ☐ स्वप्नदोष का क्रम रहे।

**शुक्र तीसरे घर में तथा सूर्य, चंद्र, केतु नौवें घर में हो, तो–**

- ☐ किसी स्त्री के माध्यम से परदेश गमन का निमंत्रण मिलता है।
- ☐ पाँचवें घर में शुक्र मंदा हो तथा शुक्र-केतु किसी भी घर में बैठे हों, तो संतान होने में बाधा उत्पन्न होती है।
- ☐ शुक्र-केतु इकट्ठे हों और इस समय यदि जातक का विवाह न हो, तो वह अंधा बन जाता है।
- ☐ दूसरे घर में बैठा शुक्र जातक को ससुराल वालों की नजरों में निकम्मा बना देता हैं।

## पहला घर

पहला घर सूर्य और मंगल से प्रभावित रहता है, अर्थात् शुक्र पहले घर में होने पर सूर्य की शत्रुता से पीड़ित रहे। पति या पत्नी को लम्बे ज्वर या टी०बी० (तपेदिक) जैसे गंभीर रोग का सामना करना पड़ेगा। यद्यपि पहले घर में शुक्र हो, तो जातक सर्वाधिक सुंदर पुरुष होता है। स्त्रियाँ उस पर आसक्त रहती हैं। उसकी अपनी पत्नी बीमार रहती है। ऐसा जातक अपनी समान आयु के लोगों का नेता बनता है। किन्तु घर का मुखिया बन जाए, तो परिवार के लिए अशुभ सिद्ध होता है। धर्म से वह परहेज नहीं करता।



इश्कबाजी की उसे हवस रहती है। जीविका का साधन मिलने के पूर्व ही विवाह हो जाता है। उसकी कामवासना प्रबल रहती है तथा वह परायी स्त्री से मुहब्बत करता है। वह पच्चीसवें वर्ष में विवाह न करें वरना बर्बादी होती है।

वर्षफल के अनुसार जब शुक्र सातवें घर में आता है, तो जातक को खूनी खाँसी एवं तपेदिक की बीमारी होती है। गोदान, मोती का दान, जौ, सरसों, सप्त धान्य का दान करना कल्याणप्रद होता है। यदि विवाह के बाद जातक दुःखी रहे, तो कन्यादान, गोदान करने से सुकून मिलता है। धर्म में उसकी रुचि प्रायः कम हो जाती है।

इस घर में शुक्र की समयावधि में शुक्र का फल नीच किन्तु सूर्य का प्रभाव उत्तम रहता है। जातक धर्महीन तो अवश्य होगा, किन्तु पत्नी, भाई सब मिलकर इससे लाभ उठाएँगे। जातक को स्वयं उनसे कोई लाभ नहीं होगा।

अपनी सेहत की तुलना में पत्नी की सेहत कमजोर रहती है। जब शुक्र शनि से मिल रहा हो, तो तब सोलह से छत्तीस वर्ष की आयु तक वासना प्रबल रहती है। शुक्र पहले तथा राहु सातवें घर में होने पर पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। उसको मानसिक रोग होता है।

चंद्र सातवें घर में होने पर घर में हमेशा सास-बहू में लगातार तकरार रहती है।

मंगल सातवें घर में हो, तो संतान एवं धन-संपत्ति में वृद्धि होती है।

सूर्य पर शुक्र का नीच प्रभाव होकर जिन्न-भूत का असर होता है। स्त्री के साथ वासना में लिप्त रहने पर आध्यात्मिक हानि होती है।

## निवारण

1. गुड़ खाना बंद कर दें।
2. दिन में संभोग करने की आदत हो, तो उस आदत को छोड़ दें।
3. दही मलकर स्नान करें।
4. काली गाय की सेवा किया करें।
5. अपने भोजन की थाली में से कुत्ते और गाय के लिए ग्रास पहले निकालें।
6. असली चाँदी अपने साथ रखें।
7. गोमूत्र का प्रयोग करें।
8. बाजरा और राई का दान करना लाभदायक।
9. पत्नी मस्तक पर सोने के आभूषण धारण किया करे।
10. भगवान में पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा रखें।

## दूसरा घर

यदि कुंडली के दूसरे घर में शुक्र स्थित हो, तो वह जातक को नब्बे वर्ष की आयु प्रदान करेगा तथा जीवन भर धन-संपत्ति एवं संतान सुख में वृद्धि करेगा। ऐसा जातक किसी के साथ बुराई करे तो वह आत्मघात होगा।

इस घर में शुक्र फलदायी माना जाता है। जातक धनवान होते हुए भी परिश्रमी रहता है। गृहस्थी में न फंसे, तो ऐसा जातक जगतगुरु बनता है। इसके कई भाई होते हैं। जातक का घर गौमुखी होता है। घर में बीमारी लगी रहेगी। रोजी कभी खराब नहीं होती। उल्टे उसमें दिन दुगुनी-रात चौगुनी तरक्की होती रहती है।

दूसरे घर मे शुक्र हो तथा छठा, आठवाँ, वारहवाँ घर खाली हो यानी उनमें कोई ग्रह न हों, तो जातक समाज में सम्माननीय होता है। उसकी प्रेम की रेखा प्रभावी होती है। यह प्रभाव सैंतीस से बाहत्तर वर्ष की आयु तक स्थित रहता है। शनि किसी ग्रह में हो, तो शुक्र का यही परिणाम दृष्टिगोचर है। यदि स्त्री की जन्मकुंडली में शुक्र दूसरे घर में बैठा हो, तो वह बंध्या होती है।

### निवारण

1. दो किलो आलू हल्दी से पीले करके गाय को खिलाएँ।
2. दो सौ ग्राम गाय का पीला घी मंदिर में दान करें।

### तीसरा घर

जिस जातक की कुंडली के तीसरे घर में शुक्र हो, तो उसके घर मे कभी चोरी नहीं होती। उसकी पत्नी सच्चरित्र रहती है। जातक स्वयं भाग्यवान रहता है। कई स्त्रियों से उसका संपर्क रहता है, किन्तु अपनी पत्नी का क्रोध एवं साहस देखकर वह घबरा जाता है। पत्नी सदा साभ निभाने वाली होती है, फलस्वरूप जातक को उससे दवकर रहना पड़ता है। केतु शुभ हो, तो जातक के कन्याएँ होती हैं, उनमें कम-से-कम ज्यादा तीन जीवित रहती हैं। नौवें घर पर इस शुक्र का बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

ऐसे जातक का अपना बनाया मकान नहीं होता। मकान बन भी जाए, तो वह उजड़ जाता है। कुंडली में बुध अंधा हो, तो जातक को बीस वर्ष तक तीर्थयात्रा करनी पड़ती है।

तीसरे घर में शुक्र वाला जातक सबका प्रिय होता है।

तीसरे घर में बैठे शुक्र की दृष्टि यदि नौवें घर के ग्रह पर पड़ती है तो कोई बुरा असर नहीं होता। किन्तु कन्या संतान अधिक होने से उन पर धन-व्यय होता है। जातक का स्वनिर्मित मकान नहीं होता, यदि हो भी तो वह मकान उजड़ जाता है तथा मातृसुख से उसे वंचित रहना पड़ता है किन्तु ऐसी स्थिति चौतीस वर्ष की आयु तक ही रहती है, बाद में नहीं। कुंडली में केतु अच्छी स्थिति में हो, तो पत्नी पुरुष की तरह सभी कार्यों में पति का हाथ बँटाती है।

### निवारण

1. मंगल की कारक चीजों का इस्तेमाल करें।
2. घर में नाचना, गाना, संगीत बंद करें।

### चौथा घर

जिस जातक की कुंडली के चौथे घर में शुक्र हो, वह बहुत धनवान होता है। स्त्री और संतान का कष्ट दूर होता है। दो विवाहों का योग बनता है। राशिफल ग्रह बृहस्पति का उपाय करने से सब ठीक-ठाक हो जाता है। दो पत्नियों के होते हुए भी जातक की कामवासना प्रबल होती है। चौथे शुक्र वाले का शनि और बुध (शनि-मकान, बुध-वहन, वुआ, मौसी) का फल नीच होता है। ऐसे जातक की यात्राएँ अधिक और सफल होंगी।

संतान के अभाव की पूर्ति के लिए चंद्र का उपाय करना उचित है। शनि-बुध साथ में होने पर पत्नी स्वेच्छाचारी बनती है। जब बृहस्पति का साथ मिलता है, तो सास-बहू में झगड़ा चलता रहता है।



यदि जातक अपने घर में कुआँ खुदवा ले तो मामा का खानदान खत्म हो जाता है, किन्तु विवाह के वाद कुआँ शुभ रहता है। कुएँ को बंद कर दिया जाए, तो जातक की तवाही होती है।

चौथे घर में शुक्र व छठे घर में बुध होने पर स्त्री एवं संतान पर वुरा प्रभाव पड़ता है। चौंतीस वर्ष बाद यह प्रभाव स्वयं दूर हो जाता है।

### निवारण

1. अपनी ही पत्नी के साथ दुवारा विवाह कर जीवन को सुखी वनाएँ।
2. चरित्र उत्तम एवं शुद्ध रखें।
3. वृहस्पति का उपाय करना लाभ देगा।
4. आडू की गुठली में छेद करके उसमें सुरमा डालकर वीराने में घास वाली जमीन के नीचे दवा आए।
5. स्त्री हमेशा बीमार रहे तो शहद से भरा बर्तन मकान की छत पर रखें। चाँदी की डिबिया तालाब की चिकनी मिट्टी में दवाना शुभ होगा।

नोट–कुंडली के दूसरे व सातवें घर खाली हों, तो शुक्र का फल उत्तम और शुभ फलदायक होता है।

### पाँचवाँ घर

पाँचवाँ घर सूर्य का माना गया है। इस घर में शुक्र सूर्य की गर्मी से तपता रहेगा। अतः शुक्र की वस्तुओं को कायम रखने से शुक्र को मदद मिलेगी और शुक्र (पत्नी) का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा रोजगार भी कभी बंद न होगा।

जिसके पाँचवें घर में शुक्र हो, वह विद्वान् शत्रुहंता, सफेद चीजों से लाभान्वित होने वाला, बच्चों व भरे-पूरे परिवार से युक्त, स्त्री सुख से परिपूर्ण रहता है।

सूर्य का पक्का घर होने से यहाँ शुक्र का प्रभाव जली मिट्टी और सूर्य की तीक्ष्णता के समान होता है। इससे पहला व नौवाँ घर क्षीण होता है। वुध का पापी ग्रहों का साथ अच्छा रहता है।

जातक अपने देश एवं जाति से प्रेम करने वाला होता है। यदि वह आशिक मिजाज, कामाँध हो, तो उसका भाग्य कटी पतंग जैसा होता है। संत-स्वभावी हो, तो दुनियादारी से मुक्त रहता है। विवाह के पाँच वर्ष बाद धन-संपत्ति, नौकर-चाकरों का सुख अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। नौकरी में पदोन्नति होती है।

पहले घर में शुक्र का शत्रु ग्रह हो, तो शुक्र दुष्प्रभावी होता है। संतान पर कोई नीच प्रभाव नहीं पड़ता। बृहस्पति का साथ मिलने पर शुक्र सहायक होता है। पत्नी वफादार रहती है। चंद्र की कारक चीजें–दूध, चावल, चाँदी सहायक होती हैं।

### निवारण

1. अपने चरित्र को स्वच्छ एवं शुद्ध रखें।
2. गायों की सेवा किया करें।
3. प्रेम-विवाह या माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह न करें।
4. पति-पत्नी अपने गुप्तांग दूध से धोकर साफ रखें।

## छठा घर

जब किसी पुरुष ग्रह के साथ कुंडली के छठे घर में बैठे शुक्र का सम्बन्ध होता है, तो ऐसा जातक काफी धन कमाता है। वैसे शुक्र इस घर में नीच का होता है। सफेद गाय की सेवा से अधिक लाभ मिलता है। विद्याध्ययन में रुकावट, पिता के सुख से वंचित, कामोत्तेजना कम रहती है, विवाह विलंब से होता है। धन-संपत्ति की हानि होती है। शुक्र नीच का फल देता है। ऐसा जातक अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए स्त्रियों की प्रशंसा करता है।

लड़कों की अपेक्षा जातक के कन्याएँ अधिक होती हैं। यदि वृहस्पति या सूर्य दूसरे घर में हो, तो शुक्र वारहवें घर का प्रभाव देता है। यदि वृहस्पति दूसरे घर में हो, तो वच्चों की संख्या छह होती है। किन्तु यदि वृहस्पति वारहवें घर में हो और केतु छठे घर में हो, तो वह भी सुख के सुप्रभाव को बुरे प्रभाव में बदल देता है।

यदि चौथे घर में शुक्र-शत्रु ग्रह हों, तो लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं।

वारहवें घर के वृहस्पति का फल आंशिक मिलता है। जातक का स्वभाव ठीक रहता है। जिह्वा और नेत्र शक्ति प्रवल रहती है।

सूर्य के साथ मिलने पर कई बार अपने साथियों को वदनाम करता है।

शुक्र नीच का होने पर वारह वर्ष तक पुत्र जन्म में बाधाएँ उपस्थित होती हैं। वुढ़ापा अच्छा व्यतीत होता है।

यदि सातवें घर में शुक्र का शत्रु ग्रह आ बैठे, तो वुद्धि खराब होती है, लड़ाई-झगड़े से परेशानी होती है। सूर्य, वृहस्पति और चंद्र तीनों का प्रभाव नीच हो जाता है।

नीच शुक्र का उपाय चंद्र से किया जाना चाहिए। यदि केतु का साथ हो, तो लड़कियाँ अधिक होती हैं।

## निवारण

1. चाँदी की ठोस गोली जेब में रखा करें।
2. पत्नी बीमार हो जाए और उसका बुखार न उतरे, तो वह अपने गुप्तांग को लाल दवाई से धोए।
3. पत्नी रसाई और गुशलखाने में भी नंगे पाँव न चले। पैरों में मोजे पहना करें।
4. स्वास्थ्य सुधार के लिए छह शुक्रवार तक सफेद पत्थर को धोकर सफेद चंदन लगाकर पानी में प्रवहित करें।
5. स्त्रियों का आदर-सम्मान करें।

## सातवाँ घर

यह ध्यान देने वाली वात है कि सातवें शुक्र की समयावधि में चंद्र पहले घर में हो, तो सास-वहू में माँ-बेटी जैसा प्यार रहता है, किन्तु विवाह और संतान के वारे में गड़बड़ी रहती है। साथी ग्रह अच्छा फल देते हैं। किन्तु शुक्र लक्ष्मी (धन) के प्रभाव को नीच नहीं होने देता। जातक सफेद गाय की सेवा न करे। अपने ग्रहफल की अपेक्षा साथी ग्रह का अधिक उत्तम फल मिलता है। किन्तु शुक्र का प्रभाव—लक्ष्मी की बरकत कभी कम न होगी। यदा-कदा शुक्र का फल हुआ, तो उसका असर केवल पच्चीस वर्ष की उम्र तक ही रहता है।



बिल्ली की जेर को घर में रखना अशुभ फलदायी होगा। यदि उसको चमड़े के वटुए में रखे, तो संपत्ति का नाश करेंगी।

जातक की कमाई अधिकतर स्त्रियों के काम आती है। विवाह शादी में उपयोगी चीजों का व्यवसाय करें। खेती की जमीन भी प्राप्त होगी। वाहन का सुख अवश्य प्राप्त होगा। इस शुक्र के प्रभाव को राहु, सूर्य एवं चंद्र खराब करते हैं। परायी स्त्री के इश्क पुश्तैनी जायदाद का नाश कर देता है।

कानी और काली स्त्री का साथ शुभ फलदायक रहेगा।

भाई, बंधु, यार-दोस्त जातक की संपत्ति उड़ाते रहेंगे और कारोबार में रुकावट डालते रहेंगे।

बुध का साथ मिलने पर सैंतीस वर्ष की आयु तक जातक को स्त्री सुख मिलता है।

## निवारण

1. लाल गाय की सेवा करें। उसे चारा खिलाएँ।
2. माता-पिता से आशीर्वाद लेना लाभकारी होगा।
3. पत्नी बीमार होने पर उसके वजन के दसवें हिस्से के बराबर ज्वार मंदिर में दान करें।
4. गंदे नाले में नीला फूल डालें।
5. दहेज में ससुराल वालों से पीतल के बर्तन जरूर लें।
6. काँसे का बरतन शुक्रवार को दान दें।

## आठवाँ घर

आठवाँ घर शनि और मंगल का है, जो मृत्यु का स्थान कहा जाता है। इस घर में कोई भी ग्रह शुभ नहीं माना जाता। इस योग वाले जातक की पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की और क्रोध करने वाली होगी। उसके मुँह से निकली बात पूरी होगी। जातक हमेशा दुःखी रहने वाला होगा। वह कभी किसी की जमानत न दे क्योंकि जमानत देना मंदे भाग्य की निशानी है। स्त्री की कष्टमय अवस्था को दूर करने के लिए चंद-केतु की चीजों का सहयोग लेना चाहिए।

यदि चंद्र मंदा हो, तो बुध की सहायता ली जा सकती है।

यदि दूसरा घर खाली हो, तो विवाह पच्चीस वर्ष की आयु के वाद करें अन्यथा पत्नी की मृत्यु होगी।

चंद्र अच्छा होने पर शुक्र का नीच फल नहीं मिलेगा।

चंद्र नीच हो, तो बुध, बुध नीच हो, तो मंगल, मंगल नीच हो, तो राहु की सहायता ली जाए।

विवाह के समय या बाद में गाय को दान करना सहायक होगा।

नौवें घर में शुक्र हो, तो जातक कामुक होता है। उसकी पत्नी यदि किसी को शाप दे, तो वह प्रत्यक्ष साकार होता है। उसका आशीर्वाद शायद पूरा न हो।

जातक की आमदनी अच्छी होते हुए भी वह ऋणग्रस्त रहता है।

मंगल अशुभ हो, तो जातक बदनाम होता है। वह गैर स्त्रियों से समागम करता है, जिससे उसे गुप्त रोग भी हो सकता है।

## निवारण

1. जातक किसी भी प्रकार का दान कभी किसी से न ले।
2. जातक मंदिर में भगवान के चरणों में माथा टेकने जाया करे।
3. ताँवे का सिक्का या कुछ फूल गंदे नाले में 43 दिन तक डालें।
4. काली, भौंडी या कुरूप गाय की सेवा किया करें।
5. गाजर या जिमीकंद आठ सौ ग्राम या आठ किलो लेकर शुक्रवार के दिन मंदिर में आएँ।
6. हरी घास काली गाय को डालें।
7. परेशानी के समय में काली या लाल गाय की सेवा मदद करेगी।
8. शुक्र की सहायता के लिए स्त्री के वजन कितनी ज्वार जमीन में दबाने से स्त्री को कष्टों से मुक्ति मिल जाती है।
9. आठ शुक्रवार तक काली गाय को गुड़ लगे आटे के पेड़े खिलाए।

## नौवाँ घर

नौवें घर में शुक्र मंदे भाग्य की निशानी माना जाता है। जातक अपना विवाह पच्चीस वर्ष की आयु के बाद करे। परिश्रम से ही रोजी प्राप्त होगी। तीर्थयात्रा का फल संतान की दृष्टि से अच्छा नहीं मिलेगा। धन तो होगा, किन्तु घर में पुरुषों की कमी रहेगी। यहाँ मंगल अशुभ होता है। अतः धन-दौलत और संतान पर बुरा प्रभाव पड़ता है। विवाह के दिन से ही दुःख पीछे-पीछे चलने लगता है।

सफेद रंग और दही का सेवन अशुभ है। सफेद रंग की गाय की सेवा हानिकारक सिद्ध होगी।

जन्म के बाद सत्रह वर्ष बीतने पर शुक्र नौवें घर में तेइस वर्ष की आयु में आता है। उसका समय पच्चीस वर्ष का होता है। अतः चौबीस वर्ष की आयु के बाद शुक्र का प्रभाव प्रारंभ होता है। बुध-केतु मंद होता है, राहु का नीच प्रभाव स्त्री सुख, धन-दौलत पर बुरा असर डालता है।

पच्चीसवें वर्ष में विवाह करना या गाय खरीदना शुक्र के प्रभाव को कम करता है। शुक्र का प्रभाव अधिक नीच होगा।

ऐसा जातक बुद्धिमान स्त्री की तरह होता है। राहु के समय में धन प्राप्ति केवल दो वर्ष होती है। पच्चीसवें वर्ष में धन-दौलत पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

## निवारण

1. मकान की नींव में चाँदी की डिब्बी में शहद भरकर जमीन में दबा दें।
2. चाँदी के कंगन पर लाल रंग लगाकर पहनें।
3. नीम के पेड़ के नीचे चाँदी के चौकोर टुकड़े गाड़ दें। यह प्रयोग 43 दिनों तक करें।

## दसवाँ घर

यदि इस घर में शुक्र बैठा हो, तो जातक लोभी, शक्की, दस्तकारी में रुचि रखने वाला सर्प की भाँति चालाक होता है। शनि अच्छा होने से पत्नी पुरुष के समान शक्तिशाली



रहती है। जातक को पत्नी से दबकर रहना पड़ता है। ऐसा जातक कामुक होता है इसलिए पति-पत्नी दोनों हर रोज अपने गुप्तांगों को दही से धोना चाहिए।

इस घर में शुक्र के कारण जातक परायी स्त्री से मुहब्बत करता है, इस कारण केतु (संतान) का फल नीच हो जाता है। परायी स्त्री के संपर्क में आने के बारह वर्ष बाद तक जातक के पुत्र नहीं होता। तेरहवें वर्ष में पत्नी की हालत खस्ता हो जाती है। शनि नीच होने पर बहुत दुःख भोगने पड़ते हैं। चौथे घर में कोई ग्रह नहीं हो, तो स्वास्थ्य ठीक रहता है।

ऐसे जातक का शरीर मोटा, सेहत अच्छी रहती है। वह बाग-बगीचों का मालिक होता है। यदि शनि नौवें या ग्यारहवें घर में हो, तो कोई दुर्घटना नहीं होती।

चंद्र दूसरे, चौथे या सातवें घर में हो, तो धन की प्राप्ति अच्छी होने से जातक का बुढ़ापा आराम से कटता है। परायी स्त्री के संपर्क के कारण संतान को दुःख पहुंचता हैं। मंगल भारी होने से पत्नी बीमार रहती है। शनि मन्दा होने से दुःख झेलने पड़ते हैं। जातक शनि का प्रिय होता है। उसे पत्नी पर हावी होकर जीना पड़ता हैं।

दाएं-बाएं शनि जातक को दुर्घटनाओं से बचाए रखता है।

## निवारण

1. शनि के उपायों से सहायता मिलती है।
2. मकान की पश्चिम दिशा की दीवार कच्ची रखें।
3. जातक शराब व माँस-मछली का प्रयोग न किया करें।

## ग्यारहवाँ घर

ग्यारहवाँ घर शनि और बृहस्पति का है। अतः शुक्र ग्यारहवें घर में होने पर शुक्र, शनि और बृहस्पति का प्रभाव माना जाएगा। तीसरे घर की दृष्टि भी ग्यारहवें घर पर है जो कि मंगल-बुध से प्रभावित है। अतः जातक के कम-से-कम तीन साले तो जरूर ही होते हैं।

जिसके ग्यारहवें घर में शुक्र हो, अवश्य ही उसके वीर्य में खराबी रहती है। वह पुरुषत्वहीन होता है। अपनी शक्ति बचपन में खो चुका होता है। तिल का दान तथा बुध के उपायों से सहयोग मिलता है। पत्नी के भाई सहायता करते हैं। बुध का साथ अच्छा असरदार होता है। पत्नी भोली-भाली और स्वभाव से अच्छी होती है।

विवाह के समय काली गाय का दान जरूरी है। विवाह से पहले आमदनी न के बराबर रहती है। यदि कुंडली का पाँचवाँ घर खाली हो, तो शुक्र की महादशा समझें। बीस वर्ष बाद पुत्र उत्पन्न होता है। इसके लिए बुध के उपाय करने चाहिए। राहु बारहवें घर में हो, तो कन्या अधिक होती हैं। बुध चंद्र कायम हो, तो विचार बदल भी जाते हैं। साथ में बुध तीसरे घर में हो, तो स्त्री अपने पति के घर को बरबाद करने वाली होती है। वैसे वह भाग्यवती होती है।

इस घर में शुक्र घूमते हुए लट्टू की तरह होता है। यदि ऐसा न हो, तो जातक मूर्ख रहता है। यहाँ शुक्र भाग्य का स्वामी है। किन्तु स्वयं ही तबाही का कारण बनता है। संतान पक्ष निर्बल रहता है।

अगर शुक्र सोया हो और पाँचवाँ घर खाली हो, तो अभीष्ट देवी की आराधना से शुक्र की पूरी अवधि (बीस वर्ष) के बाद पुत्र होता है।

## निवारण

1. बुध के उपाय सहायता करेंगे।
2. शनिवार को मंदिर में तेल चढ़ाएँ अथवा दान करें।
3. रुई तथा दही धर्म-स्थान में दें।
4. तेल और पानी जमीन में दफन करें।
5. पापी ग्रहों की समयावधि में तेल का दान करते रहें।
6. विवाह के समय गोदान करें।
7. जातक में शुक्राणुओं की कमी रहती है, इसलिए वह सुवर्ण का सेवन करे। अर्थात् सोने की चेन ग्यारह वार दूध में भिगोकर गर्म करके दूध पीएँ।

## बारहवाँ घर

कुंडली के बारहवें घर में शुक्र सदैव उच्च का माना जाता है। ऐसा जातक अपने वंश का पोषण करने वाला होता है। वह सत्ता से श्रेष्ठ फल प्राप्त करता है। नीले रंग की गाय का छोड़कर अन्य किसी भी रंग की गाय को रोटी देना उसके लिए हितकर होगा।

जातक हर तरह से सुखी रहता है। स्त्रियों के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं, उसके सुनिश्चित परिणाम सदा सामने आते हैं।

इस घर में शुक्र हो, तो उसे बृहस्पति, सूर्य, चंद्र का साथ मिलता रहता है। बुध छठे घर में हो, तो दोनों ग्रह उत्तम फलदायी होते हैं।

स्त्री को पुरुष का सुख अवश्य मिलता है। स्त्री बुरे समय में मददगार होती है। जातक के भाग्य की बागडोर स्त्री के हाथ में रहती है। जातक दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता है।

## निवारण

1. अपने किसी मान या ब्राह्मण को गाय का दान करें।
2. पत्नी के हाथों नीले फूल जमीन में दबवा दें।
3. पत्नी के द्वारा कोई भी धर्मपुण्य का काम करवाएँ।
4. घर में शुद्ध घी का दीपक जलाया करें।
5. शुक्रवार का व्रत रखें।
6. मंदिर में या धर्म स्थान में कपूर, घी, दही, देशी घी आदि दें।
7. सौंदर्य-प्रसाधन, सुगंधित-द्रव्य, फेस पाउडर आदि का प्रयोग करें।
8. कपड़े साफ-सुथरे और इस्त्री किए हुए पहनें।
9. दूसरों के द्वारा प्रयोग में लाए कपड़े न पहनें।
10. जब राहु बुध, शुक्र को नीच कर रहे हों, तो नीले फूल 43 दिनों तक लगातार जमीन में दबाएँ।
11. सफेद गाय का दान न लें। लाल या काली गाय का दान दें या उनको पालें।

**विशेष**–जब शुक्र नीच प्रभाव दे रहा हो, तो शुक्र के शत्रु ग्रहों की चीजें (गुड़, चावल, जौ), स्त्री के हाथों बाहर वीराने में, मिट्टी के नीचे दबवाएँ या स्त्री के वजन के बराबर ज्वार मंदिर में दान स्वरूप दें।

❑❑❑



# 11 मंगल ग्रह

मंगल एक ऐसा ग्रह है कि वह अच्छा असर दिखाते-दिखाते एक भी जरा बुरा असर दिखाने लगा, तो फिर बड़ी तेजी से बुरा असर दिखाने लगेगा और जब तक उसके बुरे असर की ओर ध्यान दिया जाएगा या उसे रोकने की कोशिश की जाएगी, वह इतना नुकसान कर देगा कि उसे पूरा करने में बहुत वक्त लग जायेगा।

प्राचीन ज्योतिषशास्त्र में मंगल को सेनापति माना गया है। मार-काट, चोट-चपेट और हथियार चलाना, साहस, शूरता, भाई-बंधु, चोरी, धोखाधड़ी, लड़ने की शक्ति, प्रतिकार शक्ति, भाई, चाचा, ताऊ के साथ के व्यवहार आदि बातें जन्मकुंडली में स्थित मंगल की स्थिति के अध्ययन से मालूम होती हैं।

शुभ मंगल सेनापति बनता है तो अशुभ मंगल बदमाश, छुरी व चाकू, पिस्तौल की गोली दिखाकर लोगों को लूटता है। मंगल बृहस्पति, सूर्य, चंद्र के साथ चलता है।

साफ हृदय का, अंदर-बारह से एक जैसा, संतान से युक्त होना ये सब शुभ मंगल के प्रभाव हैं। पहले घर में मंगल शुभ माना जाता है और पाँचवें घर में मंगल अशुभ हो जाता है। पहले घर में सूर्य का उत्तम मंगल के साथ होता है। चौथे घर में मंगल अशुभ होता है।

जिस जातक की जन्मकुंडली में पहले घर में मंगल होता है वह सब भाइयों के बाद मृत्यु को प्राप्त करता है। मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु, मकर और मीन राशियों में मंगल शुभ और मिथुन, कन्या राशियों में अशुभ फलदायी होता है। उच्च मंगल वाला व्यक्ति विद्वान् होता है।

## नीच मंगल

**नीच मंगल की पहचान निम्नलिखित है–**

- ❑ घर में बच्चे पैदा होकर मर जाएँ।
- ❑ अकस्मात् एक आँख खराब हो जाए।
- ❑ मैथुन-शक्ति के बाजवूद संतानोत्पत्ति न हो।
- ❑ जब मंगल अशुभ यानी चौथे या आठवें घर में हो, शनि नौवें घर में हो, तो बर्बादी होती है। जन्मकुंडली में मंगल अशुभ हो तथा पहले घर में बैठे ग्रह की दृष्टि ग्यारहवें घर में बैठे ग्रह पर पड़े, तो जातक के ह्रेंठ मोटे व लंबे होते हैं।
- ❑ जन्मकुंडली में सूर्य चौथे और मंगल दसवें घर में हो, तो पुत्र, भाई-भतीजों की मृत्यु होती है।
- ❑ सूर्य-मंगल के साथ शुक्र-केतु होने पर पत्नी, पुत्र, माता, पिता क्रम से बीमार होते हैं।

## पहला घर

यदि पहले घर में मंगल हो, तो जातक शूरवीर, साहसी होता है। बुरे लोगों के साथ भी नेकी करने का उसका स्वभाव रहता है। यह जातक यदि नेकी छोड़ दे तो कलंकी बन जाएगा। चंद्र, बृहस्पति, शनि की वस्तुओं के प्रयोग से शुभ फल प्राप्त होते हैं। पापी ग्रह शुक्र, राहु, केतु की चीजों के प्रयोग से मंगल नीच प्रभाव दिखाता है।

ऐसा जातक सरल स्वभाव का होता है। वह सत्यप्रिय होता है। बुराई करने वालों के साथ भी वह अच्छाई के साथ पेश आता है। ऐसा जातक यदि अपने अच्छे स्वभाव का त्याग करेगा, तो वह स्वयं दुःखी रहेगा।

शनि, चंद्र की चीजों के प्रयोग से अच्छा फल प्राप्त होता है। पापी ग्रहों की चीजों के प्रयोग से मंदा फल मिलता है।

जन्मकुंडली में मंगल दाएँ चंद्र और बाएँ सूर्य हो, तो जातक की आयु तेरह, चौदह, पन्द्रह या अट्ठारह वर्ष होने पर मृत्यु हो जाती है या जातक उनका साथ छोड़कर अलग चला जाता है। प्रथम तो उसके बहन नहीं होती और यदि हो, तो वह सुखी रहती है। यदि अशुभ मंगल है, तो बिन ब्याही अकेली ही रहती है।

जातक साधुओं का साथ करेगा, तो स्वयं मारा-मारा फिरेगा। भाई दुःखी होंगे, बीमार रहेंगे। यदि भाग्य अच्छा हो, तो जातक साधुओं का साथ नहीं करेगा। परन्तु स्वयं साधु बनेगा।

अट्ठारह वर्ष की उम्र के बाद वह अच्छा सलाहकार होगा। उसके शत्रु चाहे जितने हों जातक का उनसे बचाव होता रहेगा।

जब शनि या अशुभ मंगल का सम्बन्ध हो जाए, तो जातक को शारीरिक कष्ट होते हैं। जन्मकुंडली में सूर्य-मंगल पहले घर में हों, तो उसकी दृष्टि खाली रहती है। चार, सात, आठ घर में कोई ग्रह न हो, तो आक्रमण को रोकने की शक्ति से वह युक्त रहता है। वह पलटकर आक्रमण में निपुण रहता है।

बुध तीसरे घर में बैठा हो, तो दो भाई होंगे। दोनों की हालत कभी राजा की तो कभी फकीर जैसी होगी।

चंद्र बारहवें घर में बैठा हुआ हो, तो जातक निर्धन, दरिद्र ही रहेगा।

बृहस्पति सातवें, सूर्य पहले या सातवें या चंद्र, बुध, शनि का साथ हो, तो जातक बैठे-बिठाए मुसीबत मोल लेता है।

जातक को लकड़ी के कारोबार में लाभ प्राप्त होगा। सूर्य और मंगल का अपना-अपना उत्तम फल मिलेगा। यदि जातक नौकरी करना चाहे तो 28 से 35 वर्ष की उम्र तक नौकरी रहेगा। शासन से वह लाभान्वित होगा।

## निवारण

1. कभी भी झूठ न बोलें।
2. कोई चीज मुफ्त में या दान स्वरूप न लें।
3. सफेद रंग की चीजें बुरा प्रभाव डालेंगी।
4. सूर्य चंद्र की चीजों की मदद लें।

## दूसरा घर

दूसरे घर में मंगल हो, तो जातक दयालु होता है। वह आश्रय या संपर्क में आए



हुए की सदा रक्षा करता है। वह भाइयों और मित्रों का पालनहार होता हे। ससुराल अच्छा होता है। यह घर बृहस्पति का पक्का घर होने से बृहस्पति के फल भी अच्छे और शुभ ही मिलते हैं। इस घर में बैठा मंगल जातक को मुखिया के पद पर आसीन करता है। वह अनेकों का भरण-पोषण करता है। अपनी गाँठ में कुछ हो या न हो वह दूसरों को कभी खाली हाथ नहीं लौटने देता।

उसका जीवन शहद की मक्खी की तरह होता है। यह मंगल ससुराल के विषय में शुभ फल देता है। जातक को मनचाही सहायता उसके ससुराल से मिलती रहती है। मंगल की समयावधि में मंगल एवं बृहस्पति दोनों ग्रहों का उत्तम फल प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपने भाइयों के लिए पिता समान होता है।

वह जब तक दूसरों का भरण-पोषण करता रहेगा, तब तक उसकी अपनी भी वृद्धि होती रहेगी। वर्षफल में जब मंगल अशुभ हो जाए, तब बीमारी पीछा नहीं छोड़तीं। मंगल के साथ बृहस्पति हो, तो दूसरों के उपयोग के लिए जातक को धन-संपदा प्राप्त होती रहती है।

## निवारण

1. हमेशा लाल रंग का रूमाल अपनी जेब में रखें।
2. घर में मृग चर्म कायम करें।
3. दोपहर के समय बच्चों को गेहूँ और गुड़ से बनी मिठाई खिलाएँ।
4. रेवड़ियां और बताशे प्रवाहित जल में बहाएँ।
5. बिजली से सम्बन्धित व्यवसाय न करें।
6. भाई-बंधु एवं मित्रों की सहायता करते रहे।

## तीसरा घर

तीसरा घर बुध और मंगल से प्रभावित रहता है। यह घर मंगल का पक्का घर होता है। इस घर से सम्बन्धित जातक अपने लिए सब्जबाग देखने वाला किन्तु दूसरों का सदा सहायक बनता है। आमतौर पर नौवें घर में बैठा बुध और ग्यारहवें में बैठा बृहस्पति पूर्णतया शुभ नहीं होते, किन्तु मंगल की समयावधि में वे शुभ फल देते हैं। मंगल जब शुभ होता है, तब भाई, संतान को सुख मिलता है। जातक चक्रव्यूह भेदने में चतुर होता है। जातक की ससुराल धनवान एवं जातक के लिए मददगार होती है।

अगर शुक्र या सूर्य नौवें या दसवें घर में हो अथवा चंद्र-बुध नौवें और ग्यारहवें में हो, तो परिणाम ठीक नहीं होते। परन्तु जातक के परिवार को अच्छा सहयोग प्राप्त होता है।

बृहस्पति, सूर्य या चंद्र सातवें, बुध तीसरे घर में हो, तो जातक की माली हालत ठीक नहीं रहती है लेकिन ससुराल से सहायता मिलती है। मंगल तीसरे, शनि नौवें या ग्यारहवें घर में होने पर शनि अपना बुरा प्रभाव जातक पर नहीं डालता।

## निवारण

1. सफेद रंग की चीजें पास में रखना लाभदायक होगा।
2. चाँदी की अँगूठी बाएँ हाथ की उँगली में पहने रहें।
3. हाथी दाँत घर में स्थापित करें।

## चौथा घर

चौथे घर में मंगल नीच, अशुभ और राशिफल का रहता है। उपायों से इस मंगल को सकारात्मक बनाया जा सकता है। यह घर हर तरह से चंद्र की मिल्कियत है। इस घर का जातक यदि आग लगाने पर उतारू हो जाए, तो वह समुद्र को भी जला सकता है। यदि तीसरे या आठवें घर में चंद्र हो, तो जातक शांत रहेगा। इसके विपरीत 3, 4, या 8 में मंगल के शत्रु ग्रह हों, तो वे जलती आग में घी डालने का कार्य करेंगे। किन्तु 3, 8, 4, 9 घरों में वृहस्पति या सूर्य हो, तो यहाँ के मंगल का श्रेष्ठ एवं शुभ फल प्राप्त होता है।

चंद्र का साथ मिलने पर भी इसके बुरे असर रुक जाते हैं। ऐसा जातक दूसरों को नसीहत देने वाला होता है। जातक भाग्य का मारा और अपने माता-पिता, सास, पत्नी की मृत्यु का कारण बनता है। साधारण व्यक्ति भी जातक का शत्रु बन जाता है।

बुध या चंद्र छठे घर में हो, तो माँ बचपन में मर जाती है। जातक दुःखी जीवन जीता है। पापी ग्रह आठवें घर में हो, तो संतान प्राप्ति में रुकावट आती है। ननिहाल, ससुराल में खराबी होती है।

चंद्र तीसरे घर में हो, तो जातक उत्साही, हौसलेमंद होता है। बुध बारहवें घर में होने पर जातक गरीब, निर्धन, भूखा, जमाने का सताया हुआ रहता है।

## निवारण

1. माँ, वंदर और साधु-संतों की सेवा करने से शुभता प्राप्त होगी।
2. अंगहीन व्यक्तियों से बचकर रहें।
3. शक्कर (चीनी) या शहद का व्यवसाय न करें।
4. रेवड़ियाँ पानी में प्रवाहित करें।
5. चंद्र का उपाय करना उत्तम होगा।
6. मृगचर्म का प्रयोग करें।
7. सोना, चाँदी, ताँबा—इन धातुओं की अँगूठी पहनें।
8. चार सौ ग्राम चावल दूध में धोकर कम-से-कम सात मंगलवार प्रवाहित जल में बहाएँ।

## पाँचवाँ घर

यदि पाँचवें घर में मंगल हो, तो जातक का कोई पूर्वज जादू-टोना, दवाई, बूटी का काम करता है। शुभ मंगल होने पर स्वभाव शांत रहता है। अशुभ मंगल होने पर भारी तबाही होती है। इस घर में बैठा मंगल पाँच गुणा अच्छा या चार गुणा खराब काम करता है। ग्यारहवें घर में जो ग्रह बैठे हों, उनके अनुसार धन-संपदा जातक को प्राप्त होती है और तीसरे घर में बैठे ग्रहों के अनुसार वह चली जाती है।

ऐसे मंगल वाले जातक को प्रायः जन्म स्थान से दूर का भ्रमण करना होता है। ग्यारहवें घर में बैठा ग्रह शुभ हो, तो मंगल को उसकी सहायता मिलती है, धन-संपदा मिलती है। पत्नी एवं संतान से सुख प्राप्त होता है।

यदि मंगल अशुभ हो, तो उसकी दृष्टिमात्र से जातक का सर्वस्व नष्ट हो जाता है। तीसरे और नौवें घर में बैठे ग्रह भी सहायता देते हैं। जातक धनवान संतान का पिता होता है।



## निवारण

1. घर के आँगन में नीम का पेड़ लगाएँ।
2. सदैव चरित्रवान रहें।
3. रात को सोते समय सिरहाने पानी से भरा पात्र रखें और प्रातःकाल वह पानी स्वयं पी लें या गमलों में डाल दें।

## छठा घर

इस घर का मंगल जन्मकुंडली में बैठे केतु और शुक्र का असर कम करता है। यानी भाइयों को नुकसान पहुँचाता है, किन्तु जन्मकुंडली के किसी भी घर में बैठे सूर्य को वह उच्च बनाता है।

मंगल शुभ होने पर हमेशा अच्छा प्रभाव मिलता है। जातक मान-सम्मान युक्त, अच्छा प्रशासक होता है, मंगल नीच का हो, तो सब कुछ लुट जाता है। जातक के भाई आर्थिक दृष्टि से जातक से अच्छे होते हैं लेकिन शारीरिक दृष्टि से ये कमजोर रहते हैं। उन्हें अचानक हानि उठानी पड़ती है।

मंगल शुभ हो, तो वह भाग्य का रक्षक बनता है लेकिन संतान के लिए अशुभ रहता है। बुध बारहवें घर में हो, तो भाई-बहन दोनों के लिए अशुभ फल देता है। तीसरे या बारहवें घर में होने पर जातक की बचपन में मृत्यु होती है। छठे घर में बैठे मंगल को सूर्य, चंद्र का साथ नहीं मिलता।

जैसे मंगल बारहवें घर में होने पर राहु निष्प्रभावी हो जाता है, वैसे ही मंगल छठे घर में होने पर केतु का प्रभाव नहीं रहता। केतु संतान का कारक होने से पुत्र की कमी रहती है। बुध बारहवें घर में होने पर जातक की मनोदशा बिगाड़ता है।

## निवारण

1. पुत्र जन्म के अवसर पर नमक का मुफ्त वितरण करें।
2. शनि के उपाय कारगर होगा।
3. सर्प को दूध पिलाएँ।
4. गाय और कुत्ते को रोटी खिलाया करें।
5. कुमारी कन्याओं को दूध पिलाएँ।
6. चाँदी या चावल दान करना शुभफल करेगा।

## सातवाँ घर

कुंडली का सातवाँ घर बुध और शुक्र से प्रभावित होता है। इस घर में मंगल होने पर जातक 'मंगलीक' कहलाता है। यदि पहले घर में बृहस्पति हो, तो ऐसा जातक शाही जीवन जीता है। यहाँ मंगल का प्रभाव हर तरह से ठीक रहता है। किन्तु इस मंगल को बुध का साथ मिले, तो जातक की बुआ-बहन जातक के पास रहेंगी, यह फल आधा नहीं होगा। अकेला मंगल यहाँ अच्छा काम करता है, पर उसे बुध का साथ मिलने पर उसका प्रभाव नीच होकर वह नष्ट हो जाता है।

जातक के पास उसकी बहन, साली या बुआ का रहना ठीक नहीं रहता। यह जातक के लिए अशुभ फलदायक है। बकरी या तोता पालना भी बुरा असर करेगा।

साथ में पहले घर में शुक्र होने पर संतान वृद्धि होती है। हर प्रकार का सुख प्राप्त होता है। पारिवारिक लोगों से सहायता प्राप्त होती है।

### निवारण

1. चाँदी की ठोस गोली सदैव अपने पास रखा करें।
2. अपना चरित्र सुदृढ़ एवं पवित्र रखें।
3. बहन, कन्या, बुआ, मौसी, साली को मिठाई खिलाया करें।
4. बहन-बुआ को कपड़ों का दान न करें।
5. भाइयों की संतान की मदद करें।
6. ऊपर की ओर चढ़ने वाली वेल न लगाएँ।
7. चौथे एवं छठे घर के मंगल का उपाय करें।
8. पति-पत्नी स्नान करके लाल वस्त्र पहनें और चावलों से भरे ताँबे के बरतन को चंदन का लेप लगाकर हनुमानजी के मंदिर में दें।
9. शनि को उच्च करने के लिए मकान या दीवार बनाएँ।

## आठवाँ घर

कुंडली का आठवाँ घर मंगल का पक्का घर माना गया है। यह घर मंगल और शनि दोनों ग्रहों से प्रभावित माना गया है। इस घर में कोई भी ग्रह उत्तम नहीं होता। जातक के भाइयों के लिए यह घर बेहद बुरा, लड़ाई-झगड़े का कारक होकर पिता की आयु कम करता है। मित्र भी शत्रुवत् व्यवहार करते हैं। यहाँ मंगल अशुभ होकर परेशानियाँ खड़ी कर देता है, पर खास बुरा नहीं होता। माता-पिता का सहारा जातक को मिलता है।

आठवें घर के मंगल का, मंगल की चीजों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। किन्तु मंगल का अपना प्रभाव नीच हो जाता है। यहाँ का मंगल अपनी राशि मेष या वृश्चिक में हो, तो गृहस्थी का सुख मिलता है।

ऐसा जातक अपने घर में कभी तंदूर न रखे। तंदूर का घर में लाना शुक्र (पत्नी) के लिए बुरा होता है। आठ वर्ष या अट्ठाईस वर्ष से छत्तीस वर्ष तक की आयु में भाई के लिए मंदा चलकर मुसीबतें खड़ी कर देता है।

मंगल तुला के साथ मिलने पर उसमें आक्रमण रोकने की शक्ति रहती है।

### निवारण

1. विधवा का आशीर्वाद लेना हितकर होगा।
2. कुत्तों को मीठी रोटी खिलाना लाभकारी रहेगा।
3. तीन धातुओं की अँगूठी धारण करना शुभ होगा।
4. मंगल के चौथे और छठे घर के उपाय अवश्य दिया जाना चाहिए।
5. आठ सौ ग्राम या आठ किलो गुड़-तिल की रेवड़ियाँ पानी में बहाएँ।
6. चाँदी गले में डाले रखें।

## नौवाँ घर

कुंडली के नौवें घर में बैठे मंगल के कारण जातक पुश्तैनी जायदाद का लाभ उठाता है। जातक की तेरह-चौदह वर्ष की आयु में पिता को लाभ मिलता है। अट्ठाइसवें वर्ष की आयु में जातक स्वयं लाभान्वित होता है।



यदि जन्मकुंडली के तीसरे और पाँचवें घर किन्हीं कारणों से मन्दे हो रहे हों, तो असर उलटा होता है। ऐसे जातक की जन्मकुंडली में सूर्य जहाँ भी बैठा हो उच्च फल देता है। जातक को प्रशासन चलाने और धन कमाने का सुअवसर प्राप्त होता है।

### निवारण

1. लाल रंग के रूमाल को हमेशा अपनी जेब में रखें।
2. मंगलवार के दिन हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाएँ।
3. अपनी भाभी की माता समान सेवा करें।
4. बड़े भाई की आज्ञा का पालन करें।

## दसवाँ घर

कुंडली का दसवाँ घर हर प्रकार से शनि से प्रभावित है। यह घर बड़ा महत्त्वपूर्ण है। मंगल के लिए सचमुच यह सबसे उत्तम स्थान है। दूसरे घर में अगर पापी ग्रह या राहु, केतु, शनि, शुक्र और चंद्र में से कोई हों, तो बुरा असर होता है और अच्छे प्रभाव में कमी आती है। शनि के दसवें या ग्यारहवें घर में मंगल उस चीते के समान होता है, जो पुरुषों पर आक्रमण नहीं करता।

यदि शुक्र या अन्य ग्रह का साथ हो अथवा सूर्य छठे घर में बैठा हो, तो जातक का संतान पक्ष निर्बल रहता है। पैंतालीस वर्ष की उम्र तक का समय संतान के लिए भारी रहता है। बाइसवाँ स्वयं के लिए कष्टकारक होता है। जातक धनवान अवश्य होता है। अट्ठाइस वर्ष बाद नौकरी करता है। यदि मंगल अशुभ हो, तो सारी आयु में बीमारी पन्द्रह वर्ष तक रहती है।

तीसरे और छठे घर में चाहे मित्र ग्रह हों या अन्य ग्रह, उनका प्रभाव बुरा ही होगा। चौथा शनि हो, तो मंगल का प्रभाव बुरा होता है।

जब शनि की कृपा होती है जातक अच्छे-बुरे तरीके से धन कमाकर बड़ी जायदाद का मालिक बन बैठता है। वह दीर्घायु होता है, बत्तीस से चौंसठवें वर्ष की आयु तक धन का आगमन होता रहता है।

सूर्य चौथे और चंद्र पाँचवें घर में हो, तो जातक काना होता है। साथ में शनि तीसरे और चंद्र चौथे घर में हो, तो जातक धन और पोते-पड़पोते का सुख भोगता है।

सूर्य छठे घर में हो, तो जातक संतानहीन होता है। शनि चौथे घर में हो, तो जातक चोरी या डाका डालने के जुर्म में सजा भोगता है।

इस घर में अकेला मंगल बहुत अच्छा फल देता है। उसकी दृष्टि के अनुसार कोई ग्रह न देख रहा हो, तो जातक शाही जीवन व्यतीत करता है।

### निवारण

1. नित्य हनुमानजी की उपासना किया करें।
2. स्वयं मीठा भोजन करें। एक समय तो मीठा भोजन अवश्य करें।
3. हिरण पालें (इसके लिए कानून से इजाजत जरूर लें)।
4. चूल्हे पर उबलता हुआ दूध उफनकर जमीन पर न गिरने दें।

## ग्यारहवाँ घर

कुंडली के ग्यारहवें घर में मंगल उत्तम फलदायी होता है। ऐसा जातक न्यायप्रिय, साहसी होता है। उसकी संतान बड़ी झगड़ालू होती है। बुध अच्छा हो, तो जातक का सब कुछ अच्छा ही होता है और शनि अच्छा हो या शनि का लाभ मिलता हो, तो वह अधिक लाभ पाता है।

वृहस्पति अच्छा हो, तो अट्ठाईस से बयालिस वर्ष की आयु तक धनागम होता ही रहता है। वृहस्पति जिस स्थिति में हो उसी के अनुसार फल प्राप्ति होती है। वृहस्पति मंदा होने पर मंदा असर होता है। चूँकि वह वृहस्पति का पक्का घर है इसलिए वृहस्पति को उपाय करके उच्च बनाना चाहिए।

## निवारण

1. मिट्टी के पात्र में सिंदूर और शहद रखकर उस पात्र को घर में किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें।
2. काले-सफेद रंग का कुत्ता पालें।
3. हनुमानजी को रोज सिंदूर चढ़ाएँ।

## बारहवाँ घर

लाल किताब में बारहवाँ घर वृहस्पति का कहा गया है। इस घर में मंगल और वृहस्पति का अच्छा असर रहता है। इसे राहु का स्थान भी माना गया है। किन्तु मंगल-बृहस्पति दोनों के अच्छे असर की वजह से राहु टेवे में किसी भी घर में हो, चुपचाप रहेगा तथा कभी कोई शरारत न कर पाएगा।

कुंडली के बारहवें घर में बैठे मंगल का शुभ कम और बुरा फल ज्यादा मिलता है। ऐसे जातक की आवाज बुलंद रहती है। उसके बारे में झूठी अफवाहें फैला करती हैं। जातक नीच प्रकृति का रहता है। उसकी अपनी पत्नी से कम पटती है। यदि पत्नी मंगली न हो, उसके ग्रह मंगल दोष कम न कर रहे हों, तो उसकी मृत्यु हो जाती है।

यदि मंगल शुभ हो, तो जातक पत्नी, पुत्र, धन-संपत्ति का पूर्ण सुख भोगता है। राहु का पक्का घर होने की वजह से जन्मकुंडली में राहु कहीं भी हो, उसका बुरा असर नहीं होता। बुध, केतु पहले या आठवें में हों, तो उनका भी बुरा असर नहीं होगा। इस घर का मंगल जातक को बुरी संगति के कारण परेशानी में डालता है।

यदि बृहस्पति दूसरे घर में हो, तो शत्रु इसकी आवाज से ही डर जाते हैं। दूसरे घर में केतु होने पर चौबीसवें वर्ष में प्रथम पुत्र का जन्म होता है और इसी दिन से जातक का भाग्योदय शुरू होता है।

यदि मंगल शुभ हो, तो उसे पत्नी का सुख पूरी तरह से हासिल होता है। जन्मकुंडली में राहु कहीं भी वैठा हो, तो वह चुप रहेगा एवं बुध और केतु चाहे पहले या आठवें घर में बैठे हों, तो भी उनका नीच प्रभाव नहीं होगा।

## निवारण

1. हर रोज प्रातः सबसे पहले थोड़े शहद का सेवन करें।



2. मित्रों आदि को मिठाई खिलाया करें।
3. मंगलवार के दिन हनुमानजी के मंदिर में जाकर लड्डू या बताशें बाँटें।
4. घर में बिना धार का शस्त्र न रखें।
5. बारह दिन लगातार बारह ग्राम गुड़ पानी में बहाएँ।
6. मंगलवार का व्रत रखा करें।
7. मंदिर में हनुमानजी को सिंदूर चढ़ाएँ।
8. मसूर की दाल, शहद और सिंदूर प्रवाहित जल में बहाएँ।
9. भाई की सेवा करें और उसके आदेश का पालन करें।
10. मृगचर्म पर विश्राम करें।
11. शुद्ध चाँदी शरीर पर किसी भी आभूषण के रूप में धारण करें।

❑❑❑

# 12 बुध ग्रह

बुध के सूर्य, शुक्र और राहु मित्र हैं और चंद्रमा इसका शत्रु है। वृहस्पति का पीला रंग और राहु का नीला रंग मिलाया जाए, तो तीसरा रंग हरा वन जाएगा। इसलिए वृहस्पति और राहु के मिलने पर वुध हरा वन जाएगा अर्थात्—वृहस्पति और राहु दोनों के इकट्ठे होने पर वुध प्रभावकारी होगा।

जन्मकुंडली में स्थित वुध का जातक व्यापारी अथवा ज्योतिपी होता है। इस ग्रह से ज्योतिप-विद्या, शिल्पकला, दस्तकारी, वुद्धिमत्ता का अध्ययन किया जाता है। इस ग्रह का प्रभाव जातक की गरदन एवं कन्धों पर विशेष रूप से पड़ता है। यह प्रभाव वत्तीस से चौंतीस वर्ष की उम्र तक रहता है।

वृषभ, सिंह, कन्या, तुला, मिथुन राशियों में शुभ एवं कर्क राशि में अशुभ रहता है। चंद्र, वृहस्पति, शुक्र के साथ वैठा वुध शुभ फल देता है। अकेला वुध निरपेक्ष, निर्लेप रहता है। दूसरे, चौथे या छठे घर में बैठा हुआ वुध राजयोग कारक होता है।

तीसरे और आठवें घर में बैठा वुध सूर्य को सहायता देता है। नवें-वारहवें घरों में वैठा वुध शनि को प्रवल करता है। सातवें घर मे बैठा वुध पारसमणि का काम करता है और जो भी ग्रह साथ हो उसे तार देता है। किन्तु अपने तीन, आठ, नौ, वारहवें घर में वह कोहरे जैसा होता है और तव शनि और बृहस्पति का प्रभाव नीच हो जाता है।

वर्षफल के अनुसार जव वुध नौवें घर में आता है, तव अपनी अच्छाई या वुराई प्रकट करता है।

दो ग्रहों की शक्ति को अपने प्रभाव में वदलने की ताकत इसके पास है। दो शत्रुओं के वीच में रहते हुए भी अच्छा काम करने की क्षमता वुध में है। शनि में भी यह गुण है, पर शनि वुराई की तरफ झुकता है।

सूर्य और अशुभ मँगल से वचने के लिए वुध की सहायता आवश्यक है। किन्तु शुक्र नीच होने पर वुध सहायता नहीं करैगा। वुध की सहायता लेने से पहले शुक्र की हालत ठीक कर लेनी चाहिए।

वुध विना शुक्र वेपेंदे के लोटे के समान होता है। प्रवल ग्रहों के साथ मिलकर वह उनकी शक्ति को वढ़ाता है, तो निर्वल ग्रहों के साथ मिलकर उनकी शक्ति को कम कर देता है।

जिस जातक का वुध श्रेष्ठ होता है, उनकी आँखें कवूतर जैसी होती हैं। जातक भयभीत, मंद गति से चलने वाला, लड़कियों जैसी धीमी आवाज वाला, किन्तु उसका व्यक्तित्व आकर्पक होता है। वार-वार जीभ को होंठों पर फेरने की उसकी आदत रहती है। पहले घर में वुध हो, तो जातक गप्पी होता है। वह वातों-वातों में स्वप्नों के महल वनाता है। हर एक को अपना वना लेता है।

जातक के दाँत वाहर की तरफ निकले हों, तो वह भाग्यवान नहीं, किन्तु वुद्धिमान



अवश्य होता है। उसके तीस दाँत हों, तो मंद, वत्तीस हों, तो वह जो भी वुरा कहे वह पूरा होता है। अच्छे की गारंटी नहीं। इकतीस दाँत हों, तो कामातुर होता है।

**जातक की वोलचाल की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार की होती हैं–**

- ❑ गला फुलाकर वोलने वाला, दूसरों की परवाह न करने वाला, स्वार्थी, वात करते समय शरीर के किसी अंग को हिलाते रहना, अपनी प्रशंसा की चाहना करना।
- ❑ वोलते समय उसके दाँतों का माँस पीछे हट जाना।
- ❑ जल्दी-जल्दी वोलने वाला, स्वार्थी, स्वभाव का वुरा।
- ❑ धीरे-धीरे सोचकर वोलने वाला, वुद्धिमान।
- ❑ नाक में वोलने वाला—अभिमानी।
- ❑ वैठकर चैन से वात कहने के वजाय चलते-फिरते वात करने वाला, विना वजह कंजूसी करने वाला।

**नोट**–घर के साथ पीपल या वड़ का पेड़ हो, तो वृहस्पति या चन्द्र की दुश्मनी वुध से रहती है। तीसरे घर का कन्या राशि का वुध जव पाँचवें घर में वैठा हो, तो जातक के भाई नहीं होता। जातक की एक भुजा कमजोर रहती है।

## मंदा वुध

**मंदे वुध की पहचान निम्नलिखित है–**

- ❑ जातक में संतान उत्पन्न करने की शक्ति का कम होना।
- ❑ सामने के तीन दाँतों का अनायास ही गिर जाना।
- ❑ गंध-सुगंध-दुर्गंध आदि से अनभिज्ञ रहना आदि।

## निवारण

1. काँसे के वर्तन में देशी घी, कपूर और शक्कर डालकर जल में प्रवाहित करें। फिर वरतन धोकर ही घर में लाएँ।
2. सुराख वाला ताँवे का पैसा दरिया में डालें।
3. नाक छिदवा लें।
4. फिटकरी के पानी से प्रातः दाँत साफ करें।
5. कुमारी कन्याओं की पूजा करें।
6. राहु-केतु का उपाय करना सहायक होगा।
7. वुध, शनि, केतु के लिए राहु का उपाय करना सहायक होगा।
8. शुक्र, राहु के लिए केतु का उपाय मददगार होगा।
9. वुध तीसरे या नौवें के लिए लोहे की ठोस गोली पास में रखा करें।
10. चंद्र, सूर्य, वृहस्पति के लिए शुभ मंगल का उपाय सहायक होगा।
11. मंगल के लिए वृहस्पति का उपाय करना अनिवार्य है।

वुध जिस राशि में या जिस घर में वैठा हुआ हो उस राशि या घर का ग्रह अगर नौवें घर में वैठा हो, तो विवाह एवं गृहस्थ जीवन पर वुध का नीच प्रभाव होता है। ऐसे वक्त राहु-केतु का उपाय करें।

वुध नेक हो, तो काँच की गोली जेव में रखें। वुध के लिए लाल रंग को छोड़कर अन्य किसी भी रंग का कुत्ता पालना अच्छा रहेगा।

सातवें घर में बुध, शुक्र दोनों इकट्ठे हों, तो उनका फल अच्छा होता है। इन दोनों ग्रहों का पक्का घर सातवाँ है। परन्तु जब दोनों अलग-अलग बैठे हों (आपस में यानी पहले व सातवें घर में), तो फल नीच हो जाता है। जब बुध को शुक्र की सहायता नहीं मिलती, तो शुक्र मानों पागल हो जाता है। ऐसी दशा में उपाय द्वारा बुध को शुक्र से मिला दें।

बुध जिस ग्रह के घर में हो या जिस ग्रह से मिल रहा हो, तो उन दोनों ग्रहों का उपाय करना चाहिए। बुध तीसरे या नौवें घर में हो, तो लोहे की गोली पर लाल रंग चढ़ाकर जेब में रखें। बुध अच्छे स्वभाव को हो, तो काँच की हरी गोली जेब में रखें।

## दूसरे ग्रहों के साथ बुध का मेल

सूर्य के साथ पारा, चंद्र के साथ दही, शुक्र के साथ पानी, बृहस्पति के साथ मित्र, मंगल के साथ शेर का दाँत, राहु के साथ हाथी की सूंड, केतु के साथ कुत्ते की पूँछ, शनि के साथ कली जैसा सम्बन्ध बुध का रहता है।

सूर्य और मंगल के सामने या साथ में बैठे बुध का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

## पहला घर

यदि जन्मकुंडली के पहले घर में बुध हो, तो जातक दीर्घायु, विनोदप्रिय, उदार प्रवृत्ति का, चापलूस करने वाला, नीतिवान, प्रशासक किन्तु स्वार्थी, शरारती, बदनाम और कामचोर होता है। पहले घर का बुध जातक को शराबी, माँसाहारी, धर्म-अधर्म की परवाह न करने वाला, किन्तु खुद की कमाई करते रहने वाला बना देता है।

बुध और सूर्य आमने-सामने हों, तो मंगल का प्रभाव कम होता है। सातवाँ घर खाली हो, तो प्रभाव शून्य होता है।

बुध यदि शनि से साथ कर रहा हो, तो जातक संगीत-प्रेमी होता है, सूर्य का प्रभाव भी अच्छा रहता है। स्वयं में बुध का फल जातक को नीच, लालची और देश-परदेश की यात्रा कराने वाला बनाता है। राज्य-शासन में उसकी तूती बोलती है।

## निवारण

1. माँस, अंडों और शराब का प्रयोग न करें।
2. मछली का शिकार न करें।
3. हरे रंग के वस्त्र न पहनें।
4. साली को साथ न रखें, नहीं तो वह बदनामी और बरबादी की वजह बनेगी।

## दूसरा घर

कुंडली के दूसरे घर में बुध हो, तो जातक परिश्रम से धन कमाता है। वह स्त्रीभक्त, स्वार्थी, पुत्रों के होते हुए भी उनके सुख से वंचित रहता है। जातक के घर में निवार के गोले पड़े हों, तो उनको खोलकर खटिया बना लें। ये निवार के बंडल जातक के भाग्य को गोल (लोप) कर देते हैं। अकेला बुध दूसरे घर में हो, तो जातक संगीत प्रेमी होता है, किन्तु यदि पाँचवें घर में उसका शत्रु ग्रह बैठा हो, तो नीच प्रभाव होता है। धन-दौलत एवं ससुराल पक्ष निर्बल हो जाता है।

छठे घर में कोई ग्रह न हो, तो राजयोग होता है। जातक अस्थिर विचारों वाला होता



है। बात-बात में वह अपने विचार बदलता है। वर्ष कुंडली में नीच होने पर वह धन-संपदा और परिवार के लिए भारी होता है। जातक के पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ ही अधिक होती हैं।

दूसरे घर में बुध की समयावधि में बृहस्पति का प्रभाव नीच का हो जाता है। किन्तु बुध इसे निष्प्रभावी बना देता है। जातक ज्ञानी या उपदेशक होता है। वह न अधिक धनवान होता है और न ही गरीब।

साथ में शनि छठे या सातवें घर में हो, तो जातक के पिता-सुख में कमी रहती है। जातक की उम्र के उन्नीसवें वर्ष में उसको पिता की मृत्यु की पीड़ा सहनी पड़ती है।

जातक स्वयं अपना भाग्य-विधाता होता है और अत्यधिक स्वाभिमानी भी रहता है। संतान-पक्ष कमजोर रहता है।

## निवारण

1. नाक छिदवाएँ और नाक में सोलह दिनों तक चाँदी डालें।
2. कुमारी कन्याओं की सेवा और पूजा करें।
3. बृहस्पति का उपाय सहायक होगा।
4. घर में पड़े निवार के गोले खोल दें।
5. फिटकरी से दाँतों को साफ करें।
6. तोता, बकरी या मेढ़ी (मादा भेड़) घर में न पालें।
7. मंदिरों में दूध और चावल दें।

## तीसरा घर

यदि बुध तीसरे घर में स्थित हो, तो जातक का जीवन कुहासे की तरह धूमिल रहता है। यहाँ बुध बहुत ही मंद प्रभाव देता है। जातक के भाई कम होते हैं। वह हमेशा यात्रा करता है। चिकित्सक हुआ तो यश का भागी होता है।

इस घर में बैठा बुध नीच होता है। उसे नौवें घर का प्रभाव नीच कर देता है और ग्यारहवें घर का प्रभाव भी अवरोध उत्पन्न करता है। नौवें, ग्यारहवें पर दृष्टि होने के कारण बृहस्पति का प्रभाव पड़ता है। यदि जातक चिकित्सक बने, तो इन घरों से सम्बन्धित ग्रहों के स्त्री-पुरुष एवं वस्तुओं पर नीच प्रभाव होता है। मित्र या भाई जातक का साथ देते हैं।

सूर्य ग्यारहवें घर में हो, तो बुध चुप रहता है।

अगर सातवें घर में शनि, राहु, केतु में से कोई पाप ग्रह हो, तो बुध पिता एवं मामा के लिए मंदा रहता है।

मंगल शुभ हो, तो बहन, बुआ की रौनक लगी रहेगी। बुध तीसरे घर में हो और नौवाँ, ग्यारहवाँ घर खाली हो, तो बुध का उत्तम फल मिलता है।

पाँचवें घर में चंद्र-बृहस्पति हो, तो जातक मंद भाग्य का होता है।

अशुभ मंगल पाँचवें या ग्यारहवें घर में हो, तो दोनों घरों के सम्बन्धित रिश्तेदार एवं चीजों से शत्रुता रहती है।

चंद्र ग्यारहवें घर में हो, तो भाइयों के विषय में फल मिलता है। शुक्र ठीक स्थिति में हो, तो चंद्र नीच हो जाता है।

शुक्र चौथे घर में हो, तो जातक को पत्नी एवं संतान का सुख उम्र के अट्ठाइसवें वर्ष बाद मिलता है। शनि आठवें घर में हो, तो बुध दोनों घरों के फलों को नीच नहीं करता, परन्तु स्वयं नीच हो जाता है।

मंगल पहले घर में हो, तो श्रेष्ठ किन्तु संतान पक्ष को कमजोर बनाता है। अगर मंगल अशुभ हो, तो बुध अधिक नीच प्रभाव देता है। इसका कारण है कि तीसरा घर मंगल का पक्का घर है।

### निवारण

1. दुर्गा माँ का पूजन किया करें।
2. कुमारी कन्याओं का पूजन कर उनसे आशीर्वाद लें।
3. रात के समय पानी में मूँग भिगोकर रखें और 43 दिनों तक प्रातःकाल पक्षियों व जानवरों को डालें।
4. दमे की दवाइयाँ जरूरतमंदों को मुफ्त में बाँटें।
5. नाक छिदवाएँ।
6. बुध के दिन बकरी दान करें।
7. जितनी आयु हो उतने ढाक के पत्ते दूध मे धोकर जमीन में दबा दें। दूध का बर्तन एवं औजार वहीं छोड़ आएँ।
8. घर में कुत्ता पालें।
9. पीले रंग की लकड़ियों को जलाकर उसकी राख दरिया में प्रवाहित करें।

### चौथा घर

इस घर में वुध होने पर जातक माता का प्रिय, सत्ता से मान-सम्मान प्राप्त करने वाला, कुशल व्यापारी, घर पर रहकर काम करने वाला, बड़ा भाग्यवान होता है।

बकरी या तोता घर में रहे, तो माता को अनिष्ट करता है।

साथ में 3, 5, 11वें घर में सूर्य और नौवें घर में बृहस्पति हो, तो राजयोग कारक स्थिति बनती है, किन्तु माता के लिए घातक सिद्ध होता है। 3, 4, 6 घर में अगर चंद्र हो, तो उत्तम, लेकिन तीसरे में हो, तो अति उत्तम होता है। बुध, शुक्र दोनों ग्रह भी श्रेष्ठ कहलाते हैं।

पहला घर खाली हो और चंद्र तीसरे, छठे में होने पर पैतृक सुख मिलता है।

वृहस्पति के इस स्थिति में होने पर हर प्रकार से उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

### मंदा बुध

- ❑ जब घर में पलने वाली बकरी या तोता माता के लिए हानिकार होता है, ऐसे में माता की आयु का कोई भरोसा नहीं रहता।
- ❑ राहु नीच घरों में होने पर पुरुषों के लिए कष्टकारी होता है।
- ❑ सूर्य और बृहस्पति के उपाय सहायता करते है।
- ❑ हरे रंग से परहेज रखें।
- ❑ चाँदी की जंजीर मन की शांति के लिए पहनें। सोने की जंजीर धन-संपत्ति की वृद्धि के लिए धारण करें।



- ❑ नीच बुध के लिए सूर्य का उपाय सहायक होता है, यानी चार सौ ग्राम गुड़ सात रविवार तक जल में प्रवाहित करें।
- ❑ बुजुर्गों की सेवा करें।
- ❑ किसी के सामने स्नान न करें।
- ❑ भगवान की पूजा करें।
- ❑ तीर्थयात्रा करें।
- ❑ अपने कुलकुरु या कुलपुरोहित से आशीर्वाद लें।
- ❑ अंधों को भोजन दें।
- ❑ शराव न पीएँ।
- ❑ मछलियों का शिकार न करें, न उनका सेवन करें।
- ❑ खाकी गोटे में ताँबे का सिक्का वांधकर गले में डालें।

### पाँचवाँ घर

यदि पाँचवें घर में वुध हो, तो जातक को भाई और संतान की कभी कमी नहीं रहती। ऐसा जातक खुशहाल, ज्योतिपी या वैद्य रहता है। उसके मुख से निकले शव्द सत्य वचन होते हैं। चंद्र या पुरुष ग्रह 3, 6, 9, 11 में होने पर श्रेष्ठ फलदायी होते हैं। किन्तु शुक्र और चंद्र पाँचवें घर में हो, तो बुध जैसा फल मिलता है। इसके विपरीत वृहस्पति और चंद्र नीच बन रहें हो, तो वुध का अपना प्रभाव भी तीक्ष्ण बन जाता है।

शनि दृष्टि से खाली हो और बुध सोया हुआ हो, तो उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

चंद्र, बृहस्पति, सूर्य नौवें घर में हो, तो जातक का भाग्योदय चौंतीसवें वर्ष में होता है।

### मंदा बुध

मंगल 3, 4, 5, 7, 9 में हो, तो बुध का असर ठीक नहीं रहता। इससे पहले घर में बैठे ग्रह की मिट्टी पलीद हो जाएगी। किन्तु अगर चंद्र और बृहस्पति तीसरे, नौवें में हो, तो ठीक रहता है। चंद्र की चीजों से सहायता ली जा सकती है।

जब बुध चंद्र से पहले घरों में हो, तो न जाने कब तक जातक के मुँह से कड़वी बात निकल जाए। पीला वस्त्र और पीली मिट्टी संतान के कष्ट निवारण में सहायता करती है।

### निवारण

1. चाँदी की अँगूठी बाएँ हाथ की उँगली में धारण करें।
2. कमर पट्टे का प्रयोग करें।
3. नाक छेदन करवाएँ।
4. ताँबे का पैसा गले में पहना करें।
5. चाँदी को किसी भी रूप में शरीर पर धारण करें।

### छठा घर

कुंडली का छठा घर बुध का अपना घर है। दूसरा घर चंद्र से प्रभावित रहता है।

अतः चंद्र की जानदार वस्तुओं के अलावा बाकी सब वस्तुओं का साथ मददगार होगा। चंद्र की वस्तुएँ लाभकारी होंगी और व्यवसाय आदि में बुध की वस्तुओं से लाभ होगा। यदि कुंडली के छठे घर में बुध हो, तो जातक मन का मौजी होता है। वह गुमनाम योगी भी रहता है। जो प्रभाव शुक्र दूसरे घर में देता है, वही प्रभाव वुध छठे घर में तव देता है, जबकि मंगल-चंद्र अशुभ न हों।

अगर दूसरे घर में सूर्य, बृहस्पति, शनि हों, तो वहुत श्रेष्ठ प्रभाव मिलता है। कन्या या वहन का विवाह उत्तर दिशा में रहने वाले लड़के से हो, तो वह दुःखी रहती है। चंद्र की चीजें माता के लिए प्रतिकूल सिद्ध होती हैं। जातक की शिक्षा के लिए वे कारगर होती हैं। दिमागी कार्य, व्यापार आदि से जातक को पूर्ण लाभ मिलता है।

जातक के गर्भ में आते ही वुध अपना प्रभाव उस पर डालना शुरू करता है। समुद्र की यात्रा का लाभ उसे मिलता है।

जातक के पास खेती की जमीन भी होती है। पहले तो झगड़ा नहीं होता, लेकिन अगर हुआ भी तो उसका निर्णय जातक के पक्ष में ही होता है।

प्रामाणिकता से धन कमाने पर उसमें यश मिलता है। शुभ कार्यों में पुष्पादि से वुध का पूजन करने का श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

इस बुध की समयावधि में जन्मकुंडली के उत्तम ग्रह अपना दुगुना प्रभाव दिखाते हैं।

बुध छठे घर में हो, दृष्टि 2, 9, 12 खाली, शनि 9, 10 में हो, तो पत्नी धनी परिवार से मिलती है।

पहले घर में सूर्य, बृहस्पति या शनि हो, तो जातक संपत्तिवान रहता है। सूर्य आठवें घर में हो या आए, तब जातक की सास बीमार रहती है।

**निम्न योगों में बुध का वुरा असर होता है–**

- ❑ यदि मकान का प्रवेश द्वार उत्तर में हो, तो बुरा प्रभाव होता है।
- ❑ जातक लालची स्वभाव का चिकित्सक हुआ तो बुरा असर पड़ता है।
- ❑ चौंतीस वर्ष की आयु में अशुभ मंगल का प्रभाव जातक को सहना पड़ेगा। इसमें माता की मृत्यु भी हो सकती है।
- ❑ मंगल चौथे या आठवें घर में हो, तो बचपन में ही माता का साथ छूट जाता है।
- ❑ शुक्र चौथे घर में एवं केतु नीच का हो, तो जातक के चौंतीस वर्ष की अवधि बीत जाने के बाद संतान होती है।
- ❑ चंद्र, बृहस्पति दूसरे में या बुध ग्यारहवें घर में हो, तो दृष्टि क्षीण रहती है, वृद्धावस्था अच्छी गुजरती है।

## निवारण

1. बहन या बेटी का विवाह दक्षिण दिशा में कदापि न करें।
2. मिट्टी के बरतन में दूध भरकर उसे वीराने में दबा आएँ।
3. गंगाजल काँच की बोतल में बंद करके खेती की जमीन में दबा दें।
4. घर की उत्तर दिशा में होने वाली शादी में बहन या कन्या सम्मिलित न हों।
5. किसी भी काम के लिए घर से बाहर निकलते समय भगवान पर चढ़ाया हुआ फूल अपने पास में रखें।
6. चाँदी की अँगूठी दाएं हाथ की उँगली में धारण करें।

## सातवाँ घर

यदि सातवें घर में बुध हो, तो जातक कुलीन होता है। वह दूसरों के लिए सुवर्ण के समान साबित होता है। साली के साथ सम्बन्ध बर्बादी का कारण होता है। वह व्यवहारकुशल होता है। वह स्त्रियों का व्यापारी भी हो सकता है। हाजिर माल के व्यापार में धन कमाता है, पर मूर्ख होता है।

जाग्रत बुध श्रेष्ठ, सोता वुध मिट्टी, चौंतीस वर्ष तक निकम्मा रहता है। साथ बैठा ग्रह बेड़ा पार करता है।

जव चंद्र पहले घर में आता है, तव जल यात्रा होती है। पहले और दसवें घर में भले ही शत्रु ग्रह हों, उनका फल अच्छा मिलता है।

तीसरा शनि हो, तो ससुराल अमीर रहती है।

नौवाँ वृहस्पति बुरा फल देता है।

जातक की लेखनी में तलवार का पैनापन होता है।

जातक हमेशा मुकदमों में विजय प्राप्त करेगा।

जातक के पास उसकी वहन, कन्या, बुआ, मौसी, साली न रहे, यदि रहे तो फल नीच होगा।

**निम्न योगों में वुध का प्रभाव होता है–**

- ❑ मंदा बुध, मंगल और शुक्र के प्रभाव को नीच कर देता है।
- ❑ पहले, आठवें घर में केतु होने से साहूकार होने का भी कोई फल नहीं देता।
- ❑ सोया बुध नीच होता है। वचपन मंदा वीतता है। चौंतीस वर्ष की आयु तक की पत्नी का फल भी बुरा रहता है।
- ❑ बुध, वृहस्पति नौवें घर में हो, तो विवाह में अड़चन आती है।

## निवारण

1. काले रंग की कुरूप गाय की सेवा करना सहायक होगा।
2. बड़ी उम्र की लड़की के साथ माता समान सुलूक करें।

## कुंडली आठवाँ घर

आठवें घर में बुध हो, तो जातक का सारा जीवन मेहनत करते ही वीत जाता है। बीमारी बनी रहती है। बत्तीस से चौंतीस वर्ष की आयु में आमदनी आधी हो जाती है।

इस घर का बुध रोग देने वाला, गुप्त रूप से तबाही करने वाला, आर्थिक नुकसान पहुँचाने वाला होता है। चौंतीसवें वर्ष तक का समय अच्छा नहीं रहता। दूसरे घर में कोई ग्रह न हो, तो बुध अधिक हानिकारक होता है।

यदि राहु भी मंदा हो, तो जातक को जेल भी जाना पड़ सकता है, अस्पताल में, वीराने में, घर से बाहर रहना पड़ सकता है। मंगल का साथ हो, तो वुरा असर नहीं होता।

सूर्य, मंगल या बृहस्पति कोई भी ग्रह साथ बैठा हो या मंगल बारहवें घर में हो, तो नौवें घर का नीच बुध नीच प्रभाव नहीं देता। ऐसे जातक को गुप्त रहस्यमयी विद्याओं का ज्ञान होता है।

### ग्यारहवाँ घर

यदि ग्यारहवें घर में बुध हो, तो जातक की संतान सर्वगुणसंपन्न और पढ़ी-लिखी होती है। संतानों का विवाह उच्च कुलों में होता है। बुध के साथ चंद्र या बृहस्पति हो और दूसरा घर खाली हो एवं वर्षफल में जब बुध पहले घर में आता है तब लाभ होता है।

**विशेष**–किसी कारणवश बुध नीच का हो, तो जातक को उम्र के चौंतीसवें वर्ष तक कष्ट रहता है। वर्षफल के अनुसार नौवाँ बुध ग्यारहवें में आ जाए और तब जातक किसी साधु से तावीज आदि ले, तो जातक पर बुरा असर करता है। इसलिए साधु से किसी भी आदि प्रकार का तावीज नहीं लेना चाहिए।

### निवारण

1. खाली बरतनों पर ढकने नहीं रखें।
2. बड़े पत्ते वाले पेड़-पौधे न लगाएँ।

### बारहवाँ घर

यदि कुंडली के बारहवें घर में बुध नीच का हो, तो जातक दुःखी रहता है। उसकी मानसिक स्थिति डाँवाडोल रहती है, सिरदर्द बना रहता है। रातों की नींद भी हराम होती जाती है।

नीच राशिफल का उपाय किया जा सकता है। जब बुध सूर्य से मिलता है, तब बहुत अच्छा असर होता है। बारहवें घर में शनि सूर्य और बुध के साथ हो, तो भी प्रभाव ठीक रहता है।

पच्चीसवें वर्ष में विवाह हो जाए, तो शुक्र का घर खराब होकर बृहस्पति और पिता के लिए अशुभ होता है। दूसरे या बारहवें में बृहस्पति का साथ होने पर अच्छा प्रभाव रहता है और शनि के साथ से धन-संपत्ति मिलती है।

बहन, बुआ, लड़की, भतीजी जातक के घर में दुःखी, अपने घर में सुखी रहती हैं। छठे घर में बैठे सभी ग्रह सूर्य या शनि साथ हों, तो उनका असर अवश्य होगा।

शनि और बृहस्पति सातवें घर में होने पर भी फल अच्छा ही होगा।

**निम्नलिखित योग में बुध मंदी हालत में होता है–**

- पति-पत्नि दोनों का बुध बारहवें घर में हो, तो दोनों का भाग्य मंदा रहता है। धनी होते हुए भी दुःखी रहते हैं। दोनो में से किसी का केतु उच्च हो, तो बुध के बुरे असर से बचाव होता रहता है।
- हवाई काम, सट्टे का व्यापार नीच प्रभाव देते हैं।
- शनि छठे घर में हो, तो गंदे कामों में धन की बरबादी होती है।
- वृहस्पति छठे घर में हो, तो पिता की आयु पर असर तथा पिता का धन नाश होता है।
- चंद्र छठे घर में हो, तो माता की आयु पर असर तथा माता का धन का नाश होता है।
- मंगल छठे घर में हो, तो भाई की आयु पर असर तथा भाई का धन नाश होता है।



- राहु छठे घर में हो, तो ससुराल में मंदा प्रभाव होता है।
- मंगल छठे घर में हो, तो माता की मृत्यु जातक के बचपन में होती है।
- शुक्र छठे घर में हो, तो दोनों का प्रभाव नीच रहता है।
- केतु छठे घर में हो, तो संतान पक्ष कमजोर होता है।

### निवारण

1. मिट्टी का घड़ा दरिया में प्रवाहित करें।
2. भूरे रंग के कुत्ते की पालना न करें।
3. दुर्गा माँ का पूजन करें।
4. अपना वचन को झूठा न होने दें।
5. अपने गुस्से को काबू में रखें।
6. किसी की निंदा न करें।
7. बुधवार का व्रत रखें।
8. हरी चीजें दान में दें या बहते पानी में बहाएँ।
9. बीच में छेदवाला ताँबे का सिक्का बहते पानी में डालें।
10. घर में कुत्ते और तोते की पालना करें।
11. हरी चूड़ियाँ एवं हरे कपड़े कुँआरी कन्या को दें।
12. बुध बुरा असरदार हो, तो बुध की चीजों का दान करें।
13. बहन, बुआ, लड़की, मौसी एवं साली से आशीर्वाद लें।
14. केसर का तिलक लगाएँ।
15. स्टील या लोहे का बेजोड़ छल्ला उँगली में धारण करें।
16. खाली मिट्टी का घड़ा पानी में प्रवाहित करें।
17. नाक छिदवाकर उसमें चाँदी धारण करें।
18. पीला धागा हर समय गले में बाँधे रखें।
19. गणेश जी की रोज पूजा किया करें।

❑❑❑

# 13 शनि ग्रह

पापी ग्रहों के सरताज शनि के राहु और केतु सेवक हैं। इन तीनों के प्रभाव से एक खतरनाक कुंडली वन जाया करती है। यह शुक्र का प्रेमी तथा शुक्र इसकी प्रेमिका है। बुध अपनी आदत के मुताबिक इस पापी कुंडली के साथ लगकर इन जैसा ही वन जाता है।

नवग्रहों में शनि सबसे सुस्त चाल से चलने वाला ग्रह है। इसकी सुस्त चाल (मंद गति) के कारण ही इसका नाम 'शनैश्चर' पड़ा है। वृष, तुला, मिथुन, मकर, कुंभ राशियों में यह ग्रह शुभ माना जाता है और सिंह और वृश्चिक राशि में अशुभ। शनि से मकान, धन-संपत्ति, आयु, मृत्यु, संतोष, हानि, मुकदमा, चोरी एवं वायु सम्वन्धी रोगों के वारे में जानकारी मिलती है।

शनि यदि शुभ राशि या घर में बैठ जाए, तो जातक का कल्याण कर देता है और यदि विपरीत अशुभ राशि या घर में बैठे, तो हानि करता है।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार शनि सूर्य का पुत्र है। परन्तु पिता के गुण पुत्र में कम ही आए हैं। अतः सूर्य जहाँ जातक को तेजस्वी बनाता है, वहीं शनि जातक को निर्धन बनाता है। माता के गुण पुत्र में होते हैं। इसके पीछे तर्क यह है कि लक्ष्मीजी ने शनि को अपना पुत्र माना है। वह लक्ष्मी जी की कोख से पैदा न होने के कारण उल्टे काम किया करता हैं।

जहाँ शनि की दृष्टि हो वहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता है। कभी-कभी शनि परोपकार के काम भी करता है। उसकी दृष्टि से गड़ा हुआ धन भी प्राप्त होता है। परन्तु उसकी क्रूर दृष्टि से सब कुछ विक जाता है।

जन्मकुंडली में जिस जातक का शनि शुभ हो, उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है। जिसका शनि अशुभ होता है, वह रोगी होता है। उसकी धन-दौलत समाप्त हो जाती है। कभी-कभी जेल भी चला जाता है। अनेक तरह के जुर्म उस पर थोप दिए जाते हैं।

जब शनि आठवें ग्रह का स्वामी वन रहा हो, तो वह जिस भी घर में बैठता है, उस घर को हानि पहुँचाता है। शराव पीना, जुआ खेलना, झूठ बोलना, इश्क का इज़हार करना, जैसी बातें शनि के प्रभाव को मंदा करती हैं ऐसे जातक का शनि कितना भी उच्च हो लेकिन वह अच्छा फल नहीं देता। कारण—जातक अपने गन्दे कामों में शनि को भी गन्दा वना लेता है।

शनि के साथ यदि राहु, केतु का सम्वन्ध हो, तो शनि पापी हो जाता है।

शनि को इच्छाधारी सांप कहा गया है। शनि पर सूर्य की दृष्टि पड़े, तो शुक्र को हानि होती है। शनि पर शुक्र की दृष्टि हो, तो धन हानि होती है। परन्तु शुक्र पर शनि की दृष्टि हो, तो लाभ प्राप्त होता है।



राहु जन्मकुंडली के पहले घर में, शनि मध्य में, बाद के घरों में केतु हो, तो शनि का असर वुरा होता है।

शनि का अच्छा असर छत्तीस वर्ष बाद शुरू होता है।

जन्म का मंदा शनि वर्षफल में भी मंदे घरों में आ जाए, तो 9, 18, 27, 36 वर्षों में भारी हानि करता है। शनि से शुक्र के मिलने पर मकान बनता है।

अकेला चंद्र या राहु के साथ चंद्र जब वारहवें घर में होता है, तव वह जहरीला प्रभाव डालता है। दूसरे घर में यदि शनि के मित्र ग्रह हों, शुक्र मंगल कायम हों, तो जातक को तंदुरुस्त कर देता है।

वृहस्पति के घरों 2, 9, 12 में शनि कभी मंदा असर नहीं करता। परन्तु मंगल के घरों 3, 8 में मंगली हो जाता है। चौथे घर में शनि चंद्र की हानि करता है और आठवें में अपघात करता है। नौवें घर में शनि अति उत्तम फलदायी होता है, वशर्ते कि दूसरे घर में उसके मित्र ग्रह हों।

## मंदा शनि

यदि शनि मंदा हो, तो निम्न वातों से उसकी पहचान होती है–

- ☐ अकस्मात् मकान गिर जाए या उसे भारी क्षति पहुँचे।
- ☐ गाय या भैंस मर जाए।
- ☐ मकान, दुकान कहीं भी आग लग जाए।
- ☐ जूते खो जाएँ अथवा उन्हें कोई चुरा ले जाए।
- ☐ कान की बीमारी हो, खाँसी हो, आँख की रोशनी कम हो जाए।
- ☐ जातक शराव पीने लगे और माँसाहारी वन जाए।
- ☐ इश्कवाजी में जातक अपना समय और धन वरवाद करने लगे।

शनि धन-संपत्ति देता है और साथ ही वह जातक को संन्यासी या वैरागी भी वना देता है। शुक्र पहले घर में हो और उसकी दृष्टि शनि पर पड़ रही हो, तो नजदीकी सम्वन्धी जातक के धन को हड़प जाते हैं।

अगर जन्मकुंडली में मंगल + वुध (शनि) इकट्ठे हों या दृष्टि से मिल रहे हों, तो राहु स्वभाव होने के कारण जातक की संतान को कष्ट होता है या उसका नाश भी हो सकता है। सूर्य या वृहस्पति में से किसी के साथ वैठा शनि कभी नीच प्रभाव नहीं डालता। इनसे दवकर रहता है। परन्तु इसके विपरीत चंद्र, मंगल में से किसी एक के साथ वैठे हो, तो नीच प्रभाव देता है।

पहले घर में वैठा सूर्य मंगल को, तीसरे में वैठा केवल मंगल को, चौथे में वैठा चंद्र को, पाँचवें में वैठा सूर्य को और आठवें घर में वैठा मंगल को चोट पहुँचाता है।

## पहला घर

कुंडली के पहले घर में शनि अत्यधिक नीच प्रभाव वाला देने वाला होता है। जातक के जन्म से पहले धन-संपत्ति की दशा ठीक रहती है। किन्तु जन्म के वाद धन हानि होती है। जव वुध मंदा हो, तो शिक्षा अधूरी रह जाती है।

जातक आलसी, दरिद्री और वीमार रहता है। दसवें घर में शनि का शत्रु ग्रह हो, तो अवश्य ही वुरा करता है या फिर जातक को शक्की वनाता है।

चौथे घर में मंगल हो, तो पैतृक जायदाद नष्ट होती है। छठे या बारहवें घर में बैठा मंगल धन-वृद्धि करता है। जातक के शरीर पर बाल अधिक हों, तो उसे निर्धन बनाता है।

राहु, केतु मंदे हों या सातवें घर में कोई ग्रह न हो, तो तीन गुना मंदा, सूर्य सातवें घर में हो, तो राज-दरबार मंदा होता है।

पहले घर में शनि हो और 7-10 घर खाली हों, तो शनि का अच्छा फल मिलता है। 7, 10, 11 में सूर्य हो, तो पत्नी को कष्ट होता है। शत्रु ग्रह सूर्य, चंद्र या राहु हों, तो उन ग्रहों की चीजें और रिश्तेदार नीच प्रभाव डालते हैं। शनि और मंगल के योग से हर समय नीच प्रभाव रहता है।

जातक के शरीर पर अधिक बाल होना अच्छा नहीं होता। ऐसा जातक निर्धन होता है। उसके जन्म से ही घर में धन हानि शुरू हो जाती है।

यदि पहले घर के शनि की समयावधि में मंगल अशुभ हो, तो चोरी होना, धोखा खाना, संतान को कष्ट होना आदि बातें घटित होती हैं।

राहु-केतु मंदे हों, मंगल सातवें घर में हो, तो फल अधिक मात्रा में बुरे होते हैं। माता को कष्ट होता है और स्वयं जातक भी दुःखी रहता है। जब बुंध मंदा-बुरा हो, तो कारोबार बिगड़ जाता है या कारोबार का दिवाला निकल जाता है।

## निवारण

1. माँस-मदिरा के सेवन से बचें।
2. वीरान जगह पर जमीन में सुरमा दबाएँ।
3. बरगद के पेड़ पर दूध चढ़ाकर गीली मिट्टी से तिलक करें।
4. बंदरों को भुने हुए चने खिलाएँ।
5. तवा, चिमटा या अँगीठी का दान करें।
6. शनि की चीजों को दान में दें।
7. केले के पौधों को दूध और शक्कर से सींचें और इससे गीली हुई मिट्टी का तिलक लगाया करें।
8. दूसरों की चीजों पर बुरी नजर न रखें।
9. झूठ न बोलें।

## दूसरा घर

जन्मकुंडली का यह दूसरा घर बृहस्पति की शरण में जाने का मार्ग खोलता है। इस घर में 6, 8, 12 घरों का असर साथ रहता है। यह पैतृक संपत्ति, मूर्ख सन्तान, ससुराल के लिए मंदा होता है। विवाह के समय में ससुराल में अग्निकांड हो सकता है। यदि चंद्र अच्छी स्थिति में हो, तो परिणाम अच्छे निकलते हैं और जब बारहवें घर में हो, तो जातक मान-प्रतिष्ठा से युक्त होता है।

यदि 5, 9,10, 11 में कोई ग्रह हो, तो जातक उदासीन, बृहस्पति चौथे में हो, तो तीक्ष्ण बुद्धिवाला, बृहस्पति दसवें में हो, तो ईर्ष्यालु और कंजूस रहता है।

जब मंगल अशुभ यानी सूर्य और शनि या शुक्र और बुध इकट्ठे हों, तो अट्ठाइस से उंतालीस तक की उम्र बीमारी में बीतती है।



आठवें घर में राहु हो, तो शनि उसके साथ दुश्मनी करता है अर्थात् सूर्य बारहवें घर में हो, तो जातक जुआरी बनता है और उसके ससुराल के लिए यह बुरा असरकारक होता है।

यदि जातक के शरीर पर हर रोएँ में तीन-तीन बाल निकलें हों, तो जातक ईश्वर भक्त और पूजापाठी होता है। ऐसा जातक माथे पर तेल लगाए, तो उसका अशुभ फल होता है। अतः माथे पर दूध का तिलक लगाएँ।

आर्थिक स्थिति का सातवें, आयु का आठवें और मकानों की हालत का पता दूसरे घर से चलता है।

जब तक जातक जीवित रहता है तब तक मुखिया बना रहता है। कमाई-खर्चा बराबर रहता है।

इस समयावधि में जातक के लड़की हो और उसका पालन-पोषण जातक अपने धन से करे, तो उसका बुरा प्रभाव होता है। उस कन्या को अगर ससुराल वालों को सौंप दिया जाए, तो यह कन्या उनके लिए फलदायक साबित होती है।

विवाह के बाद जैसे-जैसे जातक शनि की चीजें अपने घर में लाता है, वैसे-वैसे ससुराल में शनि की चीजें कम होती जाती हैं।

## निवारण

1. दही या दूध से तिलक करें।
2. भूरे रंग की भैंस दान में दें।
3. सर्प को दूध पिलाएँ।
4. 43 दिनों तक लगातार नंगे पाँव मंदिर में जाकर भगवान से अपने पापों के लिए क्षमा-याचना करें।

## तीसरा घर

जन्मकुंडली का तीसरा घर शनि के लिए शुभ माना गया है। तीसरे घर में शनि हो, तो जातक स्वस्थ, विद्वान, विवेकी, किन्तु खर्चीले स्वभाव का होता है। घर में कुआँ हो, तो वह भर जाता है। धन की कमी नहीं रहती। घर का मुख्य द्वार दक्षिण या पूर्व दिशा में हो, तो उसमें रहना मंदा फल देता है। यह घर मंगल का पक्का घर है। यदि केतु की दृष्टि पड़ रही हो या केतु का साथ मिल रहा हो, तो शनि का प्रभाव नष्ट होता है।

केतु तीसरे या दसवें में हो, तो धन आता रहता है। यदि मंगल अशुभ हो, तो प्रभाव बुरा होता है। जातक पराए लोगों की मदद करता रहता है। पाँचवें सूर्य से केतु का प्रभाव नीच होता है, शनि का भी अच्छा प्रभाव नहीं होता। संतान को पीड़ा रहती है।

दसवें घर में चंद्र की समयावधि में शनि का प्रभाव क्षीण रहता है। जब शत्रु ग्रह का साथ हो, तो चोरी व धन नाश होता है। मकान के साथ यदि पत्थर गढ़े हों, तो शनि का बुरा असर होता है, मौतें होती रहती हैं।

यदि जातक शराब, माँस का प्रयोग नहीं करें, तो आयु पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, किन्तु धन की कमी बनी रहती है। मकान बनाने या मकान की मरम्मत में जातक की रुचि सदा बनी रहती है। जातक जब केतु की चीजें अपने घर में रखता है, तब धन की वृद्धि होती है।

## निवारण

1. जातक काले-सफेद तीन कुत्तों की पालना घर में करें।
2. जब केतु 3, 10 में हो, तो भूरा-काला कुत्ता पालें।
3. घर की अंधेरी कोठरी धन-संपत्ति के लिए उत्तम है।
4. घर की दहलीज पर लोहे की कीलें ठोक दें।

## चौथा घर

चौथे घर का स्वामी चंद्र को माना गया है। यह चंद्र दूसरे, तीसरे में हो, तो जातक का जीवन सुखी होता है। चंद्र से सम्बन्धित चीजों का असर बुरा, माता-पिता को दुःख देने वाला होता है। जातक क्रोधी, धूर्त, पानी का सर्प जैसा, जायदाद का नाश करने वाला होता है। बीमारी के समय शनि की चीजों से आराम मिलता है।

चंद्रे दसवें घर में हो, तो माता दुःखी रहती है, रात को दूध पीए तो स्वयं बीमार रहता है। सर्प मारना, रात को मकान की नींव खुदवाना, नया मकान बनाना, शराब पीना आदि काम शनि को मंदा करते हैं। ज्यों ही नया मकान बनाना प्रारंभ किया जाता है, तो माता को कष्ट होता है। ननिहाल पर भी नीच असर होता है। यह प्रभाव छत्तीस वर्ष तक रहता है।

परायी या अपनी स्त्री से समागम भी शनि के नीच होने के कारण हैं। विधवा स्त्री पर किए गए खर्चे के कारण जातक दिवालिया हो जाता है।

## निवारण

1. सर्पों की रक्षा करें। उन्हें दूध पिलाएँ।
2. कुओं में दूध डाला करें।
3. भैंसों को चारा-पानी दें, पड़ोसियों की मदद करें।
4. एक लीटर शराब जल में प्रवाहित करें।
5. हरे रंग के प्रयोग से बचें।
6. काले वस्त्र न पहना करें।

## पाँचवाँ घर

इस घर में शनि हो, तो जातक के संतान कम होती है। अगर जातक उनचासवें वर्ष से पहले अपनी कमाई से मकान बनाए, तो संतान को कष्ट होता है। पुत्र जन्म के अवसर पर मिठाई की ऐवज में नमकीन बाँटे।

जब शुक्र सातवें या बारहवें में हो, सूर्य चंद्र 5, 9, 10 में हो या मंगल दसवें में हो, तो संतान की हानि नहीं होती, किन्तु संतान बर्बाद करने वाली होती है।

वर्षफल के अनुसार शनि नौवें घर में आ जाए, तो धन-संपत्ति नष्ट हो जाती है।

राहु अच्छा हो, तो मकान बनता है, पर मकान अड़तालीसवें वर्ष बाद बनाएँ। ग्यारहवाँ घर खाली हो, तो शनि धर्म देव के समान होता है।

सूर्य, चंद्र, मंगल जब वर्ष फल के अनुसार सातवें घर में आते हैं, तब जातक को पीड़ा देते हैं। उसकी सेहत पर बुरा असर करते हैं।

जातक को 9, 18, 36 वर्ष में शनि हानि पहुँचाता है या सर्पदंश होता है। दसवाँ



घर खाली हो, तो जातक चाहे जितने विवाह कर ले, ज्यों ही 48 वर्ष की आयु में मकान बनाए या बना-बनाया खरीद ले, त्यों ही संतान को कष्ट शुरू हो जाएँगे। विशेषतः तब जब 7, 12 में शुक्र और 5, 9 में सूर्य या चंद्र न हो। यदि वर्षफल पाँचवें में पुनः आ जाए तो भी संतान को कष्ट होता है।

जब मंगल अशुभ हो तब पाँचवें घर में शनि संतान की हानि करता है। संतान की स्थिति केतु से देखनी चाहिए। 48 वर्ष के पहले मकान खरीदना या बनाना संतान के लिए हानिकारक है। किन्तु जब राहु अच्छी स्थिति में हो, तो मकान जरूर बनता है।

## निवारण

रोशनी के लिए मकान की छत में सुराख बना लेना, बंदर पालना अच्छा प्रभाव नहीं देते। फिर भी यदि ये बातें की हों, तो चावल या चाँदी, सोना या मूँगा, शहद, खांड उस झरोखे वाले कमरे में रख दें। कुप्रभाव का शमन हो जाएगा।

## छठा घर

जिस जातक की जन्मकुंडली के छठे घर में शनि हो, तो छोटा भाई खुद जातक का दुश्मन बन जाता है, किन्तु अंत में वही काम आता है। अट्ठाइस वर्ष की आयु से पहले किया विवाह माता, पत्नी, संतान के लिए मन्दा असर करता है। परन्तु अट्ठाइस वर्ष की आयु के बाद किया गया विवाह सफल सिद्ध होता है।

छठे घर में बैठा शनि दूसरे घर को भी देखता है। अगर यहाँ शनि का शत्रु ग्रह बैठा हो और राहु आठवें घर में बैठा हो, तो हानि होती है।

वर्षफल के अनुसार जन्म के वर्ष में चमड़े के जूते और किसी भी प्रकार की मशीनरी घर में न लाएँ। यह हानिकारक सिद्ध होंगे।

छठे घर का शनि उल्टी दृष्टि से दूसरे घर को देखता है और मंदा प्रभाव दसवें घर पर होता है। शनि का प्रभाव केतु के अनुसार होता है, क्योंकि यह घर केतु का पक्का घर है। यहाँ शनि का मित्र ग्रह हो, तो भी बुरा असर होता है।

वर्षफल के अनुसार जब शनि 2, 6, 9, 12 में आ जाए, तो अच्छा प्रभाव देता है। जब केतु दसवाँ हो या 6, 9, 12 के उच्च का हो, तो जातक एक सुप्रसिद्ध खिलाड़ी होता है। सूर्य बारहवें में क्यों न हो स्त्री सुखी रहती है।

इस घर का शनि कारोबार या नौकरी में अचानक बाधाएँ खड़ी कर देता है। यदि मकान बनाना ही हो, तो 36 से 39 वर्ष में बनाएँ। वर्षफल में शनि का छठे घर में आना और बच्चों के लिए चमड़े के जूते, लोहे की मशीनरी, साइकिल आदि घर में ले आना, शराब, माँस, अंडे का प्रयोग करना, शनि को नीच करना है। जिससे जातक लड़ाई-झगड़े के कारण परेशान रहता है।

यदि शनि की वस्तुएँ खरीदना जरूरी हों, तो पहले केतु की चीजें और फिर शनि की चीजें कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि को घर में लाएँ।

जब मंगल दूसरे घर में हो, शनि उल्टी दृष्टि से उसे देखे तो ताऊ, बड़े भाई या बड़े मामा की आँखों को हानि होती है। जब सूर्य, चन्द्र और मंगल का साथ हो जाए तथा बुध, शुक्र या राहु चौथे घर में हों, तो जातक की मृत्यु सिर पर आघात करने से होती है।

34 से 41 वर्ष की आयु नीच होती है और इस आयु में कोई अपाहिज पुत्र जन्म ले, तो उसकी 9 से 18 वर्ष की आयु के समय में घर का कायाकल्प होता है। शुक्र या चन्द्र दूसरे तथा राहु आठवें घर में हो, तो पत्नी और माता को भारी पीड़ा रहती है।

### निवारण

1. सरसों के तेल से भरा मिट्टी का वरतन किसी जलाशय के पानी के नीचे जमीन में दवा दें।
2. जूते दान में दें।
3. अपने कारोवार की योजना रात्रि के समय या कृष्ण पक्ष में वनाएँ।
4. वादाम, नारियल तेल पानी में प्रवाहित करें।
5. काला कुत्ता घर में पालें।
6. सर्प को दूध पिलाएँ।

### सातवाँ घर

यदि सातवें घर में शनि हो, तो जातक दीर्घायु और चालाक होता है। वह पत्नी और पुत्रों-पुत्रियों से दुःखी रहता है। जातक भूत-प्रेत की सिद्धि प्राप्त करता है। शराबखोरी से शनि मंदा होता है। शनि के बड़प्पन की नींव शुक्र होती है। शुक्र श्रेष्ठ-उच्च हो, तो शनि 7 गुना अधिक लाभदायक होता है।

यदि बृहस्पति, शुक्र, मंगल अशुभ से मिल रहे हों, तो प्रभाव नीच होता है। जातक धन-सम्पत्ति प्राप्त करने और शासन करने की शक्ति अपने साथ लिए जन्म लेता है। जातक परोपकार करता रहे तो धनवान बना रहता है।

बुध और शत्रु ग्रह 3, 7, 10 में हों, तो 36 वर्ष की आयु में पिता का धन एवं कारोवार नष्ट हो जाता है।

वर्षफल जन्मकुण्डली में शनि पहले घर में आए, तो वहुत श्रेष्ठ फल देता है। जातक को वने-वनाए और अच्छे मकान मिलते हैं। उसे मकान वनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

उच्च शनि 36 वर्ष की आयु के बाद पिता और पत्नी के लिए अच्छा फल देता है। जन्म के समय जातक भले ही निर्धन हों, परन्तु 36 वर्ष की आयु में वह धनवान वन जाता है।

जव मंगल अच्छा हो, तो जातक की मासिक आय बहुत ज्यादा होती है।

यदि बुध ग्यारहवें में हो और मंगल, शुक्र इकट्ठे या साथी हो रहे हों, तो जातक गाँव का मुखिया और धनी-मानी रहता है। संतान पक्ष प्रवल और आयु लम्बी होती है।

वर्षफल के अनुसार जव शनि पाँचवें या सातवें घर में आ जाए और सूर्य मंगल का साथ हो, तो जातक की सेहत खराब रहती है।

जव चन्द्र-मंगल शुक्र मंदे हों, तो जातक दुःखी रहता है। बुध पहले घर में होने से सिर पर आघात से मौत होती है। सूर्य चौथे घर में हो, तो जातक नपुंसक होता है।

वर्षफल के अनुसार जब शनि पाँचवें या सातवें घर में हो और मंगल सातवें घर में हो और सूर्य या चंद्र सातवें घर में आ जाए, तो स्वास्थ्य की हानि होती है।

परायी स्त्री से इश्कबाजी अपनी संतान के लिए अशुभ रहती है। संतान न होने की हालत में सब कुछ नष्ट हो जाता है।



शराब, माँस, अंडे के प्रयोग से शनि नीच हो जाता है और जातक को जेल तक जाना पड़ सकता है। जब बृहस्पति नीच हो रहा हो, तो जातक ईर्ष्यालु, कपटी, दिखावे में श्रेष्ठ होता है।

जव शुक्र का साथ हो जाए, तो पत्नी वीमार हो जाती है।

पहला घर खाली हो, तो वहुत अच्छा प्रभाव होता है। इसके लिए शर्त है कि घर में शहद से भरा वरतन अवश्य रखें। अन्यथा पौत्र जन्म के बाद धन-सम्पत्ति का नाश हो जाएगा।

अशुभ मंगल के समय शनि पहले घर का पता देता है।

### निवारण

1. जव शनि सोया हुआ हो यानी पहला घर खाली हो या शत्रु का भय हो, तो बाँसुरी खांड से भरकर उसे दूर वीराने में जाकर दवा आएँ।
2. काली गाय की सेवा किया करें।
3. जन्मकुण्डली का पहला घर खाली हो, तो शहद से भरा वर्तन घर में स्थापित करें।

### आठवाँ घर

कुण्डली का आठवाँ घर मंगल से प्रभावित है। इस घर में कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता। शनि भी इस घर में केवल एक जल्लाद का काम करता है। यदि इस घर में शनि हो, तो राजभय वना रहता है। पिता की आयु कम रहती है। जातक स्वयं दीर्घायु रहता है लेकिन यदि राहु नीच का हो, तो अकस्मात् दुर्घटना करवा देता है, भाइयों को दुश्मन वना देता है। शत्रु ग्रहों का जव साथ मिल रहा हो, तव बहुत वुरा प्रभाव पड़ता है।

इस घर का शनि मुख्यतया जन्मकुण्डली में वैठे राहु, केतु या वुध के प्रभाव के अनुकूल प्रभावी होता है। यदि वे तीनों मंदे हों, तो शनि अवश्य ही नीच प्रभाव डालता है। विशेष रूप से टाँगों पर खराव प्रभाव पड़ता है। जव शनि के साथ आठवें घर में शत्रु ग्रह हों, तो यह प्रभाव संदेहपूर्ण होगा, किन्तु सवके भले में अपना भला करेगा।

आठवें घर में शनि अकेला वैठा हो, तो वह कभी वुरा प्रभाव नहीं करेगा। क्योंकि यह घर उसका अपना है।

शराब, माँस, अंडे का प्रयोग शनि को नीच बना देता है। यदि शरीर पर वाल अधिक हों, तो सारी आयु गुलामी में कट जाती है। राहु तो वुरा करता ही है, किन्तु जैसा केतु हो वैसा बचाव होता है।

इस घर में जितने भी ग्रह शनि के साथ हों उन सवको शनि क्षति पहुँचाता है।

शत्रु ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल का साथ होने से प्रभाव वेअसर होता है। बुढ़ापे में दृष्टि पर विशेष प्रभाव पड़ता है, नजर कमजोर हो जाती है।

वारहवाँ घर खाली हो, तो सारी जिन्दगी विशेषकर बुढ़ापा निर्धनता में वीतता है।

### निवारण

1. चाँदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास रखा करें।
2. सर्पों को दूध पिलाया करें।

3. मद्यपान तथा माँसाहार से परहेज रखें।
4. पानी में दूध डालें और पत्थर या लकड़ी के पटरे पर बैठकर स्नान करें।
5. यदि चंद्र ठीक हो, तो पाँच सौ ग्राम या पाँच किलो उड़द सरसों का तेल लगाकर दरिया में प्रवाहित करें।
6. यदि चंद्र मंदा हो, तो पाँच सौ ग्राम दूध सोमवार को पानी में वहाएँ। फिर शनिवार या बुधवार को उड़द प्रवाहित करें।
7. चाँदी की अँगूठी उँगली में धारण करें।

## नौवाँ घर

कुण्डली में नौवाँ घर वृहस्पति का घर है। इस घर में शनि को उत्तम माना गया हैं। तभी इसे भाग्य का घर माना जाता है। यदि जातक परोपकारी हो, तो इस घर का शनि उसे श्रेष्ठ फल देता है। जातक का परिवार बड़ा होता है बशर्ते कि बुध नीच का ना हो यानी बुध तीसरे घर में न हो। जब शनि पर चोट पड़ रही हो, तो शुक्र का प्रभाव नीच हो जाता है। शुक्र का प्रभाव बारहवें घर जैसा होता है यानी शुक्र उच्च का हो जाता है। वर्षफल के अनुसार जब शुक्र दूसरे घर में आता है, तो शनि 9 गुना लाभ देता है।

जातक भाइयों और मित्रों के सहयोग से धनवान बनता है। इस घर का शनि मकान देता है। जातक के अन्तिम समय तक उसके कुल तीन मकान होते हैं। वैसे संतान के लिए शनि पाँचवें घर जैसा ही फल देता है।

जातक मकान बनाने की ठेकेदारी में या चलते-फिरते काम करने में माहिर होता है।

केतु पाँचवें घर में हो, तो अत्यधिक पुत्र और पुत्रियाँ देता है।

पापी ग्रह राहु केतु के होने पर संतान को कष्ट पहुँचाते हैं।

जिस जातक की कुण्डली में शनि नौवें घर में हो, तो संतान बहुत देर से प्राप्त होती है।

मंगल चौथे घर में हो, तो भाग्य के लिए बुरा साबित होता है। बुध छठे या सातवें घर में हो, तो पत्नी धनी परिवार से होती है।

शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल तीसरे घर में हों और मकान की अंधेरी कोठरी में रोशनी के लिए छत में झरोखा बनाया जाए, तो तीन वर्ष के अन्दर-अन्दर सब कुछ नष्ट हो जाता है।

वृहस्पति बारहवें घर में हो, तो जातक के पास प्रचुर मात्रा में धन रहता है, पर जातक धन के विषय में लापरवाह होता है।

दूसरा घर खाली हो, तो धन-सम्पत्ति होने के बावजूद भी जातक का जीवन दुःखी रहता है।

छठे, सातवें घर में बुध और शुक्र हों, तो श्रेष्ठ फल प्रदान करते हैं।

शनि की समयावधि में छत्तीसवें वर्ष से मृत्युपर्यंत तक जातक के तीन मकान अवश्य होते हैं। जब तीसरा मकान बन जाए, तो समझ लें कि उसकी आयु कम हो गई है।

जातक उदार प्रवृत्ति का, जागीरदार, गाँव का मुखिया, सदा सुखी एवं दीर्घायु होता है। उसे माता-पिता का सुख प्राप्त होता है। परिवार में तीन पीढ़ियाँ इकट्ठी होती हैं। छत्तीस से साठ वर्ष तक का समय श्रेष्ठ रहता है, बशर्ते कि जातक परोपकारी और सेवाभावी



हो। पिता के बाद यदि कष्ट हो, तो वृहस्पति को कायम कर लेना चाहिए, अंधेरी कोठरी में रोशनी के लिए झरोखा बनाएँ, तो झरोखा बनाने के बाद एक वर्ष के भीतर सबकुछ नष्ट हो जाता है।

घर में माता या पत्नी के गर्भ में बच्चा हो और मकान बनाना प्रारम्भ करें तो शनि की समयावधि में यानी छत्तीस वर्ष की आयु तक गर्भस्थ शिशु का पिता शायद ही जीवित रहे। मकान की छत पर रखी चौखट, लकड़ी, ईंधन, बाँस मंदे भाग्य की पहचान है।

## निवारण

1. घर के आखिरी हिस्से में अंधेरी कोठरी कायम करें।
2. घर में छत पर घास लकड़ी, चारपाई के बाँस अथवा पाएँ आदि न रखें।
3. वृहस्पति का उपाय सहायता करेगा।

## कुण्डली का दसवाँ घर

कुण्डली का दसवाँ घर पिछले कर्मों का और इस जन्म का कार्य-क्षेत्र माना जाता है। इसमें बैठे शनि के कारण जातक महत्त्वाकांक्षी, सत्ता से लाभान्वित लेकिन पत्नी के लिए कष्टकारक होता है। जातक मदिरा से दूर रहे तो उसका भाग्य प्रबल रहता है। मकान बनाने के लिए धन होता है, पर मकान बनने के बाद आर्थिक तंगी रहती है। दूसरों का मान करने से जातक का अपना मान बढ़ता है।

पहले घर में अगर शनि के मित्र ग्रह हों, तो दो गुना अच्छा फल मिलता है। यदि शत्रु ग्रह हों, तो दो गुना कम फल मिलता है। हर सातवें वर्ष धन की वृद्धि होती है। शनि की दृष्टि वहाँ न पहुँचती हो, शनि वहाँ अकेला हो, तो हर तीसरा वर्ष जातक के लिए फायदेमंद रहता है।

चौथे घर में वृहस्पति और पहले घर में चंद्र हर प्रकार से अच्छा फल देता है। जातक को वाहन सुख प्राप्त होता है।

वर्षफल के मुताबिक जब बुध सातवें घर में आता है, तब ससुराल में धन की वृद्धि होती है।

जातक धर्मात्मा हो, तो जीवन के अन्तिम दिनों में वह निठल्ला रहता है और शनि का उस जातक के प्रति कोई अच्छा प्रभाव नहीं होता। जातक को एक स्थान पर बैठकर काम करने से लाभ होता है। यदि जातक घर से बाहर घूमकर काम करने वाला हो, तो वह कार्य उसे विशेष लाभ न देता।

मंदी हालत में दाढ़ी-मूंछों के बाल कम हो जाते हैं। जातक पर 39 से 48 वर्ष की आयु तक पिता का साया रहता है।

48 वर्ष की आयु तक मकान न बना हो, तो बाद में ज्यों-ज्यों मकान बनता है त्यों-त्यों जातक की माली हालत बिगड़ती जाती है।

जिस जातक के दाढ़ी-मूंछ के बाल बिल्कुल ही न हों, तो उसका शनि नीच का समझना चाहिए।

पहले तो इस घर में शनि मंदा नहीं होता और यदि हो जाए तो जातक का बहुत बुरा हाल होता है।

यदि शत्रु ग्रह का साथ साथी ग्रह कर रहे हों, तो सभी ग्रह अंधे हो जाते हैं। यह

जातक के लिए चार सौ बीसी से कमाया धन कफन का काम करता है। जातक के मकान का मुख्य द्वार दक्षिण में हो, तो मंदा असर करता है।

जातक अपनी जायदाद शायद ही बचा सके, किन्तु वह निःसंतान कभी नहीं रहता।

यदि जातक शराबी और माँसाहारी हो, तो शनि का प्रभाव मंदा रहता है। इससे प्रभावित जातक क्रोधी और हत्यारा बन जाता है।

अपना मकान बनाने की तमन्ना हो, तो 45 से 55 वर्ष की उम्र में बनवाएँ। उससे पहले मकान बनवाने पर बीमारी घेर सकती है और परिवार बीच मझधार में छूट सकता है।

जब सूर्य या मंगल दसवें घर में हो और चन्द्र छठे घर में आ जाए, तब उत्तम फल प्राप्त होता है।

यदि जातक के मकान का मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण दिशा में हो, तो यह मंदे शनि की पहली पहचान है। इसके लिए उपाय करें और माँस, मदिरा से परहेज करते हुए ब्रह्मचर्य से रहें।

जातक जब इश्कबाजी करता है और साथ ही शराब, माँस, अंडे का सेवन करता है उसका शनि मंदा हो जाता है। ऐसा शनि धन-सम्पत्ति पर बुरा प्रभाव करता है।

अपना बनाया मकान 45 से 55 वर्ष की आयु में बनता है। यदि 36-39 वर्ष की आयु में मकान बने, तो उस मकान में जातक लम्बे समय तक (तीन वर्षों तक) बीमार रहकर मृत्यु को प्राप्त होता है। बुध की चीजें और कारोबार सम्बन्धी भी हाल मंदा रहता है।

## निवारण

1. प्रातः सूर्योदय के समय 43 दिनों तक लगातार तेल, शराब धरती पर गिराएँ।
2. औरत शराब एवं माँस आदि के सेवन से बचकर रहें।
3. किसी भी काम के लिए घर के बाहर निकलें, तो जाने से पहले पानी से भरा मटका सामने रखें और उसका दर्शन करके बाहर जाएँ।
4. परस्त्रीगमन करने से बचें।
5. बृहस्पति का उपाय सहायक होगा।
6. मकान की अँधेरी कोठरी में दक्षिण या पश्चिमी हिस्से में बारह बादाम लोहे की डिब्बी में या काले कपड़े में बाँधकर कायम करें।

## बारहवाँ घर

कुण्डली का बारहवाँ घर बृहस्पति का है, जो राहु से प्रभावित है। इस घर में शनि का प्रभाव अच्छा होता है। जातक पैसे की परवाह न करते हुए बेबाक खर्च करता है। माता को कष्ट, पिता का धन नष्ट होता है। जातक की आँखें छोटी होती हैं। वह उजड़ी जगहों को बसाने वाला होता है। इस घर में शनि अच्छा फलदायक होता है। जातक का कोई शत्रु नहीं होता। यदि बुध भी साथ हो, तो जातक धनवान बनता है।

मकान की अँधेरी कोठरी में प्रकाश के लिए झरोखा बनाए जाए, तो शनि का अच्छा असर नदारद हो जाता है। 36 वर्ष की आयु के बाद प्रति 6 या 12 वर्षों में नया मकान

बनता है। वह जैसा भी बने बनने दें। उसमें ज्यादा मीन-मेख न निकालें।

2, 6, 8 घरों में शत्रु ग्रह न हो, तो अच्छा अन्यथा उन ग्रहों का बुरा असर जातक पर पड़ता है।

यदि जातक झूठ बोले और शराब का चस्का जुबान को लग जाए, तो वह बरबाद हो जाता है। राहु या केतु उच्च घरों में बैठे हों, तो प्रभाव अधिक श्रेष्ठ रहता है जैसे—राहु 3, 6 में और केतु 9-12 घर में हो, तो जातक धनवान और सुखी रहता है।

राहु बारहवें घर में हो, तो जातक इच्छाधारी सर्प के सदृश होता है।

यदि दूसरे घर में शनि के शत्रु ग्रह न हों, तो जातक का जीवन आराम से बीतता है।

यदि जातक झूठा, शराबी, माँसाहारी हो और इश्कबाजी में फँसा हुआ हो, तो शनि नीच प्रभाव दिखाता है और बारहवें घर में बैठने के बावजूद भी वह अपना उत्तम प्रभाव नहीं देता।

बुध कारोबार या सम्बन्धों को नष्ट करता है।

सूर्य की छठे घर की समयावधि में जातक की पत्नी मर जाती है। अन्य घरों में सूर्य शनि के आमने-सामने होने पर जातक के स्वभाव में तेजी आती है। कुण्डली के बारहवें घर में शुभ राशि का शनि हो, तो जातक का कुटुम्ब खानदानी होता है और उसकी कमाई में हमेशा बरकत होती है।

बारहवें घर में बैठा शनि इस बात का प्रतीक है कि जातक ने अपने गत जन्म की अधूरी बातों को पूरा करने के लिए ही जन्म लिया है। वह चाहता है कि उसके हाथों कोई बड़ा कार्य सम्पन्न हो।

## निवारण

1. मकान की आखिरी दीवार में दरवाजा या खिड़कियाँ न बनवाएँ।
2. झूठ न बोलें और शराब, माँसाहार से कन्नी काट जाएँ।
3. बारह बादाम काले कपड़े में बाँधकर लोहे की डिबिया में बंद करके घर में स्थापित करें और जीवन भर उस डिबिया को न खोलें।
4. शनिवार का व्रत रखा करें।
5. भैरों की उपासना करें और भैरों के मंदिर में शराब चढ़ाएँ।
6. सर्पों को दूध पिलाएँ।
7. शराब और तेल को लोगों में बाँटें।
8. रोटी के टुकड़े पर सरसों का तेल चुपड़कर कुत्तों और कौवों को खिलाएँ।

❑❑❑



# भूमिका

सम्पूर्ण जगत् में विचरणशील प्रत्येक मनुष्य आज किसी-न-किसी कारण से परेशान है। कोई सन्तान को लेकर, तो कोई कारोबार अथवा आर्थिक तंगी के कारण परेशान है। किसी को कुछ नया जानने की उत्कंठा है, तो कोई केवल अपने भविष्य की बातों को जानने के लिए लालायित है। इन सब समस्याओं का निराकरण निश्चय ही यह लाल किताब करती है।

कष्ट आने पर यदि यह ज्ञान हो जाए कि कौन-से ग्रह के कारण व्यक्ति को कष्ट भोगना पड़ रहा है, तो उस ग्रह का उपाय करके कष्ट से शीघ्र और सरलता से मुक्त हुआ जा सकता है। इस लाल किताब में व्यक्ति के कष्टों की जानकारी और फिर उसके कारण का ज्ञान होने पर उस कष्ट के निवारण के उपाय बताने का प्रयास किया गया है।

आज के युग में अनेक स्त्री-पुरुष अनेक प्रका[illegible] की उलझनों और परेशानियों से पीड़ित हैं जो कि उनके प्रतिदिन किए [illegible] कर्मों का फल है। [illegible]न्तु उन्हें प[illegible] ही नहीं होता कि आखि[illegible] उन[illegible] कौन-सी भूल हो [illegible] है, जिस कारण उनके ग्रह मंदा असर देने ल[illegible] जिस कारण वो [illegible]टों के गहरे [illegible] में डूबते जा रहे हैं। इस [illegible] द्वारा यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि किस [illegible]हों में मंदापन आया है। उन मंदेपनों को [illegible] करने के उप[illegible] हैं।

थोड़ी-सी पूजा, टोटकों के थोड़े-[illegible]स्मत बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई हृदय रा[illegible] उसकी कुंडली के तीसरे घर में चन्द्रमा पीड़ि[illegible]वस्था में हो[illegible]याओं को हरे रंग के वस्त्र उपहार में देने का उपाय करना [illegible]ी के आठवें घर में राहु पीड़ित है, तो वह मस्तिष्क की पीड़[illegible]सके निवारण के लिए, उपाय स्वरूप दरिया या नदी के प्रवा[illegible]सिक्के डाल दें, देता है [illegible] पीड़ा का शमन हो जाएगा। यदि पत्नी [illegible]थ्य खराब है, में शक्की, ग्यारहवाँ धूरा है, तो अपने भोजन में से ग्रास [illegible] को खिलाएँ। [illegible] पीड़ित होने का अर्थ यह है कि [illegible]

बनता है। वह जैसा भी बने बनने दें। उसमें ज्यादा मीन-मेख न निकालें।

2, 6, 8 घरों में [illegible] अन्यथा उन ग्रहों का बुरा असर जातक

*अनिष्ट फल दे रहा है। इसके लिए कन्याओं को पूजिए। ब्राह्मण को पेठा दान करिए तथा प्रातः उठने पर फिटकरी के पानी से दाँतों को साफ कीजिए। यदि पिता के प्रति पुत्र का व्यवहार खराब है, तो इसका कारण है कि केतु अशुभ फल कर रहा है। इससे निज़ात पाने के लिए मंदिर में कम्बल बाँटिए, कन्याओं की पूजा कीजिए। कुत्तों को भोजन दीजिए। मूत्रादि में पीड़ा का कारण भी केतु ही है। इसके लिए चाँदी का छल्ला धारण करने का उपाय करना चाहिए।*

*कुत्तों को रोटी खिलाना, गौओं को ग्रास डालना, कन्याओं को पूजित करना, ब्राह्मण को पेठा देना, चाँदी का छल्ला धारण करना, दरिया के प्रवाहित जल में सिक्के डालना, ये सब उपाय बहुत लाभदायक सिद्ध हुए हैं। हमारे समाज में यह विश्वास संस्कार का रूप ले चुका है। उपचार से उपाय को उत्तम मानने वाले बुद्धिमान लोग ही सदैव सुखी और स्वस्थ रहते हैं।*

*लाल किताब में इस बात पर खास ध्यान दिया गया है कि व्यक्ति की परेशानी दूर हो, उसे किसी तरह का कोई नुकसान न पहुँचे। यह किताब आक्रमण करने का ज़रीया नहीं, बल्कि आक्रमण से बचने का साधनरूप है।*

*हमारा यह विश्वास है कि हमारी यह लाल किताब ज्योतिष जिज्ञासुओं और इस विषय के अधिकारी विद्वानों के बीच समान रूप से अत्यन्त लोकप्रिय होगी।*

*—प्रकाशक*

# 14 राहु (छाया) ग्रह

राहु पलभर में सब कुछ नष्ट कर देने वाला और अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के विचारों को जन्म देने वाला। यदि अच्छा हो, तो मददगार साबित होता है। यदि सूर्य के साथ शनि या शुक्र हों, तो राहु मन्द हो जाता है। राहु एक छाया ग्रह है। यह शनि का दलाल या दूत है। जन्मकुण्डली के बारहवें घर में राहु बृहस्पति से भी अधिक बलवान रहता है।

बारहवें घर में राहु के साथ बृहस्पति भी रहे, तो यहाँ शुक्र गृहस्थ मनुष्य की भाँति काम करता है। ऐसे जातक को राहु राजनीति में उच्च स्थान नहीं बख्शता। सब कुछ होते हुए कुछ भी नहीं होता, यह राहु का स्वभाव है।

यदि राहु शनि के साथ हो, तो सहायक। यदि शनि से पहले घरों में राहु बैठा हो, तो जातक प्रशासक होता है। यदि शनि के बाद के घरों में राहु बैठा हो, तो जातक शनि की आज्ञानुसार चलने वाला होता है। शनि की दृष्टि राहु पर हो, तो जातक को सूर्य का आधा फल मिलता है। किन्तु राहु की दृष्टि शनि पर पड़े, तो राहु स्वयं नीच हो जाता है और शनि को कोई मदद नहीं पहुँचाता। राहु मकर राशि का स्वामी, वृश्चिक राशि में उच्च और वृष राशि में नीच हो जाता है। कुछ विद्वान् मिथुन राशि और कन्या राशि में राहु को उच्च मानते हैं।

मिथुन, कन्या, मीन और मकर राहु की मित्र की राशियाँ हैं और कर्क, सिंह शत्रु राशियाँ हैं। कुण्डली में राहु के प्रभाव से शूरता, साहस, मोटापा, पहलवानी, पाप कर्म, दुःख, चिंता, संकट आदि बातों का ज्ञान होता है। यह ग्रह निर्धनों का मददगार एवं रहनुमा होता है जिसकी यह सहायता करता है तथा अन्तिम समय तक उसका सहयोगी बना रहता है। सब उसके आगे हाथ जोड़कर नत-मस्तक हो जाते हैं। यदि वह शनि के साथ हो, तो सूर्य जैसा प्रकाश जातक को प्रदान करता है।

सूर्य और शनि दोनों इकट्ठे, एक ही घर में बैठे अच्छे नहीं होते। उल्टे दोनों के मिलने से मंगल अशुभ हो जाता है।

नीच राहु की समयावधि में दक्षिण दरवाजे वाला मकान आर्थिक परेशानी खड़ी करता है।

चौथे घर में चन्द्र हो या स्वयं चन्द्र श्रेष्ठ हो, तो राहु कभी भी बुरा प्रभाव नहीं देता। इसी प्रकार मंगल तीसरे या बारहवें घर में या राहु चौथे घर में हो, तो भी यह नीच प्रभाव नहीं देता। वर्षफल में मंगल पहले घर में आ जाने पर राहु चुप रहता है।

राहु जिस घर में बैठा हो, उस घर से सम्बन्धित चीजों की वृद्धि में विघ्न डालता है। भारी-से-भारी चोट को भी भुलाने वाला फल राहु प्रेषित करता है।

2, 5, 9, 12 घरों में या बृहस्पति के साथ राहु बैठा हो, तो बृहस्पति को मंदा कर देता है। जातक को कुहासे की हालत में ला छोड़ता है। पहले घर में सूर्य को ग्रहण, दसवें में शक्की, ग्यारहवें में पिता रोए, तीसरे में रक्षक, चौथे में ठीक, पाँचवें में गर्भपात, छठे

में ठीक, सातवें में लक्ष्मी का धुआँ निकाल दें, नौवें में मौत का परवाना पकड़ा दे ऐसा फल राहु देता है।

उत्तम प्रभाव की समयावधि में कितनी भी गम्भीर चोट लगे, तो भी मंद फूँक से ठीक कर देता है और गौरवर्ण का हो जाता है।

जब जन्मकुण्डली में मंगल शुभ और शनि दोनों इकट्ठे हों, तो राहु का प्रभाव और अच्छा रहता है। यदि मंगल अशुभ हो, तो जातक को भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है।

मंदे राहु की नीच समयावधि में राहु की बयालिस वर्ष की अवस्था बीत जाने पर स्वयं ठीक हो जाता है।

सूर्य और शुक्र इकट्ठे होने पर राहु का प्रभाव प्रायः नीच हो जाता है।

कुण्डली के पहले घरों में केतु और बाद के घरों में राहु हो, तो दोनों का प्रभाव नीच हो जाता है।

सूर्य का साथ होने पर न केवल सूर्य वाले घर का अपितु साथ वाले घर का प्रभाव भी नीच हो जाता है।

## नीच राहु

**नीचे राहु की पहचान निम्नांकित है–**

- ❑ बड़ों से लड़ाई और संतान को कष्ट होता है।
- ❑ मकान की केवल छत बदलने से भी राहु नीच प्रभाव करता है।
- ❑ दहलीज के नीचे से गंदे पानी का निकास होता है।
- ❑ काला कुत्ता खो जाना और बिल्ली का रोना भी नीचे राहु की पहचान है।
- ❑ नाखून का अपने आप झड़ जाना आदि।

## पहला घर

कुण्डली का पहला घर मंगल व सूर्य से प्रभावित है। यदि इस घर में राहु हो, तो जातक धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होता है। यदि सूर्य यहाँ बैठा हो, तो वह इस घर को ग्रहण लगा देता है। विवाह के बाद ससुराल से बिजली का सामान, काले-नीले कपड़े लेना सूर्य के घर को खराब करना है।

बुध, केतु के मिलने पर अधिक नीच प्रभाव देने लगता है। सब कुछ होते हुए भी न के बराबर वाली हालात बनी रहती है। जिस घर में जातक का जन्म हो, उसके सामने वाले घर उजड़ जाते हैं।

शत्रुओं को डराने वाला, पत्नी से कम पटाने वाला, ऐसा जातक अपने आप कोई काम पूरा नहीं कर पाता। इसके काम प्रायः बदलते रहते है। जब बुध, शुक्र उच्च स्थिति में हों, तो प्रभाव अच्छा ही रहता है।

मंगल बारहवें घर में होने पर राहु चुप हो जाता है। उसका प्रभाव न अच्छा, न बुरा यानी मध्यम रहता है, उदर-निर्वाह का साधन बना रहता है। यदि एक ओर से नौकरी छूटे, तो दूसरी ओर नौकरी मिल भी जाती है।

पहले या छठे घर में राहु का बुध जैसा प्रभाव होता है और सातवें व बारहवें घर में केतु जैसा। जैसे वे दोनों जन्मकुण्डली में होते हैं, वैसा ही प्रभाव देते हैं। अगर शुक्र



सातवें घर में है, तो जातक धनी होता है, परन्तु उसकी स्त्री सदा कष्ट में रहती है।

**राहु की समयावधि में सभी घरों में सूर्य का प्रभाव निम्नानुसार होता है–**

- ❑ पहले घर में हो, तो व्यर्थ का झगड़ा होता है।
- ❑ दूसरे घर में हो, तो धर्म विरुद्ध आचरण, ससुराल और मंदिर दोनों का अपमान होता है।
- ❑ तीसरे घर में हो, तो भाई-बंधुओं पर संकट आता है।
- ❑ चौथे घर में हो, तो ननिहाल में कष्ट, अपनी कमाई में रुकावटें उत्पन्न होती हैं।
- ❑ पाँचवें घर में हो, तो नालायक ही सही जातक के संतान अवश्य होती है।
- ❑ छठे घर में हो, तो पुत्र-पुत्रियों के सम्बन्धियों की ओर से व्यर्थ का दोषारोपण लगता है।
- ❑ सातवें घर में हो, तो गृहस्थी तथा न्याय सम्बन्धी दशा खराब रहती है।
- ❑ आठवें घर में हो, तो अकारण ही धन व्यय हो जाता है।
- ❑ नौवें घर में हो, तो न केवल अपने धर्म के विरुद्ध, बल्कि घर में पूर्वजों के विरुद्ध स्थापित पूजा स्थान को भी नष्ट कर देता है।
- ❑ दसवें घर में हो, तो अविश्वास का जीवन बिताना पड़ता है।
- ❑ ग्यारहवें घर में हो, तो अभिमानी, न्यायी व्यक्तियों को भी नष्ट कर देता है।
- ❑ बारहवें घर में हो तो रात को शयनकक्ष में कोई-न-कोई विवाद खड़ा हो जाता है।

जातक के जन्म-समय में अकारण की आँधी और अत्यधिक वर्षा होती हैं। जातक के जन्म-स्थान के सामने जो घर हो वह उजड़ जाता है। चालीस वर्ष की आयु तक राहु की चीजें (बिजली का सामान, ससुराल, कारोबार) मंदा ही फल देती हैं।

## निवारण

1. चार सौ ग्राम या चार किलो सिक्का (जस्ता) दरिया के पानी में प्रवाहित करें।
2. बिल्ली की जेर कपड़े में बाँधकर घर में स्थापित करें।
3. काले या नीले रंग के कपड़े पहनने से परहेज करें।
4. गले में चाँदी की जंजीर डालें।
5. नदी या दरिया में नारियल बहाएँ। नीले कपड़े में नारियल बाँधकर प्रवाहित करना सहायक होगा।
6. चन्द्र का उपाय भी सहायता देता है।

## दूसरा घर

कुण्डली का दूसरा घर बृहस्पति और शुक्र से प्रभावित है। इस घर में राहु शुभ होने पर जातक को मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। जातक राजसी जीवन जीता है। वह दीर्घायु होकर ऐश का जीवन-यापन करता है। युवावस्था में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता। जातक की स्त्री रूपवती एवं सुशील होती है।

यहाँ बैठा राहु अशुभ स्थिति में होने पर जातक रिश्वतखोर होता है। आर्थिक एवं पारिवारिक सुख से वह वंचित रहता है। उसकी मृत्यु हथियार से होती है। उसे आँतों का रोग होता है।

ऐसा जातक उस्तादों का मुखिया होता है। जब शनि मंदा हो, तो ससुराल पक्ष की स्थिति बिगड़ती है। इसके निवारण के लिए चाँदी या सोने की ठोस गोली जातक अपने पास रखे। इससे ससुराल की मंदी हालत सुधरती है। जातक का भरण-पोषण धर्म स्थान से प्राप्त सामग्री से होता है, इसलिए जातक को किसी प्रकार का दान नहीं करना चाहिए।

गृहस्थी अच्छी चलती है किन्तु माली हालत वृहस्पति के अनुसार चलती है। देखते-देखते अपनी कमाई खर्च हो जाती है।

वर्षफल में जब शनि पहले घर में आए और बृहस्पति नेक हो, तो धन अधिक प्राप्त होता है, किन्तु गृहस्थी सामान्य रूप से चलती है। विवाह के बाद जातक अपनी ससुराल से बिजली का सामान (पंखा, रेडियो, टी०वी०, वी०सी०आर० आदि) और काले या नीले रंग के वस्त्र न लाए। अपनी माता के साथ जातक के मधुर सम्बन्ध रहते हैं।

अगर जातक अपनी उम्र के 10, 21, 42वें वर्ष में मकान की छत पर उत्तर-पूर्व में मुँह करके पूजा करे या ऊपर की मंजिल इस दिशा में मंदिर बनाए तथा रसोईघर भी इसी दिशा में हो, तो उसका वंश या ससुराल नष्ट हो जाएगी। लोगों का उस पर से विश्वास उठ जाएगा।

ऐसा जातक मंदिर में बैठकर भी चोरी करने से बाज नहीं आता, जिंदगीभर मुफ्त का माल खाता रहता है। पच्चीसवें वर्ष की आयु तक तो दूसरे घर के राहु का प्रभाव ठीक रहता है। परन्तु छब्बीसवें वर्ष से मंदे फल की शुरुआत होती है।

## निवारण

1. अपने पैसे वाली जेब में चाँदी की ठोस छोटी गोली रखें।
2. माथे पर हल्दी और केसर का तिलक लगाएँ।
3. सोने के आभूषण धारण करें।
4. घर की उत्तर-पश्चिम दिशा में (वायव्य कोण) पानी या चाँदी रखें।
5. गाय की चरण धूल कुएँ में डाल दें।
6. हमेशा माता का सम्मान करते रहें।
7. बृहस्पति की वस्तुओं का प्रयोग करें।
8. हाथी के पाँव के नीचे की मिट्टी उठाकर कुओं या जलाशयों में डालें।

## तीसरा घर

कुण्डली के तीसरे घर में राहु बैठा हो, तो यह जातक के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। यहाँ राहु एक हथियारबंद पहरेदार के समान होता है। कोई शत्रु इसके सामने ठहर नहीं सकता।

यहाँ का राहु जातक के लिए अच्छा, किन्तु भाइयों के लिए मंदा होता है। जातक आगे की बात पहले ही जान लेता है। जातक के सपने सच होते हैं। शत्रु के लिए तलवार से भी अधिक इसकी लेखनी शक्तिशाली रहती है। यह जातक अपने पीछे सम्पदा छोड़ जाता है। जातक आयु, धन-सम्पत्ति से भरपूर और शत्रुहंता होता है। भावी जीवन का अंदाजा दो वर्ष पहले ही लगा लेता है। उसे संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। उम्र का बाइसवाँ वर्ष उन्नतिकारक होता है।

इस जातक की जन्मकुण्डली के बारहवें घर में केतु और बुध हो, तो चौंतीस वर्ष



की आयु तक इन ग्रहों का नीच प्रभाव जातक पर पड़ता है। बुध या सूर्य कोई भी ग्रह साथ बैठा हो, तो घर की भैंस मर जाती है या घर की कोई स्त्री विधवा हो जाती है।

तीसरे घर में बैठे राहु को मंगल का साथ मिल जाए, तो अति उत्तम फल प्राप्त होते हैं। जातक शाही जीवन बिताता है। तीसरे घर के राहु की समयावधि में सूर्य का प्रभाव दो गुना अच्छा रहता है। शत्रु ग्रह सूर्य, शुक्र, मंगल भी चाहे साथ हों या साथी बन रहे हों, तो भी प्रभाव अच्छा रहता है।

धोखाधड़ी से भाई जातक का धन हड़प जाते हैं। जब केतु या बुध अपना नीच प्रभाव डालता है, तो उसका असर चौंतीस वर्ष तक रहता है।

जब कोई ग्रह बारहवें घर में हो या साथ देने वाला ग्रह मंगल के तीसरे घर में हो, तो सूर्य, बुध की समयावधि में बाइस से चौंतीस वर्ष में बहन या पुत्री विधवा होती है।

## निवारण

1. चन्द्र के उपाय सहायक होंगे।
2. हाथी दाँत घर में न स्थापित करें।
3. घर में कोई जानवर या पशु की पालना न करें।
4. पीपल का पेड़ लगाएँ।
5. न झूठी गवाही दें और न झूठ बोलें।
6. परिवार के साथ रहें।
7. सूर्योदय के बाद पक्षियों को अनाज खिलाएँ।
8. सरसों, तम्बाखू को दान में दें।

## चौथा घर

कुण्डली का चौथा घर चन्द्र का है और राहु चन्द्र का शत्रु है। इसे सुख का स्थान माना जाता है। यदि इस घर में बैठा राहु शुभ हो, तो जातक सर्वगुणसम्पन्न, धनवान एवं दीर्घायु होता है। वह तीर्थयात्राएँ करता है और सुखी जीवन जीता है।

चौथे घर में बैठा राहु शुभ हो और बुध पहले घर में बैठा हो, तो जातक अपार धन-सम्पत्ति का मालिक बनता है। साथ ही जातक को अपने सम्बन्धियों से भी धन प्राप्त होता है। जातक दूसरों का मददगार होता है।

चौथे घर में बैठा राहु अशुभ हो, तो जातक आर्थिक दृष्टि से कमजोर और परेशान रहता है।

जातक की उम्र के चौंतीस साल तक का समय बड़ा ही कष्टकारी रहता है। माता को बीमारी का कष्ट रहता है।

चौथे घर के राहु वाला जातक धर्मात्मा होता है। धन की उसके पास कमी रहती है। यदि राहु शुभ राशि में हो, तो उसे वाहन सुख मिलता है, वरना उल्टे माता को कष्ट होता है। जातक दिन में सपने देखता है। राहु जातकों पर भारी रहता है पर बुरा असर नहीं करता।

राहु की इस समयावधि में यदि चन्द्र पहले घर में हो, तो वह जातक को धनी बनाता है। चंद्रवाले घर से धन लेकर बुधवाले घरों में भरता है। जातक का धन पुत्री या बहन

पर अधिक खर्च होता है। सूर्य, मंगल दूसरे घर में हों, तो ये दोनों ग्रह उसकी सहायता करते हैं।

जब शुक्र श्रेष्ठ हो, तो जातक के विवाह के बाद उसके ससुराल में धनागम होता है। वर्ष की उम्र के बाद बृहस्पति का अच्छा फल मिलता है।

दसवें घर में चन्द्र या साथी चन्द्र अथवा मंगल, बृहस्पति, सूर्य हो, तो चौबीस वर्ष की आयु के बाद शनि का प्रभाव अच्छा होता है। यानी चन्द्र महादशा शुरू होने के चौबीस वर्ष बाद।

जब चन्द्र पहले घर में हो, तो जातक को धन-प्राप्ति चन्द्र वाले लोगों से होती है। वह सरकार से धन कमाकर पिता और बुजुर्गों का घर भरता है।

शुक्र शुभ हो, तो ससुराल में धन वृद्धि होती है। ननिहाल के हालात भले ही अच्छे हों, किन्तु जातक की चौबीस वर्ष की आयु में ननिहाल के हालात बिगड़ जाते हैं। केतु अच्छा, मन्दा राहु 6, 12, 24 वर्ष की आयु में मामा के घर के लिए मंदा प्रभाव देता है।

केतु या शनि राहु से सहमत नहीं होते। अपना-अपना फल देते ही हैं। जब राहु चौथे घर में अकेला या चन्द्र के साथ हो, तो जातक को पुण्य कमाने गंगा स्नान के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता, अपने घर में ही उसे गंगा स्नान का पुण्य मिलता है।

बुध जिस घर में बैठा हो उस घर की चीजों के व्यापार में लाभ मिलता है। 24, 48 वर्ष की आयु में पुत्र जन्म के बाद का समय माता-पिता के लिए शुभदायी होता है।

जान-बूझकर या अपना शौक पूरा करने के इरादे से जातक अपने घर की केवल छत बदल डाले या भूमि खोदकर उसमें भट्ठी बना ले, शौचालय तोड़कर फिर से बनाए, कच्चे कोयले की बोरियाँ घर में जमा करें तो ये सब काम मंदे राहु की पहचान हैं। इसके कारण धन-संपदा की हानि होती है।

मकान की मरम्मत से केवल मकान की छतें ही नहीं बदले, बल्कि मकान को पूरा बनाए अन्यथा जातक के धन का नाश होता है। यदि किसी कारणवश छत बदलनी पड़े, तो पुरानी छत का सामान नई छत में अवश्य डालें। चन्द्र नीच हो, तो चौथे घर की राहु की हालत खस्ता रहती है।

### निवारण

1. चाँदी की अँगूठी धारण करें।
2. चार सौ ग्राम धनिया पानी में प्रवाहित करें।
3. कोई भी शुरू किया हुआ काम अधूरा न छोड़ें।
4. घर में अँधेरा या गंदा पानी न ठहरने दें। उसे चलता करें।
5. सीढ़ियों के नीचे रसोई बनाना हानिकारक होगा।
6. हरिद्वार जाकर गंगा स्नान करने से लाभ होगा।
7. मकान में पाखाने की जगह बदलना लाभ न करेगा।
8. मकान के छत पर कोयले आदि रखने की गलती न करें।

## पाँचवाँ घर

कुण्डली के पाँचवें घर को विद्या और संतान का घर माना जाता है। यहाँ बैठा राहु शरारत करने वाला होता है। वह गर्भपात तक करवा देता है, शिक्षा अधूरी रखता है। जब शनि उच्च हो, तो वह सूर्य को उच्च करता है।



जब शनि नीच बैठा हो, तो प्रथम स्त्री से संतान नहीं होती। यदि संतान हो भी गई तो संतान उत्पन्न होने से लेकर आगे बारह वर्षों तक स्त्री की सेहत खराब रहती है। इक्कीसवें वर्ष में पहला लड़का और बयालिसवें वर्ष में दूसरा लड़का होता है। पिता की मृत्यु 21वें या 42वें वर्ष में हो जाती है।

जातक अस्थिर बुद्धि का होता है। उसकी विद्या अध्ययन में रुकावटें आती हैं। राहु यदि शुभ होकर पाँचवें घर में बैठा हो, तो कुल चार पुत्र होते हैं, किन्तु वे सभी मूर्ख होते हैं। जातक ब्रह्मज्ञानी होता है।

कई बार ऐसा भी देखने में आता है कि पंचम घर में बैठा राहु पुत्रों को प्रभाव न देकर पौत्रों को देता है।

पुरुष या स्त्री अपनी पहली संतान को नहीं देख सकते। राहु उसे गर्भ में ही नष्ट कर देता है। जब तक माँ जिंदा रहती है, तब तक सब कुछ ठीक रहता है। धन-सम्पत्ति, संतान में वृद्धि होती है। प्रायः माता अधिक दिनों तक जातक का साथ नहीं दे पाती।

वर्षफल में जब राहु पाँचवें या दूसरे घर में आ जाए, सूर्य या चन्द्र पहले घर में हो और राहु का साथ मिल रहा हो, तो ससुर का स्वर्गवास हो जाता है। सूर्य, चंद्र, मंगल 4, 6, 12 में होने पर या शनि, मंगल नौवें घर में होने पर जातक के कई भाई होते हैं।

### निवारण

1. पत्नी के सिरहाने रात में पाँच मूलियाँ रखें और सुबह उन्हें मंदिर में दे आएँ।
2. परायी स्त्री से दूरी बनाए रखें।
3. चाँदी का ठोस कृत्रिम हाथी घर में स्थापित करें।
4. मकान की दहलीज के नीचे चाँदी दबा दें।
5. अपनी पत्नी के साथ सम्पूर्ण विवाह पद्धति के अनुसार पुनर्विवाह करें।
6. तीसरा विवाह करने की बात भी मन में न लाएँ।

## छठा घर

कुण्डली का छठा घर बुध और केतु से प्रभावित हैं। राहु यहाँ पर शुभ फल देता है। वैसे भी इस छठे घर में बैठा राहु उच्च का होता है। वह जातक को शत्रुहंता, धनवान और भाग्यवान बनाता है। जातकों में से किसी की मृत्यु शीघ्र हो जाती है। भाई का अहित करना अपनी संतान के लिए बुरा होगा।

जातक दिलेर होता है। फाँसी से किसी को बचाने में सहायता करता है। यहाँ बैठा राहु वही प्रभाव देता है, जो बारहवें घर में बैठा शनि देता है। प्रायः आवारा और बदमाश लोग ऐसे जातक के मित्र बन जाते हैं। यदि सातवें घर में अकेला राहु बैठा हो, तो वह अधिक शक्तिशाली रहता है।

किसी भी कार्य के लिए जाते समय सामने की छींक बुरा प्रभाव देती है। अचानक धन-सम्पत्ति लुटाई जा रही हो या उसका नाश हो रहा हो, किन्तु उसका कारण समझ के बाहर हो, तो जान लेना चाहिए कि जातक की जन्मकुण्डली में बुध और केतु नीच हो रहे हैं।

बारहवें मंगल की समयावधि में जातक बड़े भाई या बहन से लड़ाई-झगड़ा करे, तो

खुद बरबाद हो जाता है। बुध और सूर्य बारहवें घर में हों, तो मान-सम्मान, धर्म-ईमान के लिए राहु का नीच प्रभाव कारगर होता है।

कुण्डली के बारहवें घर में राहु के शत्रु ग्रह बैठे हों, तो जातक की विदेश गमन की सम्भावना प्रबल हो जाती है। राहु के साथ शनि भी हो, तो नीच स्तर की स्त्री का साथ राहु के प्रभाव को नीच बना देता है।

बारहवें शनि का प्रभाव ऐसा है कि भाई का बुरा करना, उसका अहित सोचना, अपना ही बुरा करना है। बुध, मंगल या घर के ग्रह मंदे हों, तो उनकी अग्नि में जातक स्वयं जल जाता है। बीमारी आती है, धन नाश होता है, घर-बार लुट जाता है।

छठे घर में अकेला राहु हो, तो जातक बिजली जैसी शक्ति का स्वामी होता है। नामी चोर या छोटों को सजा देने वाला होता है। शनि साथ हो, तो जातक घमंडी होता है। यदि किसी कारणवश यहाँ का राहु मंदा हो रहा हो, तो जातक की हालत अपनी ही फौज को मार देने वाले कप्तान जैसी होती है।

## निवारण

1. भूरे रंग के कुत्ते की घर में पालना करें।
2. जेब में हमेशा सिक्के की ठोस गोली रखें। शीशे की गोली को काला रंग चढ़ाकर पास में रखना लाभकारी होगा।
3. सरस्वती की मूर्ति के आगे निरंतर छह दिन तक नीले फूल चढ़ाएँ।
4. घर और ऑफिस की खिड़कियों पर काले शीशे (काँच) लगवा दें।
5. चार सौ ग्राम गुड़ और तिल की रेवड़ियाँ या गजक दरिया में प्रवाहित करें, जहाँ मछलियाँ हों, ऐसे पानी में प्रवाहित करने से अधिक लाभ मिलता है।

## सातवाँ घर

कुण्डली का सातवाँ घर राहु के शत्रु शुक्र का है। यह घर वैवाहिक एवं व्यापारिक साझेदारी का है। यहाँ बैठा राहु प्रायः बुरे फल ही देता है। ऐसा जातक धन को फूँककर धुआँ देखने वाला होता है। 21 वर्ष के पहले या 29वें वर्ष में विवाह हो जाए, तो बुरा असर करता है।

राजनीति से जातक का सम्बन्ध होता है, लेकिन प्रतिष्ठा कम प्राप्त होती है। धन-संपदा एवं पत्नी के सुख में कमी रहती है। मित्रगण ही घर खा जाते हैं। भाई भी धन उड़ाने में पीछे नहीं रहते। बुध और शुक्र दूसरे व ग्यारहवें घर में श्रेष्ठ फल देते हैं। यह शुक्र का पक्का घर है। शुक्र का असर मंदा होता है।

जातक जब राहु की चीजों का यानी बिजली के सामान का कारोबार करता है, तो हानि उठाता है। पहले घर में शुक्र हो, तो स्त्री कष्ट में रहती है, धन-सम्पत्ति का नाश होता है। यदि सातवें घर में अकेला राहु हो, तो जातक धन और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

जातक खुफिया पुलिस में काम करके अपनी आजीविका अच्छी तरह चला सकता है। अगर वह बिजली का कारोबार करे या सट्टा खेले, तो उसका दिवालिया होना निश्चित है। स्त्री रोगी रहती है। उसका गर्भपात भी सम्भव है। स्त्री को सिरदर्द (माइग्रेन) की बीमारी से काफी परेशान रहती है।



यदि स्त्री की जन्मकुण्डली में राहु सातवें घर में हो और उस स्त्री का विवाह इक्कीसवें वर्ष में या उससे पहले हो जाए, तो या तो वह स्वयं मर जाती है या उसका तलाक हो जाता है। उसका पति मरने से वह विधवा हो सकती है या दोनों में से एक घर से भाग सकता है।

यही प्रभाव पुरुष की जन्मकुण्डली में भी देखने को मिलता है। साधारण स्थिति में स्त्री-पुरुष में मन-मुटाव रहता है। इसकी वजह पुरुष का शक्की स्वभाव होता है।

## निवारण

1. घर में कुत्ता पालने का प्रयास न करें।
2. चाँदी की ईंट घर में रखना लाभकारी है।
3. बहते पानी में नारियल बहाएँ।
4. विवाह के समय ताँबा या चाँदी संकल्प के साथ पत्नी को सौंपे।
5. एक छोटी लुटिया में गंगाजल भरकर उसे घर में स्थापित करें। लुटिया का पानी सूख न जाए, इस बात का ख्याल रखें। पानी सूखने पर उसे पुनः गंगाजल से भरकर रख दें।
6. विवाह इक्कीस वर्ष की आयु से पहले हो जाए, तो कन्या का पिता चाँदी की कटोरी में गंगाजल भरकर उसमें चाँदी का एक चौरस टुकड़ा डालकर लड़की को सौंप दे और इसी तरह की एक अन्य कटोरी अपने पास भी रखे। यह कटोरी पूजा-स्थान में रखकर नित्य उसका पूजन करे।
7. विवाह के समय कन्यादान में वधू का पिता अपने दामाद का शुद्ध चाँदी दे। दामाद इसे अपनी पत्नी को दे। पत्नी इसे जीवनभर सम्भालकर रखे। यह चाँदी लक्ष्मी का रूप मानी जाती है। इससे घर धन-धान्यपूर्ण रहता है।
8. नारियल या छिलके वाले बादाम शनिवार को दरिया में बहाएँ। वर्षफल में राहु सातवें घर में आए तो यह उपाय अवश्य करना चाहिए।

## आठवाँ घर

कुण्डली का आठवाँ घर शनि और मंगल से प्रभावित है। मंगल राहु का शत्रु है। इस घर में राहु प्रभाव करता है, इसलिए शनि भी मंदा प्रभाव देता है। इसके जातक की मृत्यु अचानक दुर्घटना के कारण होती है। यह घर जातक को मिलने वाले अकस्मात् धनलाभ का भी है। 28वें वर्ष में वर्षफल में जब मंगल पहले या आठवें घर में और शनि छठे घर में आ जाए, तो जातक का भाग्य उज्ज्वल होता है।

अशुभ राहु आठवें घर में हो, तो जातक का धन व्यर्थ के झगड़ों में व्यय हो जाता है। जातक की कोई भी सहायता नहीं करता, वह स्वयं अपने श्रम से आगे बढ़ता है। जातक दिलेर होता है। परिवार से उसकी कम पटती है। उसके कामकाज, रोजी-रोटी के साधन और मार्ग बदलते रहते हैं। जातक को बवासीर से कष्ट होता है, पेट दर्द की भी शिकायत रहती है।

यदि शनि मंदा रहे, तो राहु बुरा असर करता है और जातक के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। बेइमानी से कमाया धन आठ गुना अधिक नुकसान पहुँचाता है। जातक अच्छे खानदान का होते हुए भी काफिर बनता है।

मकान की केवल छत बदलने पर चंद्र राहु के खिलाफ हो जाता है और राहु शनि के खिलाफ अपनी चाल चलता है। राहु तब कितना भी उच्च का क्यों न हो, उसका प्रभाव नीच का हो जाता है और जातक को बेहाल कर देता है।

जातक का कोई मददगार भी नहीं होता। वह स्वयं ही अपना मददगार बनकर हौसला रखते हुए आगे बढ़ता है। उसे अचानक धन हानि होती है। कोई बीमारी या दुर्घटना भी हो सकती है।

घर का मुखिया अगर काना, निःसंतान तथा हाथी के रंग का हो, तो नीच राहु का प्रभाव जातक पर नहीं पड़ता।

मकान के मुख्य द्वार के अन्दर के कमरों का फर्श नीचे दबता जाए, तो भी राहु मंदा हो जाता है। राहु जब वर्षफल के अनुसार जन्मकुण्डली के आठवें घर में आ जाए, तो वह बहुत अधिक हानि पहुँचाता है।

जन्म के महीने से आठवाँ महीना शुरू होते ही कष्ट का आरम्भ हो जाता है। यदि किसी का जन्म जनवरी महीने में हुआ हो, तो अगस्त में उसे बुरा असर सहन करना पड़ता है।

कुण्डली में मंगल अशुभ हो, मंगल और बुध दोनों ही मंदे हों, जातक का विवाह इक्कीसवें वर्ष में हुआ हो, वह बिजली के सामान से सम्बन्धित काम करता हो या वन-विभाग में नौकरी करता हो और बेइमानी करे, तो प्रभाव अधिक नीच होता है।

इस समयावधि में अगर शनि दूसरे या तीसरे घर में हो, तो जातक की आठ या ग्यारहवें वर्ष की आयु में उसके चाचा को अधिक हानि होती है। अगर चाचा शनि की चीजें—लोहे की मशीनरी, भैंस खरीद ले तब विशेष रूप से हानि होती है। जातक चंद्र की चीजें चाँदी आदि खरीदे, तो धन-सम्पत्ति का नाश होता है।

चौथे घर में सूर्य हो और ऐसे समय में सिक्के या सिक्कों के टुकड़े पानी में बहा दिए जाएँ, तो जातक को दिल की बीमारी होगी। प्रायः यहाँ बैठा राहु गहरी चोट पहुँचाने वाला होता है।

## निवारण

1. बयालिस वर्ष की आयु तक हर वर्ष आठ सीसे के सिक्के पानी में प्रवाहित करें।
2. चाँदी का टुकड़ा अपनी जेब में रखे रहें।
3. गलत या नाजायज तरीके से धन कमाने की कोशिश न करें।
4. काले या नीले रंग के नए कपड़े में नारियल लपेटकर पानी में बहाएँ।
5. सूखे मेवे चाँदी के बरतन में रखकर बरतन सहित मंदिर में दान करें।
6. भैरों की उपासना सहायक होगी।
7. घर के समीप भड़भूजे की भट्टी हो, तो उसमें ताँबे का पैसा डाल दें।
8. आठवें महीने से लेकर अगले जन्मदिन तक यानी चार महीने तक लगातार आठ बादाम मंदिर में चढ़ाकर चौबीस बादाम घर वापस ले आएँ और सुरक्षित पात्र में रखकर अगले जन्मदिन को बहते पानी में बहा दें। इन बादामों को कोई भी खाने का प्रयास न करें।
9. तैंतालीस दिनों तक लगातार खोटे सिक्के मंदिर में दें।



10. सीसे का टुकड़ा लगातार आठ बुधवार तक पानी में प्रवाहित करें।
11. आठ किलो सिक्कों के दस टुकड़े करें और तेज बहने वाले पानी में बहाएँ या आठ सौ ग्राम सिक्कों के आठ टुकड़े करके प्रवाहित करें।

## नौवाँ घर

कुण्डली के नौवें घर में राहु हो, तो जातक मानसिक चिकित्सक या वैद्य होता है। ऐसा जातक धर्म-कर्महीन होता है। वृहस्पति पाँचवें घर में भी हो, तो अच्छा प्रभाव नहीं करता। उसकी मान-प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचता है। यदि वह परिवार से अलग रहे, तो निकम्मा बनता है।

सगे भाई-बहनों से बनाए रखें तो बरकत होगी। धर्म-कर्महीन होने से या तो संतान होगी ही नहीं, यदि हो भी गई तो वह भी निकम्मी साबित होगी। ऐसा जातक अगर शनि की चीजों का कारोबार करे, तो कभी मन्दा असर नहीं होता।

जब वर्ष कुण्डली में चौथे घर का ग्रह पहले घर में आता है, तब वो राहु को मंदा करता है। अदालती झगड़े खड़े होते हैं। संतान को कष्ट होता है। जब पहला घर खाली हो, तो बुजुर्गों की सेहत खराब होती है। शनि पाँचवें घर में हो, तो आदेशानुसार राहु फल देता है।

बार-बार गर्भपात होते रहना मंदे राहु का संकेत है। पिता-दादा-ससुराल तबाह होते हैं। भाई-बंधु तंग करते हैं। यहाँ राहु नौ गुना अधिक मंदी हालत पैदा करता है। जातक का धर्म-कर्महीन होना राहु की मंदी हालत की निशानी है।

## निवारण

1. घर में कुत्ता पालें। पाला हुआ कुत्ता किसी कारण मर जाए, तो उसके मरने के 43 दिनों के अन्दर दूसरा कुत्ता लाकर पालें।
2. संयुक्त परिवार में रहना सहायक होगा।
3. सोने के गहने धारण करें।
4. मंदिर में जाकर सिर झुकाएँ।
5. सिर पर चोटी रखें।
6. माथे पर केसर का तिलक लगाया करें।
7. कन्यादान के अवसर को न चूकें।
8. सरसों तथा तम्बाकू का दान करना सहायता देगा।
9. सुबह पंछियों को अनाज के दाने चुगने को दें।
10. झूठी गवाही देना अस्वीकार कर दें।
11. कुण्डली में राहु उच्च और बलवान हो, तो राहु की चीजों का दान न करें।
12. ससुराल से मधुर सम्बन्ध बनाए रखें।

## दसवाँ घर

कुण्डली के दसवें घर में राहु हो, तो जातक शीलसंपन्न एवं अच्छे स्वभाव का होता है। दिलेर, साहसी एवं दीर्घायु होता है। उसका हर काम सराहनीय होता है। उसके विचार उच्च रहते हैं। सबसे उसे यथोचित सम्मान मिलता है। वह बड़े कारखाने का मालिक बनकर

बहुत बड़ी सम्पत्ति कमाता है। राहु इस घर में अशुभ हो, तो जातक माँ-बाप को कष्ट देता है। निकम्मा, आलसी, माँ-बाप का धन उड़ाने वाला, स्वार्थी और कंजूस होता है।

दसवें घर का राहु अशुभ हो और साथ में चंद भी अशुभ हो, तो जातक के शरीर में कोई विकार उत्पन्न होता है अथवा उसकी धन-सम्पत्ति का नाश हो जाता है।

नंगे सिर रहने से राहु नीच प्रभाव देता है। राहु शनि के साथ उत्तम फल देता है। इस घर में राहु की स्थिति इच्छाधारी सर्प के समान होती है, किन्तु जन्मकुण्डली में मंगल अशुभ हो, तो राहु नीच प्रभाव देता है। जातक व्यसनी होता है। चंद्र के साथ राहु राजयोग का कारक होता है।

अशुभ मंगल की समयावधि में राहु बुरा असर करता है। चौथा घर खाली हो, तो राहु सोया रहता है। यह घर शनि का होने से राहु शनि के हुक्म की तामील करता है।

शनि उच्च और शुभ हो, तो जातक बड़ा व्यापारी और धनवान बनता है। शनि मंदा हो, तो सोने में जंग लगा देता है और जातक को भी बेचकर खा जाता है। जातक की सम्पदा तंगदिली दूसरों के साथ शत्रुता पैदा करती है।

यहाँ का मंदा राहु पिता के लिए ठीक, किन्तु माता के लिए मंदा रहता है। शनि शुभ हो, तो व्यय अच्छे कार्यों पर होता है और अशुभ हो, तो जातक फिजूल की चीजों पर पैसा बर्बाद करता है।

जातक की कंजूसी दुश्मनी का कारण बनती है। मंगल, सूर्य और शुक्र शत्रु ग्रहों के साथ हों, तो जन्मकुण्डली आधी-अधूरी रहती है। मंगल श्रेष्ठ होने पर राहु का नीच असर नहीं होता।

चौथे घर में अकेला चंद्र हो, तो जातक की आँखें खराब हो जाती हैं। सिरदर्द का रोग परेशान करता है। काले रंग के किसी आदमी के कारण धन-सम्पत्ति का नाश हो जाता है।

## निवारण

1. सिर पर टोपी, पगड़ी या साफा (काले रंग को छोड़कर अन्य किसी भी रंग का) बाँधना प्रारम्भ करें।
2. मंगल के उपाय सहायक होंगे।
3. जौ या अनाज अँधेरी जमीन में दवा दें।
4. मसूर की दाल पानी में बहाएँ।
5. चार सौ ग्राम मिश्री मंदिर में दें या पानी में प्रवाहित करें।

## ग्यारहवाँ घर

कुण्डली का यह ग्यारहवाँ घर आमदनी का घर माना जाता है। राहु इस घर में शुभ होने पर जातक का बचपन खुशहाली में गुजरता है। उसे उच्च शैक्षणिक संस्था में विद्याध्ययन का अवसर मिलता है। जातक से पिता को पर्याप्त सुख प्राप्त होता है। वह माँ-बाप से सहयोग न लेते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ता है। स्वयं की कमाई पर गुजर-बसर करता है। वह न्यायप्रिय होता है।

इस घर में अशुभ स्थिति में राहु होने पर जातक के माता-पिता से उसकी पटती नहीं। वे जातक से घृणा करते हैं। युवावस्था में जातक को पिता द्वारा कष्ट प्राप्त होता



है। पिता अल्पायु होता है। जातक ऐयाश लोगों की संगत में रहता है। अनुचित और गैरकानूनी साधनों से धन कमाता है। जातक के पिता की मृत्यु किसी दुर्घटना में होती है। धन हानि भी होती है।

जातक धात-सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त रहता है। संतान दुर्बल और अपाहिज होती है। जातक की जवानी गरीबी में कटती है। पिता-दादा से उसकी नहीं पटती।

वृहस्पति की समयावधि में सभी प्रकार के कष्ट सहन होते हैं। इसके जन्म के बाद पिता की आमदनी आधी हो जाती है। जातक अपने कार्यों में दक्ष होता है। धूर्त लोगों से उसकी मित्रता रहती है। उसे नीच लोगों से धन प्राप्त होता है। पहले, दूसरे, तीसरे घरों में से किसी स्थान पर शनि होने पर जातक योगी बनता है। पहले व तीसरे घर में राहु के साथी ग्रह हों, तो राहु का मंदा असर बढ़ता रहता है।

वर्षफल के अनुसार ग्यारहवें घर का राहु पहले घर में आ जाए, तो पिता या दादा के लिए कष्टकारक होता है। ग्यारहवें राहु की समयावधि में यदि मंगल अशुभ हो, तो जातक के जन्म के समय घर भरा-पूरा पर रहता है, किन्तु पिता की मौत के बाद सब कुछ नष्ट हो जाता है।

जातक के जन्म के ग्यारहवें या इक्कीसवें दिन या वर्ष में पिता या दादा की मृत्यु गोली लगने से या दुर्घटना के कारण होती है। यदि दुर्घटना से बच जाएँ तो वे निर्धन हो जाते हैं। फिजूल के झगड़े-फसाद होते हैं, धन चोरी चला जाता है। दूसरों पर विश्वास रखने से विश्वासघात होता है।

दूसरे घर का ग्रह शत्रु होता है। तीसरे घर का ग्रह पाँचवें घर पर बिजली की तरह प्रभाव डालता है। यद्यपि ऐसे जातक का पिता जीवित नहीं रहता, फिर भी वृहस्पति की समयावधि में पिता की आयु सोलह वर्ष तक की आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठ रहती है। पिता की मौत के बाद पीला भोजन खाया करें।

यदि केतु-शनि वर्षफल के अनुसार पहले व तीसरे घर में आ जाएँ, तब जातक खुद की कमाई से धनवान बन जाएगा।

जन्म के बाद जातक के घर की हालत खस्ता हो जाती है। संपत्ति का नाश हो जाता है। फिजूल के खर्चे बढ़ते हैं, वाद-विवाद होते रहते हैं। घर में रोग बना रहता है। अपने अधिकारी या वरिष्ठ के साथ अकारण उसका मन-मुटाव होता है।

पहले घर का ग्रह जातक के ससुराल पर भी नीच राहु का प्रभाव डालता है। कुछ वर्षों तक हानि का प्रभाव अधिक रहता है। दूसरे घर का ग्रह राहु का बैरी हो जाता है।

जातक जन्म लेते ही या गर्भ में प्रवेश करते ही ग्रहों की चाल के कारण पिता और उनके धन को नष्ट कर देता है। जन्म से ग्यारहवें दिन या इक्कीसवें वर्ष में पिता-दादा का नाश होता है और बृहस्पति से सम्बन्धित कामों से हानि होती है।

जातक अपनी ससुराल और ननिहाल की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाता है। तीसरे घर के ग्रहानुसार परिणामों की तीव्रता कम-अधिक अवश्य होती रहती है। राहु का कहर पाँचवें घर पर टूटता है। यदि पाँचवें में शनि हो, तो स्थिति नहीं बिगड़ती।

राहु की समयावधि में केतु संतान और शनि आँख की रोशनी के बारे में चाचा, ताऊ के ऊपर बुरा असर करता है। मंगल दूसरे घर में होने पर भाई की मृत्यु गला कटने से होती है। ताऊ निस्संतान होता है। घर में झगड़ा-फसाद होता रहता है।

पाँचवें घर में केतु हो, तो संतान पक्ष दुर्बल रहता है। कान, नाक, टाँगें, घुटने-पाँवों में दर्द, मूत्र रोग रहता है।

## निवारण

1. मंदिर में जाकर इच्छित दान दें।
2. शरीर पर सोने का आभूषण पहनें।
3. भंगी को कुछ पैसे देते रहना सहायक होगा।
4. जन्मकुण्डली में तीसरे या ग्यारहवें घर में वृहस्पति बैठा हो, तो सोने की अपेक्षा लोहा धारण करना लाभकारी है।
5. चाँदी का उपयोग करें। चाँदी के गिलास में पानी पीने का नियम बना लें। वैसे सिगरेट नहीं पीनी चाहिए, यदि पीनी ही है तो सिगरेट चाँदी के सिगरेट केस में रखा करें।
6. बिजली का सामान घर में ठीक रखना चाहिए।
7. घर में या अपने पास कोई शस्त्र न रखें।
8. सीसे के टुकड़े करके पानी में प्रवाहित करें।
9. वर्षभर में चार नारियल पानी में बहाएँ।
10. आठवें और नौवें घर के उपाय उम्र के बयालिस वर्ष तक करते रहें।

## बारहवाँ घर

कुण्डली के बारहवें घर में बैठा राहु जातक के लिए समस्त सुख-सुविधाएँ जुटाता है। यह कुण्डली का आखिरी पड़ाव है। जीवन के हिसाब का लेखा-जोखा यहाँ रहता है। जातक योगी की तरह आचरण करता है। वह उच्च शिक्षा पाकर अपने बलबूते पर खड़ा होता है। व्यर्थ की सभी चिंताएँ उससे दूर रहती हैं।

ऐसा जातक धनवान, अपने भाई-बहनों से स्नेह रखने वाला, शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है। वह सुख के साथ जीवन-यापन करता है। यह जातक कभी भी आर्थिक रूप से परेशान नहीं रहता। उसके घर में कन्या का जन्म होने के बाद लक्ष्मी प्रसन्न होती है और कन्याएँ ही उसे सुख देती हैं। जन्मकुण्डली में बारहवें घर का राहु शनि अच्छा, उच्च होने पर सभी सुख देता है। अच्छे कामों में खर्च होता है। अगर मंगल के साथ हो, तो शाही, बुध-वृहस्पति ग्यारहवें घर में हो, तो धन की प्राप्ति तथा बुध-शुक्र हो, तो कन्याएँ अधिक होती हैं।

बुध शुभ-अशुभ जिस भी स्थिति में हो राहु का प्रभाव भी उसी अनुपात में होता है। बारहवें घर में बैठा राहु अशुभ होने पर जातक बुरे व्यसनों का आदी हो जाता है। सजायाफ्ता लोगों से मित्रता रहती है। पसलियों या आँतों का रोग होता है। बवासीर का कष्ट भी रहता है। मानसिक चिंताओं के कारण रात में नींद नहीं आती। झगड़े खड़े होते रहते हैं। जातक अपनी पुत्रियों व बहनों पर अधिक खर्च करता है, यह उनका ऋण है जो उतारना ही पड़ता है।

ऐसा जातक शेखचिल्ली की तरह सपने देखने में अपना समय बरबाद करता है। काम के लिए घर से निकलते ही सामने से छींक होना हानिकारक होता है। यह मंदे राहु की निशानी भी है।



जातक का कड़ी मेहनत करने पर भी गुजारा नहीं हो पाता। हालात से तंग आकर आत्महत्या करने तक का विचार जातक के मन में उठता है। शनि मंदा हो, तो जिद करके भी काम शुरू करने पर उसमें कामयाबी हासिल नहीं होती। व्यर्थ के लांछन लगते हैं तथा चिंतन से मानसिक पीड़ा भी होती है। शत्रु ग्रह सूर्य-शुक्र का साथ करें, तो जातक को बर्बाद कर देते हैं। ससुराल पक्ष धनवान होता है। शत्रुओं से बचाव होता रहता है।

कोई भी कार्य शुरू करने के समय छींग आना, चोरी होना, बीमारी आना, झगड़े के कारण अभियोग लगना आदि मंदे राहु की निशानियाँ हैं। इनका बुरा असर जातक के जीवन पर अवश्य होता है।

दिनभर परिश्रम के बावजूद रात में ठीक से नींद न आना भी मंदे राहु का फल है। कुण्डली में शनि नीच हो और जातक योग का अभ्यास करके संन्यासी बनना चाहे, तो वह अपाहिज हो जाता है। आँखों के माध्यम से कोई सिद्धि प्राप्त करना चाहे, तो अंधा हो जाता है। मस्तिष्क से सिद्धि प्राप्त करने की कोशिश करे तो पागल हो जाता है। इसी प्रकार एक टांग पर खड़ा होकर साधना करे, तो लंगड़ा हो जाता है।

ऐसे जातक को सुख-चैन नहीं मिलता। यहाँ के राहु का प्रभाव कल्पनाशील जातक के सारे सपने मिट्टी में मिला देता है। वर्षफल में भी यही फल मिलता है। मंगल का साथ हो रहा हो, तो उत्तम फल प्राप्त होता है।

## निवारण

1. भोजन जमीन पर बैठकर ही करें।
2. चाँदी का ठोस हाथी घर में स्थापित करें।
3. घर के अंतिम छोर पर अँधेरी कोठरी कायम करें।
4. नए लाल कपड़े की थैली में सौंफ डालकर उसे बंद करके सिरहाने रखें अथवा मूँग का एक दाना सिरहाने रखकर सोएँ।
5. अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा अपनी कन्या एवं बहन को दिया करें।
6. चाँदी का चौरस टुकड़ा गले में पहनें।
7. व्यर्थ की चिंता से बचें।
8. मंगल की वस्तुएँ दान में दें।
9. सिरहाने शक्कर रखकर सोया करें।
10. नित्य सरस्वती का पूजन-अर्चन करना सहायक होगा।
11. बिजली की चीजें, नीले कपड़े, स्टील के बरतन किसी से मुफ्त न लें। उन्हें खरीद कर उपयोग में लाएँ
12. कन्यादान करना सहायता देगा।
13. संयुक्त परिवार में रहना शुभफलकारी होगा।
14. तम्बाकू का सेवन करना त्याग दें।

❑❑❑

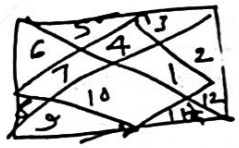


# 15 केतु (छाया) ग्रह

केतु की निर्बलता या दुर्बलता को बृहस्पति दूर करता है तथा केतु के प्रभाव को शुभ करता है। चंद्र और मंगल केतु के शत्रु हैं, जिनके मिलने पर केतु दोषपूर्ण और निर्बल हो जाता है। बलवान् केतु पुत्र उत्पन्न करने की शक्ति प्रदान करता है। राहु के समान केतु भी एक छाया ग्रह है। जिस जातक का केतु उच्च होता है उसके मकान पर झंडा लहराता है। मंदिरों पर लहराने वाले झंडे भी केतु के ही प्रतीक हैं।

जन्मकुण्डली में केतु को छोड़कर अन्य ग्रह कितने भी उच्च हों पर उच्च का केतु नहीं हो, तो वाहन या मकान पर झंडा फहरा नहीं सकता। वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मकर और मीन राशियों में बैठा केतु शुभ फल तथा पशुधन एवं भौतिक सम्पत्ति भी देता है।

बुध और केतु आपस में मिलने पर केतु का प्रभाव नीच हो जाता है। मंगल, बुध, बृहस्पति बारहवें घर में हों, तो भी केतु का प्रभाव नीच हो जाता है। पहले घर में केतु हो, तो जातक का सूर्य उच्च होता है और छठे में मंगल हो, तो केतु नष्ट हो जाता है।

अकेला केतु छठे घर में हो, तो वह श्रेष्ठ फल देता है। पाँचवें, नौवें घर में केतु संतान पक्ष को प्रबल करता है। चौथे घर में केतु होने पर चौंतीस वर्ष तक संतान पैदा नहीं होती। सातवें घर में केतु श्रेष्ठ फल देता है। पाँचवें घर में संतान को कष्ट देता है। ग्यारहवें घर का केतु चंद्र को नष्ट करता है। बारहवें घर का केतु धन-सम्पत्ति देता है।

केतु बृहस्पति के साथ श्रेष्ठ फलदायक, सूर्य के साथ तूफान के समान, स्वयं नष्ट होने वाला, ननिहाल में कष्ट चंद्र के साथ दोनों फल, किन्तु अधिक मात्रा में नीच फल, शुक्र के साथ कामदेव की कृपा, मंगल के साथ शेर के समान कुत्ते वाली हालत, बुध के साथ एक अच्छा दूसरा बुरा प्रभाव, शनि के साथ बिना कान के सर्प की तरह रहता है तथा शनि, राहु की इच्छा पर चलकर और फल भी राहु की इच्छा से ही देता है।

घरेलू कामों को पूरा करने के लिए चवालिस वर्ष की आयु तक का समय केतु का माना जाता है। केतु यात्रा का स्वामी और अन्त तक मददगार होता है। ऐसी स्थिति में जातक का आर्थिक एवं संतान पक्ष प्रबल रहेगा और परिवार के सदस्यों को भी फल ठीक ही देता है।

लाल रंग का कुत्ता केतु नहीं बुध होता है, जिसमें चाल तो बुध की होती है, किन्तु समय केतु का अढ़तालिस वर्ष तक रहता है।

केतु का प्रभाव नीच हो रहा हो और ऐसी हालत में जातक अपना दुःखड़ा दूसरों के सामने रोए, तो केतु को और भी ज्यादा कष्ट बढ़ाता है।

केतु को चारपाई का प्रतीक भी माना गया है। ससुराल से मिली चारपाई पर जातक सोए, तो संतानोत्पत्ति में सहायक होता है। ससुराल से आई चारपाई जब तक घर में रहती है केतु का फल कभी नीच नहीं होता है।

केतु पाप ग्रह तो है ही, दुष्टों से मिलकर अच्छे घर में भी दुष्टता का प्रभाव देता



है। धर्म स्थान यानी दूसरे, नौवें घर का केतु श्रेष्ठ पुत्र देता है। जब बृहस्पति और सूर्य शत्रु ग्रहों से पीड़ित हों तो केतु का प्रभाव भी मंदा होता है।

जब भी शुक्र और चन्द्र आपस में मिल रहे हों, तो केतु मंदा यानी नीच हो जाता है और पुत्र-पौत्र आदि को बीमारी देता है।

केतु का असर अढ़तालिस वर्ष तक रहता है। पैर की तकलीफ, सलाहकारी, शरीर के जोड़, रीढ़ की हड्डी, पुत्र, कान, पाँव, बिना सिर के चलना-फिरना, पेशाब की जगह, स्वतंत्र विचार, फोड़े-फुँसी आदि का अता-पता केतु द्वारा मिलता है। जातक का जन्म घर से बाहर होता है। वर्षफल के अनुसार जब केतु पहले घर में आता है, तब जातक के घर में पुत्र, भांजा, पोता, नाती जन्म लेते हैं।

**मंदा केतु हो तब निम्न बातें होती हैं–**

- मूत्र-सम्बन्धी व्याधि।
- जोड़ों का दर्द (गठिया)।
- संतानोत्पत्ति में बाधा।

### पहला घर

केतु शुभ राशि का होकर कुण्डली के पहले घर में बैठा हो, तो जातक सुखी, धनी, मेहनती होता है। अशुभ केतु पहले घर में होने पर इसके बिल्कुल उल्टा होता है। सिरदर्द बना रहता है।

वर्षफल में केतु जब यहाँ आता है तो जातक लम्बी यात्रा करता है। अस्थायी सफर होता है। जातक हर समय संतानोत्पत्ति की चिंता में डूबा रहता है। यहाँ केतु चाहे जितना नीच हो, वह अपने पिता और बृहस्पति को तारता है। छठे व सातवें घर में वह मंदा हो, तो सूर्य को उच्च बनाता है।

जब सातवें व आठवें घर में सूर्य हो और जातक प्रातः या सायं कोई दान करे, तो वह दान जहर का काम करता है। दूसरे व सातवें घर में कोई ग्रह न हो, घर खाली हो, तो बुध, शुक्र-बहन, बुआ, पत्नी का हाल मंदा करता है। सातवें में सूर्य हो, तो तबाही मचती है, पोते के जन्म पर जातक की सेहत खराब होती है।

छठा, सातवाँ घर खाली हो, तो जन्म होते ही घर में तबाही मचती है। बुध, शुक्र, राहु भी अच्छा फल नहीं देते, सूर्य या बृहस्पति उच्च हो जाता है। जातक पिता की सेवा करता है। बारहवें मंगल की समयावधि में मंगल का बुरा प्रभाव नहीं पड़ता।

जातक के लिए चिंताएँ खड़ी हो जाती हैं। तबादले का आदेश आने पर भी यात्रा नहीं होती। जातक की आजीविका निरन्तर चलती रहती है।

पहले घर का केतु छठे, सातवें घर के ग्रहों पर नीच प्रभाव डालता है, किन्तु सूर्य नीच प्रभाव नहीं डालता। विवाह के बाद केतु नीच हो जाए, तो शनि अवश्य ही अच्छा प्रभाव देता है। अतः शनि का उपाय फलदायक होता है।

जातक का जन्म अपने घर से बाहर ननिहाल में या अस्पताल में होता है, जहाँ जातक जन्म लेता है, वहाँ तूफान खड़ा हो जाता है। उस तूफान की आँच पड़ोसी के घर पर भी आती है।

दूसरा व सातवाँ घर खाली हों, तो बुध और शुक्र का प्रभाव मंदा होता है।

सातवें सूर्य की समयावधि में जातक का स्वास्थ्य बिगड़ता है।

छठे घर में कोई पापग्रह हो या नीच का ग्रह हो, तो जातक को नाभि से नीचे की व्याधियाँ होती हैं। पथरी जैसी बीमारी का ऑपरेशन भी कराना पड़ सकता है।

## निवारण

1. मामा के मंदे असर को दूर करने के लिए बंदरों को गुड़ खिलाया करें।
2. बुध और चन्द्र के उपाय सहायता देंगे।
3. संतान कष्ट में काला-सफेद कम्बल मंदिर में दान करें।
4. दोनों पैरों के अँगूठों में चाँदी के छल्ले पहनें या सफेद धागा बाँध लें।
5. सेहतमंदी के लिए प्रतिदिन केसर का तिलक लगाएँ।
6. चितकबरे कुत्ते की घर में पालना करें।
7. सोसाइटी के आखिर फ्लैट में रहने से बचें।
8. लाल रूमाल हमेशा जेब में रखें।
9. घर में बकरी की पालना न करें।
10. कान छेदन करवा दें।
11. चाँदी की ठोस गोली अपनी जेब में रखे।
12. बंदर को गुड़ और भुने हुए चने खिलाया करें।

## दूसरा घर

यदि कुण्डली के दूसरे घर में केतु शुभ हो, तो जातक को अपने व्यवसाय के सिलसिले में बार-बार यात्रा करनी पड़ती है। जातक बड़ी धन-सम्पदा का स्वामी बनता है। उसका धन हमेशा अच्छे कार्यों में खर्च होता है।

युवावस्था के बाद का उसका जीवन सुख से बीतता है। बृहस्पति हमेशा शुभ फल देता है। अपनी राशि या मित्र राशि का केतु हो, तो पिता की सम्पत्ति जातक को मिलती है अन्यथा थोड़ा ही धन उसे मिलता है। खुश्क प्रदेशों में आमतौर पर जातक सफर करता है।

केतु की समयावधि में अगर जन्मकुण्डली का आठवाँ घर खाली हो, तो अच्छा होता है, लेकिन प्रवास अधिक होता है। शुक्र नीच स्थान पर बैठा हो, तो उसका भी ठीक परिणाम मिलता है। चंद्र का प्रभाव खराब रहता है। आमदनी चाहे लाखों में हो, किन्तु जितना दलाल को मिल सकता है, उतना ही जातक को मिलता है।

बारहवें सूर्य की समयावधि में चौबीस वर्ष की आयु के बाद जातक अपनी कमाई से जीवन निर्वाह करता है। वह खुशहाल रहता है।

शुक्र का प्रभाव जातक पर अच्छा रहता है, किन्तु चरित्र शिथिल होने पर केतु का प्रभाव नष्ट होता है।

बृहस्पति उच्च का हो तो लाखों की धन-संपत्ति सुरक्षित रहती है, आमदनी ठीक होती है।

आठवें घर में किसी भी ग्रह की समयावधि ही जातक के जीवन की समयावधि होती है। उसके बाद जातक की मृत्यु हो जाती है। आठवें घर में चंद्र, मंगल हो, तो आयु कम तथा सोलहवें या बाइसवें वर्ष में कष्ट होता है।



## निवारण

1. माथे पर केसर या पीले चंदन का तिलक लगाएँ।
2. चाल-चलन ठीक रखें।
3. कन्याओं की सेवा करें। विशेष रूप से नौ वर्ष से कम उम्र की कन्याओं की सेवा करें।
4. पत्नी का अपमान कभी न करें।

## तीसरा घर

जन्मकुण्डली के तीसरे घर में केतु शुभ हो, तो संतान पक्ष का भला ही करता है। जातक की संतान उत्तम एवं आज्ञाकारी होती है। जातक आस्तिक होता है। दूसरों की मदद के लिए वह हमेशा तत्पर रहता है। मंगल बारहवें घर में हो, तो जातक की आयु का चौबीसवाँ वर्ष उत्तम फलदायक होता है या उसके घर में पहला लड़का जन्म लेता है।

अशुभ केतु बैठा हो, तो जातक अपने परिवार में दुःखी रहता है। उसके सगे-सम्बन्धी ही उसके दुःख का कारण होते हैं। जातक को रोजगार की तलाश में दूर-दूर तक घूमना पड़ता है।

जातक के जीवन में तीन के अंक का बड़ा महत्त्व रहता है। उसके तीन भाई, तीन लड़के, तीन चाचा, तीन बहनें, मकान तिकोना या तीन दरवाजे वाला होता है। मरते दम तक चिंता उसका साथ नहीं छोड़ती। टाँगों में दर्द रहने लगता है, रीढ़ की हड्डी में नुक्स पैदा होता है। वह भाइयों से दुःखी रहता है। अपने ही उनके शत्रु होते हैं। शुक्र और बुध पत्नी-बहन के विषय में फल मंदे होते हैं। अपनी संतान नेक होती है। जातक का धन दीवानी-मुकदमों में खर्च होता है। पत्नी, सालियों में विवाद और मनमुटाव के कारण उनसे जुदाई होती है।

ऐसे जातक के पड़ोस का घर गिरा हुआ रहता है। दक्षिण द्वार वाले मकान में निवास करने से बच्चों का भाग्य सोया रहता है। स्वयं को एवं संतान को कष्ट रहता है। आठवें घर में जो भी ग्रह बैठा हो, वह अपनी समयावधि में संतान के लिए कष्टदायक ही सिद्ध होगा।

## निवारण

1. माथे पर केसर का तिलक करें।
2. गले में सोना धारण करें।
3. चना या चने की दाल, चावल, गुड़ बहते पानी में प्रवाहित करें।
4. मकान के द्वार के ऊपर ताँबे का पतरा जड़वाएँ।
5. बृहस्पति की चीजें दाल, चना चलते पानी में बहा दें।

## चौथा घर

कुण्डली का चौथा घर केतु के शत्रु चन्द्र का है। यह सुख का घर माना जाता है। वस्तुतः यह माता का घर भी है। चौथे घर में केतु शुभ स्थिति में हो, तो जातक पूर्ण आस्तिक होता है। वह हर काम धीरज के साथ करता है। उसका व्यवहार सबसे स्नेहपूर्ण

होता है। जातक आशंकित, गुरु एवं पिता की सेवा में संलग्न एवं उत्तम चरित्र का स्वामी होता है और जो भी मिले उसमें संतोष कर लेता है।

जातक की कन्या भाग्यवान और साक्षात् लक्ष्मी का रूप होती है। उसके जन्म के बाद जातक का घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है। यह कन्या सर्वगुण-सम्पन्न एवं उच्च शिक्षा प्राप्त होती है। जातक पिता एवं गुरु की शक्ति को बढ़ाता है।

अशुभ केतु हो, तो जातक की सम्पदा में कानूनी समस्या खड़ी होती है। माता को कष्ट रहता है। जातक के सुखों में कमी रहती है। संतान देर से लेकिन कुल पुरोहित के आशीर्वाद से होती है। जन्मकुण्डली में बृहस्पति बलवान न होने पर कन्याएँ अधिक होती हैं।

वर्षफल के अनुसार बृहस्पति उच्च होने पर जातक का पुत्र और स्वयं जातक भी दीर्घायु होता है।

तीसरे व चौथे घर में चंद्र होने पर कन्याएँ अधिक होती हैं। जातक हर बात का अंजाम परमात्मा पर छोड़ देता है।

केतु मंदी हालत में हो, तो जातक को मधुमेह का रोग होता है। संतान और माता दोनों का हाल मंदा रहता है। संतान देर में यानी 36-48 वर्ष में होती है। इस अवधि में उत्पन्न संतान कुल पुरोहित के आशीर्वाद का प्रसाद होती है।

पुत्र उत्पत्ति छत्तीस से अढ़तालीस वर्ष के पहले हो जाए, तो वह पुत्र संतान स्वयं के पास नहीं रहती है।

## निवारण

1. सोना, सूर्य की पीले रंग की चीजें, गेहूँ, चने की दाल, गुड़ आदि पीले कपड़े में बाँधकर कुल पुरोहित को देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।
2. चने की दाल बहते पानी में बहा दें।
3. चाँदी को शरीर पर पहनें।
4. बृहस्पति का उपाय सहायक होगा।
5. सूर्य की चीजें कुल पुरोहित को दान करें।

## पाँचवाँ घर

कुण्डली का पाँचवाँ घर सूर्य का है। पुत्र-सुख के लिए पाँचवें घर को देखा जाता है, क्योंकि बृहस्पति से भी यह घर प्रभावित है, जो कि उत्पत्ति का मालिक है। यह घर विभिन्न उपायों द्वारा धन-प्राप्ति कराता है।

इस घर में बैठा केतु जातक को विलक्षण अतींद्रिय शक्ति देता है।

शुभ केतु बैठा हो, तो जातक को उत्तम संतान सुख प्राप्त होता है। पहले पुत्र और बाद में पौत्र सुख देते हैं। जातक की दो पत्नियाँ होती हैं और दोनों से पुत्र होते हैं।

कुण्डली में बैठे बृहस्पति की तरह ही केतु फल देगा। चौबीस वर्ष की उम्र के बाद केतु का प्रभाव अपने आप अच्छा हो जाता है। बृहस्पति ग्यारहवें घर में हो, तो बच्चा मरा हुआ पैदा होता है। अढ़तालिस वर्ष की आयु में माता की मृत्यु होती है। बृहस्पति मंदा हो, तो केतु का फल भी मंदा मिलता है। रोजगार चौबीस की आयु के बाद मिलता है। तीसरे व चौथे घर में चन्द्र, मंगल बैठे होने पर केतु का मंदा प्रभाव नहीं रहता।



छत्तीस वर्ष की आयु से पहले जातक के तीन पुत्र मर जाते हैं। चन्द्र और मंगल तीसरे व चौथे घर में, शनि पाँचवें व नौवें घर में हो, तो संतान क्षय होता है। परन्तु छत्तीस वर्ष की आयु के बाद पुनः संतान हो, तो उनमें से तीन जीवित रहती हैं।

नौवें घर में शनि, पाँचवें घर में शुक्र हो, तो संतान पक्ष प्रबल रहता है। नौ पुत्र और तीन पुत्रियाँ होती हैं। दो पत्नियाँ होते हुए भी वे आपस में झगड़ती नहीं।

वृहस्पति नीच हो, तो आयु के पैंतालिस वर्ष तक का जीवन व्यर्थ जाता है। संतान को कष्ट रहता है। शुभ केतु होने पर पुत्रों की अपेक्षा पौत्रों की संख्या अधिक रहती है।

मंदी हालत में केतु के होने पर श्वास-दमे की बीमारी होती है। वृहस्पति नीच होने पर अढ़तालिस वर्ष तक का समय फिजूल जाता है।

दूसरे में बुध, पाँचवें में शुक्र, राहु या शनि नौ व बारहवें घर में हो, तो केतु द्वारा प्रदत्त सुख में कमी आती है। पितृऋण भी रहता है। जातक के ईमान-धर्म के अनुसार संतान होती है।

## निवारण

1. जब चंद्र, मंगल तीसरे या चौथे घर में हो, तब दूध, चावल, मसूर की दाल, देशी शक्कर को दान करें।
2. बृहस्पति की वस्तुओं का दान करें।
3. शनि की वस्तुएँ पेटी (पिटारा) आदि खाली न छोड़ें।
4. दूध न बेचें। दूध का व्यवसाय न करें।
5. काले-सफेद कुत्ते को पैंतालिस दिनों तक मीठी रोटी दें।
6. चंद्र, मंगल से सम्बन्धित चीजें जमीन में दबा दें।
7. बृहस्पति से सम्बन्धित वस्तुओं को दान दें या बहते पानी में बहा दें।

## छठा घर

कुंडली का छठा घर बुध का है जो केतु से भी प्रभावित है। इस घर में केतु एक खूँखार किस्म का कुत्ता होता है। मामा, माता को कष्ट रहता है। यह घर केतु का पक्का घर है। जातक को अभिमान नहीं होता। वह अच्छा सलाहकार होता है।

माता और ननिहाल में इसका बुरा असर होता है। जन्मकुंडली में बृहस्पति अच्छा हो, तो संतान के लिए उत्तम फलदायक होता है।

कुंडली में कोई दो पुरुष ग्रह—सूर्य, मंगल या बृहस्पति अच्छी हालत में होने पर यहाँ केतु का प्रभाव ठीक ही रहता है। ऐसा जातक कुत्तों से डरने वाला होता है।

जैसा पहला राहु सूर्य को सहायता पहुँचाता है, उसी तरह छठा केतु बृहस्पति को कभी नीच नहीं होने देता। ऐसे जातक की संतान पिता के कामों में हाथ बँटाती है।

अकेला केतु बैठा हो, तो वह जातक को उत्तम फल देता है। किन्तु दूसरों के लिए ठीक नहीं होता।

जब वहस्पति श्रेष्ठ हो और दूसरा घर खाली हो, तो जातक की आयु सत्तर वर्ष होती है। केतु शुक्र का मित्र और बुध का दुश्मन होता है। किन्तु इस घर में केतु की चाल उल्टी रहती है।

छठे घर में केतु बुध का मित्र और शुक्र का दुश्मन होता है। वह ननिहाल का प्रभाव

नीच कर देता है। शुक्र, वृहस्पति की समयावधि में व्यर्थ प्रवास होता है। अकारण लोग वैरी बन जाते हैं।

दूसरे चंद्र की समयावधि में माता व मामा का हाल मंदा रहता है। जातक का वुढ़ापा कष्टमय रहता है। वुध के अतिरिक्त केतु के साथ अन्य कोई ग्रह हो, तो दोनों का प्रभाव खराव रहता है।

चंद्र और केतु दोनों छठे घर में हों, तो संतान पर वुरा प्रभाव पड़ता है। दादी-पोतों का मेल नहीं रहता। यदि माँ 43 दिनों के पहले वच्चे का मुख देख ले, तो दोनों में से एक रोगी होता है।

जातक धनवान, शत्रुओं को परास्त करने वाला होता है। अपनी ननिहाल के लिए शुभ होता है। छठा केतु वृहस्पति की मदद करता है। जातक की संतान जातक की सहयोगी होती है।

छठे घर का केतु जातक के लिए उत्तम फल देता है, पर ऐसा जातक दूसरों के लिए वदनसीव होता है।

## निवारण

1. केतु नीच हो, तो केतु की चीजों का दान करें।
2. काले और सफेद तिल वहते पानी में प्रवाहित करें।
3. ससुराल से चारपाई-पलंग एवं सोने की अँगूठी स्वीकार करें।
4. चितकवरी गाय की सेवा करें या उसे दान करें।
5. विवाह के अवसर पर मिली सोने की अँगूठी दाएँ हाथ की उँगली में पहना करें।
6. वहन एवं कन्या के साथ कभी न झगड़ें।
7. अपनी सामर्थ्य के अनुसार केले मंदिर में दें।
8. संतान का कष्ट हो, तो कुत्ता पालें। एक कुत्ता मर जाए, तो उसके मरने के तैंतालिस दिनों के अन्दर दूसरा कुत्ता लाकर पालें।

## सातवाँ घर

यदि कुंडली के सातवें घर में शुभ केतु बैठा हो, तो जातक चौबीस वर्ष की आयु से ही धनार्जन करने में जुट जाता है। जैसे-जैसे उसकी और उसकी संतान की आयु बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे धन में वृद्धि होती जाती है। रोजगार द्वारा कमाई अच्छी रहती है। संतान ताकतवर होती है। शत्रु ग्रहों में से चन्द्र-मंगल की अशुभता के कारण सम्बन्धित चीजें नष्ट हो जाती हैं।

जातक वात का पक्का होता है। सबकुछ अच्छा होने पर भी जातक को अपने दुःखड़ों के लिए रोने की आदत होती है। इसका संतान पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

अशुभ केतु बैठा हो, तो जातक का मन स्त्री और पुत्री को लेकर अशांत रहता है। यहाँ का केतु बच्चों का साथी होता है। जातक गंदी जुबान का प्रयोग करने वाला होता है। लग्न में एक से अधिक ग्रह हों, तो संतान नष्ट होती है। जितने पत्नी के भाई-वहन होंगे, उतने ही बाल-बच्चे जातक के होते हैं। आजीविका का साधन तो बना रहता है लेकिन शुक्र, शनि का प्रभाव कभी नीच नहीं होगा।



यदि शत्रु ग्रह-चन्द्र, मंगल में से कोई मंदा हो, तो वह स्वयं नष्ट हो जाता है, लेकिन केतु पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बुध और शुक्र दूसरे घर में होने पर वृहस्पति का सहयोग मिलता है।

किसी को दिया हुआ झूठा आश्वासन जातक की बड़ी हानि करता है। जातक के घर के सामने वाले घरों का हाल (केतु) संतान पक्ष की ओर से नीच ही होता है। जातक अपने अभिमान के कारण कष्ट उठाता है।

सातवें घर में बैठा केतु किसी कारणवश नीच हो रहा हो, किन्तु वर्षफल में वह पहले घर में आए, तव पुत्र सयाना हो जाने पर जातक के जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

सातवें वुध के समय चौंतीस वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय होता है। शत्रु पीछे लगे रहते हैं। इनके वाद सव कुछ ठीक-ठाक होता है।

सातवाँ केतु बुध और शुक्र से प्रभावित होता है। वुध केतु का शत्रु है। अतः यदि जातक झूठे वादे करके उन्हें न निभाए और कटु वाणी से अपनी जुबान को गंदा करे, तो केतु मंदा हो जाता है। अन्यथा शुक्र भाग होने के कारण वुध बकरियों की सुरक्षा करने वाले कुत्ते की तरह वर्ताव करता है।

## निवारण

1. सात केले चार दिन लगाकर पानी में प्रवाहित करें।
2. चार नींवू चार दिन पानी में प्रवाहित करें।
3. अभिमान का त्याग करें। झूठे वायदे तथा गाली-गलौच से वचें।
4. वृहस्पति के उपाय सहायक होंगे।
5. केसर का तिलक करें।

## आठवाँ घर

यदि आठवें घर में केतु वैठा हो, तो जातक को संतान के वारे में चिंता रहती है। वह स्त्री का द्वेषी होता है और दगावाज होता है। उसे ववासीर का रोग होता है। वुध और शुक्र दुर्वल घरों में जा वैठते हैं। जातक के चरित्र का प्रभाव उसकी पत्नी पर पड़ता है। केतु अशुभ हो, तो जातक को सवके सामने अपना रोना रोने की आदत होती है।

जव आठवें घर में केतु अशुभ होता है, तव वृहस्पति और मंगल भी अशुभ रहते हैं तथा वुध-शुक्र भी निराश करने वाले हों, तो संतान होने में अवरोध उत्पन्न होते हैं।

सातवें घर में शनि-मंगल हो, तो उसका अत्यन्त नीच प्रभाव पड़ता है। जिस घर में ऐसा जातक रहता हो, उस मकान की छत गिर जाती है और रोटी के लाले पड़ते हैं।

यहाँ वैठे अशुभ केतु के साथ ही वुध, चंद्र भी मंदे हों, तो संतान के वारे में स्थिति दुर्वल वनती है। इसी तरह मंगल चौथे, नौवें व वारहवें घर में हो, तो संतान एवं धन के विषय में मंदा असर पड़ता है।

अशुभ केतु हो, पहले घर में शनि हो, तो जातक के जन्म से एक वर्ष पूर्व उसके वड़े भाई का देहांत हो जाता है।

अशुभ केतु हो और सातवें घर में शनि या मंगल हो, तो केतु की सभी चीजों का

अशुभ फल मिलता है। पलंग गंदा हो जाता है। मकान की छत गिर जाती है। दांपत्य जीवन में बिखराव आ जाता है।

उन्तालिस वर्ष की आयु के पहले या चौंतीस वर्ष की उम्र के बाद की संतानें जिन्दा रहती हैं। जातक की आयु सत्तर वर्ष की रहती है।

छठा घर केतु का अपना घर है। यहाँ केतु नीच भी होता है। जब छठे घर में बुध हो, तो चौंतीस वर्ष पहले और उसके वर्ष बाद की संतान जीवित रहती है।

मंगल बारहवें घर में हो, तो अपना प्रभाव नहीं दिखाता। वैसे भले-बुरे प्रभाव का अंदाजा बारहवें घर से लेता है।

जब मंगल श्रेष्ठ हो और बृहस्पति पहले और दूसरे घर में हो या चंद्र दूसरे घर में हो अथवा बृहस्पति, मंगल छठे व बाहरवें घर में न हों, तो संतानें अधिक होंगी। इसके किसी भी उपाय की जरूरत नहीं रहती, फिर भी चंद्र नीच हो, तो चंद्र पूजन से सहायता ली जा सकती है।

इस समयावधि में बुध-शुक्र प्रायः मंदे घरों में रहते हैं और जातक के चरित्र का प्रभाव उसकी पत्नी के स्वास्थ्य पर होता है। जातक अपना चरित्र सुधार ले तो पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा होता है।

छत पर बैठकर कुत्ते का रोना मंदे केतु की निशानी है। मंदी हालत का केतु जातक को मूत्र व्याधि देता है। छब्बीसवें वर्ष से पहले पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होने देता।

जब बृहस्पति नीच हो, तब केवल केतु ही मंदा नहीं होता वरन् मंगल भी बुरा हो जाता है। बुध-शुक्र भी हताश करने वाले परिणाम लाते हैं। संतान देर से होती है।

शनि-मंगल सातवें घर में हों, तो अत्यन्त नीच प्रभाव होता है, जातक जिस घर में हो, वहाँ के मकान की छत गिर जाती है, खाना खराब हो जाता है।

छब्बीसवें वर्ष में राहु, केतु, बुध, शनि मंदे रहते हैं।

शनि-मंगल में से कोई भी जब सातवें घर में हो, तब खाना खराब होता है। जातक के जन्म से ठीक एक वर्ष पहले उसके भाई का देहांत हो जाता है। जातक को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाता है।

## निवारण

1. केतु का पूजन करें। गणेशजी की उपासना करना भी अनिवार्य है।
2. घर में कुत्ता पालें।
3. काला-सफेद-भूरा कंबल मंदिर में दान करें।
4. सोना, केसर, पीले फूल और पीले वस्त्र मंदिर में दान स्वरूप दें।
5. कान में सोना पहनें। आठवें घर में केतु के साथ कोई ग्रह हो, तो उस साथी ग्रह की चीजें काले-सफेद कंबल में बाँधकर वीराने में दबा आएँ।
6. केतु मंगल के साथ हो, तो देसी खांड काले-सफेद कंबल में बाँधकर श्मशान की भूमि में दबा आएँ।
7. चाल-चलन, आचरण पवित्र रखना आवश्यक है।
8. छत पर कुत्ता न बाँधने की गलती न करें।
9. प्रतिदिन कुत्तों को रोटी खिलाना न भूलें।



## नौवाँ घर

यदि जन्मकुंडली के नौवें घर में शुभ केतु हो, तो जातक की अच्छी प्रगति होती है। वह पिता का आज्ञाकारी, सामने वाले के मन की थाह लेने में कुशल होता है। जातक धनवान और भाग्यवान होता है। सातवें घर में बैठे ग्रह की समयावधि के बाद केतु का उच्च प्रभाव प्राप्त होता है। ऐसा जातक प्रायः जन्म स्थान से दूर रहता है।

संतान दूरदर्शी रहती हैं। जातक के पिता जातक की अढ़तालिस की आयु तक अच्छी स्थिति में रहते हैं। बृहस्पति का पक्का घर होने से केतु के फल का आधार बृहस्पति की स्थिति ही रहेगी।

जातक वीर, बलवान, विश्वासप्रद और अपनी कमाई से बड़ा बनता है। वह समाज-सेवक होता है। उसके आशीर्वाद से नपुंसक की नपुंसकता दूर हो जाती है, निःसंतान को संतान होती है। ऐसे जातक द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद भगवान का वरदान ही होता है।

सातवें ग्रहों की वर्षावधि बीतने पर ही केतु का प्रभाव उच्च बनता है। जातक का जीवन सामान्यतया परदेश में बीतता है। घर में भगवान की सोने की मूर्ति रखने से केतु का प्रभाव बढ़ता है और धन-सम्पत्ति का आगमन होता है।

संतान के पास भविष्य को जान लेने की शक्ति रहती है। अशुभ केतु हो, तो जातक हास्य का पात्र बनता है। ननिहाल में बुरा असर होता है। जातक निस्संतान रहता है। यदि संतान हो भी जाए, तो वह चोरी-चकारी जैसे गैरकानूनी काम करती है, फिर भी रुपयों-पैसों की तंगी रहती है। शनि दुर्बल हो, तो धन की चिंता रहती है।

## निवारण

1. कान में सोने की वाली पहना करें।
2. जिनकी सामर्थ्य हो वे सोने की ईंट घर में कायम करें।
3. घर में या घर के आँगन में, कुतिया पिल्ले देने के बाद साथ रहे, तो संतान सम्बन्धी अशुभ फल दूर हो जाता है।
4. गणेशजी की पूजा नित्य करने का नियम बना लें।
5. घर में कुत्ते का पालना करें।
6. पिता और पुरोहित का सम्मान करना सहायक होगा।

## दसवाँ घर

कुण्डली के दसवें घर में शुभ केतु बैठा हो, तो जातक धनवान, नौकर-चाकरों से युक्त, उत्तम सुख से परिपूर्ण तथा अपने ध्येय पथ पर धैर्यपूर्वक चलने वाला रहता है। यह घर शनि का पक्का घर होने से जन्मकुण्डली में जो शनि की दशा होती है, उसी पर फल निर्भर रहते हैं।

शनि शुभ घर में हो, तो केतु भी अच्छा फलकारक होता है, मिट्टी से सोना बनता है। नीच घर में अशुभ शनि हो, तो सोना भी मिट्टी हो जाता है। केतु शुभ हो, तो जातक धनवान बनता है।

किन्तु जातक चाल-चलन में ढीला पड़ जाए, तो उसे अपार कष्ट भोगना पड़ता है। चौबीसवें वर्ष की आयु के बाद संतान होती है जिनमें पुत्रों का बाहुल्य रहता है।

छठे घर में शनि हो, तो जातक दुनिया का मशहूर खिलाड़ी बनता है।

जातक को उसके भाई गड्ढे में ढकेलते हैं पर उन्हें क्षमा करने से जातक की धन सम्पत्ति बढ़ती है, वह निर्धन नहीं रहता।

केतु अशुभ हो, तो जातक नपुंसक रहता है।

जातक की कन्याएँ जातक को सुखी एवं लड़के दुःखी बनाते हैं। वह परस्त्री से सम्बन्ध बनाए रखता है। दांपत्य जीवन दुःखमय रहता है। परायी स्त्री के कारण मृत्यु होती है। जातक संदेहशील स्वभाव का होता है।

केतु मंदा होने पर केतु सम्बन्धी चीजें रीढ़ की हड्डी, जोड़ों का दर्द, मूत्र व्याधि, घुटनों और पाँवों में दर्द एवं पीड़ा तथा सन्तान पक्ष दुर्बल होता है।

## निवारंण

1. चाँदी के बरतन में शहद रखकर घर में कायम करें।
2. परस्त्री के साथ न रहें।
3. अढ़तालिस वर्ष की आयु के पहले अपना मकान न बनवाएँ।
4. चाल-चलन, ब्रह्मचर्य पर ध्यान देना आवश्यक है।

## ग्यारहवाँ घर

कुण्डली के ग्यारहवें घर में केतु श्रेष्ठ माना गया है। वह जातक को धन-दौलत से मालामाल कर देता है। किन्तु यदि तीसरे घर में या साथ में बुध हो, तो केतु का प्रभाव नीच हो जाता है। जब शनि अच्छा हो या वर्षफल में ग्यारहवें घर में आ जाए, तो उत्तम फलों से जातक को निहाल कर देता है।

अशुभ केतु हो, तो माता या बच्चे में से किसी एक की ही आयु लम्बी होती है।

अशुभ केतु और तीसरे घर में बुध हो, तो अत्यन्त अशुभ फल मिलते हैं। ऐसे जातक को भविष्य के लिए बहुत जागरूक रहना चाहिए। पेट की बीमारी कायमी तौर पर बनी रहती है।

पाँचवें या ग्यारहवें घर में बृहस्पति हो, तो संतान का भारी कष्ट रहता है। राहु पंचम में हो, तो यह फल नहीं मिलता।

अशुभ केतु हो, तो जातक के यहाँ पुत्र उत्पत्ति के पश्चात् जातक की माता जीवित नहीं रहती। केतु की उम्र अढ़तालिस तक चंद्र (माता) को कष्ट प्राप्त होते हैं। उसको आँखों की बीमारी का कष्ट होता है। जातक की माता का अपनी संतान के साथ मधुर सम्बन्ध नहीं रहता। प्रवाही वस्तुओं के विषय में बुरा फल मिलता है।

ग्यारहवें केतु वाला जातक काम के लिए बाहर निकले और पीछे से उसे कोई आवाज दे, तो समझ लीजिए कि खराब वक्त आ गया है।

जीवन के 5, 11, 23, 26, 48वें वर्ष में चंद्र का असर अच्छा नहीं होता। माता के लिए यह समय कष्टकारी रहता है। पाँचवें घर का राहु अच्छा हो, तो तीसरे घर में बैठा शनि ग्यारह गुना अधिक फल देता है। तीसरे घर में बुध हो, तो शासन से सम्बन्धित कार्यों से अच्छा लाभ मिलता है।

## निवारण

1. राहु के उपाय करना सहायक होगा।



2. चरित्र के बलवान बने रहें।
3. 43 वर्ष की उम्र से पहले किसी भी जमीन की खरीद न करें।
4. कुत्ता पालें, उसके दूध में शहद भी मिला दें।
5. गणेशजी की पूजा-अर्चना करते रहें।
6. काले तिल के लड्डू को बाँटें।
7. रसोई में चितकबरा चकला इस्तेमाल करना भी लाभ देगा।
8. ग्यारह मूलियां रात को स्त्री के सिरहाने रखें और प्रातः मंदिर में दे आएँ।

## बारहवाँ घर

जन्मकुंडली के बारहवें घर में बैठा केतु उच्च का होता है। यहाँ शुभ केतु बैठा हो, तो जातक ऐश्वर्य सम्पन्न, वैवाहिक जीवन में सुखी, जमीन-जायदाद के सुख से सराबोर रहता है। नौकरी की समयावधि में स्थानांतरण की अपेक्षा उन्नति के अवसर अधिक आते हैं।

शुभ कार्यों के लिए जातक खर्च करता है। छठे राहु और साथ में बुध होने पर और अच्छे फल प्राप्त होते हैं। शनि, शुक्र का भी उत्तम फल प्राप्त होता है।

बारहवें घर शुभ केतु वाले जातक को उम्र के चौबीसवें वर्ष में पुत्र होता है। पुत्र जन्म के साथ ही घर में धनागम शुरू हो जाता है। संतान भी धनवान बनती है। इस घर का केतु बारहवें घर का फल न दे, तो दूसरे घर का फल अवश्य देता है। द्वितीय स्थान की वस्तुओं से यह फलित समझ में आता है।

शुभ केतु के साथ ही शत्रु या मित्र ग्रह बैठे हों, तो वे जातक की संतान का बेड़ा पार लगाते हैं। मकान और प्रवास से लाभ पहुँचता है। जातक को आध्यात्मिक बनाता है।

छठे घर में राहु अकेला हो, तो अच्छा फलकारक सिद्ध होता है। छठे राहु के साथ मंगल हो, तो अट्ठाइस वर्षों तक चंद्र हो, बत्तीस वर्षों तक सूर्य हो, बयालिस वर्षों तक शुक्र हो, तो पच्चीस वर्षों तक जातक के संतान नहीं होती। केतु जब मंदा हो, तब जातक मकान बनाने के लिए किसी निःसंतान की जमीन न खरीदे। दूसरे घर में शुक्र, चंद्र या मंगल हो, तो केतु मंदा हो जाता है।

छठे घर के राहु के साथ मंगल हो, तो अट्ठाइस वर्ष तक चंद्र हो, तो बत्तीस वर्ष तक सूर्य हो और बयालिस वर्ष तक शुक्र हो, तो वर्ष तक संतान कष्ट बना रहता है।

बुध हो, तो प्रभाव ठीक-ठाक रहता है। जातक में कामवासना बहुत अधिक हो, तो संतान अधिक होती है।

केतु की समयावधि में दूसरे घर में शुक्र, चंद्र या मंगल हो और जातक किसी निःसंतान से मकान बनाने हेतु जमीन खरीद ले, तो स्वयं जातक निःसंतान हो जाता है। जातक कुत्तों का मारे या मरवाए तो संतान का हाल बुरा होता है, विदेश यात्रा की पूरी सम्भावना रहती है।

## निवारण

1. घर में कुत्ता बाँधकर रखें।
2. घर के सदस्यों की संख्या और आए-गए मेहमानों की संख्या से कुछ अधिक

मीठी रोटियाँ घर के बाहर कुत्तों, कौवों को खिलाएँ। यह उपाय दो महीनों तक करना चाहिए।

3. गणेश पूजन नित्य करें।
4. दूध में शक्कर डालकर उसमें अँगूठा भिगोकर चूसने की क्रिया करें।
5. गणेश चतुर्थी के दिन उपवास रखें।
6. नीबू, केले एवं तिलों को मंदिर में दान दें।
7. काला-सफेद कुत्ता घर में पालें या ऐसे कुत्ते को रोज रोटी खिलाया करें।
8. अपना चाल-चलन एवं चरित्र पवित्र रखना आवश्यक है।
9. काले और सफेद तिल बहते पानी में बहाएँ।
10. नौ वर्ष से कम आयु वाली कन्याओं को उनकी आवश्यकता की वस्तुएँ दें और हमेशा देते रहें।

❑❑❑



# 16 मंगलीक दोष-विचार

वर-कन्या के विवाह के समय मंगल जैसे ग्रह पर विचार अवश्य करना चाहिए। हनुमान जी मंगल के देवता हैं। मंगल पहले और आठवें घर का स्वामी भी है। वस्तुतः मंगल से अमंगल होना विचित्र बात है, किन्तु ज्योतिष शास्त्र की यह प्राचीन मान्यता है कि मंगल, शनि, राहु और क्षीण चन्द्रमा पापी ग्रह हैं। इनमें से कोई भी 1, 4, 7, 8, 12 घरों में स्थित हो या इन घरों को देखता हो, तो मंगलीक दोष होता है।

## उपर्युक्त घरों का महत्त्व

जन्मकुंडली में 1, 4, 7, 8, 12 भाव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं। पहला घर शारीरिक गठन, कद-काठी, रंग-रूप, शारीरिक शक्ति और स्वास्थ्य का कारक है। इस घर के पीड़ित होने पर जातक के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य खराब होने के कारण जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, वह उग्र स्वभाव और हठी हो जाता है।

चौथा माता का घर होता है। यह जीवनोपयोगी वस्तुओं का कारक माना गया है। इसके पीड़ित होने पर जातक जीवनोपयोगी उपभोग सामग्री के लिए तरस जाता है। अभाव सौ अनर्थों का एक अनर्थ होता है। इससे जीवन में दुःख-दैन्य भर जाता है।

सातवाँ घर विवाह, दाम्पत्य-सुख, सन्तान और परिवार का कारक है। विवाह की दृष्टि से यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस घर में पापी ग्रह बैठे हों या पापी ग्रह इस घर को देखते हों, तो विवाहित जीवन सुखमय नहीं होता। पति-पत्नी को एक-दूसरे से सन्तुष्टि नहीं मिलती। परिवार में तरह-तरह के अमंगल होते हैं, जिनसे पारिवारिक जीवन विषाक्त हो जाता है।

आठवाँ घर आयुष्य और शान्ति का कारकं होता है। इसके पीड़ित होने पर जातक का जीवन चिन्ताओं से भरा रहता है। उसे शान्ति प्राप्त नहीं होती।

बारहवें घर से खर्च करने का हिसाब लगाया जाता है। पापी ग्रह इस घर में स्थित हों या इसे देखते हों, तो कमाई से ज्यादा खर्च होता है। इससे मानसिक परेशानियाँ बढ़ती हैं।

## मंगलीक दोष की वास्तविकता

ज्योतिष में मंगलीक दोष की धारणा कब आरम्भ हुई इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। प्राचीन ज्योतिर्विदों एवं आचार्यों ने इस विषय को अधिक तूल नहीं दिया, किन्तु परवर्ती ज्योतिष-लेखकों ने 'मंगलीक' का हौवा खड़ा कर दिया। किसी ने तो यहाँ तक लिख दिया—

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**
**कन्या भुर्तर्विनाशाय भर्तृ कन्या विनाशकः ॥**

अर्थात् 1, 4, 7, 8, 12 घरों में मंगल हो, तो कन्या अपने होने वाले पति का विनाश करती है और दूल्हा अपनी भावी पत्नी का नाश कर देता है।

सामान्य बोलचाल की भाषा में 'नाश कर देना' या 'नाश मार देना' मुहावरा है जिसका मतलब है बिगाड़ कर देना। उदाहरण के लिए दर्जी ने कमीज बनाई। एक बाँह बड़ी और दूसरी छोटी कर दी, तो हम कहेंगे कि उसने कपड़े का नाश कर दिया, किन्तु व्याख्याकारों ने इसका अर्थ कर दिया—मृत्यु देने वाला, घातक, मारक, हत्यारा।

फिर तो मंगलीक के बारे में दहशत फैल गई। जन सामान्य की यह धारणा बन गई कि मंगलीक लड़के को अपनी बेटी ब्याह दोगे, तो बेटी मर जायेगी। अपने बेटे के लिए मंगलीक बहू लाओगे तो बेटे से हाथ धो बैठोगे।

बाद के अनेक ज्योतिर्विदों ने चार पापी ग्रहों की सूची में शुक्र और सूर्य को भी शामिल कर दिया। अब नौ ग्रहों में से छः मंगलीक दोष-दाता हो गये। ऐसी स्थिति में शायद ही कोई कुंडली अमंगलीक रह सके।

तब मंगलीक दोष की काट खोजी गई। सबसे पहले कन्या की मंगलीकता खत्म करने के लिए वर की मंगलीकता को तुरप का पत्ता बनाया गया। फलतः वर की मंगलीकता कन्या की मंगलीकता से कट गई।

मेष-लग्न वाले जातक के लिए मंगल न केवल लग्नेश होता है; बल्कि स्वगृही भी होता है। वह भला मारक कैसे हो सकता है? इस बात पर विचार अवश्य किया जाना चाहिए।

इस प्रकार नई-नई उद्‌भावनाओं से अनेक मतभेद उभरे। फलतः मंगलीक विषय आज भी विवादग्रस्त है। हम इन विवादों में नहीं पड़ना चाहते। हमारा विवेच्य तो लाल किताब है। हम अपने पाठकों को लाल किताब के टोटकों से अवत कराना चाहते हैं, ताकि वे टोटकों का सम्यक् प्रयोग करके अधिकाधिक लाभ उठा सकें।

सीधी-सी बात है। कुण्डली के 1, 4, 7, 8, 12 घर जातक के जीवन के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण घर होते हैं। मंगल, शनि, राहु और क्षीण चन्द्र पापी ग्रह हैं। महत्त्वपूर्ण घरों में पापी ग्रह स्थित हों या पापी ग्रह इन घरों को देखते हों, तो अशुभ प्रभाव देते हैं।

मृत्यु तो उसी स्थिति में होती है, जबकि जातक की कुंडली में मंगलीकता के साथ-साथ अल्पायु योग भी हो या होने वाले जीवन साथी की कुंडली में वैधव्य योग हो। बाकी मामलों में मृत्यु का होना अनिवार्य नहीं है। सामान्य अनिष्ट हो सकते हैं। इन अनिष्टों के निवारण के लिए लाल किताब में सरल, सुकर, सटीक टोटके दिये गये हैं। इनके सम्यक् प्रयोग से मंगलीक दोष का निवारण हो जाता है।

## मंगलीक दोष-निवारण के टोटके

### सामान्य टोटके–

- ❑ सदाचार का पालन करते रहना चाहिए।
- ❑ झूठ न बोलना चाहिए।
- ❑ झूठी गवाही न देनी चाहिए।
- ❑ अपशब्द न बोलने चाहिए।
- ❑ किसी को गाली न देनी चाहिए।
- ❑ शराब न पीनी चाहिए।
- ❑ माँस-मछली का सेवन न करना चाहिए।
- ❑ किसी से सेंत-मेंत में कुछ न लेना चाहिए।



- ❑ निःसंतान से सम्पत्ति न खरीदनी चाहिए।
- ❑ जिस घर का द्वार दक्षिणाभिमुख हो उसमें न रहना चाहिए।
- ❑ काले, काणे, गंजे और निःसन्तान व्यक्ति से दूर रहना चाहिए।
- ❑ सुबह-सुबह शहद का सेवन करना चाहिए।
- ❑ मिष्ठान्न बनाकर स्वयं खाना और दूसरों को भी खिलाना चाहिए।
- ❑ जन्म-दिन जैसे अवसरों पर मिठाई बाँटनी चाहिए।
- ❑ घर पर आये हुए मेहमानों को मीठा खिलाना चाहिए।
- ❑ बहन-बेटी को मीठी वस्तुएँ खिलानी और उपहार में देनी चाहिए।
- ❑ साली, मौसी या बुआ के घर मिठाई लेकर जाना चाहिए।
- ❑ पत्नी की उचित देख-भाल कर, उसे सुख-आराम देना चाहिए।
- ❑ भाई की सन्तान का पालन करना चाहिए।
- ❑ बड़े भाई, ताऊ और मामा की सेवा करनी चाहिए।
- ❑ विधवा स्त्रियों की यथासम्भव सहायता और सेवा करनी चाहिए।
- ❑ हाथी दाँत या हाथी दाँत से बनी वस्तु घर में न रखनी चाहिए।
- ❑ जंग लगा हुआ लोहे का औजार या शस्त्र घर में न रखना चाहिए।

### विशेष टोटके

- ❑ हनुमान चालीस का पाठ करना चाहिए।
- ❑ हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना और बाँटना चाहिए।
- ❑ हनुमान जी को सिन्दूर का चोला चढ़ाना चाहिए।
- ❑ गायत्री पाठ करना चाहिए।
- ❑ दुर्गा पाठ करना चाहिए।
- ❑ रामायण से सुन्दर काण्ड का पाठ करना या करवाना चाहिए।
- ❑ लाल रूमाल पास में रखना चाहिए।
- ❑ चाँदी का छल्ला (बिना जोड़ का) धारण करना चाहिए।
- ❑ ताँबे या सोने की अँगूठी में मूँगा जड़वा कर पहनना चाहिए।
- ❑ चाँदी के कड़े में ताँबे की मेख जड़वा कर पहनना चाहिए।
- ❑ चाँदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर पत्नी को पहनानी चाहिए।
- ❑ बन्दरों को भोजन खिलाना चाहिए।
- ❑ तन्दूर पर मीठी रोटी लगवा कर कुत्तों को देनी चाहिए।
- ❑ मन्दिर में जाकर मीठा भोजन बाँटना चाहिए।
- ❑ शक्कर बहते पानी में प्रवाहित करनी चाहिए।
- ❑ शहद या सिन्दूर बहते पानी में प्रवाहित करनी चाहिए।
- ❑ कच्ची दीवार बनवाकर गिरा देनी चाहिए।
- ❑ घर-दफ्तर में नौकर रखना चाहिए।

### टोटकों का चुनाव

इस बात को सदा स्मरण रखना चाहिए कि प्रायः सभी टोटके सब जातकों के लि उपयोगी नहीं होते। अपनी-अपनी जन्मकुंडली के हिसाब से टोटकों का चुनाव करन चाहिए, अन्यथा टोटके व्यर्थ जाते हैं और इनसे हानि भी हो सकती है। इसी धारणा व दृष्टि में रखते हुए हमने मंगलीक दोष-निवारण के टोटकों को दो वर्गों में बाँट दिये हैं-

1. सामान्य टोटके।
2. विशेष टोटके।

सामान्य सूची में जो टोटके दिये गये हैं वे सबके लिए उपयोगी और लाभदायक हैं। इनका प्रयोग करते रहने से सब प्रकार के अनिष्ट दूर ही रहते हैं। मंगलीक जातकों के लिए तो इनका पालन करना विशेष लाभप्रद है।

सदाचार का पालन करना, झूठ न बोलना, किसी को गाली न देना, शराब न पीना आदि न केवल टोटके हैं, बल्कि नैतिक चरित्र के विशेष गुण भी हैं। समाज-व्यवस्था की नींव हैं, धर्म के आधार हैं, सभ्यता-संस्कृति के मानदण्ड हैं। इन्हीं विशेषताओं से मनुष्य, मनुष्य कहलाने का अधिकारी बनता है। इन नियमों का पालन करने से नुकसान होने का सवाल ही नहीं उठता।

किन्तु टोटकों का प्रयोग करने से पहले जन्मकुंडली पर विचार कर लेना चाहिए। जन्मकुंडली के अनुसार टोटकों का चुनाव करने के लिए नीचे एक तालिका दी गई है। मान लीजिए किसी जातक की कुण्डली में लग्न कन्या है। मंगल आठवें घर में बैठा है। अब तालिका देखिए। इसका पहला कॉलम लग्नों का है। इसमें कन्या के सामने की पंक्ति देखिए। इस पंक्ति में पाँच कॉलम प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और बारह घरों के हैं। आठवें घर वाले कॉलम में अंक 10 और 11 लिखे हैं।

अब विशेष टोटकों की सूची देखिए। इसमें 18 टोटके दिये गये हैं। दसवीं लाइन और ग्यारहवीं लाइन के टोटके हैं–

- ❑ चाँदी के कड़े में ताँबे की मेख लगवा कर पहनना चाहिए।
- ❑ चाँदी की चूड़ियों को लाल रंग से रंगवा कर पत्नी को पहनानी चाहिए।

इस जातक के लिए विशेष टोटके यही हैं। सामान्य टोटकों की फिर भी अवहेलना न करें, अन्यथा अभीष्ट फल-प्राप्ति में सन्देह ही रहेगा। इसी प्रकार प्रत्येक मंगलीक जातक के निमित्त दोष-निवारक टोटकों का चुनाव करना चाहिए।

### मंगलीक दोष-परिहार की टोटका सारिणी

| | मंगल की स्थिति | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | प्रथम घर | चतुर्थ घर | सप्तम घर | अष्टम घर | द्वादश घर |
| मेष | 7, 9, 12, 13 | 10, 12, 18 | 9, 18 | 8, 10, 15 | 6 |
| वृष | 7, 11 | 2, 10, 16 | 6, 9 | 13, 18 | 4, 5, 8, 9 |
| मिथुन | 2, 9, 11 | 10, 16 | 2, 8, 17 | 10 | 11 |
| कर्क | 1, 9, 11, 18 | 10, 12 | 11, 17 | 9, 10 | 9 |
| सिंह | 7, 9 | 9, 11 | 9, 11 | 9, 10 | 2, 4, 5, 11 |
| कन्या | 1, 11 | 10, 16 | 11, 17 | 10,11 | 2, 11, 18 |
| तुला | 9, 11 | 10, 16 | 1 | 10, 13 | 2, 4, 5 |
| वृश्चिक | 7, 8, 9, 11 | 10, 16 | 9, 11 | 10, 13 | 1, 9, 11 |
| धनु | 1, 7 | 12 | 2, 17 | 4, 5, 8 | 1, 8 |
| मकर | 9 | 10, 12 | 17 | 9 | 1, 9 |
| कुम्भ | 2, 7 | 2, 10, 16 | 1 | 10 | 2, 11 |
| मीन | 7, 18 | 12 | 9, 11, 17 | 9, 13 | 3, 9 |

❑❑❑



# 17 टोटकों से ग्रहों का अनिष्ट निवारण

**सूर्य ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- ❑ गेहूँ, गुड़ और ताँबे का दान करें।
- ❑ हरिवंश पुराण का पाठ करें।
- ❑ चूल्हे की आग को (रात के समय) दूध से बुझायें।
- ❑ कोई भी कार्य आरम्भ करने से पूर्व मीठा मुँह में डालकर थोड़ा जल पी लें।
- ❑ यदि दसवें भाव में बैठा हुआ सूर्य किसी भी प्रकार से पीड़ित हो, तो बहते जल में ताँबे का पैसा प्रवाहित करें।

**चन्द्र ग्रह सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- ❑ बहते जल में चाँदी बहायें।
- ❑ सोते समय पानी या दूध से भरा बर्तन सिराहने रख लें।
- ❑ सुबह उठकर उसे कीकर के पेड़ की जड़ में डाल दें।
- ❑ दूध न बेचें। चावल, चाँदी और प्राकृतिक जल सदा अपने पास रखें।
- ❑ कुँवारी कन्याओं को हरे रंग के वस्त्र दें।
- ❑ रात के समय दूध न पीयें।
- ❑ दूध का दान करें। श्मशान भूमि के कुएँ से पानी लाकर घर में रखें।
- ❑ भैरों के मन्दिर में दूध का दान करें।

**मंगल ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- ❑ तन्दूर में लगी हुई मीठी रोटी दान करें।
- ❑ रेवड़ी और बताशे तेज बहते पानी (साफ पानी) में प्रवाहित करें।
- ❑ मसूर की दाल और मृगछाला दान में दें।
- ❑ हनुमान जी की उपासना करें।
- ❑ हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- ❑ हनुमान जी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ायें और बाँटें।

**बुध ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- ❑ कौड़ियों को आग में जलायें और राख को उसी दिन नदी-जल में प्रवाहित कर दें।
- ❑ चाँदी के पैसे में छेद करके बहते पानी में प्रवाहित कर दें।
- ❑ अँगूठी में पन्ना पहनें।
- ❑ दुर्गा चालीस का पाठ करें।
- ❑ दुर्गा जी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ायें।
- ❑ दुर्गा की उपासना करें।
- ❑ नाक छिदवायें।

- फिटकरी से दाँत साफ करें।
- कन्याओं की पूजा करें।
- फोका कद्दू दान में दें।
- धार्मिक संस्थानों में यथाशक्ति दान दें।
- बकरी दान में दें।

**वृहस्पति ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- पीपल का वृक्ष लगायें, उसे पानी दें और देख-भाल करें।
- केसर, हल्दी, चने की दाल और सोना दान में दें।
- यदि जातक का पुत्र न हो, तो श्रद्धापूर्वक हरि की उपासना करें।
- हरिवंश पुराण का पाठ करें।

**शुक्र ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- भोजन करने से पहले अपनी थाली में से गऊ के लिए ग्रास निकाल कर रखें, उसे गऊ को खिलायें।
- गऊ-दान करें।
- चरी का दान करें।
- घी, दही, कपूर और सफेद मोती दान करें।
- गरीबों के लिए दान दें।
- विधवाओं की सहायता करें।
- उनकी देखभाल करें।
- लक्ष्मी जी की श्रद्धापूर्वक उपासना करें।

**शनि ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को खिलायें।
- कौवों को रोटी दें।
- साबूत उड़द, लोहा, तेल, चमड़ा, अँगीठी, चिमटा, शराब और स्प्रिट दान करें।
- श्रद्धापूर्वक शिवजी की उपासना करें।

**राहु ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- नदी-जल की तेज धारा में नारियल बहायें।
- जौ को दूध से धोकर नदी-जल में बहा दें।
- यदि राहु की अशुभता के कारण क्षय रोग हो, तो जौ को गोमूत्र में धोकर उसे बन्द डिब्बे में अपने पास रखें।
- गोमूत्र से दाँत साफ करें। मूली दान करें।
- बहते जल में कोयले प्रवाहित करें।
- सरसों और नीलम का दान करें।
- ये वस्तुएँ सफाई कर्मचारी को दान में दें।
- खोटा पैसा नदी-जल में बहायें।



**केतु ग्रह से सम्बन्धित टोटकों का प्रयोग इस प्रकार है–**

- कुत्तों को रोटी दें।
- तिल का दान करें।
- यदि जातक का पुत्र आज्ञाकारी न हो और दुर्व्यवहार करता हो, तो मन्दिर में कम्बल दान करें।
- यदि टाँगों में कष्ट हो, या मूत्र-विकार हो, तो रेशम के धागे में चाँदी का छल्ला डालकर गले में पहनें।
- गणेश जी की पूजा-उपासना करें।
- पुत्र पर कोई संकट आये तो 43 दिन तक काले कुत्ते को भोजन दें।

**खास वक्त के उपाय**

- यदि चन्द्रमा ग्यारहवें घर में हो (ग्यारहवें घर में चन्द्रमा क्षीण होता है) तो जातक की पत्नी को प्रसूति-पीड़ा आरम्भ होने पर उसकी माता को वह घर छोड़कर अन्यत्र चले जाना चाहिए। उसे 43 दिन वाद नवजात शिशु को देखना चाहिए। पहले देखने पर शिशु का अनिष्ट होता है।
- यदि मंगल नौवें घर में बैठा हुआ पीड़ित या अशुभ हो, तो जातक को अपनी भाभी (वड़े भाई की पत्नी) की सेवा करनी चाहिए।
- यदि दूसरे घर में वैठा हुआ मंगल पंचम भाव को देखता हो, तो सन्तान-उत्पत्ति में वाधक होता है। ऐसा होने पर जातक अपने परिवार के सदस्यों की सम्यक् देख-भाल करे, तो सन्तान-प्राप्ति हो जाती है।
- जिस जातक के पाँचवें घर में शनि हो वह जव अपना घर वनाना आरम्भ करता है, तो उसकी सन्तान पर संकट आता है। सन्तान के संकट-मोचन के लिए शनि के शत्रुओं (सूर्य, चन्द्र, मंगल) की वस्तुएँ अपने पास रखनी चाहिएँ।
- बारहवें घर का ग्रह जिस सम्बन्धी का कारक होता है, उसकी मृत्यु के वाद कारक ग्रह की वस्तुएँ अपने पास रखने से रातें सुख-पूर्वक गुजरती हैं।
- केतु पुत्र और कुत्ते का कारक होता है। अतः यदि जातक के पुत्र पर किसी प्रकार का संकट आये, तो उसे 43 दिन तक किसी कुत्ते (काले) को भोजन देना चाहिए।

## जोड़े के ग्रहों की चीज़ें

लाल किताब ने ग्रहों के जोड़े बनायें हैं और उन जोड़ों की खास चीज़ों को साझा स्वामित्व दिया है, जिनका विवरण इस प्रकार है–

| जोड़े के ग्रह | वस्तुएँ |
|---|---|
| वृहस्पति और केतु | पीला नींबू। |
| वृहस्पति और चन्द्र | बड़ का पेड़। |
| सूर्य और चन्द्र | बड़ का दूध, लीची, घोड़ा। |

| | |
|---|---|
| सूर्य और शुक्र | लाल पत्थर, काँसे का शीशा, जली हुई मिट्टी। |
| सूर्य और बुध | लाल फिटकरी, सफेद शीशा। |
| चन्द्र और शनि | लाल स्याही, विषाक्त दूध, कुआँ। कछुआ, किण्वित दूध की गाड़ियाँ। |
| शुक्र और मंगल | तन्दूर, गेरू। |
| शुक्र और बुध | नकली सूरज, तराजू, आटा पीसने की चक्की। |
| शुक्र और शनि | काली पिपरमेंट, घी। |
| मंगल और शनि | नारियल, खजूरें। |
| मंगल बद और बुध | सूक्ष्मदर्शी शीशा, अनार के फूल। चमकीले लाल कपड़े लड़की के। |
| बुध और मंगल नेक | लड़की द्वारा शादी पर पहने हुए। गहरे चमकीले लाल रंग के कपड़े। |
| बुध और शनि | आम का पेड़। |

## अशुभ युति-दोष-निवारण

- कुण्डली में सूर्य और बृहस्पति की युति हो, तो जातक को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अशुभता-निवारण के लिए गुरु की वस्तुओं का प्रयोग करें। केसर खायें और सोने की अँगूठी पहनें।
- सूर्य और शनि की युति होने से जातक की पत्नी के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। स्थिति में सुधार के लिए पत्नी के भार के बराबर चरी दान करें।
- सूर्य और शनि की युति में जो अधिक बलवान हो उसकी वस्तुएँ दान में दें। सूर्य बलवान हो, तो ताँबा दान दें। शनि बलवान हो, तो लोहा या तिल दान करें।
- सूर्य और राहु की युति हो, तो तपेदिक आदि राहु-जन्य अनिष्ट होते हैं। अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए सूर्य ग्रहण के समय राहु की वस्तुएँ—कोयला और सरसों दान करें या नदी-जल में बहा दें।
- राहु और चन्द्र की युति हो, तो चन्द्र-ग्रहण के समय कोयला या सरसों बहते जल में प्रवाहित करें।
- मंगल और बुध एक ही घर में बैठे हों, तो छोटी बहन के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करते हैं; क्योंकि बुध बहन का कारक है। उपाय के लिये मंगल की वस्तुएँ शहद और सौंफ सुराही में रखकर निर्जन एकान्त में जमीन के नीचे दबा दें।

❑❑❑



# 18 शुभ/अशुभ ग्रहों का प्रभाव

जो ग्रह जिस भाव का स्वामी होता है, उस भाव में स्थित होने पर सदा शुभ प्रभाव देता है। लाल किताब के अनुसार ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जानने का सामान्य सिद्धान्त यही है।

पहले घर में मंगल, दूसरे में शुक्र, तीसरे में बुध, चौथे में चन्द्र, पाँचवें में सूर्य, छठे में बुध व केतु, सातवें में शुक्र, सदा शुभ फल देते हैं। ये ही इन घरों के स्वामी होते हैं। आठवें घर का स्वामी मंगल है। वह इस घर में अकेला हो, तो शुभ फल देता है; किन्तु इसी घर में मंगल के साथ शनि या चंद्र बैठा हो, तो मंगल भी अशुभ फल देता है।

नौवें घर का स्वामी गुरु है। वह इस घर में शुभ फल देता है। दसवाँ विश्वासघाती घर है। इस घर में बैठे हुए ग्रह विश्वासघाती हो जाते हैं। वे दूसरे और ग्यारहवें घर में शुभ फल देते हैं। ग्यारहवें घर में शनि शुभ फल देता है। बारहवें घर में गुरु शुभ होता है।

### ग्रह के शुभाशुभ फल देने का समय

जन्मकुंडली में जो ग्रह जिस घर में होता है, वह ग्रह वर्ष कुण्डली में भी जब उसी घर में आता है, तब अपना फल देता है।

इसी प्रकार जन्मकुंडली में ग्रह जिस घर में उच्च का होता है वह वर्ष कुंडली में भी जब उसी घर में आता है, तब शुभ फल देता है। उदाहरणार्थ जन्मकुंडली में मंगल दसवें घर में उच्च का होता है। वह वर्ष कुंडली में भी जब दसवें घर में आयेगा, तब शुभ फल देगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए।

### विशेष

जिस वर्ष की वर्ष कुंडली में राहु चौथे घर में हो, उस वर्ष राहु के कार्य करवाने पर झगड़ा होता है।

जिसकी जन्मकुण्डली या वर्ष कुण्डली में बृहस्पति चौथे घर में हो वह पीपल कटवाये या साधु को सताये, तो बर्बाद हो जाता है।

केतु बारहवें घर में हो, तो कुत्ता मरवाने पर अशुभ फल होता है।

### अशुभ ग्रहों की पहचान और उपाय

सूर्य– शरीर के अंग अकड़ जाएँ, हिलने-डुलने में कठिनाई हो, हर समय मुँह में थूक आता रहे, घर में लाल गाय या भूरी भैंस हो, तो वह खो जाय या मर जाए। ऐसा हो, तो सूर्य अशुभ है।

उपाय– कोई भी कार्य आरम्भ करने से पहले मुँह में मीठा डालकर कुछ घूँट पानी पी लें।

चन्द्र– अहसास करने की ताकत चली जाय, कुआँ-तालाब सूख जाये या हैण्ड-पम्प पानी

देना बन्द कर दे, घर में दुधारू पशु या घोड़ा हो, तो वह मर जाय। ये चन्द्र की अशुभता के लक्षण हैं।

**उपाय–** बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें।

**मंगल–** शक्ति-सामर्थ्य होते हुए भी सन्तान न हो, हो तो जल्दी मर जाय, न मरे तो कानी हो जाय, शरीर के जोड़ काम न करें, रक्त की कमी हो जाय, क्रोध अधिक आये, लड़ाई-झगड़े हों, तो मंगल अशुभ है।

**उपाय–** आँखों में सफेद सुरमा लगायें।

**बुध–** अकस्मात् दाँत टूट जायें, सूँघने की शक्ति जाती रहे, सम्भोग करने की शक्ति न रहे तो बुध अशुभ है।

**उपाय–** दाँतों को साफ रखें, नाक छिदवायें।

**बहस्पति–** चांद गंजी हो जाय, सोना खो जाय, शिक्षा रुक जाय, निर्दोष होते हुए भी बदनामी फैले, झूठे अभियोग, दोष लगें, गले में माला पहनने की आदत पड़ जाये तो वृहस्पति अशुभ है।

**उपाय–** लालट पर या ललाट से ठीक ऊपर पगड़ी पर पीला तिलक लगायें या केसर-तिलक लगायें। नाक सूखी रखें। कोई भी काम शुरू करने से पहले नाक साफ कर लें।

**शुक्र–** त्वचा-विकार और स्वप्नदोष शुक्र की अशुभता के संकेत हैं। इससे हाथ का अँगूठा निष्क्रिय और दुर्बल हो जाता है।

**उपाय–** साफ-सुथरे कपड़े सलीके से पहनें।

**शनि–** भौंहों और पलकों के बाल झड़ने लगें, भैंस मर जाय, आग लग जाय, मकान गिर पड़े या क्षतिग्रस्त हो जाय तो शनि अशुभ है।

**उपाय–** लोहे का दान करें, कीकर की दाँतुन करें। 43 दिन तक कौओं को रोटी खिलाएँ।

**राहु–** घर का काला कुत्ता मर जाय, हाथों के नाखून झड़ जायें, दिमाग काम न करे, शत्रुओं की संख्या बढ़ जाये, तो राहु अशुभ होने का संकेत है।

**उपाय–** सिर पर चोटी रखें, संयुक्त परिवार में रहें, ससुराल वालों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रहें।

**केतु–** पैरों के ना खून झड़ जाय, सन्तान रोगी रहे, मूत्र-व्याधि तथा जोड़ों में पीड़ा हो, तो केतु अशुभ है।

**उपाय–** कुत्ते पालें, कान छिदवा लें।

**विशेष ज्ञातव्य**

ग्रह की अशुभता के उपरोक्त संकेतों के अतिरिक्त अन्य लक्षण भी हो सकते हैं। ग्रहों से सम्बन्धित रिश्तेदारों, शरीरांगों, वस्तुओं आदि के नाम देख लेने चाहिए। उनमें किसी प्रकार का विकार या ह्रास हो, तो भी सम्बद्ध ग्रह की अशुभता होती है।

ग्रहों की अशुभता से बचने के कुछ सर्व सामान्य उपाय व नियम दिये गए हैं, उनका प्रत्येक व्यक्ति को सदा ही पालन करते रहना चाहिए।

**ग्रह-दोष-परिहार के लिए देवोपासना**

प्रायः देवी-देवताओं की उपासना और स्तुति-पाठ करने से ग्रहों का अशुभ प्रभाव दूर हो जाता है और शुभ फल मिलता है।



**सूर्य** – विष्णु जी की उपासना करें अथवा हरिवंश पुराण का पाठ करें। ताँबा और गेहूँ का दान करें।

**चन्द्र** – "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र से शिवजी की उपासना करें। महामृत्युञ्जय मंत्र का जाप करें। चावल, दूध, चाँदी दान में दें।

**मंगल** – गायत्री मन्त्र का पाठ करें अथवा हुनमान जी की उपासना करें। हनुमान चालीसा पढ़ें। हनुमान जी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ायें और उसका वितरण करें। मसूर व लाल मूंग की दाल का दान करें।

**वुध** – दुर्गा सप्तशती का पाठ कराएँ। माँ दुर्गा की उपासना करें। साबूत मूँग दान में दें।

**वृहस्पति** – हरिवंश पुराण का पाठ करें या करवाएँ अथवा ब्रह्मा जी की उपासना करें। चने की दाल या सोना दान करें।

**शुक्र** – लक्ष्मी की पूजा-उपासना करें। समाज के जरूरतमंद लोगों का पालन करें। विधवाओं की मदद करें। घी, दही, कपूर और मोती दान करें।

**शनि** – भैरव जी की पूजा-उपासना करें। अपने समय के शासक की कृपा प्राप्त करें। लोहा या काले उड़द का दान करते रहा करें।

**राहु** – सरस्वती जी की पूजा-उपासना करें। कन्या-दान करें अथवा बेटी की शादी के लिए गरीब माता-पिता की सहायता करें। सरसों अथवा नीलम दान दें।

**केतु** – गणेश की पूजा-उपासना करें। कपिला गाय एवं तिल का दान करें।

**रत्न एवं धातु के प्रयोग**

ग्रहों के अशुभ फल से मुक्त होने के लिए और शुभ फल प्राप्त करने के लिए रत्नों तथा धातुओं का प्रयोग अत्यन्त प्रभावी होता है। विभिन्न ग्रहों के लिए विभिन्न रत्नों एवं धातुओं का प्रयोग का विधान है।

**सूर्य** – एकदम बराबर भार के दो ताँबे के टुकड़े लीजिए। जिस तरह कन्या-दान का संकल्प लेते हैं, उसी प्रकार उनके दान का संकल्प लें। फिर एक टुकड़े को बहते जल में बहा दीजिये। दूसरे को अपने पास रख लें। किसी भी स्थिति में कभी भी उसे अपने से अलग न करें।

**चन्द्र** – सच्चे मोती (दो) या चाँदी के दो बराबर वजन के टुकड़े लेकर उपरोक्त रीति से एक को चलते पानी में बहा दें और दूसरा अपने पास कायम कर लें।

**मंगल** – उपरोक्त विधि से ही लाल पत्थर कायम करें।

**वुध** – हीरा या सीप कायम करें।

**बृहस्पति** – सोने के टुकड़े या केसर को घर में कायम करें।

**शुक्र** – सफेद मोती पहनें।

**शनि** – लोहा, काला सुरमा या काला नमक का दान करें।

**राहु** – नीलम को दान में दें।

**केतु** – दुरंगा पत्थर जल में प्रवाहित करें।

**विशेष**–बुध बारहवें घर में हो, तो लोहे के (बिना जोड़ के) दो छल्ले लेकर उपरोक्त विधि से ही एक को बहते जल में प्रवाहित कर दें और दूसरे को बाएँ हाथ की मध्यमा उँगली में धारण कर लें।

### अदृष्ट अकेला ग्रह

यदि किसी घर में कोई ग्रह अकेला ही बैठा हो और उस पर किसी अन्य ग्रह की दृष्टि भी न हो, तो वह ग्रह अदृष्ट अकेला ग्रह कहा जाता है। अदृष्ट अकेले ग्रह कुछ घरों में शुभ फल देते हैं, कुछ में अशुभ फल देते हैं।

अदृष्ट अकेले ग्रह निम्नांकित घरों में अशुभ फल देते हैं–

सूर्य 6, 7, 10..... घरों में।
चन्द्र 6, 8, 10, 11, 12 घरों में।
मंगल 4, 8 घरों में।
बुध 3, 8, 9, 10, 11, 12 घरों में।
वृहस्पति 2, 4, 5, 7 घरों में।
शुक्र 1, 6, 9 घरों में।
शनि 1, 4, 5, 6 घरों में।
राहु 1, 2, 5, 7, 8, 9, 10, 11, 12 घरों में।
केतु 3, 4, 5, 6, 8 घरों में।
उपरोक्त घरों के अतिरिक्त शेष घरों में ग्रह प्रायः शुभ फल ही देते हैं।

### अनिष्ट-निवारण

कुंडली में जो ग्रह अदृष्ट अकेले होकर अशुभ घरों में बैठे हों, उनके अनिष्ट-निवारण के लिए निम्नलिखित टोटके निश्चित रूप से प्रभावी होते हैं–

**सूर्य** – बहते पानी में गुड़ प्रवाहित करें।
**चन्द्र** – रात को सोते समय दूध या पानी से भरा हुआ बर्तन सिराहने रखकर सोयें। प्रातःकाल उठते ही उसे कीकर की जड़ या गमलों अथवा क्यारी में उँडेल दें।
**मंगल** – वहते पानी में रेवड़ियाँ प्रवाहित करें।
**बुध** – ताँबे के सिक्के में या पत्ती में छेद करके दरिया में प्रवाहित करें।
**वृहस्पति** – केसर का सेवन करें या नाभि पर लगायें।
**शुक्र** – गोशाला में चरी खिलाएँ।
**शनि** – तेल में अपनी छाया देखकर यथाशक्ति दान करें।
**राहु** – मूली दान करें। नदी में कोयला प्रवाहित करें।
**केतु** – कुत्तों को रोटी खिलाएँ।

**विशेष**–लाल किताब में बताये गए टोटके किसी भी वक्त शुरू कर सकते हैं; मगर एक बार शुरू करने के बाद 43 दिन तक लगातार करते रहें। 43 दिन पूरे होने से पहले किसी दिन भूल जाएँ या परिस्थितिवश न कर सकें, तो पुनः नये सिरे से ही शुरू करना होगा। ऐसी दशा में कुछ चावल दूध में धोकर अपने पास रख लें। ऐसा करने पर पहले किये गये टोटके का फल कुछ न कुछ अवश्य मिल जाएगा। लाल किताब के टोटके दिन के समय ही करें। सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के पश्चात् रात्रि के समय इन टोटकों को करने से कोई लाभ नहीं होगा।

❑❑❑



# 19 सहायता पाने वाले ग्रह

मित्र गृही, मित्र दृष्ट, स्वगृही और उच्च का होने के अलावा अन्य घरों की हालत में ग्रह वलहीन होते हैं। इनमें जो ग्रह शत्रु-दृष्ट होने की वजह से पीड़ित हों, अनिष्ट करने वाले हों, अकेले अदृष्ट होने के कारण अशुभ हों, किसी अन्य ग्रह से अष्टमस्थ होने के कारण विपरीत रूप से प्रभावित हों, उनके निवारण के लिए पिछले पृष्ठों पर दिये गये टोटके अधिक प्रभावी होते हैं। इनके अतिरिक्त जो ग्रह वलहीन रह जाते हैं, वे अपना प्रभाव देने में प्रायः असफल ही होते हैं।

वलहीन ग्रहों को सम्यक् उपयों द्वारा सहायता पहुँचाने पर उनका वल बढ़ता है और वे अपना फल देने में सक्षम हो जाते हैं। अतः जिन ग्रहों के शुभ प्रभाव अपेक्षित हों उनको अवश्य ही सहायता पहुँचायी जानी चाहिए। इसके लिए लाल किताव में निम्नांकित उपाय वताये गये हैं–

1. पापी ग्रहों का उपाय उनसे सम्वन्धित वस्तुओं को रखने, जानवरों को पालने व सम्वन्धियों का आशीर्वाद प्राप्त करने से होता है।
2. शुक्र की सहायता के लिए अपने भोजन में से गाय के लिए ग्रास निकाल कर रखें। इससे धन-धान्य और सुख वढ़ता है।
3. केतु की सहायता के लिए कुत्तों को रोटी खिलायें। इससे पुत्र-प्राप्ति होती है।
4. मंगल अशभ फल दे रहा हो, तो घर में मृगछाला स्थापित करें तथा तन्दूर में मीठी रोटी लगवा कर उसका वितरण करें।
5. वुध, शुक्र और शनि के अशुभ निवारण के लिए अपने भोजन में से 3 ग्रास निकालकर रखें। उनमें से एक गाय को, दूसरा कुत्ते को और तीसरा कौवे को खिलाएँ।
6. राहु के अशुभ प्रभाव से छुटकारा पाने के लिए जौ को दूध से धोकर दरिया के जल में प्रवाहित करें।
7. यदि जातक क्षय रोग से पीड़ित हो, तो जौ को गोमूत्र में धोकर लाल वस्त्र में बांधें और फिर अपने पास घर में सुरक्षित रख लें।
8. यदि बेटा-बेटी दोनों ही पिता के लिए अशुभ हों, तो ताँबे का टुकड़ा बेटी के गले में पहनाना शुभ होगा।
9. यदि पहले, तीसरे और आठवें घर में बैठकर मंगल अशुभ फल देने लगे, तो बुध का उपाय करना अनिवार्य होगा।
10. केतु अशुभ फल दे रहा हो, तो राहु का उपाय करना चाहिए।
11. राहु अशुभ फल देता हो, तो केतु का उपाय अवश्य ही करें।

विशेष–जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, ग्रहों के उपचार के लिए उनसे सम्वन्धित वस्तुएँ पास में रखें और उनका दान करें। उनसे सम्वन्धित जानवरों को पालें, भोजन दें और सेवा करें। ग्रहों से सम्वन्धित सम्वन्धियों का पालन करें, उनकी सेवा करें और जो पूज्य वर्ग में आते हैं उनके चरण-स्पर्श करके आशीर्वाद लेते रहें। तब भी उपर्युक्त उपाय अवश्य करें।

❑❑❑

# 20 पितृ ऋण

अपने पूर्वजों के किए पापों का फल जब उसकी वंशावली में से किसी एक जातक को भोगना पड़े, तो वह पितृ ऋण कहलाता है। पितृ ऋण अर्थात् पितरों (पूर्वजों) का ऋण। पिता ऋण लेता है, पुत्र चुकाता है। यही परम्परा है। लाल किताब ने इसे ज्योतिष से जोड़ दिया है अर्थात् पिता गलती करता है, पुत्र फल भोगता है। महाराज दशरथ ने श्रवण को तीर मार दिया। श्रवण के माता-पिता ने शाप दे दिया, "जैसे हम पुत्र-वियोग में मर रहे हैं, वैसे आप भी पुत्र वियोग में मरेंगे।"

महाराज दशरथ पुत्र वियोग में मरे। उनका अपना दोष था। लेकिन राम का तो कोई दोष न था। उन्हें वन के कष्ट सहने पड़े पिता के दोष के कारण।

सहस्त्रों वर्षों के पश्चात् इस प्रश्न का उत्तर लाल किताब के लेखक ने दिया– "इसलिए कि आपको जो फल मिलने वाला है, वह केवल आपके कर्मों का ही फल नहीं होगा। आपको अपने पूर्वजों के कर्मों के फल भी भोगने हैं।"

यह ध्रुव सत्य है कि पूर्वजों के दुष्कर्मों का फल उनके वंशजों को भी भोगना पड़ता है। यही पितृ ऋण है।

अब प्रश्न उठता है कि पितृ ऋण का पता कैसे लगे? जातक कैसे जाने कि अमुक अनिष्ट पितृ ऋण के कारण है? यह किस पूर्वज के पाप या शाप के कारण है और पितृ-ऋण-जन्य अनिष्ट के निवारण का उपाय क्या है?

लाल किताब में उपरोक्त प्रश्नों पर विस्तार से विचार किया गया है।

पितृ ऋण की खास पहचान यह है कि इसके अनिष्ट घर-परिवार के सब लोगों को प्रभावित करते हैं। सब को नहीं तो अधिकांश को तो करते ही हैं। परिवार के एक व्यक्ति की कुण्डली में जो ग्रह पीड़ित होते हैं, वही अन्य व्यक्तियों की कुण्डलियों में भी पीड़ित होते हैं। लाल किताब के अनुसार जिस ग्रह के अपने घर में या कारकत्त्व वाले घर में शत्रु ग्रह बैठा हो, वह ग्रह पीड़ित माना गया है। पीड़ित ग्रह जिन रिश्तेदारों के कारक होते हैं उन्हीं रिश्तेदारों के पाप या शाप से पितृ ऋण दोष होता है।

अब यह देखते हैं कि यह अभिशाप या पाप किस पूर्वज का है? लाल किताब में बृहस्पति ग्रह पिता का कारक माना गया है और चन्द्र ग्रह माता का कारक है। यही दोनों ग्रह पीड़ित हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इस परिवार पर पहली कुण्डली वाले के माता-पिता का शाप ही चला आ रहा है।

यह पितृ ऋण इस नियम के अनुसार हुआ कि जिस ग्रह के अपने घर में या कारकत्व वाले घर में उसका शत्रु ग्रह बैठा हो वह ग्रह पीड़ित होता है।

लाल किताब में पितृ ऋण के कुछ अन्य योग भी दिये गये हैं, जो इस प्रकार हैं–

### नौवाँ घर और बुध से पितृ ऋण

लग्न या आठवें घर में बुध और नौवें घर में बृहस्पति हो।
दूसरे या सातवें घर में बुध और नौवें घर में शुक्र हो।



तीसरे घर में बुध और नौवें घर में राहु हो।
चौथे घर में बुध और नौवें घर में चन्द्र हो।
पाँचवें घर में बुध और नौवें घर में सूर्य हो।
छठे घर में बुध और नौवें घर में केतु हो।
दसवें घर या ग्यारहवें घर में बुध और नौवें घर में शनि हो।
बारहवें घर में बुध और नौवें घर में बृहस्पति हो।

उपर्युक्त ग्रह-स्थितियों में बुध मुकाबले का ग्रह बन जाता है। तब वह दूसरे ग्रहों के फल बिगाड़ सकता है और जातक का अनिष्ट करता है। उससे जातक का परिवार भी प्रभावित होता है। इससे मुक्त होने के लिए बुध का उपचार सहायक होता है।

### बृहस्पति से पितृ ऋण

बृहस्पति केन्द्र में और शनि दूसरे घर में हो।
बृहस्पति केन्द्र में और शुक्र पाँचवें घर में हो।
बृहस्पति केन्द्र में और बुध नौवें घर में हो।
बृहस्पति केन्द्र में और राहु बारहवें घर में हो।
बृहस्पति केन्द्र में बुध और शुक्र तीसरे या छठे घर में हों।
बृहस्पति केन्द्र में और शनि तीसरे या छठे घर में हों।

उपर्युक्त ग्रह-स्थितियों में पितृ-ऋण योग बनाने के लिए मुख्य भूमिका बृहस्पति की होती है। अतः बृहस्पति का उपचार करने पर अनिष्ट से मुक्ति मिलती है।

### अन्य ग्रहों से पितृ-ऋण

(1) राहु, केतु या शुक्र पाँचवें घर में हों; सूर्य पहले या ग्यारहवें घर में न हो।
(2) बुध, शुक्र या शनि चौथे घर में हो; चन्द्रमा चौथे घर के अतिरिक्त कहीं भी हो।
(3) बुध और केतु पहले या आठवें घर में हो; मंगल सातवें घर में न हो।
(4) चन्द्रमा तीसरे या छठे घर में हो; बुध दूसरे और बारहवें घर में न हो।
(5) सूर्य, चन्द्र, राहु दूसरे व सातवें घर में हों, शुक्र पहले या आठवें घर में न हो।
(6) सूर्य, चन्द्र, मंगल दसवें या नौवें में हों; शनि तीसरे या चौथे घर में न हो।
(7) राहु छठे घर के अतिरिक्त कहीं भी हो और सूर्य, शुक्र तथा मंगल बारहवें घर में हों।
(8) केतु दूसरे घर के अतिरिक्त कहीं भी हो; चन्द्र और मंगल छठे घर में हों।

इन योगों में क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु, केतु पीड़ित होते हैं।

विशेष–उपर्युक्त ग्रह योगों के अतिरिक्त दूसरें, पाँचवें, नौवें और बारहवें घर भी पीड़ित हों, तो पितृ-ऋण पूरा होता है, अन्यथा नहीं।

लाल किताब के अनुसार उपरोक्त योग केवल जन्म-पत्री के आधार पर बनते हैं। इनसे वर्षफल का कोई सरोकार नहीं होता है।

### स्व ऋण दोष

कारण–नास्तिकता के कारण जातक स्वयं पुराने रश्मो-रिवाज पर पेशाब की धार मारने की प्रवृत्ति रखता हो, तो स्व ऋण दोष होता है।

**ग्रह-संकेत**–पाँचवें घर में शुक्र या पापी ग्रह हों; तो सूर्य पीड़ित हो जाता है।

**निशानी**–घर में धरती के नीचे अग्निकुण्ड हो या आकाश की तरफ छत में से रोशनी आने के रास्ते आम हों।

**अनिष्ट फल**–जातक पहले तो उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है, धन संचित करता है, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, फिर अकस्मात् कहर बरपा हो जाता है। सारी दौलत खर्च हो जाती है या खो जाती है या चोरी चली जाती है। मान-प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाती है। ऐसी दशा तब आती है, जब जातक का पुत्र ग्यारह महीने का हो या ग्यारह साल का हो। लाल गाय या भूरी भैंस खो जाती है या मर जाती है। शरीर बुरी तरह प्रभावित होता है। अंग अकड़ जाते हैं। हिलने-डुलने में मुश्किल होती है। मुँह में हर समय थूक आता रहता है।

**निवारण**–सूर्य का विधिपूर्वक यज्ञ करें। परिवार में जहाँ तक रक्त का सम्बन्ध हो, वहाँ तक सभी से यज्ञ का खर्च बराबर बाँटकर वसूल करें। ऐसा करने पर स्व ऋण से मुक्ति मिलती है।

जब भी कोई काम शुरू करना हो, तब थोड़ा मीठा मुँह में डालकर कुछ घूँट पानी पीने के बाद काम शुरू करें।

## मातृ ऋण

**कारण**–अपनी सन्तान उत्पन्न हो जाने के बाद माता को घर से निकालना या दुःखी करना या उसके खुद ही दुःखी हो जाने पर उसकी उपेक्षा करना।

**ग्रह-संकेत**–चौथे घर में केतु हो, तो चन्द्रमा पीड़ित हो जाता है।

**निशानी**–पड़ोस में पूजने योग्य दरिया, नदी या कुएँ को गन्दगी जमा करने या बहाने से काम लिया जा रहा होगा।

**अनिष्ट फल**–अप्रत्याशित और अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण जातक की सारी दौलत खर्च हो जाती है। संपदा नष्ट होने लगती है। घर में दुधारू पशु या घोड़े हों, तो उनकी मृत्यु हो जाती है।

जातक किशार या नौजवान हो, तो उसकी शिक्षा में गतिरोध उत्पन्न हो जाता है। जो कोई उसकी मदद करने की कोशिश करता है उसका भी अनिष्ट होता है। घर का नल, कुआँ या तालाब हो, तो वह सूख जाता है। जातक की अनुभव करने की शक्ति का ह्रास हो जाता है।

**निवारण**–परिवार के प्रत्येक सदस्य से बराबर भाग में चाँदी लेकर दरिया के जल में एक ही दिन, एक साथ बहाने से मातृ ऋण से मुक्ति मिलती है। प्रतिदिन बड़ों के चरण छूकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करना विशेष लाभकारी है।

## स्त्री ऋण

**कारण**–प्रसव काल के समय स्त्री को किसी लालच के कारण मार डालना।

**ग्रह-संकेत**–दूसरे व सातवें घरों में सूर्य, चन्द्र और राहु बैठे हों, तो शुक्र पीड़ित होता है।



**निशानी**–उस घर के लोगों में दाँतों वाले जानवरों, विशेषकर गाय को पालने से अरुचि या घृणा होगी।

**अनिष्ट**–शुक्र पीड़ित होने का विशेष अनिष्ट है। खुशी में गमी, रंग में भंग। परिवार में किसी शादी-विवाह के अवसर पर अचानक किसी की मृत्यु हो जाय या किसी को लकवा मार जाय या किसी घातक रोग का दौरा पड़ जाय, तो समझिये कि स्त्री ऋण के फलस्वरूप शुक्र पीड़ित है। एक ओर बारात और डोली, दूसरी ओर अर्थी और मातम, यही शुक्र के पीड़ित होने की निशानी है।

जातक का अँगूठा अकारण ही निष्क्रिय हो जाता है। वह स्वप्न दोष और त्वचीय रोगों से पीड़ित हो जाता है।

**निवारण**–परिवार के सभी सदस्यों से बराबर मात्रा में धन एकत्रित करके एक दिन एक ही समय पर, सौ गायों को उत्तम भोजन (चारा-दाना आदि) खिलाने में स्त्री ऋण से मुक्ति मिलती है।

साफ-सुथरे वस्त्र सलीके से पहनने पर भी शुक्र के अनिष्ट से शान्ति मिलती है।

## सम्बन्धी-ऋण

**कारण**–किसी मित्र या सम्बन्धी को विष देकर मारने का प्रयास करना या मारना, किसी की पकी फसल में आग लगा देना, किसी की भैंस बच्चा देने वाली हो उसको मार देना या मरवा देना। किसी के मकान में आग लगा देना।

**ग्रह-संकेत**–पहले या आठवें घर में बुध या केतु हों, तो मंगल पीड़ित हो जाता है।

**निशानी**–जातक अपने सम्बन्धियों से मेल-मिलाप नहीं रखता, उनसे घृणा करता है। बच्चों के जन्म-दिन नहीं मनाता। पर्व-त्यौहारों पर खुशियाँ नहीं मनाता। भावहीन होता है।

**अनिष्ट**–युवा होते ही जातक मान-सम्मान प्राप्त करने लगता है। प्रचुर धन संचय करता है। सम्पत्ति अर्जित करता है। जो लोग उसके मार्ग में रोड़ा अटकाने का प्रयास करते हैं, वे स्वयं ही मिट जाते हैं। सफलता निश्चित दिखाई देती है। लेकिन अचानक पासा पलटता है।

मुसीबत पर मुसीबत आती है। शक्ति होने पर भी सन्तान नहीं होती, होती है तो जीवित नहीं रहती, जीवित रहती है तो अपाहिज होती है। शरीर में रक्त की कमी हो जाती है, जोड़ काम नहीं करते, एक आँख से काना हो जाता है। क्रोध अधिक आता है। लड़ाई-झगड़े करता है और पिटता है।

**निवारण**–परिवार के सब सदस्यों से बराबर मात्रा में धन इकट्ठा करके गरीबों के इलाज के लिए किसी वैद्य चिकित्सक को दे दें।

आँखों में सफेद सुरमा लगाने से भी मंगल के अनिष्ट प्रभावों से मुक्ति मिलती है।

## बहन-बेटी का ऋण

**कारण**–किसी की बहन-बेटी पर अत्याचार किये हों, या उसकी हत्या कर दी हो।

**ग्रह-संकेत**–तीसरे या छठे घर में चन्द्रमा हो, तो बुध पीड़ित होता है।

**निशानी**–मासूम बच्चों को चोरी-छिपे बेच देने या बदल देने की प्रवृत्ति।

**अनिष्ट**–बहन-बेटी की शादी के समय या जन्म के समय एकाएक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं। जातक बुरी तरह बर्बाद हो जाता है। धन-कुबेर भी हुआ तो कंगाल हो जाता है। कभी-कभी संतान के जन्म के समय भी दुर्भाग्य की मार पड़ती है।

जातक के शरीर पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। दाँत झड़ जाते हैं। सूँघने की शक्ति बिल्कुल नहीं रहती। सम्भोग करने की शक्ति क्षीण हो जाती है या इच्छा नहीं होती।

**निवारण**–परिवार के सभी सदस्य पीले रंग की कौड़ियाँ एकत्रित करें अथवा खरीद कर लाएँ। उन्हें जलाकर राख बना लें। उस राख को पानी में बहा दें।

दाँतों को साफ रखने और नाक छिदवाने से भी बुध के अनिष्टों से राहत मिलती है।

## पितृ ऋण

**कारण**–किसी भी कारण से कुल पुरोहित (ब्राह्मण) बदला गया हो।

**ग्रह-संकेत**–दूसरे, पाँचवें, नौवें या बारहवें घर में बुध, शुक्र या राहु हो, तो बृहस्पति पीड़ित हो जाता है।

**निशानी**–पड़ोस में कहीं कोई देव-मन्दिर या पीपल का वृक्ष नष्ट कर दिया गया हो।

**अनिष्ट**–बालों पर सफेदी आने के साथ ही दुर्भाग्य का दौर प्रारम्भ हो जाता है। रातों-रात पीला सोना काला लोहा बन जाता है। लोहा राख हो जाता है। धन खो जाता है या चोरी चला जाता है। चोटी के स्थान पर सिर के बाल उड़ जाते हैं। गले में माला पहनना सुहाता है। शिक्षा में बाधा आती है। फलस्वरूप शिक्षा अधूरी रह जाती है। जातक के बारे में निराधार अफवाहें फैलती हैं, जिससे झूठे अभियोग चलते हैं। निर्दोष होते हुए भी जेल के कष्ट सहने पड़ते हैं।

**निवारण**–परिवार के प्रत्येक सदस्य से एक-एक पैसा एकत्र करके मन्दिर में दान दें या अपने घर के समीपस्थ मन्दिर की सेवा करें। पीपल के वृक्ष की देखभाल करें। माथे पर पीले रंग का तिलक लगायें। केसर-तिलक सर्वोत्तम होता है। नाक को सदा साफ रखें। कोई भी काम शुरू करते समय नाक अवश्य साफ कर लें। सिर पर पगड़ी बाँधें या टोपी पहनें।

## निर्दयी ऋण

**कारण**–जीव हत्या करना या धोखा देकर किसी का मकान छीन लेना और उसका मूल्य न चुकाना।

**ग्रह-संकेत**–दसवें, ग्यारहवें घरों में सूर्य, चन्द्र या मंगल हों, तो शनि पीड़ित हो जाता है।

**निशानी**–घर के मकान का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में हो। अनाथों से भूमि छीनकर मकान बनाया हो अथवा मार्ग में या कुएँ की छत पर कमरे बनाए गए हों।

**अनिष्ट**–पीड़ित शनि अनिष्ट करता है। परिवार के लोगों पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है। अग्निकाण्ड होते हैं। घर ढह जाते हैं। परिवार के सदस्य दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं अथवा अपाहिज हो जाते हैं, शरीर के बाल झड़ जाते हैं। शनि के पीड़ित होने पर पलकों और भौंहों के बाल विशेष रूप से झड़ने लगते हैं।



**निवारण**–परिवार के सभी सदस्यों से धन एकत्रित करके एक दिन एक साथ सौ गरीब मजदूरों को भोजन खिलायें अथवा सौ तालाबों से मछलियाँ इकट्ठी करके परिवार के सभी सदस्य उन्हें भोजन दें। 43 दिन तक कौओं को रोटी देने, प्रतिदिन कीकर की दाँतुन करने और लोहे का दान करने से भी शनि के अनिष्ट-निवारण में सहायता मिलती है।

## अजात का ऋण

**कारण**–जिन लोगों से वास्ता पड़े उनके साथ धोखा-धड़ी करके उनका वंश-नाश कर देना।

**ग्रह-संकेत**–बारहवें घर में सूर्य, चन्द्र या मंगल हो, तो राहु पीड़ित हो जाता है।

**निशानी**–घर की दक्षिणी दिशा की दीवार के साथ वीरान कब्रिस्तान या भड़भूजे की भट्टी होगी। घर के मुख्य द्वार की दहलीज के नीचे से घर का गन्दा पानी बाहर निकलने की नाली बहती होगी।

**अनिष्ट**–राहु अचानक अनिष्ट करने वाला ग्रह है। पलक झपकते ही दुर्भाग्य की बिजली कौंध जाती है। जहाँ न्याय की आशा हो वहाँ अन्याय मिलता है। चोरी, डाका, हत्या, आगजनी, बलात्कार जैसे अपराधों के निराधार आरोप लगते हैं। अभियोग चलते हैं। निर्दोष होते हुए भी जातक जेल की हवा खाता है। काला कुत्ता खो जाय या मर जाय, हाथों के नाखून झड़ जायें, सोचने-विचारे की शक्ति मस्तिष्क से लोप हो जाए। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो।

**निवारण**–परिवार के प्रत्येक सदस्य से एक-एक नारियल लेकर एक दिन, एक ही साथ दरिया के पानी में प्रवाहित कर दें।

सिर पर चोटी रखना, ससुराल के लोगों से मेल-मिलाप रखना, संयुक्त परिवार में रहना।

## दैवी ऋण

**कारण**–बुरी नीयत के कारण दूसरों के बेटे या कुत्ते को नष्ट किया हो।

**ग्रह संकेत**–छठे ग्रह में चन्द्र या मंगल हो, तो केतु पीड़ित होता है।

**निशानी**–दूसरों के पुत्र को धोखे से मारना, कुत्तों को गोली से मारना या मरवाना, सम्बन्धियों के प्रति बुरी नीयत रखते हुए उनके वंश-नाश कर देना।

**अनिष्ट**–केतु की पीड़ित होने से नर-सन्तान का नाश होता है। नर-सन्तान तो प्रायः होती नहीं, होती है तो जीवित नहीं रहती। जीवित भी रही तो लूली-लँगड़ी, अन्धी-बहरी, अपंग अपाहिज होती है।

**निवारण**–परिवार के प्रत्येक सदस्य के बराबर मात्रा में धन एकत्र करके ही एक दिन, एक साथ सौ कुत्तों को रोटी खिलायें। पड़ोस में रहने वाली विधवा की सहायता करके उसका आशीर्वाद लें।

घर में काले रंग का कुत्ता पालें तथा कान छेदन करवाएँ।

❑❑❑

# 21 घरों और ग्रहों का मेल

यह बात सर्वविदित है कि दो बेजान या जानदार वस्तुओं के मिलने से तीसरी वस्तु बनती है। दो शत्रुओं के मिलने पर झगड़ा और दो मित्रों के मिलने पर प्रेम का वातावरण बनता है। स्त्री और पुरुष के आपसी मेल से तीसरा जीव अर्थात् बच्चा उत्पन्न होता है। एक दवा को दूसरी दवाई के साथ मिलाने से तीसरी दवा बनती है। एक रंग को दूसरे से मेल पर तीसरा रंग बनता है, उसी प्रकार एक ग्रह से दूसरे ग्रह के साथ मिलाने पर तीसरा ग्रह बन जाता है। जैसे–

- सूर्य बुध के साथ मिलने पर 'मंगल' बन जाता है।
- बुध शुक्र के साथ मिलने पर 'सूर्य' बन जाता है।
- सूर्य शुक्र के साथ मिलने पर 'बृहस्पति' बन जाता है।
- सूर्य बृहस्पति के साथ मिलने पर 'चन्द्र' बन जाता है।
- राहु केतु के मिलने पर 'शुक्र' बन जाता है।
- बृहस्पति राहु के मिलने पर 'बुध' बन जाता है।
- बृहस्पति और शुक्र के मिलने पर 'शनि' बनता है।
- मंगल शनि के मिलने पर 'राहु' बनता है।
- शुक्र शनि के मिलने पर 'केतु' बनता है।

दो ग्रहों के आपसी मेल से शुभ या अशुभ फल सामने आते हैं। इसलिए दो ग्रहों को मिलने से रोककर या दो ग्रहों को आपस में मिलाकर ग्रहों के मन्दे प्रभाव से बचने का निवारण करना चाहिए।

बारह घरों और नौ ग्रहों की अपनी अलग-अलग अवस्था में क्या विशेषता और शक्ति है यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। कुण्डली के घरों द्वारा ग्रह आपस में मिलते हैं और ग्रहों द्वारा घर आपस में मिलते हैं, जिसके फलस्वरूप जातक को दुःख-सुख भोगना पड़ता है। जिस प्रकार शत्रु के मिलने पर कष्ट का सामना करना पड़ता है। उसी प्रकार किसी भी ग्रह का शत्रु ग्रह के मेल से जातक को मंदे समय का अथवा दुःख का सामना करना पड़ता है।

प्रत्येक ग्रह किसी-न-किसी एक या दो घरों का स्वामी है, जिसके कारण उस स्वामी ग्रह का सम्बन्ध अपने घर से जुड़ा रहता है, भले ही वह ग्रह अपने स्वामित्व वाले घर के अतिरिक्त किसी और के ही घर में क्यों न हो। घर के स्वामी ग्रह का प्रभाव अपनी मिल्कियत वाले घर में मौजूद रहा करता है। अतः कोई भी अकेला ग्रह किसी भी घर में हो, वह उस घर के स्वामित्व वाले या उस घर के मालिक ग्रह से युक्त माना जाएगा। जैसे–



- पहले घर में राहु हो, तो वह मंगल से युक्त समझा जाएगा, भले ही मंगल किसी दूसरे घर में क्यों न हो।
- दूसरे घर में सूर्य हो, तो वह शुक्र से युक्त समझा जाएगा, भले ही शुक्र किसी दूसरे घर में क्यों न हो।
- तीसरे घर में केतु हो, तो वह बुध से युक्त समझा जाएगा, भले ही बुध किसी दूसरे घर में हो।
- चौथे घर में केतु हो, तो वह चन्द्र से युक्त समझा जाएगा, भले ही चन्द्र किसी दूसरे घर में हो।
- पाँचवें घर में शुक्र हो, तो वह सूर्य से युक्त समझा जाएगा, भले ही सूर्य किसी दूसरे घर में हो।
- छठे घर में चन्द्र हो, तो वह बुध और केतु से युक्त समझा जाएगा। चाहे बुध और केतु किसी दूसरे घर में क्यों न हों।
- सातवें घर में बृहस्पति शुक्र से युक्त समझा जाएगा, चाहे शुक्र किसी दूसरे घर में ही क्यों न हो।
- आठवें घर में शुक्र मंगल से युक्त समझा जाएगा, चाहे मंगल किसी दूसरे घर में ही क्यों न हो।
- नौवें घर में शुक्र बृहस्पति से युक्त समझा जाएगा, चाहे बृहस्पति किसी दूसरे ही घर में क्यों न हो।
- दसवें घर में सूर्य शनि से युक्त समझा जाएगा, चाहे शनि किसी दूसरे ही घर में क्यों न हो।
- ग्यारहवें घर में चन्द्र शनि से युक्त समझा जाएगा, चाहे शनि किसी दूसरे ही घर में क्यों न हो।
- बारहवें घर में मंगल बृहस्पति से युक्त समझा जाएगा, चाहे बृहस्पति किसी दूसरे ही घर में क्यों न हो।

इसके अलावा खाली घर में भी घर का स्वामी ग्रह होता हुआ माना जाएगा और घरों की एक-दूसरे घर पर आपसी दृष्टि के कारण दूसरे घर के ग्रहों और उनके स्वामी ग्रहों को प्रभावित करता होगा। अर्थात्–कोई भी ग्रह किसी भी घर में हो किसी-न-किसी दूसरे ग्रह से युक्त हुआ करता है। अतः एक ग्रह के दूसरे ग्रहों को प्रभावित करने के फलस्वरूप दुःख और सुख जन्म लेते हैं। घरों या घरों की आपसी एक-दूसरे घर पर दृष्टि द्वारा ग्रहों का आपसी मेल या लड़ाई ही दुःख और सुख की जड़ है।

यदि ग्रह ऐसे घरों में हो जाता हो, जहाँ वह किसी दूसरे ग्रह को पीड़ित करके उसके फल को नष्ट कर रहे हों और स्वयं आप भी दूसरे ग्रहों से पीड़ित हो रहा हों और शुभ घरों में न होकर उत्तम फल न देने योग्य हो, तो जातक सुखी और परेशान रहेगा। उस समय ग्रह का घर बदल देना ही सहायक सिद्ध होगा।

किसी भी ग्रह की स्थिति किसी दूसरे ग्रह के साथ चाहे किसी भी कारण हो, उसका अच्छा या बुरा कुछ-न-कुछ प्रभाव हुआ करता है। यदि अमृत अमृत के साथ मिले, तो दोनों की शक्ति बढ़ेगी, विष–विष से मिलने तो भी दोनों की शक्ति बढ़ेगी। अमृत विष के साथ मिले तो कुछ और ही प्रभाव होगा। इसी प्रकार ग्रहों के आपसी मिलन का भी प्रभाव होता है। कोई भी ग्रह मंदे घर में हो और पीड़ित हो तथा उस समय उसका मित्र ग्रह उसके साथ मिले, तो उस मंदे और पीड़ित ग्रह का मंदा प्रभाव कम हो जाएगा।

सांसारिक दैनिक दशा ग्रहों के मित्रता-शत्रुता बतलाते हैं। संसार की सभी सजीव या निर्जीव वस्तुएँ किसी-न-किसी ग्रह से सम्बन्ध रखती हैं। जैसे दूध, माता, चावल आदि चन्द्र से सम्बन्धित हैं और सोना, केसर, पिता, ब्राह्मण, बूढ़ा आदि का सम्बन्ध बृहस्पति से है।

**परस्पर शत्रु ग्रह**

- बृहस्पति के शत्रु बुध, शुक्र और राहु हैं।
- सूर्य के शत्रु शुक्र, शनि और राहु हैं।
- चन्द्र का शत्रु राहु और केतु हैं।
- शुक्र के शत्रु सूर्य, चन्द्र और राहु हैं।
- मंगल के शत्रु बुध और केतु हैं।
- बुध की शत्रुता चन्द्र और बृहस्पति से है।
- शनि की शत्रुता सूर्य, चन्द्र और मंगल से है।
- राहु की शत्रुता सूर्य, मंगल और शुक्र से है।
- केतु की शत्रुता चन्द्र और मंगल से है।

राहु और केतु दोनों का प्रभाव एक-दूसरे के विपरीत होता है। राहु बुराई तो केतु नेकी की सोचता है। राहु मनुष्य द्वारा की हुई बुराइयों का ब्यौरा रखता है, तो केतु मनुष्य द्वारा की हुई अच्छाइयों का। शनि को अपना गुरु मानकर दोनों जातक की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ उसके सामने रखते हैं। दोनों की बात सुनकर शनि अपना निर्णय देता है।

**परस्पर मित्र ग्रह**

- बृहस्पति के मित्र सूर्य, चन्द्र और मंगल हैं।
- सूर्य के मित्र बृहस्पति, चन्द्र और मंगल हैं।
- चन्द्र के मित्र सूर्य, बृहस्पति और मंगल हैं।
- शुक्र के मित्र शनि, बुध और केतु हैं।
- मंगल के मित्र सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति हैं।
- बुध के मित्र सूर्य, शुक्र और राहु हैं।
- शनि के मित्र बुध, शुक्र और राहु हैं।
- राहु के मित्र बुध और शनि हैं।
- केतु के मित्र शुक्र और राहु हैं।

कुछ ग्रह दूसरे ग्रह के साथ मिलने से बलवान होते हैं चाहे वह ग्रह आपस में मित्र भी न हो, जैसे–

- बृहस्पति के साथ लगने पर केतु बलवान होगा।
- बुध के साथ लगने से सूर्य बलवान होगा।
- शनि के साथ लगने से शुक्र बलवान होगा।
- चन्द्र के साथ लगने से मंगलबद का दोष दूर होगा।
- चन्द्र के चौथे घर में सभी ग्रह शांत होंगे, सिवाय मंगल के।

ग्रहों की उपर्युक्त मित्रता/शत्रुता प्रतिदिन सामने आने वाले हालात से सिद्ध होती है। जैसे चूहा (केतु) की शत्रुता बिल्ली (राहु) से और उसका उल्टा शत्रु कुत्ता (केतु)। वकरी (बुध) की शत्रुता कुत्ते (केतु) से और सर्प (शनि) की शत्रुता बन्दर (सूर्य) से जिसका शत्रु गोली-सिक्का (राहु)।



कुंडली का तीसरा घर बुध की मिल्कियत है, जिस पर मंगल ने मकान बनाया है। तीसरा घर मंगल और बुध का सांझा स्थान है। यदि तीसरे घर में सूर्य अकेला ही हो, तो भी सूर्य मंगल और बुध का मेल तीसरे घर में गिना जाएगा।

सूर्य के तीसरे घर में आने पर सूर्य के साथ बुध जुड़ जाएगा। सूर्य की शक्ति के कारण बुध मंगल का साथ छोड़कर सूर्य के साथ लग जाएगा। इस प्रकार तीसरे घर में मंगल (जिसने यहाँ मकान बनाया है) और सूर्य बुध की जोड़ी का प्रभाव गिना जाएगा। सूर्य और बुध मिलकर मंगल का प्रभाव दिया करते हैं।

अतः तीसरे घर में सूर्य, बुध, मंगल की बजाय अब दोगुणा मंगल का प्रभाव होगा अर्थात् मंगल का दो गुणा प्रभाव अब तीसरे घर में होगा जिसके फलस्वरूप जातक अपने बाहुबल का सहारा लेकर स्वयं अपना भविष्य बनाने की शक्ति रखता होगा। पहुँचा या कलाई जो मनुष्य के शरीर का भाग है, जन्मकुंडली का तीसरा घर कहलाता है। अतः तीसरा घर खाली होने पर यदि जातक अपनी कलाई (पहुँचे) पर ताँबे का कड़ा पहने, तो जातक का सूर्य उसकी जन्मकुंडली के तीसरे घर में प्रभाव देने लगेगा। ताँबा सूर्य की वस्तु है और कड़े की गोलाई सूर्य का आकार। इसलिए ताँबे का कड़ा सूर्य की वस्तु है जो कलाई (पहुँचे) पर पहनने से सूर्य तीसरे घर में गिना जाएगा। क्योंकि पहुँचा (कलाई) कुंडली का तीसरा घर माना गया है। यदि जन्मकुंडली में सूर्य आठवें या दसवें घर में होने के कारण मंदा प्रभाव दे रहा है, तो ताँबे का कड़ा पहनने पर सूर्य अपना प्रभाव तीसरे घर में देने लगेगा।

किन्तु उस समय इस बात का ध्यान रखना होगा कि ग्यारहवें या नौवें घर में शनि न हो। सूर्य के तीसरे घर में होने पर शनि नौवें या ग्यारहवें घर में होगा तो सूर्य की दृष्टि शनि पर होगी, जिसके कारण शुक्र के सुख में बाधा पड़ेगी। अतः शनि के नौवें या ग्यारहवें घर में होने की सूरत में ताँबे का कड़ा पहनने से लाभ न होगा। किन्तु जब शनि की दृष्टि सूर्य पर होगी, तो शुक्र फल उत्तम होगा।

उदाहरण के लिए सूर्य नौवें या ग्यारहवें में हो और उस समय शनि किसी ऐसे घर में हो जहाँ से वह मंदा न हो रहा हो (छठे, आठवें आदि में) और उसकी दृष्टि सूर्य पर न पड़ रही हो, तो उस समय फौलाद (लोहे) का कड़ा पहना लाभदायक होगा और शुक्र सुख को बहाल करने में सहायक होगा। मंगल और बुध मिलकर शनि का प्रभाव दिया करते हैं। तीसरा घर मंगल और बुध से प्रभावित होने के कारण शनि का प्रभाव पहले ही रखता है। लोहे (स्टील) का कड़ा पहनने से शनि तीसरे में दो गुणा प्रभाव देगा और नौवें या ग्यारहवें घर के सूर्य पर दृष्टि डाल कर शुक्र फल को उत्तम करेगा, क्योंकि जब शनि की दृष्टि सूर्य पर होगी, तो शुक्र का फल उत्तम होगा और यदि सूर्य की दृष्टि शनि पर होगी, तो शुक्र फल नष्ट होगा।

उदाहरण के लिए पाँचवें घर में सूर्य, बुध, शुक्र पति या पत्नी सुख में बाधक हुआ करते हैं, क्योंकि–

- पाँचवाँ घर शुक्र के शत्रु सूर्य का है और सूर्य स्वयं अपने घर में शुक्र को पीड़ित करेगा।
- बुध ऐसे समय में अपने मित्र शुक्र का साथ छोड़कर सूर्य के प्रभाव में होगा और शुक्र अकेला रह जाएगा पीड़ित होने के लिए। पाँचवाँ घर केतु औलाद का भी है।

ऐसे समय पुत्र जन्म ले तो केतु शुक्र की शक्ति बढ़ाने का प्रयास करेगा, क्योंकि केतु शुक्र का भाग है। इस प्रकार शुक्र सूर्य के मुकाबले पर आ जाएगा और नौबत तलाक तक आ जाएगी इस प्रकार ग्रह जिस घर में भी होगा उसके मालिक ग्रह से प्रभावित होकर अपना अच्छा या बुरा प्रभाव देगा।

इसलिए कोई भी कुंडली सम्मुख आने पर इस बात की ओर ध्यान दिया जाना बहुत जरूरी है कि कौन-सा ग्रह किस ग्रह से युक्त (मिलने) होने पर, अच्छा या बुरा कैसा प्रभाव दे रहा है? इसी आधार पर ग्रह शुभ स्थान या घर में होते हुए भी निष्फल होकर मंदा असर देने वाले हो जाते हैं।

यहाँ पूरे नौ ग्रहों के साथ प्रत्येक ग्रह का एक-दूसरे से मेल होने के बारे में अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। इसके बारे में विस्तार से बतलाया जा रहा है। इसकी जानकारी के बिना किसी की भी कुंडली का फल बताना बेकार होगा। जन्मकुंडली के किस घर में, किस ग्रह के मेल से क्या नफा या नुकसान होगा, इसकी जानकारी जरूर हासिल कर लेनी चाहिए।

## सूर्य व चन्द्र का मेल

**पहले घर का फल**

इस घर में सूर्य व चन्द्र के मेल से जातक दूसरों से कर वसूल करने वाला होता है। उसकी आयु लम्बी रहती है, किन्तु मौत अचानक आती है। उसका जीवन भौतिक सुखों से परिपूर्ण रहता है। जातक हाथ के काम का कारीगर होता है। ऐसा जातक सरकारी धन से लाभ उठाने वाला, सिविल सर्जन, डॉक्टर आदि बन सकता है। सूर्य जिन्दगी का मालिक है, तो चन्द्र चमकते मोती के समान धन व माया का स्वामी है। इन दोनों ग्रहों का प्रभाव जातक के जीवन पर चालीस वर्षों तक रहता है। जातक को पैतृक संपत्ति का लाभ होता है।

**दूसरे घर का फल**

इसमें सूर्य व चन्द्र के शुभ होने पर जातक सुन्दर और आलीशान मकान में रहता है। वह शानदार जीवन जीता है और बेधड़क व कठोर होता है। यदि जातक बुरी स्त्री की सोहबत में न फँसे तो उसे सरकार से मान-सम्मान प्राप्त होता है और उसकी चहुँमुखी प्रगति व विकास होता है। इन दो ग्रहों की युति अशुभ हो, तो स्त्रियों से वाद-विवाद, दुश्मनी होती रहती है। जातक को स्त्री के कारण हानि उठानी पड़ती है।

**तीसरे घर का फल**

सूर्य-चन्द्र शुभ स्थिति में हों, तो जातक बड़े पैमाने पर धन-सम्पत्ति एकत्र करता है, बशर्ते कि वह लोभी न हो। अशुभ स्थिति में जातक स्वयं के लिए उदारता बरतता है, पर दूसरों के लिए स्वार्थी रहता है। उसे भाई-बहनों से अपमानित होना पड़ता है। धन-दौलत का नुकसान भी उसे सहना पड़ता है।

**चौथे घर का फल**



इस घर में सूर्य-चन्द्र के मेल से जातक अधिक भाग्यवान रहता है। इनके शुभ होने की स्थिति में उसे राज्य से सम्मान प्राप्त होता है। वह धनवान और दानवीर व ऐश करने वाला होता है। यदि जन्मकुंडली में दसवाँ घर खाली हो, तो जातक का ट्रांसपोर्ट-ट्रैवल्स का वड़ा व्यवसाय रहता है। शनि से सम्बन्धित कार्यों से उसे धन मिलता है। रिश्तेदारों से भी आर्थिक सहयोग मिलता है। मृत्यु अचानक और दिन के समय होती है।

**पाँचवें घर का फल**

इस घर में सूर्य-चन्द्र के मेल से जातक पूरी जिन्दगी जीता है, भाग्यवान होता है। उसे परमार्थ से भी धन प्राप्त होता है। पत्नी के गर्भवती होते ही भाग्योदय हो जाता है। जातक जीवनभर पर्याप्त सुख भोगता है और ऐश की जिन्दगी बसर करता है।

अशुभ स्थिति में संतान का विरोध सहन करना पड़ता है। सरकार से अपमानित होकर उसे सजा भोगनी पड़ती है।

**छठे घर का फल**

उपरोक्त ग्रहों के मेल से जातक सरकार से मान-सम्मान प्राप्त करता है। मुकदमेबाजी में जीतता है। व्यवसाय में बार-बार बदलाव आते हैं। नौकरी में भी बार-बार स्थानांतरण होता रहता है। जातक दयालु स्वभाव का होता है। प्रवासी विक्रेता के रूप में उसे यश प्राप्त होता है। दूसरों के प्रति उसके मन में सद्भावना और सहानुभूति रहती है। यदि जन्मकुंडली का दूसरा घर खाली हो, तो माता के लिए अशुभ रहता है। जातक की आयु मध्यम रहती है।

**सातवें घर का फल**

यहाँ सूर्य व चन्द्र का मेल होने पर साझेदारी में लाभ मिलता है। विदेश यात्रा सफल होती है। अशुभ होने पर पति-पत्नी सम्बन्धों में दरार आती है और दोनों में तलाक हो जाता है। विवाह में भी अवरोध उत्पन्न होते हैं।

**आठवें घर का फल**

जातक दीर्घायु होता है। उसे पैतृक जमीन-जायदाद एवं दौलत मिलती है।

**नौवें घर का फल**

इस ग्रहों से युक्त जातक माँ और ननिहाल के सदस्यों की सेवा मन लगाकर करता है और उसे इस सेवा का अच्छा फल प्राप्त होता है। अशुभ स्थिति में होने पर प्रवास में दुःख उठाने पड़ते हैं। जातक संकुचित और दरिद्री मनोवृत्ति का रहता है।

**दसवें घर का फल**

उक्त ग्रहों के मेल से जातक समाज सेवक और नेता बनता है। पिता के लिए शुभ असरकारक होता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

उक्त ग्रहों के मेल से जातक महत्त्वाकांक्षी, आज्ञाकारी एवं उच्चाधिकारी होता है।

सूर्य-चन्द्र इस घर में अशुभ स्थिति में हों, तो जातक झूठ बोलने वाला, माता से झगड़ने वाला और माँसाहारी होता है। यदि जातक माँसाहार करना छोड़ दे, तो दीर्घायु होता है अन्यथा अल्पायु रहता है।

**बारहवें घर का फल**

सभी प्रकार का फल इस घर में अच्छा मिलता है। ऐसे जातक को विदेश से सम्बन्धित कार्यों में यश प्राप्त होता है। जातक तंत्र-मंत्र एवं गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होता है।

अशुभ स्थिति होने पर जातक व्यभिचारी होता है। विधवा या नीच जाति की स्त्रियों से उसका सम्बन्ध बना रहता है। जातक दुःखी जीवन व्यतीत करता है।

## मंदी हालत

बृहस्पति 6, 7, 10, 11 एवं सूर्य 6, 7, 10 घरों में से किसी घर में हो और शुक्र इनसे पहले घरों में हो, तो दोनों ग्रहों का प्रभाव मंदा रहता है। धन-सम्पत्ति की कमी रहती है और अपमानित होने की आशंका सदैव बनी रहती है।

शनि की दृष्टि हो या दोनों चौथे या दसवें घर में हों, तो दोनों का फल सोया हुआ होता है और केतु की महादशा में सात वर्ष तक संतान और ननिहाल का हाल बुरा रहता है। नौकरी आदि में भी परेशानी रहेगी। शनि शुभ रहा तो किसी हद तक उत्तम प्रभाव अनुभव होता है, अन्यथा बुरा प्रभाव ही भोगना पड़ता है।

जब दोनों के ग्रह ऐसे घरों में हों, जहाँ सूर्य का असर मन्दा हो, तो जातक का भाग्य भी मंदा होता है। उसे हर कार्य में असफलता मिलती है। जीव दुःख से भरा होता है।

यदि दोनों ग्रह तीसरे घर में हों और जातक लालची हो, तो लाखों की सम्पत्ति का स्वामी होते हुए भी कुछ बचा नहीं रहता।

## सूर्य व मंगल का मेल

सूर्य और मंगल, ये दोनों ग्रह अग्नि के स्वरूप माने गये हैं। ये ग्रह शुद्ध करने वाले, आगे बढ़ाने वाले और अच्छे फलदायी होते हैं। सूर्य और मंगल जन्मकुंडली में होने पर चन्द्र के शुभ फल प्राप्त नहीं होते। यहाँ चन्द्र खामोश बैठता है। जातक अपने कुल का तारनहार होता है। शुभ अवस्था में जन्मकुंडली के किसी भी घर में होने पर शुभ फल मिलता है। आर्थिक दृष्टि से तथा माता की दृष्टि से भी फल अच्छे नहीं मिलते। 5, 7, 9 घरों में से किसी घर में कोई अन्य ग्रह बैठा हो, तो मंगल का असर बुरा होता है। ऐसी स्थिति में जातक अपाहिज या तपेदिक का रोगी होता है। प्रायः ऐसे जातक लोक-सेवा या समाज-सेवा के कार्यों में लिप्त रहते हैं।

जातक को चौरस मकान लाभकारक रहता है। जातक स्वयं और उसका बड़ा भाई दोनों अमीर होते हैं। जातक साफ दिल का, पक्का धार्मिक होता है। जैसे-जैसे जातक की उम्र बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती जाती है।

कुंडली के पहले या दूसरे घर में यह मेल हो, तो जातक छोटी उम्र में ही तेजस्वी बनता है। जातक स्पष्ट वक्ता, खुले मन का, उदार हृदयी, दीर्घायु एवं शत्रुहंता होता है। नौवें घर में सूर्य और मंगल का शुभ मेल होने पर जातक मान-प्रतिष्ठा से युक्त, सुख-समृद्धि



प्राप्त करने वाला होता है। इस मेल में यदि मंगल अशुभ हो, तो भाई-बाँधवों में धन-सम्पदा को लेकर लड़ाई-झगड़े होते हैं।

दसवें घर में होने पर जातक को धनवान, भाग्यवान बनाती है। अशुभ हो, तो भाई रुपया-पैसा लेकर भाग जाता है और कोर्ट-कचहरी करनी पड़ती है। ग्यारहवें घर में शनि और चन्द्र छठे घर में हो एवं सूर्य और मंगल का मेल दसवें घर में हो, तो जातक बहुत धनवान और उच्च पद पर आसीन होता है। सूर्य और मंगल में मंगल मंदा हो, तो जातक को पैतृक मकान मिलता है। समाज में उसे अपमानित होना पड़ता है। व्यापार-व्यवसाय या नौकरी में दंगा-फसाद होता है। धोखाधड़ी के कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। जातक दीर्घायु होता है, किन्तु उसको कई रिश्तेदारों की मृत्यु देखनी पड़ती है। जातक की आँखें खराब होती हैं। जिस पर या जहाँ भी इसकी दृष्टि पड़े वहाँ अशुभ होता है।

अशुभ मंगल और सूर्य की युति पहले या दूसरे घर में हो, तो जातक की मृत्यु रणक्षेत्र में होती है। दसवें घर में हो, तो सगे-सम्बन्धियों के साथ धन-सम्पदा को लेकर मुकदमेबाजी होती है।

## मंदी हालत

जब मंगल अशुभ दशा में हो, तो जीवन में कड़ा विरोध सहना पड़ता है। धोखेबाजी, सगे-सम्बन्धियों की मृत्यु देखनी पड़ती है। खुद की नजर पर भी बुरा असर होता है।

## सूर्य व बुध का मेल

कुंडली में सूर्य और बुध का मेल होने पर वे बृहस्पति का फल प्रदान करते हैं। शुभ मंगल जातक को अपने पैरों पर खड़ा करता है। जातक को सरकारी नौकरी मिलती है। दोनों ग्रहों का मेल जातक को उम्र के 39वें वर्ष तक प्राप्त होते हैं। बुध की तुलना में सूर्य का फल विशेष प्राप्त होता है। ऐसे संदर्भ में मोटे तौर पर सूर्य का अशुभ फल नहीं मिलता, लेकिन बुध दुर्बल हो सकता है।

जिस घर में सूर्य का फल नीच का मिलता है, वहाँ बुध भी दुर्बल बनता है। बुध से सम्बन्धित चीजें सूर्य के लिए मदद देती हैं। शुक्र की महादशा में उत्तम धन-संतान प्राप्त होती है, व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होती है। यदि बुध दुर्बल हो, तो उम्र के चालीस वर्षों तक व्यापार में मंदापन रहता है। जातक की सत्तर साल की उम्र हो, तो बुध के फल स्पष्ट तौर से सामने नहीं आते।

सूर्य-बुध का मेल जन्मकुंडली के किसी भी घर में हो एवं दोनों पर शनि की दृष्टि हो, तो जातक को 33 एवं 30 वर्ष की आयु तक शनि सम्बन्धी कारोबार में लाभ होता है।

अगर शनि की दृष्टि न हो, तो तीसरे घर के अनुसार सूर्य की दस और बुध की तीन कुल तेरह की आवक होती है। ऐसा जातक दीर्घायु रहता है। मृत्यु के समय वह किसी का मोहताज नहीं होता। जातक को कलम और तालीम मददगार होती है। ऐसा जातक बिजली की रोशनी में कारोबार करे और रात्रि के समय में बिजली की रोशनी में लेखन करे, तो उसका अच्छा फल प्राप्त होता है।

जातक का भाग्य जवानी में जागता है। जातक की पत्नी दृढ़ मनोबल से युक्त रहती है। उसके चेहरे पर कोई निशान होता है। ऐसा जातक दूसरों के भरोसे कभी न रहे, स्वयं की कमाई पर भरोसा रखकर आगे बढ़े तो शुभ परिणाम सामने आता है। जातक खुद

आगे बढ़ने वाला होता है। उसका स्वास्थ्य उत्तम रहता है। कुण्डली के तीसरे, चौथे या पाँचवें घर में शनि हो एवं सूर्य शनि का विग्रह न हो, तो सदैव फल की प्राप्ति होती है।

**पहले घर का फल**

इस घर में सूर्य और बुध के मेल से जातक उच्च स्तर का सलाहकार, परामर्शदाता होता है। शासन के साथ उसके उत्तम सम्बन्ध बनते हैं। यदि शनि का बुरा असर न हो, तो कोर्ट-कचहरी के फैसले जातक के पक्ष में होते हैं।

**दूसरे घर का फल**

दूसरे घर में इस मेल का प्रभाव अच्छा होता है। जातक का मन एवं शरीर सुदृढ़ रहता है।

**तीसरे घर का फल**

यहाँ सूर्य और बुध का होना इस घर में उत्तम फलदायी होता है। राहु का बुरा प्रभाव जातक पर नहीं होता। शुक्र शुभ होने पर राहु बिगड़ता है। फलस्वरूप जातक आशिक मिजाज होता है, पर उसकी बदनामी नहीं होती।

**चौथे घर का फल**

सूर्य व बुध के मेल से जातक सरकारी कारोबार करता है। वह कपड़े व रेशम के धंधे में धन कमाता है। उसे बृहस्पति की चीजों के व्यापार से लाभ होता है। सूर्य और बुध दोनों के उत्तम फल से जातक लाभान्वित होता है। साथ ही शनि का मंदा प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

**पाँचवें घर का फल**

सूर्य और बुध का मेल पाँचवें घर में हो, तो बुध की उम्र सत्रह से चौंतीस वर्ष होती है और इस समयावधि में शनि का मंदा असर प्रकट नहीं होता। इसके कारण संतान एवं बुजुर्गों पर कोई खराब प्रभाव नहीं पड़ता।

**छठे घर का फल**

कुंडली के छठे घर में सूर्य और बुध का मेल हो और दूसरा घर खाली हो, तो जातक को संतान सुख बेहतर मिलता है। सत्ता में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। जातक की कलम में जान होती है। यहाँ मंगल का खराब असर मिट जाता है और शनि का असर शुरू हो जाता है।

**सातवें घर का फल**

इस घर में शुक्र का प्रभाव मंदा हो जाता है। पत्नी का भाग्य अच्छा रहेगा या बुरा, इस बात का निर्णय जन्मकुंडली में स्थित शुक्र की स्थिति से लिया जाता है। शुक्र शुभ होने पर जातक की पत्नी धनवान परिवार से होती है। वह तेजस्वी एवं पूर्ण रूप से भाग्यवान होती है। अशुभ शुक्र होने पर भी जातक की आमदनी अच्छी ही रहती है। आमदनी का लाभ उसके प्रिय व्यक्तियों को भी मिलता है। जातक असमर्थ लोगों को भी अपनी कमाई का कुछ भाग देता है। जातक परिश्रम एवं अवरोधों की परवाह नहीं करता। बहुत ही आसानी से अपनी मुसीबतों का मुकाबला करने में कामयाब होता है। ज्योतिष एवं गूढ़



विद्याओं का ज्ञान जातक को रहता है। केतु-बुध का फल चौंतीस वर्ष की आयु के बाद शुभ होता है। जातक की जवानी कुछ मुसीबतों में गुजरती है, परन्तु बचपन एवं बुढ़ापा अच्छा बीतता है।

**आठवें घर का फल**

सूर्य और बुध दोनों का मेल जन्मकुंडली के आठवें घर में हों, तो बुध का अशुभ फल प्राप्त होता है। इस युति पर दूसरे ग्रहों की दृष्टि न रहने पर और भी अशुभ फल मिलता है। दोनों ग्रहों का फल आठवें घर में शुभ मिले इसलिए काँच की बरनी (जार) में गुड़ भरकर उसे श्मशान में दबा आएँ।

**नौवें घर का फल**

इस मेल का फल विद्याभ्यास एवं शासन के संदर्भ में जातक की चौबीस साल की उम्र के बाद शुभ होता है। चौंतीस साल की उम्र के बाद चहुँमुखी उन्नति होती है। चौंतीस साल की उम्र तक जातक के लड़का नहीं होता। जातक की कन्या को भी उसकी बाइस वर्ष की आयु तक पुत्र नहीं होता। जातक की तीसरी कन्या के जन्म से छह वर्ष का समय अच्छा होता है। कन्याओं में से किसी कन्या का जन्म रविवार या मंगलवार के दिन हुआ हो, तो सूर्य और मंगल का उपाय करें।

**दसवें घर का फल**

इस घर में सूर्य और बुध के मेल से जातक धनवान बनता है। जन्मकुण्डली के प्रथम या दूसरे घर के ग्रहों की मित्रता या शत्रुता का असर भी जातक के भाग्य से जुड़ा रहता है। पहला और दूसरा घर खाली हो, तो श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है। शनि का फल उसके स्थान के अनुसार प्राप्त होता है। अशुभ शनि हो, तो बदनामी होती है।

**ग्यारहवें घर का फल**

इस घर में सूर्य और बुध के मेल से जातक के पैतृक घर में सज्जन, धर्मात्मा पुरुषों का निवास हो, तो जातक का नसीब चमकदार रहता है। दोनों ग्रहों के शुभ-अशुभ परिणामों का संकेत जातक के परिवारजनों के ऊपर प्रकट होता है। ऐसे परिणाम पैतृक या स्वयं के मकान के विषय में होते हैं। अगर पैतृक मकान के जहरीले या शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करने वाले उस मकान में रहने लगें, तो उसका बुरा असर जातक के जीवन पर पड़ता है। बाप-दादों के मकान में वेश्यावृत्ति-व्यभिचार होता हो, तो उसके बुरे असर की निशानी है।

**बारहवें घर का फल**

जन्मकुंडली के बारहवें घर में उपर्युक्त दोनों ग्रहों के अलग-अलग स्वंतत्र फल प्राप्त होते हैं। बुध का सूर्य पर अशुभ प्रभाव देखने में नहीं आता। सरकारी काम-काज या शारीरिक प्रभाव की अशुभता को टालने के लिए जातक अपने शरीर पर सोना धारण करे अथवा गले में ताँबे का पैसा लटका दें।

पारिवारिक दृष्टि से बुध से सम्बन्धित सजीव या निर्जीव वस्तु, व्यापार या रिश्तेदारों का व्यर्थ बोझ जातक पर बना रहता है। स्वास्थ्य बिगड़ता है। नस नाड़ी-संस्थान से सम्बन्धित रोग उत्पन्न होते हैं। इस घर का बुध छठे घर में बैठे ग्रहों को निर्बल बनाता है।

## सूर्य व बृहस्पति का मेल

कुंडली में जातक के पिता का प्रतिनिधित्व बृहस्पति ग्रह करता है। सूर्य उसका पुत्र है। किसी कारण जातक के भाग्य का लाभ उसके पिता और पुत्र दोनों को मिलता है। सूर्य और बृहस्पति मिलकर चंद्र बनता है। चमकती चाँदी और चमकीले मोती की तरह जातक का भाग्य भी दमकता होता है।

**पहले घर का फल**

इस घर में सूर्य और बृहस्पति के मेल से जातक अपने पिता का नाम रोशन करता है। उनकी शान में चार चाँद लगाता है। 38 वर्ष की उम्र तक जातक सरकारी धन से लाभान्वित होता है। शासन में बड़े ओहदे पर काम करता है। अशुभ स्थिति में चारों तरफ से संकटों से घिर जाता है तथा परिवार को कलंकित करता है।

**दूसरे घर का फल**

दूसरे घर में सूर्य और बृहस्पति के मेल से जातक बहादुर एवं क्रूर होता है। स्वयं के परिवार, समाज का पालनहार होता है। समाज एवं देश में उसकी शोहरत फैलती है। जातक आलीशान मकान में रहकर समृद्ध जीवन गुजारता है। अशुभ स्थिति में जातक घर जमाई बनकर ससुराल का माल खाता है। ससुराल और समाज दोनों क्षेत्रों में बदनाम होता है।

**तीसरे घर का फल**

ग्रहों के मेल से जातक के धन में वृद्धि होती है, बशर्ते कि वह लालची न हो। लोभ-लालच का त्याग करे तो वह करोड़पति बन सकता है। अशुभ स्थिति में या लालची स्वभाव के कारण वह बर्बाद होता है। पूरे परिवार का सर्वनाश उसी के हाथों होता है।

**चौथे घर का फल**

इस घर में उक्त ग्रहों के मेल से जातक जमीन-जायदाद का उत्तम सुख प्राप्त करता है। उसे वाहन-सुख भी प्राप्त होता है। शासन से सम्मानित होता है, विद्याध्ययन पूर्ण करता है, शनि की वस्तुओं के व्यापार एवं शनि सम्बन्धित रिश्तेदारों से लाभान्वित होता है तथा समाज का मुखिया या राष्ट्रीय नेता होता है।

**पाँचवें घर का फल**

जातक की संतान उसकी मददगार होती है। जातक धनवान और शत्रुहंता होता है। पाप ग्रहों के साथ सम्बन्ध हों, तो भी शुभ फल प्राप्त होता है।

**छठे घर का फल**

बृहस्पति और सूर्य का मेल छठे घर में हो, तो दोनों ग्रह अपने-अपने स्थान के अनुसार स्वतंत्र रूप से फल देने वाले होते हैं।

**सातवें घर का फल**

पत्नी को कष्ट होता है। उसे तपेदिक जैसे रोग होते हैं। जातक धार्मिक होने का ढोंग रचाने वाला होता है।



**आठवें घर का फल**

आठवें घर में उपर्युक्त ग्रहों के मेल से जातक का भाग्य चमकता है। मृत्यु से उसका बचाव होता है।

**नौवें घर का फल**

इस घर में उपर्युक्त ग्रहों के मेल से जातक की भाग्य वृद्धि होती है। उसकी हर प्रकार से प्रगति होती है।

**दसवें घर का फल**

कुंडली के दसवें घर में बृहस्पति और सूर्य का मेल हो, तो अपने-अपने स्थान के अनुसार दोनों ग्रहों के स्वतंत्र फल जातक को प्राप्त होते हैं।

**ग्यारहवें घर का फल**

ग्यारहवें घर में बैठे बृहस्पति और सूर्य का मेल अपने-अपने स्थान के अनुसार स्वतंत्र फल देते हैं।

**बारहवें घर का फल**

इस घर में बृहस्पति और सूर्य के मेल से जातक के परिवार की प्रगति होती है। परिवार धन-धान्य से समृद्ध रहता है। जैसे-जैसे परिवार के सदस्यों में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे आमदनी भी बढ़ती जाती है।

**विशेष फल**

बृहस्पति और सूर्य जन्मकुण्डली में एक साथ बैठे हों और बुध का साथ मिले तो दोनों ग्रह बाधित हो जाते हैं।

मेल के बाद घर में शुक्र हो, तो संतान की वृद्धि होती है। शासन से सम्मान होता है। स्थानगत प्रभाव के अनुसार सूर्य का प्रभाव शुभ हो, तो स्वास्थ्य और भविष्य उत्तम रहता है। दोनों ग्रहों की तिजारत में फायदा होता है। दोनों ग्रहों से सम्बन्धित रिश्तेदार भी फायदा पहुँचाते हैं।

जब सूर्य और बृहस्पति के मेल की दृष्टि चन्द्र पर हो, तो अपने आप धनागम होता रहता है। राज्य की ओर से सम्मान प्राप्त होता है। दूसरों के साझे में कारोबार करें तो यह फायदेमंद होता है और उससे भाग्योदय होता है।

मेल के अगले घर में शुक्र बैठा हो, तो दोनों ग्रहों का प्रभाव मंदा होता है। धन वैभव में न्यूनता आती है। जातक को अपमान सहना पड़ता है। अगर चौथे घर में या अन्य किसी भी घर में सूर्य और बुध का मेल हो और दसवें घर में शनि बैठा हो या शनि की दृष्टि सूर्य और बुध पर हो, तो दोनों ग्रहों का फल मंदा पड़ जाता है। केतु की सात वर्ष की दशा में संतान या ननिहाल की हालत खराब हो जाती है। शासन की ओर से भी जातक दुःखी होता है। शनि शुभ हो, तो ठीक अन्यथा भगवान ही मालिक होता है।

सूर्य का असर जिस घर में हो और उस घर में सूर्य और बुध का मेल हो, तो जातक को हर अवसर पर असफलता और दुःख ही मिलता है। जातक की किस्मत का सितारा गर्दिश में होता है।

**निवारण**

सूर्य और बृहस्पति के मेल के अशुभ फल दूर करने के लिए निम्न उपाय करें—

1. जातक को पुत्र (संतान) होने के बाद जब कभी आर्थिक या शारीरिक संकट खड़ा हो जाए, तब पिता-पुत्र इकट्ठे मिलकर रहें तो यह संकट टल जाता है।
2. जातक स्वयं एवं उसका पुत्र मुफ्त का माल न खाए। मुफ्तखोरी से दोनों ही दुःख उठाते हैं।
3. किसी वजह से पिता-पुत्र को अलग-अलग रहना पड़े, तो पिता की घड़ी, पलंग, गद्दे वगैरह का इस्तेमाल पुत्र करे।
4. घर में जो सबसे पुराना पलंग हो उस पर जातक सोया करे।
5. बृहस्पति की चीजें—सोना और केसर घर में रखें और उनका उपयोग भी करें।

## सूर्य व शुक्र का मेल

सूर्य व शुक्र दोनों का मेल होने पर भी दोनों ग्रहों में से एक ही काम करता है। शत्रु ग्रहों के साथ किसी भी घर में बैठा सूर्य शत्रु ग्रहों की चीजों पर तथा उनसे सम्बन्धित रिश्तेदारों पर मंदा असर करता है। बाईस से पच्चीस वर्ष उम्र के दरम्यान शत्रु ग्रह खुद का बुरा असर करवाते हैं। बाईस से पच्चीस की उम्र में विवाह न करना श्रेयस्कर रहता है। इस युति वाले की पत्नी का हर वाक्य सत्य सिद्ध होता है। वह जो बोलेगी वैसा ही होगा। पिता की आयु के बारे में शंका रहती है। ऐसे जातक को संतान-प्राप्ति में बाधा हो, तो कुत्ता पालने में यह बाधा दूर हो जाती है।

जब शत्रु ग्रहों की अशुभ चाल के कारण अशुभ प्रभाव का अनुभव होने लगे, तब बुध के उपायों से शांति मिलती है। सूर्य और शुक्र का इकट्ठा प्रभाव जातक की इकतालिस वर्ष की आयु तक स्थित रहता है। सूर्य और शुक्र के मेल में यदि सूर्य बलवान हो, तो जातक शासन से लाभान्वित होता है। किन्तु शुक्र निर्बल हो, तो असर इसके विपरीत नजर आता है। उसकी पत्नी दुःख उठाएगी। शुक्र बलवान होने पर मनोबल उत्तम रहता है पर स्वास्थ्य ढीला रहता है।

पहले घर में सूर्य और शुक्र का मेल हो, तो सूर्य का प्रभाव अच्छा नहीं रहता। वैवाहिक जीवन में न्यूनता आती है। परस्त्री की वजह से अच्छी-खासी तकलीफ उठानी पड़ती है। जेल भी जाना पड़ सकता है।

सातवें घर में सूर्य और शुक्र का मेल हो, तो नौवें स्थान के सूर्य की तरह फल जातक को मिलता है। बीस वर्ष की उम्र में तीर्थाटन होता है। नौवें घर में सूर्य और शुक्र का मेल हो, तो जातक को धन-दौलत देता है। इस मेल के कारण भी बीस वर्ष की आयु में तीर्थयात्रा होती है। अशुभ युति के परिणामस्वरूप स्त्री पक्ष दुर्बल रहता है और जातक निर्धन रहता है।

सूर्य और शुक्र का मेल दसवें घर में हो, तो चौथे घर में बैठे पुरुष ग्रह शुभ रहते हैं। राहु के असर के बाद शुक्र का असर बेहतर रहता है। ऐसा जातक बाईस या पच्चीस वर्ष की आयु में अपनी शादी करे, तो वैवाहिक जीवन एवं शासकीय कामों में अपयश प्राप्त होता है।

लग्न में सूर्य और शुक्र की अशुभ स्थिति हो, तो औरत की दिमागी हालत खराब होती है। खाने के फाके पड़ते हैं। स्वयं के साथियों को कष्ट होता है। सातवें घर में सूर्य



और शुक्र का मेल हो, तो सातवें घर के बुध जैसा फल प्राप्त होता है। पत्नी का स्वास्थ्य खराब होता है। सातवें या नौवें घर में अन्य ग्रह बैठे हों, तो व्यर्थ के झगड़े होते हैं। मकान को कतई लाल रंग से न रंगे। मकान को लाल रंग देने पर सूर्य और शुक्र में दुश्मनी हो जाती है और जातक सदा दुःखी रहता है।

दसवें घर में सूर्य और शुक्र का अशुभ मेल हो, तो राज-काज में जातक को अशुभ फल प्राप्त होता है। शनि का असर भी साथ-साथ चलता है। राजयोग होने पर भी राजगद्दी प्राप्त नहीं होती। उसे दूसरों की रखवाली करनी पड़ती है।

**निवारण**

1. पत्नी के बाजू और हाथों में सोने का कड़ा या सोने की चूड़ियाँ धारण कराएँ।
2. पत्नी की सेहत खराब रहती हो, तो उसके वजन जितनी ज्वार मंदिर में दान करें।
3. सगाई या विवाह के दिन से ही पति-पत्नी गुड़ खाना छोड़ दें। दिन में संभोग करने की आदत न डालें।
4. साँप को दूध पिलाया करें।
5. संतान के लिए चौथे घर में बैठे ग्रह सहायक रूप हों या चौथा घर खाली हो, तो चंद्र के उपाय सहायता करेंगे।
6. परस्त्री की खुशामद करने से जातक बीमार रहता है। रक्त में खराबी एवं चर्म रोग होते हैं, वक्त के पहले बुढ़ापा आ जाता है। इसके लिए परस्त्री सहवास करने से बचें।
7. पुत्र संतान के लिए बछड़े सहित गाय दान में दें।

## सूर्य व शनि का मेल

सूर्य और शनि का मेल वाले जातक को लाल किताब के लेखक ने 'अवसरवादी एवं वक्त के मुताबिक तब्दीली चाहने वाला' कहा है। सूर्य और शनि पिता पुत्र हैं। दोनों के बीच में आमतौर पर झगड़ा नहीं होता। किन्तु कभी-कभार बुध के कारण झगड़ा हो जाता है। अशुभ सूर्य यानी राहु और अशुभ मंगल यानी शनि है। बुध यानी बहन, लड़की। प्रायः सूर्य और शनि वाले जातक को कन्या या बहन के कारण क्लेश सहन करने पड़ते हैं। इसमें पिता का यानी सूर्य का फैसला अन्तिम होता है। जातक की जन्मकुंडली में मंगल अशुभ हो एवं राहु नीच हो, तो बड़े झगड़े होते हैं।

सूर्य और शनि मेल वाले जातक के लिए बुध सहायक होता है। जीवन की गाड़ी अच्छी तरह चलती है। अशुभ शुक्र के साथ बैठा हुआ सूर्य चाहे जिस घर में हो इनके साथ बैठे शत्रु ग्रह बाईस से पैंतालिस तक की आयु में अपनी-अपनी समयावधि में अशुभ असर करते हैं। शुक्र 25वें, राहु 42वें और मंगल 28वें वर्ष में प्रभाव डालता है। अगर चन्द्र, मंगल, बृहस्पति भी साथ हों, तो भी तत्सम्बन्धी वस्तुओं पर बुरा असर पड़ता है। सूर्य जब 6, 7, 9, 10 में हो और शनि 1, 4, 5, 6 में से किसी घर में हो, तो सूर्य अशुभ फल देता है।

जब सूर्य जन्मकुंडली के 6, 7 या 10वें घर में हो और शनि 1, 4, 5, 6 घर में से किसी घर में हो, तो सूर्य अशुभ फल देता है। शनि का ऐसा साथ जातक को घर फूंकने

वाला बनाता है। मंगल और राहु का नीच प्रभाव भी मिलता है। जवानी में बीमारी परेशान करती है। आमदनी कम हो जाती है। मित्र दगाबाज होते हैं।

शनि और सूर्य में से एक का फल अशुभ हो ऐसे घर में यह मेल हो, तो जातक की उम्र के 11वें तथा 36वें वर्ष में राहु का अशुभ प्रभाव देखने में आता है। राहु और मंगल दोनों चाहे जितने उच्च हों फिर भी उनका प्रभाव बुरा रहता है।

ऐसा जातक दिन में समागम करे, तो स्त्री का जीवन बरबाद हो जाता है। इस अशुभता के निवारण के लिए सूर्य ग्रहण के समय बादाम-नारियल जैसी शनि की चीजें दरिया में प्रवाहित करनी चाहिए। स्त्री अपने बालों में सोने या ताँबे की पिन लगाया करें।

**पहले घर का फल**

इस घर में सूर्य और शनि का मेल शुभ हो, तो उत्तम फल प्राप्त होता है। सोना-चाँदी एवं अग्नि से सम्बन्धित व्यवसाय जातक करे, तो उसमें अच्छा लाभ होता है। जातक योगी और ब्रह्मज्ञानी बनता है। अशुभ होने पर पति-पत्नी में होने वाले झगड़ों के कारण स्त्री का जीवन दुःखी बनता है, क्योंकि यहाँ शुक्र दुर्बल हो जाता है। सूर्य की चीजों का कारोबार तथा सगे-सम्बन्धी अच्छी रहते हैं, तो शनि की वस्तुओं का व्यापार नीच और बरबादी की तरफ ले जाने वाला होगा। दूसरे तथा चौथे घरों में यह मेल अपने स्थान अनुसार फल देता है।

**पाँचवें घर का फल**

कुंडली के पाँचवें घर में सूर्य और शनि शुभ हों, तो जातक स्वस्थ रहता है। वह दृढ़निश्चयी होता है। इस युति में शनि अशुभ हो और वर्षफल में भी शनि पाँचवें घर में आए, तब से आगे के नौ वर्ष अच्छे बीतते हैं किन्तु जातक वहमी और भयभीत होता है।

**छठे घर का फल**

इस घर में सूर्य और शनि के मेल से जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। साधु-सन्तों के स्थान या समाधि पर रोज सिर झुकाने जाता है। बुध और चन्द्र दोनों प्रबल हों, तो पत्नी का पूर्ण उत्तम सुख प्राप्त होता है। सूर्य और शनि में सूर्य बलवान होने पर यह फल प्राप्त होता है।

अशुभ मेल हो, तो शनि संतान पक्ष की हानि करता है। गरीबी, दरिद्रता का समय आता है। सोना मिट्टी बन जाता है। इस अशुभ मेल के कारण संतान के विषय में अशुभ फल मिलता हो, तो उसके निवारण के लिए कुत्ता घर में पालें। अट्ठारह वर्ष की आयु के बाद अपने आप संतान को स्वास्थ्य लाभ देता है।

**सातवें घर का फल**

अशुभ मेल हो, तो जातक को जेल की हवा खानी पड़ती है। चन्द्र जन्मकुण्डली के पहले 1 से 6 घरों में से किसी घर में बैठा हो और बुध पाँचवें घर में बैठा हो, तो यह फल असरदार होता है।

**आठवें घर का फल**

इस घर में उपर्युक्त ग्रहों का अशुभ मेल हो और बृहस्पति बारहवें घर में बैठा हो,



तो छत्तीस वर्ष से इस युति का बुरा असर जातक को सहन करना पड़ता है। पशु आहार (खली का व्यापार) और प्रॉपर्टी के धन्धे या मकान खरीदने से संतान को दुःख होता है।

**नौवें घर का फल**

शुभ मेल होने पर जातक धनवान, किन्तु खुदगर्ज होता है और अशुभ मंगल, बुध के साथ तीसरे स्थान में हो, तो तीसरे तथा नौवें घर के सभी ग्रह जातक को अशुभ फल देते हैं।

**दसवें घर का फल**

सूर्य और शनि का अशुभ मेल हो, तो जातक पर झूठे आक्षेप और लांछन लगते हैं। बुध भी अगर तीसरे या आठवें घर में हो, तो जेल की हवा खानी पड़ती है।

**ग्यारहवें घर का फल**

इस घर में सूर्य और शनि का मेल होने पर नौवें घर में सूर्य और शनि का मेल होने जैसे फल मिलते हैं।

**बारहवें घर का फल**

बारहवें घर में सूर्य और शनि के मेल के अच्छे फल प्राप्त होते हैं। शुक्र जन्मकुंडली के किसी भी घर में होने से बुरा फल नहीं मिलता।

शत्रु ग्रहों के प्रभाव को बुध की सहायता से ठीक किया जा सकता है। दूसरे घर की दृष्टि के अनुसार सूर्य निर्बल और शनि बलवान हो, तो बुध की वस्तुएँ हरा पौधा, खिलते फूलों के पौधे, सुरीली आवाज में गाने वाले पंछी घर में पालें। घर में हरे रंग की वस्तुएँ रखें।

स्त्री पर बुरी नजर रखने से शुक्र बरबाद होता है। यह प्रभाव उम्र के बाईस से छत्तीस वर्ष तक रहता है। धन की दृष्टि से सूर्य और शनि की संयुक्त आयु छयालिस वर्ष की और पिता की आयु के लिए चालीस वर्ष मानी गई है।

**निवारण**

1. सूर्य ग्रहण के समय शनि की चीजें बहते पानी में बहाएँ।
2. बस्ती से दूर जहाँ चार रास्ते मिलते हों, वहाँ संध्या के समय में बुध की चीजें फल, मोती या हरे रंग की चीजें जमीन में दबा आएँ।
3. संतान बीमार रहती हो, तो जातक के वजन जितनी शनि की मूर्ति बनाकर दीवार के पास खड़ी करें और दीवार में छिद्र कर दें जिससे हवा अंदर आती रहे।
4. वर्षफल के अनुसार शनि दुर्बल हो, तो उस समय जातक शनि के काम न करें।

## सूर्य व राहु का मेल

सूर्य और राहु का जन्मकुंडली में किसी भी घर में मेल होना बहुत अशुभ माना गया है। ऐसा जातक अल्पायु होता है। राहु का समय यानी 42 वर्ष की उम्र में जातक की संतान को कष्ट रहता है। धननाश होता है।

यह मेल तथा पाप ग्रह के साथ बैठा हुआ सूर्य जन्मकुण्डली के किसी भी स्थान में हो, तो उससे सम्बन्धित चीजों तथा रिश्तेदारों पर अशुभ प्रभाव देखने में आता है। ऐसे समय में शत्रु ग्रह अपनी-अपनी समयावधि में अशुभ प्रभाव दिखाते हैं।

शत्रु ग्रहों के साथ मेल हो और बुध के उपाय किए जाएँ, तो शांति प्राप्त होती है। अशुभ मेल में सूर्य के साथ मित्र ग्रह चंद्र, मंगल या बृहस्पति हों, तो उन पर भी अशुभ प्रभाव होता है। सरकारी कामकाज में परेशानियाँ खड़ी होती हैं। ऐसा होते हुए भी यदि उपाय किए जाएँ, तो राहु का समय पूर्ण होने के बाद सूर्य अपना पूर्ण प्रभाव देता है और शुभ सिद्ध होता है।

अशुभ प्रभाव के संकेत हैं—जातक के विचारों में कपट की भी भावना और गंदे विचारं का उत्पन्न होना। बुध का साथ हो, तो सूर्य ग्रहण के अशुभ असर नहीं होते एवं सरकारी कामों में कामयाबी हासिल होती है। सूर्य और राहु नौवें या ग्यारहवें घर में हों, तो पूर्णतया अशुभ फल मिलते हैं।

जिस घर में ये दोनों ग्रह बैठे हों उस घर के साथ ही पड़ोस के घर को भी बिगाड़ते हैं। मान लीजिए छठे घर में ये बैठे हैं, तो बारहवें घर के साथ ही सातवें घर को भी बिगाड़ेंगे।

सूर्य और राहु का मेल हो तथा मंगल नीच, अशुभ हो तथा राहु पर दृष्टि न हो, तो जातक की 21 और 42 वर्ष की उम्र में संतान को दुःखी होना पड़ता है। जातक का स्वास्थ्य एवं भाग्य दोनों दुर्बल हो जाते हैं। शरीर पर काले-सफेद दाग हो जाते हैं, जो कोढ़ की निशानी होते हैं।

शनि और मंगल दोनों नौवें घर में बैठे हों, सूर्य और राहु का मेल जन्मकुंडली के किसी भी घर में हो, तो जातक का जीवन उसके जन्म से ही अच्छा रहता है। सूर्य और राहु का मेल आठवें या दसवें घर में होने पर जातक अल्पायु बनता है।

**निवारण**

1. चोरी या धन हानि के कारण यदि आर्थिक स्थिति बिगड़ती है, तो कपड़े में थोड़े जौ बांधकर मकान के अँधेरे हिस्से में वजन के नीचे दबाकर रख दें।
2. जातक अस्वस्थ हो और उसे बुखार आता हो, तो जौ गोमूत्र में धोकर नदी में प्रवाहित करें।
3. राहु की चीजें—बादाम, नारियल बहते पानी में बहाएँ।
4. ताँबे का पैसा रात में अग्नि पर तपाकर सवेरे बहते पानी में बहाएँ। पैसा पानी में बहाने के तुरन्त बाद निकट सम्बन्धी एवं पुत्र के सामने न जाएँ क्योंकि उन पर सूर्य और राहु का बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

## सूर्य व केतु का मेल

सूर्य के साथ केतु हो, तो उसके अशुभ फल जातक को भोगने पड़ते हैं। घर के पास में कुत्ता सूर्य की तरफ मुँह करके बैठे, तो यह इन ग्रहों के अशुभ प्रभाव की निशानी है। इस मेल के कारण मुसाफिरी में बड़ा नुकसान होता है। शुक्र अशुभ होने पर यह मेल जातक को धन-सम्पत्ति तथा सरकार के कामों में निर्बल बनाती है और व्यर्थ की भाग-दौड़ करवाती है।

अगर सूर्य और केतु के साथ शत्रु ग्रह शुक्र भी हो, तो वह जिस घर में हो उस



घर से सम्बन्धित चीजों को खराब करता है। इस अवस्था में 22 से 45 वर्षों तक अशुभ ग्रह अपनी समयावधि में प्रभाव दिखाते हैं।

बुध के उपायों से शत्रु ग्रहों का दुष्प्रभाव मिटाया जा सकता है। जातक कानों का कच्चा हो, तो उसकी बरबादी होती है। यह मेल शुभ प्रभाव नहीं करता।

जातक चलेगा तो दूसरों की सलाह पर बहुत ही दुःखी रहेगा। जातक की बुरी आदतें भी जातक को बरबादी की तरफ ले जाती हैं। जातक की पुत्रवधू मोटी और बेबाक बोलने वाली होती है। जातक का स्वयं का पुत्र ही आमदनी में रुकावटें खड़ी कर देता है। जातक पोते-पोतियों का मुँह नहीं देख सकता।

कुंडली के दूसरे घर में यह मेल हो, तो जातक स्वयं और उसके पुत्र के अलावा ननिहाल भी परेशान रहता है। मूत्र-सम्बन्धी रोग से पीड़ित रहता है।

**निवारण**

1. गोमूत्र का छिड़काव घर में करने से केतु और शुक्र तथा बुध का दुष्प्रभाव समाप्त हो जाएगा।
2. सूर्य ग्रहण के समय बादाम, नारियल, तेल में से कोई भी वस्तु पानी में बहा दें।

## चन्द्र व मंगल का मेल

चन्द्र और मंगल का मेल अपने आप में धनदायक योग माना गया है। इसका घी में शक्कर जैसा मधुर जीवन जातक जीता है। जातक आनन्द एवं सुख से परिपूर्ण रहता है। ऐसा जातक दीर्घायु एवं दान-पुण्य में रुचि रखने वाला होता है। दान-पुण्य के कारण ही वह समृद्ध होता है। खूब धन न भी मिले तो भी आवश्यकता से कम नहीं रहता।

पितृ-ऋण के समय उसे जीवन में कष्ट उठाने पड़ते हैं। ऐसा जातक अपने पूरे परिवार के सुख-दुःख को अपने ऊपर लेने वाला होता है। जातक परायी आग में जलने का आदी होता है। कुंडली के जिन घरों में मंगल अशुभ फलदायी रहता है, उन घरों में यह मेल हो, तो तैंतीस वर्ष तक का समय अच्छा गुजरता है।

कुंडली के जिन घरों में मंगल उच्च एवं श्रेष्ठ गिना जाता है, उन घरों में यह मेल हो, तो जातक को उसकी उम्र के 38 वर्ष तक उत्तम फल प्राप्त होते हैं। दूसरे एवं चौथे घर में यह मेल हो, तो ये दोनों ग्रह 52 वर्ष की उम्र तक उत्तम फलदायक होते हैं। दूसरे, तीसरे, चौथे या आठवें घर का मंगल अशुभ नहीं होता।

चन्द्र और मंगल को बृहस्पति देखता हो, तो जातक को रुपये-पैसे एवं मित्रों का उत्तम सुख मिलता है। चन्द्र और मंगल पर सूर्य की दृष्टि हो अथवा दोनों सूर्य को देखते हों, तो उत्तम फल प्राप्त होता है।

चन्द्र और मंगल दोनों शुक्र की दृष्टि हो, तो धन सुख में न्यूनता आती है, संतान विलंब से पैदा होती है एवं यार-दोस्तों के साथ सम्बन्ध मधुर नहीं होते। चन्द्र और मंगल दोनों पर बुध की दृष्टि हो या दोनों बुध को देखते हों, तो जातक बुद्धिमान होता है। बाहर के लोगों से सहयोग मिलता है। जातक व्यापारी बनता है। आमदनी में खास बढ़ोत्तरी नहीं होती।

चन्द्र और मंगल का मेल हो, शनि स्वगृह या दसवें या ग्यारहवें घर का हो, तो अशुभ

प्रभाव महसूस होता है। जहरीले जानवर के काटने से कष्ट होता है। मृत्यु जहरीले जानवर के काटने या तीक्ष्ण शस्त्र से होती है।

चन्द्र और मंगल को केतु देखता हो, तो जातक धनवान, भाग्यवान किन्तु दुष्ट स्वभाव का होता है। इसकी चिंता किसी को नहीं रहती। चौथे या दसवें घर में चन्द्र और मंगल का मेल हो और बुध साथ में हो, तो जातक धनवान बनता है।

सातवें घर में चन्द्र और मंगल का मेल हो, तो जातक का परिवार बड़ा होता है। जातक धन-धान्य से सुखी रहता है। अगर शनि पहले घर में बैठा हो, तो बाप-दादों की सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ता है। जातक लोभी रहता है। उसकी मृत्यु आघात या अकस्मात् दुर्घटना से होती है।

चन्द्र और मंगल यदि केतु को देखते हों या केतु की इस मेल पर दृष्टि हो, तो जातक के पुत्र या उसके भाई के पुत्र सरकारी नौकरी करते हैं। वे कमाते हैं पर उनका धन संग्रह नहीं हो पाता।

कुंडली के नौवें घर में चन्द्र और मंगल का मेल हो, तो जातक भाग्यवान किन्तु नीच स्वभाव का होता है। संतान उत्तम रहती है, धनवान होती है। अशुभ प्रभाव हो, तो जातक की आघात या अकस्मात् दुर्घटना से मृत्यु होती है।

दसवें घर में चन्द्र और मंगल का मेल हो और चौथे घर में शत्रु ग्रह बैठे हों, तो जातक की माता-पुत्र को परेशानी होती है। यहाँ के फल का आखिरी निर्णय शनि ही कर सकता है।

ग्यारहवें स्थान में चन्द्र और मंगल का मेल शुभ रहता है। जातक बहुत सुखी रहता है। किन्तु जातक को प्रेम के विषय में नाकामी मिलती है। मंगल अशुभ होने पर मुहब्बत के रास्ते में शिकस्त मिलती है। जातक वहमी और लालची रहता है। स्त्रियों के विषय में जातक का वर्ताव शंकास्पद रहता है। बारहवें स्थान में यह मेल अपने स्थान के अनुसार फल देता है।

## चन्द्र व बुध का मेल

लाल किताब चन्द्र और बुध के मेल को माँ और बेटी कहा है। दोनों स्त्रियों की तरह हैं, जो अपने-अपने घरों में अशुभ फलदायक होते हैं। इन पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो, तो अन्य घरों में शुभ फल ही देते हैं। जब शनि निर्बल हो, तो केतु नीच का होता है तथा चन्द्र नष्ट हो जाता है।

जहाँ बुध श्रेष्ठ माना जाता है, उन स्थानों में ये दोनों बैठे हों, तो चन्द्र का शुभ फल प्राप्त होता है। किन्तु जिन घरों में बुध का प्रभाव नीच होता है, उन घरों में चन्द्र और बुध का मेल हो, तो चन्द्र का बुरा असर होता है।

बुध अशुभ हो एवं वह अपने घर यानी 3, 6 या 7 में हो तथा चन्द्र के चौथे घर में चन्द्र और बुध की युति हो, तो जातक को खुदकुशी करने की नौबत तक आती है।

चन्द्र और बुध के मेल पर सूर्य और बृहस्पति या शनि की दृष्टि हो, तो शुभ प्रभाव पड़ता है। यह मेल दूसरे घर में हो, तो बुध की सहायता मिलती है। जब तक जातक के पिता जीवित रहते हैं, तब तक सब कुछ ठीक-ठाक रहता है। पुश्तैनी जायदाद की हानि भी नहीं होती।

चन्द्र और बुध यदि तीसरे घर में अशुभ बनते हों और छठे घर में बुध के मित्र सूर्य,



शुक्र और राहु न हों, तो शनि तथा राहु नष्ट हो जाते हैं। शुक्र का भी अशुभ फल मिलता है। कुंडली के चौथे घर में शुभ हो, तो जातक धनवान बनता है और उसका जीवन सुख-शांति से वीतता है। किन्तु अशुभ मेल होने पर इस घर के चन्द्र, बुध और शनि का प्रभाव जातक को प्राप्त होता है। जातक परायी आग में जलकर खत्म हो जाता है। व्यर्थ का वहम् जातक को परेशान करता है। दुर्बलता जातक को मौत के घर पहुँचाती है।

चन्द्र और बुध का यह मेल छठे घर में हो, तो जातक की नजर कमजोर हो जाती है। पैसा अच्छा रहता है पर जातक खूनी बनता है। इसकी अक्ल काम नहीं करती। रुपये-पैसे होते हुए भी जातक दुःखी रहता है। मंगल अगर चौथे या आठवें घर में हो, तो जातक की माता को कष्ट सहने पड़ते हैं। जातक खुद में मस्त रहने वाला होता है। कपड़े सम्बन्धी कारोबार में जातक को अच्छा लाभ होता है।

सातवें घर में यह मेल हो, तो दूध में कंकड़ जैसी स्थिति पैदा होती है। चन्द्र और बुध दोनों का ही खराब फल मिलता है। रुपये-पैसे की चिंता न रहते हुए भी जातक स्वयं दुःखी रहता है और उसकी माता भी पीड़ा झेलती है।

कुण्डली के दसवें घर में यह मेल हो, तो जातक को दरिया और मुसाफिरी दोनों मोती (मुनाफा) देते हैं। जातक के यहाँ लड़ाई या व्यापार के कारण अच्छे-खासे लोगों का आना-जाना बना रहता है। अशुभ फल स्त्री-संतान के बारे में होता है। आमदनी बढ़ती रहती है।

कुंडली के बारहवें घर में चन्द्र और बुध का मेल एवं शनि का असर भयानक होता है।

**निवारण**

बुध के नीच प्रभाव के दरम्यान अशुभ मंगल अथवा राहु की चीजों से मदद लेनी चाहिए।

## चन्द्र व बृहस्पति का मेल

चन्द्र और बृहस्पति दोनों ही शुभ ग्रह हैं। इस कारण इन दो ग्रहों का मेल प्रायः शुभ फलदायी होता है, किन्तु बृहस्पति के अशुभ घर 6, 7, 10, 11 और चन्द्र के अशुभ घर 6, 7, 10, 11, 12 घरों में चन्द्र और बृहस्पति का मेल हर दृष्टि से हानिकारक तथा पीड़ादायक होता है।

इनके शत्रु ग्रहों की दृष्टि चन्द्र-बृहस्पति के मेल पर हो, तो शत्रु ग्रह स्वयं नष्ट हो जाते हैं। यदि जातक की जन्मकुंडली में पितृ-ऋण या मातृ-ऋण का योग हो, तो माता-पिता के सुख में कमी रहती है। पत्नी या संतान का सुख भी कम मात्रा में ही उसे प्राप्त होता है।

इस मेल के साथ बुध, शुक्र या राहु जन्मकुंडली के दूसरे, पाँचवें, नौवें या बारहवें घर में बैठे हों, तो जातक का भाग्य उसके पिता के भाग्य के समान ही रहता है। जन्मकुंडली के चौथे स्थान में राहु, केतु या शनि स्थित हो, तो जातक की माता जितनी ही उसकी पुत्री भी सुखी रहती है। जातक को बीस वर्ष की आयु में यात्रा का योग आता है। चौबीस वर्ष की अवस्था तक बिना किसी व्यवधान के उसकी पढ़ाई होती रहती है। यह जातक वट-वृक्ष के समान सबको विश्राम-स्थल बनता है। वह हर किसी के काम आता है। चन्द्र और बुध का मेल बुध के अगले घर में हो, तो बहुत अच्छे फल प्राप्त होते हैं।

**पहले घर का फल**

चन्द्र और बृहस्पति जन्मकुंडली के एक से छह घरों में हों एवं उनके मित्र ग्रह सूर्य, बुध-मंगल सात से बारह तक के घरों में बैठे हों, तो उत्तम और शुभ फल प्राप्त होता है।

सूर्य और बुध जन्मकुंडली के एक से छह घरों में हों तथा चन्द्र और बृहस्पति सात से बारह घरों में से किसी एक में हो, तो सूर्य, बुध, मंगल की चीजों, उनसे सम्बन्धित रिश्तेदार, कारोबार, व्यापार वगैरह से पूरी मदद मिलती है।

**दूसरे घर का फल**

यहाँ चन्द्र और बृहस्पति शुभ हों, तो दोनों का जोरदार प्रभाव पड़ता है। बाप-दादों की जमीन-जायदाद के साथ खुद की दौलत भी बढ़ती जाती है। जातक माता का पूर्ण सुख प्राप्त करता है।

अशुभ मेल हो और उस पर राहु या बुध का प्रभाव हो, तो चारों तरफ से निराशा हाथ लगती है। अपनी साली के साथ जातक का अनैतिक सम्बन्ध हो, तो यह सम्बन्ध से उसे तबाह करने वाला होगा।

**तीसरे घर का फल**

इस घर में शुभ मेल हो, तो जातक भाग्यवान, खुशहाल एवं स्व-कमाई से अपने भाई-बांधवों का भी पोषण करता है। अशुभ मेल हो एवं दोनों का बुध के साथ सम्बन्ध हो, तो चन्द्र, बृहस्पति, बुध का फल प्राप्त नहीं होता तथा बुध से सम्बन्धित सगे-सम्बन्धी, बहन, साली, हरे वस्त्र, वगैरह के बारे में अशुभ सुनने-देखने को मिलता है।

**चौथे घर का फल**

यहाँ चंद्र और बृहस्पति का होना अपने आप में एक अच्छा योग है। दोनों ग्रहों के उत्तम और शुभ फल प्राप्त होते रहते हैं। जातक के जन्म से ही उसके यहाँ धनागम होना शुरू हो जाता है। चंद्र एवं बृहस्पति की चीजें एवं सम्बन्धीजनों के सहयोग से धन में बढ़ोतरी होती रहती है।

**पाँचवें घर का फल**

इस घर में चंद्र और बृहस्पति का मेल हो, तो जातक विश्वसनीय होता है, जिससे उसकी निरंतर प्रगति होती है। वह एजेंसी, स्टॉकिस्ट के कारोबार में अच्छा-खासा कमा लेता है। यह जातक सरकार में उच्च ओहदे पर काम करे, तो बहुतों को उसका लाभ मिलता है।

**छठे घर का फल**

चंद्र और बृहस्पति का मेल जन्मकुंडली के छठे घर में हो, तो बुध-केतु की स्थिति के अनुसार फल जातक को प्राप्त होते हैं। अशुभ मेल होने की स्थिति में जातक जन-कल्याणार्थ खेती की जमीन में कुआँ या ट्यूबवेल लगा दे, तो जातक के लिए अशुभ स्थिति उत्पन्न होती है। कुओं से पानी का लाभ उठाने वाले और जातक के बीच मतभेद



हो जाते हैं। इस अशुभता निवारण के लिए जातक हॉस्पिटल में या आम जगह कुआँ खुदवाएँ या पीने के पानी का प्रबन्ध लोगों के लिए करे।

**सातवें घर का फल**

इस घर में उक्त ग्रहों के मेल से जातक को व्यापार या दलाली में लाभ होता है। यहाँ दोनों ग्रह निकम्मे हो जाते हैं। पहले घर में जब वर्षफल में प्रथम घर में इनके शत्रु ग्रह आते हैं, तो जातक के माता-पिता दुःखी होते हैं। सातवें घर की यह युति अशुभ हो, तो 6, 12, 24 वर्ष की आयु में अधिक कष्ट होते हैं। जातक के विवाह के बाद कन्या का जन्म होने पर धनागम शुरू होता है।

**आठवें घर का फल**

उपर्युक्त मेल से जातक के परिवार में चाहे जितनी धन-संपदा हो, फिर भी उसके भाई-बंधु जातक के दुश्मन बन जाते हैं। दो भाई हों, तो एक मददगार बने तो दूसरा हैरान करे। ननिहाल से शनि-मंगल की वस्तु भेंट स्वरूप में या मुफ्त में न लें अन्यथा जातक बरबाद हो जाता है।

**नौवें घर का फल**

चंद्र और बृहस्पति के मेल से जातक पितृसुख से सुखी बनता है। वर्षफल में चंद्र और बृहस्पति नौवें स्थान में आ जाएँ, तो जातक का खोया हुआ या गुप्त धन जातक को मिलता है। चंद्र से सम्बन्धित चीजें तथा व्यक्ति जातक के लिए मददगार साबित होते हैं। उम्र के बीसवें साल में तीर्थयात्रा का योग बनता है। जातक किसी लड़की का धन खा जाता है अथवा दान-धर्म पर अपना गुजारा करता है तो चंद्र और बृहस्पति दोनों अशुभ फलदायी बन जाते हैं।

**दसवें घर का फल**

दसवें घर में चंद्र और बृहस्पति का मेल खास फलीभूत नहीं होता। जातक कमअक्ल का, बेवकूफ और बीमारी की वजह से खून की कमी महसूस करने वाला होता है। माता-पिता के पास भले ही चाँदी की ईंट हो, तो वर्ष में पुनः चंद्र और बृहस्पति दसवें घर में आने तक सब कुछ नष्ट हो जाता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

तीसरे घर में चंद्र और बृहस्पति का मेल बहुत मददगार साबित होता है। दूसरा घर खाली हो, तो चंद्र और बृहस्पति सोए हुए रहते हैं। दूसरों की भलाई का काम यह मेल बहुत अच्छा करता है। बुध, शुक्र और राहु जन्मकुंडली के तीसरे घर में हों, तो बृहस्पति और चंद्र नष्ट हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप जातक की उम्र के बारह से अट्ठारह या चौबीस तक के वर्षों में माता-पिता को दुःख होता है। इसका उपाय है बुध से सहयोग लेना, जैसे नदी में सिक्का बहाना, देवी का पूजन करना, कन्याओं को भोजन देना, उनका पूजन करना आदि।

**बारहवें घर का फल**

इस घर में चंद्र और बृहस्पति का मेल हो, तो पुत्र जन्म के समय से आर्थिक दशा

अच्छी रहती है किन्तु कन्या के विवाह के समय आर्थिक दशा डावाँडोल रहती है। बारहवें घर का यह मेल जातक को राजसी ठाठ-बाट देती है, किन्तु मन को विरक्त बना देती है। शुक्र एवं बुध का सम्बन्ध होने पर यदि जातक का विवाह होता है अथवा कन्या का जन्म होता है, तो उस वक्त धन-संपत्ति आनी प्रारम्भ हो जाती है।

**विशेष फल**

बृहस्पति 6, 7, 10, 11 तथा चंद्र 6, 8, 10, 11, 12 घरों में होने पर चंद्र और बृहस्पति दोनों मंदे हो जाते हैं। चंद्र और बृहस्पति अशुभ घर में रहे, तो जातक चाहे जितना परिश्रमी हो, दुर्भाग्य के कारण रोता रहता है।

चंद्र और बृहस्पति एक-दूसरे के साथ न हों, परन्तु 1, 7 या 4, 10 घरों में हों, तो जब-जब घर में शनि-शुक्र एवं बुध की चीजें होती हैं, तब-तब उसका मिश्रित फल होता है। उदाहरण के तौर पर नई मशीनरी डलती है। शनि मकान भी बनाता है। शुक्र जातक का विवाह करवाता है। बुध घर में हरे रंग के परदे लगवाता है। इस तरह का साजोसामान घर में आए, तो माता-पिता पर मौत का साया मंडराने लगता है। चंद्र और बृहस्पति के आगे-पीछे रहे ग्रह निर्देशित सगे-सम्बन्धियों को भी दुःख की आग में झोंकता है।

इस अशुभ प्रभाव के निवारण के लिए केतु की चीजें जमीन में दबा दें। चाँदी का बरतन घर के कोने में दबा दें। भंगी को कुछ पैसे रोज दें।

जब शनि दुर्बल होता है, तब जातक नास्तिक बनता है और दुःखी होता है। जब बृहस्पति और चंद्र दूसरे घर में हों और बुध छठे घर में हो, तो जातक की नजर कमजोर होती है। घर की हालत खस्ता होती है। कम-से-कम नया वर्ष आने तक हालत खराब रहती है।

## चंद्र व शुक्र का मेल

इन दोनों ग्रहों के मेल से कृषि लायक जमीन तथा मकान के फर्श पर कुछ भी नहीं उगता। इसी कारण शुक्र को दही एवं चंद्र को दूध कहा जाता है।

सूती सफेद वस्त्र शुक्र के और रेशमी सफेद वस्त्र चंद्र की निशानी होते हैं। आमतौर पर दोनों ग्रहों का आंतरिक फल उत्तम तथा प्रबल होता है। जातक न तो अमीर होता है न गरीब। दोनों ग्रह छत्तीस वर्ष की आयु तक साथ चलते हैं और ग्रहों के अपने-अपने घरों में हाल मंदा रहता है।

**पहले घर का फल**

इस घर में चंद्र और शुक्र के मेल से जातक की पत्नी की दिमागी हालत खराब रहती है। वह पागल हो जाती है। उसकी याददाश्त चली जाती है।

**दूसरे घर का फल**

यह मेल दूध में शक्कर के बदले नमक गिर जाने जैसे हालात पैदा करता है। परस्त्री सम्बन्ध जातक को बरबाद कर देता है। यहाँ बृहस्पति और चंद्र का मेल शुभ होने पर जातक डॉक्टर न होने के बजाय दवाई बेचने के कारोबार से धन कमाता है। यहाँ बृहस्पति के शुभ-अशुभ परिणामों के असर का नाश होता है। ऐसा जातक कुआँ-बावड़ी खुदवाऐ



या स्वयं खोदे तो पत्नी का नाश हो जाता है। स्त्रियों के विषय में जातक का बर्ताव अच्छा नहीं होता। उसका चरित्र संदेहास्पद ही रहता है।

**चौथे घर का फल**

चौथे घर में यह मेल होने पर और दसवें घर में शनि होने पर चौथे चंद्र का उत्तम प्रभाव प्राप्त होता है। दसवें घर में सूर्य हो, तो पिता का उत्तम सुख प्राप्त होता है। पाँचवें घर में शुक्र हो, तो माता-पिता का सुख लंबे समय तक मिलता है। शुक्र का शुभ प्रभाव होता है। दसवें घर में शनि माता के लिए, तीसरे घर में सूर्य पिता के लिए शुभ होता है। पाँचवें घर में बैठा सूर्य जातक को शर्मीला तो बनाता है, किन्तु मूर्ख नहीं।

**सातवें घर का फल**

इस घर में चंद्र और शुक्र का मेल जातक का बुरे कामों से दूर रखता है। जातक समाज में मान-सम्मान प्राप्त करता है। धन-संपत्ति उसे बड़ी मात्रा में प्राप्त होती है। धन का उपयोग बुरे कामों में करने पर जातक का दिवाला निकल जाता है।

**आठवें घर का फल**

इस मेल से जातक के स्वास्थ्य, धन-दौलत के बारे में अच्छे असर देखने में आते हैं। किन्तु जातक बुरे कामों में पैसा खर्च करता है। उसमें दोष उत्पन्न होते हैं। यह मेल अशुभ होने पर जातक के विवाह के बाद धन का प्रवाह रुक जाता है।

**निवारण**

गोदान करें, गौ की सेवा करें।

**विशेष**–जातक के लग्न दिवस से ही दोनों ग्रहों के दुनियावी फल मिलने लगते हैं। जातक की माता नहीं होती, यदि हो, तो उसकी आँखें खराब होती हैं। सास-बहू में खूब बनती है। जातक की व्यभिचारी प्रवृत्ति सर्वनाश का कारण बनती है। जब चंद्र सूर्य को मंदा करता है तब बुध के उपाय करने चाहिए। दही पर सफेद कपड़ा ढंककर उस पर राख फैला देनी चाहिए।

**नोट**–जातक की माता जातक की पत्नी को परेशान करती हो या चंद्र को शुक्र मंदा बनाता हो, तो मंगल के उपाय करें। हाथ में लाल डोरा बांधें। गले मे चाँदी की चेन पहनें। चाँदी की ठोस गोली सदा पास में रखनी चाहिए।

## चंद्र व शनि का मेल

चंद्र और शनि के मेल में एक ग्रह का फल शुभ तो दूसरे का अशुभ मिलता है। दोनों का संयुक्त असर 44 साल की उम्र तक मिलता है। दोनों में से कौन-सा ग्रह प्रबल है, यह जातक की पत्नी के हालात से मालूम किया जा सकता है। यह मेल नीच केतु जैसा असरदार होता है।

**पहले घर का फल**

इस मेल से चोरी अथवा नुकसान का भय रहता है। यह असर छत्तीस वर्ष बाद भी बना रहता है। दोनों का प्रभाव चवालिस वर्षों तक रहता है। जब सूर्य नीच हो, तो शनि का बुरा असर और भी बढ़ता है। माता को कष्ट होते हैं किन्तु इस मेल पर किसी

ग्रह की दृष्टि हो, तो जातक के लिए सहायक होती है।

चंद्र और शनि जन्मकुंडली के पहले घर में हों, तो सूर्य और शनि मेल जैसा ही फल प्राप्त होता है। फल शुभ या अशुभ हो सकता है।

**दूसरे घर का फल**

इस मेल से जातक को उत्तम श्रेणी का वाहन-सुख मिलता है। काला घोड़ा भी सेवा में रहता है। ऐसा जातक जन-कल्याण के लिए कुआँ-बावड़ी खुदवाए, तो वह अधिक धनवान बनता है। अगर दोनों ग्रह अशुभ फल देने पर उतारू हो जाएँ तो जातक की मृत्यु हथियार या दुर्घटना से होती है। लाल गाय या लाल बछड़ा उसकी मृत्यु का कारण बनता है।

**तीसरे घर का फल**

इस मेल से जातक धन-संपत्तिहीन होता है। यह घर चोरी का है। इसके जातक के घर में कोई-न-कोई चीज चोरी होती है। यहाँ तक कि खाली संदूक भी चोरी चला जाता है।

**चौथे घर का फल**

यहाँ चंद्र और शनि के मेल से जातक को आँखों का कष्ट होता है और मोतियाबिंद आ जाता है। दसवें घर में शनि हो, तो ऐसे जातक की मृत्यु अपने घर के बाहर होती है। इस मेल को यदि सूर्य से सहायता मिलती हो, तो जातक को पैतृक संपत्ति प्राप्त होती है।

माता और पिता के साथ रहने से जातक लाभान्वित होता है। शनि यदि सहायक हो, तो जातक को खुद के लिए अच्छा सुख मिलता है, दूसरों के लिए नहीं।

चौथे घर मे अशुभ चंद्र का मेल हो, तो चंद्र 'खूनी कुएँ' के समान होता है। यदि यह मेल अशुभ हो, तो पहले या सातवें घर में सूर्य न हो, तो जातक की मृत्यु रात के समय पानी में डूबने से होती है। जातक की कमाई दूसरों के लिए होती है। ऐसे जातक परस्त्री या विधवा स्त्री से अनैतिक सम्बन्ध रखे, तो बरबादी होती है।

**पाँचवें घर का फल**

पाँचवें घर में चंद्र और शनि का मेल हो, तो उसका असर सूर्य और शनि के पहले घर में होने जैसा होता है। पाँचवें घर में शनि और चंद्र का मेल हो, तब जातक द्वारा सर्प की हत्या हो, तो उसकी पत्नी या माता की आँखें खराब होती हैं।

**छठे घर का फल**

इस मेल का प्रायः बुरा प्रभाव जातक पर पड़ता है, किन्तु स्वयं के बनाए मकान में उसे सुख मिलता है और धनागम होता है।

**सातवें घर का फल**

इस घर में चंद्र और शनि का अशुभ मेल हो, तो जातक को आँखों का कष्ट रहता है। स्त्रियों के झगड़ा करने से शुक्र के कामों में जिंदगी खत्म होती है।



**आठवें घर का फल**

इस घर में उक्त मेल से शनि की उम्र 9, 18, 36 में शनि की वस्तुओं के कारण नीच असर पड़ता है। शनि की वस्तुओं में शस्त्र और सर्प का समावेश होता है। वृद्धावस्था में नजर कमजोर हो जाती है।

**नौवें घर का मेल**

इस मेल में जातक की धन-संपत्ति में निरंतर वृद्धि होती है। चंद्र का अशुभ प्रभाव अनुभव होने लगता है। यदि यह मेल अशुभ हो, तो जातक को प्रत्येक कार्य में अपयश मिलता है और जीवन पर बुरा असर पड़ता है।

**दसवें घर का फल**

इस मेल से जातक दुःखी रहता है, किन्तु धन-संपत्ति का अपार भंडार उसके पास होता है। जातक यह भंडार खर्च कर देता है। परस्त्री सम्बन्ध के कारण उसका जीवन बरबाद हो जाता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

कुंडली के ग्यारहवें घर में चंद्र और शनि का मेल हो, तो चंद्र एवं शनि अपने-अपने घर के अनुसार फल देते हैं।

**बारहवें घर का फल**

उक्त ग्रहों का मेल शुभ हो, तो जातक विरक्त बनता है। अशुभ होने पर उसे पत्नी का सुख नहीं मिलता। वैराग्य-भावना जाग्रत होती है और जातक परेशान होकर घर से भाग जाता है।

चंद्र और शनि का मेल या अन्योन्य दृष्टि सम्बन्ध हो और वह मंदा हो, तो जातक झगड़े में फँसकर बरबाद हो जाता है। ऐसे जातक का धन गैर स्त्री, खुदगर्ज यार-दोस्त हड़प जाते हैं।

जब वर्षकुंडली में पहले घर में चंद्र आए, तब जातक शनि से जुड़े काम करे तो उसका हाल बुरा होता है। शनि और चंद्र की चीजें जातक घर में लाए, तो बृहस्पति-केतु का भी अशुभ प्रभाव पड़ता है। उसे हृदय रोग की पीड़ा होती है।

## निवारण

1. अगर वक्त अच्छा न चल रहा हो, तो घर या घर के नजदीक किसी काले-सफेद जानवर को किसी एक रंग से रंग कर छोड़ दें।
2. आँखें कमजोर हों, उनकी रोशनी कम हो जाए तो 43 दिनों तक गरम पानी न पीएँ। पानी में शक्कर, नीबू और थोड़ा दूध डालकर ठंडा पानी पीएँ। शनि की नशीली चीजें भी डाल सकते हैं। चंद्र कमजोर हो, तो सर्प को दूध पिलाना हितकर होगा।
3. आर्थिक समस्या हो, तो चंद्र-ग्रहण के समय बादाम, नारियल इत्यादि शनि की वस्तुएँ बहते पानी में बहाएँ।

4. शनि और चंद्र पाँचवें घर में हों, तो तिजोरी में मंगल और शनि की चीजें रखें। पाँचवें घर में न हों, तो सोने की तिजोरी में चाँदी की थाली में पानी भरकर रख दें।
5. शनि और चंद्र का मेल होते हुए केतु नीच हो, तो लाल फिटकरी जमीन में दबा दें। पैसे रखने के लिए पर्स इस्तेमाल न करें। लोहे के संदूक में भी रुपये-पैसे न रखें। अपनी उम्र के लोगों की साझीदारी में कामकाज करें, तो फायदा होगा।

## चंद्र व राहु का मेल

यदि जन्मकुंडली में चंद्र और राहु का मेल हो और शनि भी शुभ स्थिति में हो, तो राहु का शुभ फल प्राप्त होता है। राहु धरती-कंपन करता है जिसका प्रभाव जहाँ चंद्र बैठा हो, वहाँ तक पड़ता है। यह बात तब होती है, जब दृष्टि सम्बन्ध हों। सामान्य रूप से 45 दिन, 45 महीने या 45 वर्षों तक चंद्र व राहु का नीच प्रभाव दिखने में आता है।

चंद्र और राहु का मेल जन्मकुंडली के चाहे जिस घर में हो, किन्तु बुध दूसरे घर में हो, तो उसका अशुभ प्रभाव होता है।

जातक की ससुराल भले ही उच्च हो, किन्तु जातक की उम्र के 45 वर्षों तक ससुराल से मंदा असर ही मिलता है। कुंडली के दूसरे घर में चंद्र और राहु का मेल हो, तो धार्मिक दृष्टि से यह प्रभावशाली होता है। ऐसे जातक पर पाप ग्रहों का कोई बुरा असर नहीं होता, केवल जिस घर में राहु और चंद्र हों, उस घर से सम्बन्धित चीजों पर बुरा असर होता है।

जन्मकुंडली के 1 से 6 घर में यह मेल हो, तो जातक की माता को कष्ट उठाने पड़ते हैं। जिस घर में यह मेल होता है, जातक की उम्र उतनी होती है, तब तक माता को कष्ट ही सहना होता है। 7 से 12 तक के घरों में मेल होने पर अधिक बुरा नहीं होता। यदाकदा बुरा प्रभाव हो, तो कम-से-कम जातक के 24वें वर्ष तक यह असर रहता है।

सातवें घर में चंद्र व राहु हों और सूर्य ग्यारहवें घर में हो, तो शुक्र भी उच्च फलदायी बनता है। अशुभ हो, तो ससुराल पक्ष बर्बाद होता है। तीसरे घर में चंद्र और राहु का मेल हो, तो चौंतीस वर्ष की उम्र तक बुध तथा केतु के मंदे फल मिलते हैं।

चंद्र और राहु का मेल जन्मकुंडली के नौवें घर में हों, तो यहाँ चंद्र ग्रसित होने से आधा रह जाता है, जिससे शुभ फलों में न्यूनता नहीं आती। सूखे कुएँ भरने लगते हैं। बाप-दादों की मिल्कियत में कटुता बढ़ती ही जाती है। मेल शुभ हो, तो फल मध्यम मिलता है।

चंद्र 6, 8, 10, 11, 12 घरों में हो और राहु 1, 2, 5, 8 घरों में हो, तो चंद्र और राहु दोनों मंदे हो जाते हैं। ऐसी हालत में जातक के पानी में डूबकर मरने का खौफ रहता है। 29 से 42 वर्ष की आयु तक राहु का अशुभ प्रभाव देखने को मिलता है। खासकर चमड़ी पर सफेद-लाल दाग उभरते हैं। ससुराल पक्ष दुर्बल बन बाता है। चंद्र का खास असर अनुभव में नहीं आता। व्यर्थ वहम के कारण दिमागी बीमारी होती है।

चंद्र और राहु का मेल बारहवें घर में हो, तो चंद्र की सजीव चीजों पर तथा शुक्र सम्बन्धी बातों पर बुरा असर होता है।



### निवारण

1. चंद्र और राहु की अशुभता दूर करने के लिए ग्यारहवें राहु और ग्यारहवें चंद्र के उपाय करने चाहिए।
2. संतान-अवरोध हो, तो जातक दूध में सोने की जंजीर डुबोकर दूध पीएं।
3. चंद्र-ग्रहण में बादाम, नारियल बहते पानी में बहाएँ।
4. चंद्र, मंगल, बृहस्पति के उपाय करने से राहु की अशुभता दूर होती है।

## चंद्र व केतु को मेल

जन्मकुंडली में यह मेल हो और साथ ही पुरुष ग्रह सूर्य, मंगल, बृहस्पति उच्च में हों, तो मंगल की अवधि (26 वर्ष) के बाद जातक को सुख नसीब होता है। खुशनुमा माहौल तैयार होता है।

मंगल पुरुष ग्रहों का सहायक बनता है। ये पुरुष ग्रह बलवान न हों, तो जातक बेहद दुःखी होता है तथा दादी-पोते में मेल नहीं रहता। बुध के सम्बन्ध से चंद्र नीच बनता हो या चंद्र और केतु के साथ बुध भी छठे घर में हो, तो बुरा प्रभाव पैदा होता है, जिसके निवारण के लिए केतु के उपाय करने चाहिए। ऐसे जातक की माँ धार्मिक होते हुए भी बदनाम होती है।

इस मेल के अशुभ प्रभाव में जमीन-जायदाद के बारे में लड़ाई-झगड़े होते हैं। बलवान बुध का साथ मिले तो चौंतीस से पैंतालिस तक की उम्र में बुध से शुभ फल प्राप्त होते हैं।

### शुभ/अशुभ प्रभाव

लंगड़ी, अपाहिज माता लाचार होने से बीमार रहती है। माता का स्वास्थ्य और पुत्र का भविष्य शंकाप्रद रहता है। दादी-पोते में झगड़े होते हैं।

जातक रात को दूध पीए तो बीमार होता है। किसी के पेशाव पर पेशाव करे तो भी बीमारी आती है। कुंडली के दूसरे घर में चंद्र और केतु का मेल चंद्र-ग्रहण की स्थिति जैसा फल करता है। जातक न्यूमोनिया अथवा वात रोग से पीड़ित रहता है। इस दोष के निवारण के लिए जातक के पैर में या बछड़े के पैर में चाँदी का कड़ा पहनाए रखें।

कुंडली के चौथे घर में यह मेल रहे, तो पापग्रहों का अशुभ प्रभाव जातक पर नहीं पड़ता। सभी ग्रहों का शुभ प्रभाव मिलता है। कुंडली के छठे घर में यह मेल हो, तो चंद्र का खराब समय देखने को मिलता है। जातक एवं जातक की माँ दोनों के लिए यह समय अशुभ होता है।

कुंडली के नौवें घर में इस मेल का कुप्रभाव देखने को मिलता है। बारहवें घर में यह मेल हो, तो जातक धनवान बनता है। लाखों की कमाई करता है, पर उसकी जरूरत के समय उस धन का उपयोग नहीं होता। इनके अलावा अन्य घरों में चंद्र और केतु के फल अपने-अपने घरों के अनुसार मिलते हैं।

### निवारण

1. केतु की दोरंगी चीजें सहायक होंगी।
2. बुध की चीजों का दान दें।

3. रोजी-रोटी या साधना में विघ्न आते हों, तो निरन्तर नित्य 47 दिनों तक पैसे धर्मस्थान में रख कर आया करें।

## मंगल व बुध का मेल

मंगल और बुध के मेल का स्वभाव राहु जैसा है। बुध नपुंसक ग्रह है। अतः मंगल के शुभ होने पर बुध भी शुभ होता है और मंगल दुर्बल होता है, तो बुध भी उतना ही दुर्बल होता है। मंदी हालत में बुध-मंगल दोनों साथ मिलकर प्रभाव को अशुभ करते हैं। मंगल और बुध का असर जातक की पैंतालिस साल की उम्र तक रहता है।

### पहले घर का फल

मंगल और बुध का मेल शुभ हों, तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। शरीर मजबूत रहता है। जातक अपने परिवार का पोषणकर्ता होता है। आर्थिक दृष्टि से वह अपने परिवार को सुखी करता है। अशुभ होने पर जीवन नीरस बन जाता है। साथ ही भाई एवं संतान की चिंता रहती है।

अशुभत्व दूर करने के लिए मिट्टी के घड़े में शहद एवं खांड भरकर वीराने में दवा दें। जमीन में दबाने से पहले घड़े को पत्तों से ढाँपना न भूलें।

### दूसरे घर का फल

इस घर में मंगल और बुध का मेल होने से जातक धनवान होता है। ससुराल से भी उसे अच्छा सहयोग मिलता है। आठवाँ घर खाली हो, तो शुभफल अधिक मिलते हैं।

### तीसरे घर का फल

कुंडली के तीसरे घर मंगल और बुध का मेल हो और जातक का बड़ा भाई उसके साथ रहे, तो जातक का जीवन खुशियों से भरा होता है। लंबे समय तक माँ-बाप का सुख प्राप्त होता है। यह मेल अशुभ हो, तो जातक के धन की चोरी होती है एवं धोखाधड़ी के कारण धन का नाश होता है। जातक बुरे कामों की ओर आकर्षित होता है। जातक के मामा कमनसीब होते हैं।

### चौथे घर का फल

कुंडली के चौथे घर में मंगल और बुध का मेल हो, तो बुध का बुरा प्रभाव जातक पर नहीं पड़ता। यदि अशुभ असर में हो, तो जातक खुद खराब नहीं होता न वह दूसरों का बुरा सोचता है। फिर भी वह जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ-वहाँ दूसरों के लिए अशुभ सिद्ध होता है।

### पाँचवें व छठे घर का फल

पाँचवें व छठे घर का यह मेल अपने-अपने घरों के अनुसार फल देता है।

### सातवें घर का फल

कुंडली के सातवें घर में मंगल और बुध का मेल सदा अशुभ होता है। जातक कड़वी बात बोलने वाला होता है। उसके वैवाहिक जीवन में न्यूनता रहती है। बृहस्पति और शनि का साथ हो, तो अधिक कष्ट होते हैं। यहीं पर अकेला मंगल शुभ होता है। यदि बुध के साथ



हो, तो अशुभ बनता है। जातक का नसीब गर्दिश में रहता है। शरीर की नसें कमजोर होती हैं। रक्त प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होता है।

### आठवें घर का फल

उक्त ग्रह-मेल साथ में दूसरे घर में शनि हो, तो दोनों का उत्तम प्रभाव महसूस होता है। दोनों अलग होने पर अशुभ फलदायी होते हैं। मामा का परिवार बरबाद हो जाता है। जातक के होश संभालते ही मामा दुःखी होता है। वह घर-बार छोड़कर संन्यासी बन जाता है। मामा यदि जातक के घर में रहे, तो और अधिक दुःखी होता है।

### नौवें, दसवें व बारहवें घर का फल

कुंडली के नौवें, दसवें एवं बारहवें घर में मंगल और बुध अपने-अपने स्थानगत फल देते हैं। जातक की आँखें खराब होती हैं। शनि और बृहस्पति का फल मन्दा हो जाता है। धन-संपत्ति का नाश होता है। मकान और पिता की हालत मंदी होती है। शुभ होने पर बृहस्पति और चंद्र की चीजों का शुभ फल प्राप्त होता है।

मंगल अशुभ हो, तो अग्नि से नुकसान होता है। प्रतिष्ठा दाँव पर लगती है, पिता का साथ नहीं मिलता और बदनामी होती है।

### निवारण

1. बुध का अशुभ प्रभाव होता है। इसलिए सुबह थोड़ा-सा गंगाजल सेवन करें। सोने की अँगूठी धारण करें।
2. काँच की बरनी में शक्कर भरकर उसे वीराने में गड्ढा खोदकर दबाएँ। उसके आसपास कुछ पलाश के पत्ते भी डाल दें।
3. रोज प्रातः पहले पानी से दाँत धोएँ उसके बाद दाँतुन करें।

## मंगल व बृहस्पति का मेल

मंगल जब अपने बलवान और उच्च स्थान में बैठा हो, तो वह उत्तम फल देता है। जातक की बाहत्तर वर्ष की उम्र तक दोनों ग्रहों का फल मिलता है। मंगल और बृहस्पति के मेल वाला जातक न्यायप्रिय, राजसी ठाट-बाट तथा वैभव का स्वामी होता है। वह ज्ञानी एवं ईश्वर भक्त होता है। इस मेल की दृष्टि शनि पर हो, तो अधिक अच्छा फल प्राप्त होता है।

यदि मंगल अशुभ हो, तो इक्कतीस वर्ष की आयु तक जातक के भाई-बंधुओं को पीड़ा सहनी पड़ती है। पाँच वर्ष की आयु तक परिवार के सम्बन्धियों की मृत्यु होती है। शनि दुर्बल हो तो बृहस्पति, बृहस्पति दुर्बल हो तो शनि भाग्यविधाता की भूमिका अदा करता है।

### पहले घर का फल

इस घर में मंगल और बृहस्पति का मेल हो, तो जातक समाज का मुखिया, शासक होता है, धनवान बनता है किन्तु बुध की दृष्टि या मेल हो, तो दोनों ग्रहों का प्रभाव मंदा हो जाता है।

### दूसरे घर का फल

उक्त मेल के साथ में बुध छठे स्थान में बैठा हो, तो ससुराल पक्ष के साथ मधुर

सम्बन्ध रहते हैं। ससुराल पक्ष के लोग जातक के लिए अपनी जान तक देने को तैयार रहते हैं।

**तीसरे घर का फल**

उक्त मेल के प्रभाव से जातक को बाप-दादा की जायदाद मिलती है। जातक पूजापाठ में पारंगत होता है। खुद कमाकर बाप-दादा की जायदाद बढ़ाने में वह असमर्थ रहता है। दान करे तो धन वृद्धि होती है।

**चौथे घर का फल**

उक्त ग्रहों के मेल से जातक के परिवार में पुरुष अधिक होते हैं। उनके भरण-पोषण के लिए धन आता रहता है।

**पाँचवें घर का फल**

उपर्युक्त ग्रहों के मेल से जातक के संतान-जन्म के बाद संपत्ति में बढ़ोत्तरी होती है। 28 वर्ष की आयु तक धनागम होता रहता है। जातक धनवान बन जाता है। दान करने से धन में वृद्धि अवश्य होती है। दान ले तो स्वर्ण की हानि होती है। स्वर्ण कोई ठग लेता है या उसकी चोरी हो जाती है। जातक क्रोधी होता है। शरीर में रक्ताल्पता रहती है। श्वास की बीमारी होती है।

**छठे घर का फल**

जातक अपने घर में ज्येष्ठ पुत्र होता है और वह पिता के लिए अच्छा साबित होता है। बृहस्पति की छठे स्थान की दृष्टि प्रायः असफल होती है। दूसरे घर में बुध हो, तो उसका भी फल उत्तम मिलता है। जातक अगर बुध या केतु से सम्बन्धित चीजों का व्यापार करे या बुध और केतु से सम्बन्धित रिश्तेदारों के साथ सम्बन्ध रखे, तो संतान पर इसका बुरा असर होता है।

**सातवें घर का फल**

कुंडली के सातवें घर में मंगल और बुध हों, तो जातक की आमदनी अच्छी होने पर भी वह ऋणी बना रहता है।

**आठवें घर का फल**

जातक मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यदि कोई अशुभ प्रभाव हो, तो वह जातक के परिवार पर ही होता है।

**नौवें घर का फल**

धन-संपत्ति एवं पारिवारिक सुख जातक को प्राप्त होता है। जातक को मुफ्त में माल मिलता है। जातक करचोरी से धनवान बनता है। ऐसे समय में चौथे या छठे घर में बैठे ग्रहों के साथ में जातक के नसीब की डोर रहती है। चौथा या छठा घर खाली हो, तो नसीब में सोने की जगह पत्थर होते हैं।

**दसवें घर का फल**

जातक के भाई एवं पिता जीवित रहते हैं। उनका जीवन आराम से बीतता है। घर



में मंगल और बृहस्पति की चीजें स्थापित करने से लाभ होता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

जन्मकुंडली के ग्यारहवें घर में मुख्यतः सभी ग्रह शुभ फल देते हैं। यहाँ बृहस्पति और मंगल का मेल होने पर जातक को हर प्रकार का यश और सुख प्राप्त होता है। इस जातक का आशीर्वाद जिसे भी मिले वह तर जाता है। सद्भाव युक्त वर्ताव के कारण दूसरों को सुख पहुँचाने से जातक स्वयं सुखी बनता है। अन्य ग्रहों का मेल इस मंगल और बृहस्पति के मेल के साथ न होने पर मंगल और बृहस्पति की चीजों के व्यापार में जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। मंगल और बृहस्पति से सम्बन्धित रिश्तेदार भी जातक के रूठे रहते हैं।

**बारहवें घर का फल**

कुंडली के बारहवें घर में मंगल और बृहस्पति अपना स्थानगत फल ही प्रेपित करते हैं।

**निवारण**

1. बृहस्पति और मंगल के मेल के साथ ही सूर्य और बुध का मेल हो, तो सोने-बैठने के लिए मृगचर्म का उपयोग करना लाभदायक होगा।
2. चाँदी, सोना, ताँबा मिश्रित धातुओं की अँगूठी धारण करें।
3. बृहस्पति और मंगल एवं सूर्य और शनि का मेल हो, तो मंगल अशुभ हो जाता है। मिठाई बाँटें। तिल-गुड़ की रेवड़ियाँ बहते पानी में बहाएँ।

## मंगल व शुक्र का मेल

धन-सम्पदा एवं स्त्री-पुरुष दोनों का ही सुख जातक को मिले, ऐसा बहुत कम देखने-सुनने में आता है। किन्तु मंगल और शुक्र का मेल हो, तो दोनों का मेल हो जाता है, दोनों की संयुक्त उम्र तक धन-दौलत, कुटुंब-कबीले का उत्तम सुख प्राप्त होता है। मंगल और शुक्र का मेल चंद्र जैसा फल देता है। बुध का शत्रु जैसा व्यवहार बंद हो जाता है।

शुक्र और बुध अलग-अलग घरों में बैठे हों एवं बुध शुक्र के अगले घर मंगल के साथ हो यानी 1 से 6 तक के घरों में से किसी घर में हो, तो शुक्र 7 से 12 घरों में किसी घर में बैठा हो, तो बुध अपनी दृष्टि से दोनों का मेल कराता है। इसके फलस्वरूप जातक निःसंतान नहीं रहता, फिर उसकी संतान अच्छी निकले या बुरी।

मंगल और शुक्र का मेल होने पर बृहस्पति या चंद्र की दृष्टि हो, तो जातक को धन तथा पारिवारिक सुख अच्छा मिलता है। धनागम के साथ सुख-शांति भी घर में आती है।

शुक्र जन्मकुंडली के 1, 6, 8 और मंगल 1, 4, 8 घरों में हों, तो दोनों का अशुभ फल मिलता है। उसके उपरांत दोनों के मेल पर पापग्रहों की दृष्टि हो, तो जातक रात-दिन दुःखी रहता है। एक साधे तो दूसरा टूटे, ऐसी हालत रहती है। एक पीड़ा को हरता जाए, तो दूसरी पीड़ा। शुक्र के साथ मंगल हो, तो जातक नाकामयाब होता है। उसकी पत्नी को कष्ट रहता है। जातक को अग्नि से भय रहता है। आग से मृत्यु भी हो सकती है।

**पहले घर का फल**

जन्मकुंडली के पहले घर में मंगल और शुक्र का मेल हो, तो दोनों ग्रहों का स्थानगत फल मिलता है।

**दूसरे घर का फल**

उक्त मंगल और शुक्र के मेल से जातक का ससुराल धनवान होता है और उसकी मदद से जातक भी धनवान बन जाता है। किन्तु अगर जातक घर जमाई बनकर ससुराल में रहे, तो जातक को संतान नहीं होती।

**तीसरे घर का फल**

उक्त ग्रहों के मेल के कारण जातक को इतना धन मिलता है कि उसके भाई-बहनों को भी लाभ होता है। अशुभ फल यह भी मिलता है कि जातक स्त्रियों का रसिया बनकर विलासी बनता है।

**चौथे घर का फल**

यहाँ उक्त ग्रहों के मेल से सदा अशुभ फल प्राप्त होते हैं। जातक अपने परिवार को दुःखी करता है। उसे आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। मामा खुद भी बरबाद हो जाता है और जातक को भी तबाह करता है। जातक के साले भी बरबाद हो जाते हैं। अशुभ मंगल का प्रभाव चारों तरफ देखने को मिलता है। मंगल और शुक्र के झगड़े में साली भी बरबाद हो जाती है।

**पाँचवें व छठे घर का फल**

जन्मकुंडली के पाचवें व छठे घर में मंगल और शुक्र का मेल हो, तो दोनों अपने स्थानगत फल देते हैं।

**सातवें घर का फल**

सातवें घर में मंगल व शुक्र पुत्र-पौत्रादि एवं धन का सुख देने वाले हैं।

**आठवें घर का फल**

उपर्युक्त ग्रह-मेल वाला जातक धनवान और हर तरह से सुख-संपन्न रहता है। उसे मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। अपने या अपने परिवार पर होने वाले बुरे असर को रोकने की गजब की शक्ति जातक में होती है। इसलिए इसके परिवार की भली-बुरी चर्चा सब जगह होती है, पर जातक इसकी परवाह नहीं करता। यह मेल अशुभ हो, तो जातक चुगलखोर एवं निंदक रहता है, किन्तु स्वयं सलामत रहता है। जिस थाली में खाए उसी में छेद करने का उसका स्वभाव होता है।

**नौवें घर का फल**

उपर्युक्त ग्रह-मेल से जातक घर में बड़ा भाई होता है। उसकी पत्नी हमेशा रोगिनी रहती है।

**निवारण**

स्त्री के हाथों में लाल रंग की चूड़ी पहनाएँ। पत्नी के भाई के हाथों दवा तथा खाना आदि खिलवाएँ।



**दसवें घर का फल**

उपर्युक्त ग्रह-मेल वाले जातक के साले बहुत अमीर होते हैं। दूसरे घर में बैठे ग्रहों से इस मेल का विशेष सम्बन्ध रहता है। जातक का साला काला और जातक के साले की पत्नी बहुत गोरी होती है। जातक शाही जीवन बसर करता है। अशुभ हो, तो जातक निर्धन, झगड़ालू स्वभाव का होता है। जातक की पत्नी काली और जातक गोरा होता है। जातक छोटी-सी बात का बवंडर बनाकर हमेशा झगड़ा करने पर उतारू रहता है। वह स्त्री के कारण या स्त्री के लिए भाइयों को भी मरवा डालता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

जन्मकुंडली के ग्यारहवें घर में मंगल और शुक्र का मेल हो, तो अपने-अपने स्थानगत फल देते हैं।

**बारहवें घर का फल**

कुंडली के बारहवें घर में मंगल और शुक्र का मेल हो, तो अशुभ फल प्राप्त होते हैं। मंगल के उपाय करने से शुभता मिलती है।

## मंगल व शनि का मेल

मंगल और शनि दोनों इकट्ठे रहें, तो राहु का उच्च प्रभाव पड़ता है। राहु जन्मकुंडली में किसी भी घर में होने पर मंगल और शनि का संयुक्त प्रभाव चालीस वर्षों तक रहता है। वृहस्पति भी साथ हो जाए, तो तीनों का मंदा असर पड़ता है। वह बाप-दादा सबको छोड़ता है। अगर वृहस्पति के घरों में सब कुछ ठीक हो, तो जातक सुखी रहता है। धन उसके पास इतना इकट्ठा होता है उसके यहाँ धाड़ (लूट) होती है।

ऐसा जातक किसी पर विश्वास न रखे। आर्थिक लेखन में उसे नुकसान होता है। दोनों ग्रहों का शुभ-अशुभ प्रभाव का आधार राहु है। अगर राहु दुर्बल हो, तो दोनों का कड़वे जहर जैसा प्रभाव होता है। अगर बलवान हो, तो भगवान शिव और विष्णु की कृपा होती है। कोर्ट-कचहरी, लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी में जातक विजयी होता है।

**पहले घर का फल**

जातक का बाहरी कार्यों से भाग्योदय होता है। जिस दिन से जातक नौकरी पर जाता है, उस दिन से मंगल और शनि ग्रहों का फल प्राप्त होने लगता है। मंगल के फलस्वरूप ससुराल धनवान बनती है। जातक शतायु होता है।

शनि और मंगल अशुभ हों, तो जातक की जन्मकुंडली का बुध भी अशुभ रहता है। फलस्वरूप पारिवारिक एवं आर्थिक दृष्टि से बुरा फल मिलता है। शनि के समय (36 से 39) में जातक खुद का एवं अपने सगों का धन, घर-बार बरबाद कर देता है। जातक को खून की बीमारी होती है। परस्त्री सम्बन्धों के कारण भी बरबादी होती है। जातक की आँख सर्प जैसी हो, तो अशुभ फल मिलता है। भूरी आँखों वाली पत्नी लाभ देती है।

**निवारण**

1. माँ की आज्ञा का पालन किया करें।
2. कोई भी कार्य शुरू करने से पहले किसी भले आदमी की सलाह मानें।

3. लोभ-लालच से दूर रहें। परायी स्त्री के सम्बन्ध से दूर रहें।
4. नशीली वस्तुओं से दूर रहें।

**दूसरे घर का फल**

जातक की पत्नी द्वारा उसका भाग्योदय होता है। जिस दिन शादी हो उसी दिन से वृहस्पति का अच्छा फल मिलना शुरू हो जाता है। ससुराल में धनवृद्धि होती है। जातक को ससुराल से सहायता प्राप्त होती है। जातक स्वयं धनवान बनता है। ससुराल के सम्बन्धी संतानवान् होते हैं।

अशुभ हो, तो स्थानगत अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

**निवारण**

रात को कभी मंदिर में माथा न टेकें।

**तीसरे घर का फल**

जातक को उसके भाग्य से अधिक संपदा प्राप्त होती है। जातक कामातुर या फौजी अफसर बन सकता है। सरकारी नौकरी में उच्चाधिकारी होता है, बहादुर एवं उदार हृदय का होता है।

तीसरे घर का मंगल-शनि वाला जातक झूठा होता है। वह दगाबाज और खोटी आदतों वाला हो, तो दोनों ग्रह अशुभ फल देते हैं। जातक यदि क्रोध करे, तब भी अशुभ फल मिलता है। सगे भाई-बंधु भी शत्रु बन जाते हैं। जातक का धन खो जाता है या कोई धोखा-धड़ी से हड़प लेता है। जातक के चाचा अथवा भाई संतान के लिए दुःखी रहते हैं।

**चौथे घर का फल**

चौथे घर में अगर मंगल और शनि का मेल हो, तो इसके घर में बैठे चंद्र और मंगल जैसा फल मिलता है। जिस दिन जातक के पास खेती की जमीन आती है या घोड़ी बच्चे को जन्म देती है, उस दिन से इस मेल के शुभ फल मिलने लगते हैं। अशुभ हो, तो मृत्यु तक हालत खराब रहती है। जातक की मृत्यु अचानक होती है। यहाँ मंगल-शनि दोनों ग्रहों का अशुभ फल मिलता है।

**निवारण**

चंद्र का उपाय सहायक होगा।

**पाँचवें घर का फल**

दोनों ग्रहों का अशुभ प्रभाव मध्यम रहता है। पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्य जागता है। सूर्य का उपाय सहायक होता है।

पाँचवें घर में शनि और मंगल का मेल अशुभ होने पर संतान की चिंता जातक को सताती रहती है।

**छठे घर का उपाय**

जातक का भाग्योदय ग्रह केतु द्वारा होता है। केतु का उपाय सहायक होता है। जब घर में या घर के सामने कुतिया ब्याहे, तब से जातक का भाग्य खुलता है।



मंगल और शनि छठे घर में होने पर यदि केतु दूसरे स्थान में हो, तो जातक मतलबी और खुदगर्ज होता है। उसका पेट खराब रहता है। मंदिर में मंगल की वस्तु (खांड-शक्कर या मीठा भोजन) देने से लाभ होता है।

**सातवें घर का फल**

उक्त ग्रह-मेल से जातक धनवान होता है और उसे पत्नी एवं संसार का अच्छा सुख प्राप्त होता है। जातक कुटुंब का तारनहार होता है। मानसिक रूप से ऐसा जातक अस्थिर रहता है।

**आठवें घर का फल**

आठवें घर में बैठे मंगल और शनि अपने-अपने घर के अनुसार फल प्रदान करते हैं। अशुभ होने पर दोनों ग्रहों का कोई फल नहीं मिलता। जातक त्रिकोणाकार मकान में रहे, तो उसका नसीब बिगड़ता है। जातक की चाल धीमी होती है। गैस-स्टोव या गैस भट्ठी का वह मालिक होता है। जीवन को खराब करने वाली सभी आदतें जातक में होती हैं।

**निवारण**

1. श्मशान के कुएँ का पानी घर में लाकर रखें।
2. दाएँ हाथ में सोने की अँगूठी धारण करें।

**नौवें घर का फल**

इस ग्रह-स्थिति वाले जातक का भाग्य बृहस्पति के माध्यम से जागता है। घर के बुजुर्ग भव्य-दिव्य यज्ञ घर में संपन्न कराएँ। जातक का पालन-पोषण शाही ढंग से होता है। इस मेल के साथ बुध का सम्बन्ध हो, तो अशुभ फल प्राप्त होता है। आर्थिक एवं पारिवारिक समस्याएँ खड़ी होती हैं। बृहस्पति के उपाय सहायक होंगे।

**दसवें घर का फल**

उक्त ग्रह-मेल वाला जातक शाही जिन्दगी बसर करता है। राहु-केतु हों, तो जातक के पुत्र-पौत्र होते हैं। मंगल और बुध का असर बयालिस वर्षों तक रहता है। अन्य ग्रह योग शुभ हों, तो जातक धनवान और उच्च शासक बन सकता है। जातक की पत्नी भाग्यवान रहती है। विवाह के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

शनि की वजह से जातक की मृत्यु नहीं होती पर उसे अपार कष्ट भुगतना पड़ता है। परिवार वाले लड़े-झगड़ें किन्तु आफत परिवार पर नहीं आती। ऐसे जातक के घर में दिन में सर्प निकले, तो उसका भाग्य जागता है। सर्प को मारें या मरवाएँ नहीं। चौथे घर में चंद्र हो, तो जातक बड़ा अधिकारी होता है।

ऐसे जातक शनि के उपाय करें। सर्प पूजन करें, और उसको दूध पिलाएँ।

**ग्यारहवें घर का फल**

उक्त ग्रह-मेल से पर्याप्त आमदनी होते हुए भी जातक ऋणी बनता है। बाप-दादों से संपत्ति मिलती है। जातक अपनी कमाई से खरीदी चीजों का सुख लूटता है। यह बृहस्पति का पक्का घर है। इस वजह से चोरों को भी फँसाने वाले साधु की तरह मंगल और शनि के प्रभाव को बृहस्पति बिगाड़ देता है।

**बारहवें घर का उपाय**

जन्मकुंडली के बारहवें घर में शनि और मंगल की युति हो, तो उसका शुभ फल प्राप्त होता है। बुध का प्रभाव भी अच्छा रहता है। अशुभ होने पर लंबी बीमारी होती है।

**निवारण**

1. किसी की जमानत देने की कोशिश न करें।
2. लेन-देन के पक्के कागज तैयार करवाएँ।
3. अशुभ मंगल और अशुभ शनि के उपाय सहायक होंगे।

## मंगल व राहु का मेल

मंगल 1, 2, 8 घरों में और राहु 1, 5, 7, 8, 9, 10, 11, 12 घरों में से किसी घर में बैठा हो, तो मंदा असर करता है। उसके शरीर पर लहसुन जैसे निशान होते हैं। महावत बगैर हाथी जिस तरह अपनी ही फौज को रौंद डालता है, कुछ ऐसा ही राहु का बुरा असर होने की स्थिति में होता है। दसवें घर में मंगल और राहु का मेल हो, तो संतान दुःखी रहती है। जातक को मूत्र सम्बन्धी बीमारी होती है। इसके अलावा छठे घर में सूर्य हो, तो मिट्टी के बरतन में सरसों भरकर पानी में प्रवाहित करें। राहु का बुरा असर मिटाने का एक बहुत ही आसान और सस्ता उपाय है—रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

## मंगल व केतु का मेल

मंगल और केतु का मेल बड़े तौर पर खुद के घर अनुसार फल देती है। शनि और शुक्र भी शुभ हो, तो अति उत्तम माना जाता है। कन्या की जन्मकुंडली में यह मेल हो, तो उसे मासिक धर्म चौदह वर्ष की उम्र से शुरू हो जाता है। वह अड़तालीस वर्ष की उम्र तक रहता है, जिससे संतान विषयक शुभ फल प्राप्त होता है।

जातक के लिए मंगल अशुभ हो, तो जातक की मौत पितृऋण के कारण, गोली लगने से या पुत्र के हाथों अथवा कुत्ते के काटने से होती है। चंद्र और शनि साथ हों, तो केतु निर्बल हो जाता है किन्तु मंगल का शुभ फल मिलता है। शुक्र और शनि साथ हों, तो केतु उच्च होता है। मंगल कलम की शक्ति को घटाकर शांत कर देता है। जातक के चौबीस वर्ष की उम्र तक संतान होती है।

नौवें स्थान में मंगल और केतु की युति हो, तो अट्ठाइसवें वर्ष में दशा सुधरती है। जातक बुरे या अच्छे कार्यों में एकदम आगे हो जाता है। केतु के उपाय करने से शुभ कार्यों में यश मिलता है।

**निवारण**

1. शुद्ध चाँदी के बर्तन में शहद भरकर उसे मकान की नींव में दबाएँ।
2. 1, 4, 8 घर में मंगल हो, तो मंदा फल देता है। अगर मंगल के प्रभाव को केतु घटाता हो, तो चितकबरा कुत्ता घर में पालें।

अगर चौथे, छठे या दसवें घर में यह युति अशुभ फलदायी हो, तो 28वें वर्ष से जातक की हालत खराब हो जाती है और यह खराब हालत पैंतालिस वर्ष की आयु तक रहती है। शुभाशुभ का आधार बृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करता है। इस दिशा में ग्यारहवाँ घर निर्णायक बनता है। चंद्र के उपाय करने से शांत होता है।



ग्यारहवें घर में मंगल और केतु का मेल हो और मंगल अशुभ न हो, तो दसवें स्थान के मंगल जैसा फल मिलता है।

## बुध व बृहस्पति का मेल

बृहस्पति के घर में या बृहस्पति के साथ बुध हो, तो अच्छा काम करता है। किन्तु बुध यदि बृहस्पति को देखता हो, तो जातक को बंधन में डालता है। अगर बुध-चंद्र स्थित अगले घरों में विशेष रूप से 3, 5, 9 या 12वें घर में हो, तो जातक की उम्र के पचास की उम्र के 50 वर्षों तक जहरीला असर करता है। यदि शनि या सूर्य 1, 2, 5, 9, 12 घरों में से किसी में हो तो, वर्षफल में बृहस्पति 5, 10 या 11वें घर में आए, तो जातक बंधन मुक्त हो जाता है।

बुध और बृहस्पति दोनों ग्रह नीच घर में बैठे हों या शत्रु ग्रहों की दृष्टि उन पर हो, तो पिता-दादा-ससुर को दमे की बीमारी होती है। जातक की बोलने की शक्ति कम होती है। पिता के सुख में न्यूनता, जातक खुद अपनी डूबती नैया या खेवनहार होता है, अपमानित जीवन जीता है। पूरे कुटुंब के ऐसा जातक दुःखी करता है।

बुध और बृहस्पति के मेल के कारण पिता के लिए उसका प्रभाव दुर्बल होता है। यह मेल दूसरे घर में हो, तो जातक धनवान होता है। तीसरे घर में हो, तो जातक बुद्धिमान किन्तु भिक्षुक जैसा बन जाता है। चौथे में हो, तो लाचार, पाँचवें में हो, तो मंदा व्यापारहीन, नौवें में हो, तो धननाश और दसवें में हो, तो बरबादी। जातक की आठ से दस वर्ष की उम्र तक माँ-बाप दुःखी रहते हैं।

जब बृहस्पति 1 से 6 तक के घरों में और बुध 6 से 12 तक के घरों में बैठा हो, तो बृहस्पति उम्र की चौंतीस वर्षों तक शुभ प्रभाव देता है। इसके विपरीत हो, तो बुध का विपरीत प्रभाव पच्चीस वर्ष की आयु से शुरू होता है।

दूसरे और चौथे घर में यह मेल (युति) प्रभावी रहता है और उत्तम आर्थिक स्थिति उत्पन्न करता है।

**पहले घर का फल**

शुभ हो, तो जातक सरकार में मंत्री या धनवान होता है। अशुभ हो, तो जातक बेहाल, गरीब, भिखमंगा होता है। उसकी स्थिति बड़ी दयनीय होती है।

**दूसरे घर का फल**

शुभ मेल हो, तो जातक ब्रह्मज्ञान एवं धनवान होता है। ऐसा जातक अपनी बोली के प्रभाव से अनेकों को मंत्रमुग्ध करता है। जातक अच्छा उपदेशक होता है। अशुभ हो, तो अच्छाई बुराई में बदल जाती है।

**तीसरे घर का फल**

उक्त ग्रह-स्थिति वाला जातक अधिकारी, बहादुर, धनवान होते हुए भी घोर कष्ट भोगता है। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। जातक बुद्धिमान, विद्वान होने के बावजूद पैसे-टके के फेर में रहता है।

**चौथे घर का फल**

कुंडली के चौथे घर में बुध और बृहस्पति के मेल से राजयोग बनता है। जातक

शतायु होता है। मंगल का अशुभ असर नहीं होता। अशुभ स्थिति में जातक डरपोक बनता है। बुरे कर्मों का साझीदार होता है।

**पाँचवें घर का फल**

जन्मकुंडली के पाँचवें घर में बुध और बृहस्पति का मेल हो और जातक के बृहस्पति के दिन पुत्र हो, तो जातक भाग्यवान और सुखी होता है। इस मेल का फल साठ वर्षों तक मिलता है।

**छठे घर का फल**

जन्मकुंडली के छठे घर में बुध और बृहस्पति का मेल हो, तो जातक पूजा पाठ करने वाला होता है। अशुभ होने पर बदचलन और ऐयाश होता है।

**सातवें घर का फल**

यह ग्रह-स्थिति हर तरह से शुभ फल प्रदान करती है। कन्या की जन्मकुंडली में यह मेल शुभ फल देता है। ऐसा जातक ज्ञानी होता है।

वह संतान की वजह से दुःखी होता है। लड़की को दत्तक लेने पर भी वह सुखी नहीं होता। धनी होते हुए भी दुःख के बादल उस पर मंडराते हैं। बुद्धि-विवेक काम नहीं करता। कभी राजा तो कभी रंक जैसी हालत रहती है।

**आठवें घर का फल**

बुध और बृहस्पति का मेल हो और जन्मकुंडली का दूसरा घर खाली हो, तो शुभ फल प्रदान करती है। अगर अशुभ हो, तो घर में हमेशा कोई-न-कोई बीमार रहता है। अकाल मृत्यु होती है। चंद्र के उपाय सहायक होते हैं।

**नौवें घर का फल**

बुध और बृहस्पति दोनों अपने-अपने घर के अनुसार फल देते हैं। अशुभ फलों में वैवाहिक जीवन एवं संतान के विषय में बुरे फल देखने को मिलते हैं। जातक अभागा और कम आमदनी वाला होता है।

**दसवें घर का फल**

कुंडली के दसवें घर में बुध और बृहस्पति का मेल हो, तो जातक भाग्यवान होता है, जीवन में कभी उतार नहीं आता।

**ग्यारहवें घर का फल**

कुंडली के ग्यारहवें घर में बुध और बृहस्पति का मेल हो, वर्षफल में जब बुध और बृहस्पति पहले घर में आएँ, तो ग्यारह, तेईस, छत्तीस वर्ष की आयु में जातक को धन मिलता है। वह सज्जन एवं सुखी होता है। वह विद्वान, कलाकार, लेखक बनता है। मेल अशुभ हो, तो बुध जातक की बुद्धि भ्रष्ट करता है। वह उल्टे काम करता है। धन बरबाद हो जाता है।

**बारहवें घर का फल**

बुध और बृहस्पति का मेल शुभ-स्थिति में हो, तो जातक अपने लिए भाग्यवान तथा



दीर्घायु होता है किन्तु व्यापार में कच्चा होता है। अशुभ वक्त को दूर करने के लिए मिट्टी के बरतन में खांड भरकर उसे ढक्कन में ढंककर जमीन में दबाएँ। नाक छिदवाकर चाँदी का तार डलवाएँ। यह तार शुरू में चार दिन नाक में रखें। सोलह से उन्नीस वर्षों में फिर कष्ट हो, तो 96 दिनों तक तार नाक में पहने रहें।

## बुध व शुक्र का मेल

यदि इस मेल या युति पर किसी अन्य ग्रह की दृष्टि न हो, तो शनि का शुभ प्रभाव प्राप्त होता है। दोनों ग्रहों की अवधि समान होती है और दोनों ही शक्तिशाली होते हैं। 44 वर्ष की उम्र तक दोनों इकट्ठे रहते हैं। यह मेल धन और सेहत देती है किन्तु सरकारी नौकरी स्थिर नहीं रहती। पत्नी सुख 37 वर्षों तक प्राप्त होता है। अर्ध-सरकारी नौकरी करनी पड़ती है।

**पहले घर का फल**

इस ग्रह-मेल से जातक भाग्यवान होता है। उसका भाग्योदय सरकारी नौकरी में होता है। अशुभ होने पर जातक अल्पायु रहता है और उसे दुधारू (दूध देने वाले) पशुओं से लाभ नहीं मिलता।

**दूसरे घर का फल**

इस ग्रह-स्थिति से जातक स्वयं व्यापारी या आढ़ती के रूप में आजीविका चलाता है। अपना चाल-चलन अच्छा रखे, तो दोनों ग्रहों का उत्तम फल प्राप्त होता है। अशुभ हो, तो जातक दिलफेंक, परस्त्रीरत एवं झगड़ालू किस्म का होता है।

**तीसरे घर का फल**

जातक चंद्र की चीजें छोड़कर अन्य ग्रहों की चीजों से लाभान्वित रहता है। चंद्र शुभ हो, तो जातक बुद्धिमान होता है। बुध के समय दस या चौंतीस वर्ष अथवा बृहस्पति की उम्र पच्चीस वर्ष में उसका विवाह हो जाए, तो शरीर और सरकारी कामकाज दोनों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जातक दूसरा विवाह करे, तो उसके माता-पिता तथा ससुराल पक्ष पर बुरा प्रभाव पड़ता है। तीसरा विवाह करे तो पति-पत्नी दोनों रोगी रहते हैं।

इस मेल के बुरे प्रभाव के कारण ससुराल पक्ष या सालों के साथ साझे में किए व्यापार में फायदा नहीं होता। मंगल का दृष्टि योग हो, तो 3, 4, 5, 9, 11 घरों में बैठे ग्रहों के असर को बिगाड़ता है। जातक की प्रथम पत्नी की मृत्यु हो जाती है। फिर उसी परिवार में जातक के भाई का विवाह हो, तो भी मृत्यु होती है। ऐसी हालत में तीन लड़कियाँ हों, तो अशुभत्व मिट जाता है।

**चौथे घर का फल**

बुध और शुक्र की चीजों को छोड़कर अन्य ग्रहों की चीजों के व्यवसाय में लाभ होता है। यह युति राजयोगकारक है। मामा की कन्या हो, तो मामा से सहयोग मिलता है। अगर यह मेल अशुभ हो, तो ससुराल और ननिहाल दोनों पर उसका बुरा असर होता है। जातक का चाल-चलन अच्छा नहीं होता। मातृपक्ष के सम्बन्धियों से साझीदारी में कोई काम-धंधा करें, तो उसमें हानि होती है। बुध एवं शुक्र की कारक वस्तुओं के व्यापार

में घाटा होता है। रंग-रोगन का सामान, बरतन, ढोल-बाजों, खेती की जमीन, पशुओं की खरीदारी, पशु आहार का व्यापार आदि से आर्थिक नुकसान होता है। इस अशुभ निवारण के लिए चंद्र के उपाय सहायक होंगे।

**पाँचवें घर का फल**

इस मेल का बुरा असर पत्नी और संतान पर नहीं पड़ता। अशुभ होने पर जातक झगड़ेबाजी के कारण स्वयं को एवं साथियों को भी बरबाद करता है। ऐसा जातक सदैव दुःखी रहता है।

**छठे घर का फल**

उक्त ग्रहों का मेल जातक के लिए राजयोग कारक बनता है। पुत्र न होने पर भी कन्या ही पुत्र का काम करती है। स्त्रियों से जातक लाभान्वित होता है। वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। सूर्य दूसरे घर में हो, तो कलम से लाभ मिलता है। ऐसा जातक किताबें छपवाने और बेचने का काम बड़े पैमाने पर करता है। लेखन-संपादन जैसे काम फायदेमंद होते हैं।

दूसरे घर में शनि बैठा हो, तो धन-संपत्ति में वृद्धि होती है और ईमानदारी से कमाया धन जीवन में काम आता है। इस मेल के साथ सूर्य हो, तो संतान विषयक समस्याएँ रहती हैं। पत्नी का विरोध भी उसे सहना पड़ता है।

**सातवें घर का फल**

ऐसे जातक की पत्नी बहुत चतुर होती है। उसका वैवाहिक जीवन उत्तम रहता है। जातक व्यापार या आढ़त का काम करके धनवान बनता है। कोई चीज तराजू में तोलकर देने वाले व्यवसाय में लाभ होता है। राहु या केतु के कारण चंद्र दुर्बल बने, तो शुक्र और बुध के प्रभाव के कारण संतान एवं पत्नी के बारे में विघ्न आते हैं। काँसे के बरतन में भोजनादि करने से यह कष्ट मिट जाता है।

**आठवें घर का फल**

जातक को इसके शुभ फल प्राप्त होते हैं। वैसे इस मेल का प्रायः अशुभ फल ही अधिक मिलता है। परिणामस्वरूप जातक बुद्धि-विवेक के विरुद्ध चलता है। ननिहाल और संतान को यह मेल बरबाद करता है। पति-पत्नी की जोड़ी 'एक अंधा दूसरा काना' जैसी रहती है। यहाँ शुक्र एवं बुध दोनों का अशुभ फल मिलता है। जातक जीवन में असफल रहता है।

**नौवें घर का फल**

यह मेल मिश्रित फल देता है। बुध का फल मंदा हो, तो शुक्र का फल अच्छा मिलता है। केतु या बृहस्पति 1, 3, 6, 7, 9, 11 घरों में से किसी एक घर में हो, तो बुध का अशुभ फल नहीं होता।

यदि बुध अशुभ हो, तो 17 वर्ष के पहले या उसके बाद कन्या के जन्म के बाद पिता के अरमान पूरे होने लगते हैं। अशुभ मंगल अवरोध पैदा करता है। शुक्र अंधा और बुध कोढ़ी बन जाता है। बुध की वस्तुओं का व्यापार एवं उससे सम्बन्धित जनों से जातक बेहाल हो जाता है।



**दसवें घर का फल**

जातक बुद्धिमान एवं अच्छा जीवन बिताने वाला होता है। दूसरा घर खाली हो या शुभ हो, तो बहुत अच्छा फल मिलता है। सेहत अच्छी रहती है। किसी कारण से आठवाँ घर अशुभ हो, तो बुध-शुक्र दोनों का फल दसवें घर में अशुभ मिलता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

बुध और शुक्र ग्यारहवें घर में हों, तो उनके घर अनुसार शुभ फल प्राप्त होते हैं। अशुभ हो, तो जातक को भाई-बहनों से अलग रहना पड़ता है। नौकरी में वरिष्ठ अधिकारी परेशान करते हैं। इस स्थिति में बुध—लड़का-लड़की, शुक्र-पत्नी, गाय, गाय का चारा आदि सम्बन्धित वस्तुओं का शुभ फल मिलता है।

बुध और शुक्र ग्यारहवें, मंगल और शनि आठवें घर में हों, तो शनि की उम्र 9, 18 या 36वें साल में खुद के मकान में आग लगती है जिसमें दुधारू पशु जलकर मर जाता है।

**निवारण**

1. बकरी को हरा चारा, ज्वार खिलाया करें।
2. खुद की कन्या को गाय का दान करें।
3. बुध और शुक्र ग्यारहवें तथा बृहस्पति और सूर्य दसवें घर में हो, तो सोने के मनकों वाली माला दूध में भिगोकर पहनने से बुध और बृहस्पति का दोष मिट जाता है।
4. चंद्र के उपाय सहायक होंगे।

**बारहवें घर का फल**

यह मेल उत्तम फलदायक होता है। इसके अशुभ होने पर दुर्दशा होती है। वैवाहिक जीवन बरबाद हो जाता है। बुध और शुक्र दूसरे घर में हों, तो शनि का अशुभ फल मिलता है। दोनों ग्रहों का असर सेहत पर होता है।

## बुध व शनि का मेल

बुध और शनि का मेल का असर 39 से 40 वर्ष की आयु तक रहता है। किन्तु इसका संतान पर कोई खराब असर नहीं पड़ता। 24 वर्ष की आयु तक पुत्र होता है। 42 वर्ष की आयु तक दुश्मनों से बचाव होता रहता है। पिता का उत्तम और दीर्घ सुख प्राप्त होता है। जातक दयालु और सद्भागी होता है।

निम्नलिखित को छोड़कर अन्य घरों में बुध और शनि के घर अनुसार फल मिलते हैं—

**दूसरे घर का फल**

जातक को शनि सम्बन्धी वस्तुओं (लोहा-पत्थर) आदि से लाभ मिलता है। जातक के हाथ में इतना पुण्य संचित रहता है कि इसका हाथ लगने से विष भी अमृत बन जाता है। जातक हर तरह से सुखी जिंदगी बिताता है। उसके माँ-बाप से मधुर सम्बन्ध रहते हैं।

अशुभ होने पर जातक शराबी-कबाबी होता है। शनि और बुध जातक को ससुराल

पक्ष का सुख नहीं मिलने देते। मशीन, मोटर, ट्रक, जहर, शराब आदि के कारण अथवा शनि की वस्तुओं का व्यापार जातक की मौत के कारण बनते हैं।

**चौथे घर का फल**

चौथे घर में बैठे बुध और शनि को चंद्र भी प्रभावित करता है। इसलिए बुध का अशुभ प्रभाव जातक पर नहीं पड़ा। अशुभ प्रभाव में हो, तो जातक खूनी बनता है। चंद्र का अशुभ प्रभाव यहाँ देखने को मिलता है। दूसरों को क्षति पहुँचाने का स्वभाव जातक का रहता है।

**आठवें घर का फल**

बुध और शनि का मेल अशुभ हो, तो 34 वर्ष की उम्र तक जातक को मंदे भाग्य का सामना करना पड़ता है। उसके बाद शुभ फल मिलता है। उसे संतान सुख अच्छा मिलता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

जन्मकुंडली के ग्यारहवें घर में बुध और शनि अच्छा फल देते हैं। पहले घरों में राहु और बाद में शनि और उसके बाद केतु हो, तो शनि के अच्छे प्रभाव मिलते हैं। तीसरा घर कमजोर न हो, तो जातक धनी व्यक्ति होता है। 45 वर्ष तक धनागम होता है। तीसरे घर को कोई ग्रह खराब करता हो, तो जातक का भाग्य शनि के हाथ में रहता है।

## बुध व राहु का मेल

बुध और राहु का मेल होने पर चंद्र और बृहस्पति सामान्य तौर पर मंदे फल करते हैं। जिस तरह बड़ के पेड़ पर बैठे पक्षी फलों को नीचे फेंकते हैं, उसी तरह यह मेल चंद्र और बृहस्पति को खराब करता है।

1 से 6 घरों में होने पर इस मेल का अच्छा फल जातक को प्राप्त होता है और 7 से 12 घरों में होने पर इसका मंदा फल मिलता है।

यह मेल 2, 3, 9 या 12वें घर में हो, तो वह बृहस्पति के प्रभाव को क्षीण करता है। अगर चौथे घर में हो, तो बुध जातक की बुद्धि खराब करके उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है। दूसरे, तीसरे या पाँचवें घर में यह मेल हो, तो बुध का अच्छा फल प्राप्त होता है। दूसरे, चौथे या पाँचवें घर में हो, तो बुध के अच्छे तथा राहु के बुरे फल मिलते हैं। 2, 3, 5, 6, घरों में से किसी एक घर में हो, तो इस युति के अच्छे फल जातक को मिलते हैं।

अगर बुध 2, 8, 9, 12 घरों में से किसी एक घर में हो, तो जातक को शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि बुध 3, 8 या 9 अथवा 12वें घर में हो और राहु 1, 2 5, 7, 8 या 11वें घर में हो, तो जातक एकांत में रहता है या निष्क्रिय हो जाता है।

**पहले घर का फल**

कुंडली के पहले घर में बैठे बुध और राहु के जीवन में बाधा खड़ी करती हैं।

**तीसरे घर का फल**

इस मेल के प्रभाव से 34 वर्षों तक अशुभ फल प्राप्त होते हैं। जातक की बहन



धनी होती है। अशुभ स्थिति में जातक की बहन विवाह के अल्प समय में विधवा हो जाती है या फिर उसका तलाक हो जाता है या वह अपना खुद ही घर छोड़कर भाग जाती है।

**चौथे या नौवें घर का फल**

बुध और राहु 4, 9 घरों में से किसी एक घर में होने पर स्वयं जातक के लिए विपरीत प्रभाव डालती है, तो अन्यों को इसका लाभ मिलता है।

**सातवें या नौवें घर का फल**

यह मेल जातक के लिए बाज की तरह मददगार बनता है। परायों के लिए एक मूर्ख मित्र की तरह फल देता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

जन्मकुंडली के ग्यारहवें घर में राहु और बुध का मेल अशुभ होने पर बहन या लड़की को विवाह के बाद 7 दिन, 7 महीने या 7 वर्ष में तलाक लेना पड़ता है।

**बारहवें घर का फल**

जातक स्वयं एवं परायों के लिए मंद फलदायी होता है। बुध और राहु दोनों शुभ स्थिति में हों, तो शुभ फल प्राप्त होते हैं। अशुभ स्थिति में बुध का जहर इतना बढ़ जाता है कि राहु अपना भाग लेकर भाग जाता है। राहु की चीजों से सम्बन्धित व्यापार करने पर सगे-सम्बन्धी सब बरबाद हो जाते हैं।

**निवारण**

1. कन्या के माता-पिता के मकान में पश्चिम दिशा के भाग के ऊपरी भाग में पूर्व की तरफ अगर रसोई हो, तो कन्या या बहन की शादी के पहले रसोई हटाकर दूसरी जगह बना लेनी चाहिए।
2. पश्चिम दिशा में दीवार के पास गैस-चूल्हा या भट्ठी हो, तो वहाँ से हटा दें या एक दीवार इनके सामने बनवाएँ।
3. चंद्र की चीजें श्मशान में जाकर दबा दें।
4. श्मशान से पानी लाकर घर में रखें।
5. कच्ची मिट्टी की सौ गोलियाँ बनाकर रखें। रोज एक गोली धर्म स्थान में जाकर रखें। यह प्रयोग सौ दिन तक करें। इस प्रयोग में व्यवधान न आने दें। बाहर जाना पड़े, तो वहाँ भी यह प्रयोग करते रहना चाहिए।

## बुध व केतु का मेल

चौथे घर का केतु धर्मात्मा होता है। किन्तु उसके साथ बुध होने पर माता और संतान के जीवन पर बुरा असर होता है। माता और संतान जीवित हों, तो उनके हाथों जातक का धन बरबाद होता है। जमीन का लेन-देन या मुसाफिरी अशुभ फल देती है। मंगल बारहवें घर में हो, तो मंगल के घर 1-8वें घर पर बुध और केतु का अशुभ प्रभाव पड़ता है।

बुध की 17 साल की उम्र में बहन की संतान का नाश होता है। इसके लिए मंगल का उपाय सहायक होता है।

3, 4 या 8वें घर में बुध हो और किसी अन्य घर में शुक्र हो, तो जातक का परिवार बरबाद हो जाता है। चंद्र के उपाय सहायक होते हैं।

बुध और केतु के मेल में जब केतु का स्थानगत अशुभ फल मिलता है, तब बुध के बुरे प्रभाव के साथ केतु भी अशुभ बर्ताव करता है। मंगल के उपाय सहायक होंगे।

**दूसरे घर का फल**

कुंडली के दूसरे घर में एक का प्रभाव शुभ हो, तो दूसरे का अशुभ होता है। जातक की बहन या मामा का नाना लंगड़ा होता है, या हो जाता है अथवा केतु की बीमारियाँ लग जाती हैं। वर्षफल जन्मकुंडली में राहु आठवें घर में आ जाए, तो बहन या मामा बरबाद हो जाता है।

**तीसरे घर का फल**

जन्मकुंडली के तीसरे घर में बुध और केतु का मेल होने पर अशुभ फल मिलता है। पाँचवें घर में बुध और केतु हो, तो जातक की सत्तर वर्ष की आयु में बहन को लड़का होता है। किन्तु उसकी आयु कम ही रहती है।

**छठे घर का फल**

कुंडली के छठे घर में बुध और केतु का मेल हो, तो जातक को अच्छा फल प्राप्त होता है। दूसरे घर के ग्रह दृष्टि द्वारा अशुभ न करें, तो केतु की वस्तुओं पर अशुभ प्रभाव पड़ता है। अगर बुध की वस्तुओं पर अशुभ प्रभाव पड़े, तो जातक का नहीं, किन्तु उससे जुड़े अन्यों का मंदा असर जरूर पड़ता है।

**आठवें घर का फल**

कुंडली के आठवें घर में बुध और केतु का मेल हो, तो बुध की उम्र 17 से 34 साल तक होती है। केतु से सम्बन्धित शारीरिक कष्ट होते हैं। कमर, लिंग, पैर, घुटने खराब हो जाते हैं। बुध का उपाय सहायता करता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

कुंडली के ग्यारहवें घर में बुध और केतु का मेल हो, तो दोनों ग्रहों का बुरा फल मिलता है।

**बारहवें घर का फल**

कुंडली के बारहवें घर में बुध और केतु का मेल हो, तो बुध और केतु दोनों बरबाद हो जाते हैं। शारीरिक पीड़ाएँ होती हैं। बुध के उपाय सहायक होंगे।

शेष घरों में यह मेल स्थान अनुसार फल देता है।

## बृहस्पति व शुक्र का मेल

वृहस्पति और शुक्र का मेल होने पर दुःख या बीमारी से बचाव होता है। दोनों का संयुक्त प्रभाव 32 साल की उम्र तक रहता है। जातक को हमेशा स्त्रियों से सहायता मिलती



है। पहले वृहस्पति का और उसके बाद शुक्र का भला या बुरा प्रभाव जातक पर पड़ता है।

ऐसा जातक ऐयाश होता है। उसके सिर पर इश्क का भूत सवार रहता है। स्वास्थ्य खराब होता है। संतानोत्पत्ति की शक्ति कमजोर रहती है। संतान के जन्म के साथ ही दुःख झेलने पड़ते हैं।

**पहले घर का फल**

यहाँ बृहस्पति और शुक्र का मेल हो, तो जातक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। किन्तु पत्नी या पिता जीवित रहें, तभी यह फल मिलता है। वैवाहिक जीवन सुचारु चलता है। अशुभ मेल हो, तो जातक निर्धन होता है। उसे वैवाहिक जीवन के तथा परिवार के कष्ट देखने पड़ते हैं।

**दूसरे घर का फल**

इस ग्रह-स्थिति के कारण जातक को भलाई के बदले बुराई मिलती है। जातक के कारण संतानोत्पत्ति में अवरोध उत्पन्न होता है, झगड़े होते हैं। मिट्टी का काम करने से लाभ मिलता है।

**तीसरे घर का फल**

ऐसे योग वाला जातक सुखी रहता है। उसका नसीब चमकता रहता है। उसके धन से भाइयों का उद्धार होता है। जातक की पत्नी पुरुष की तरह सहायक होती है। जब भाग्य जागता है, तो लोग खुशामद करते हैं। फलस्वरूप इसके भाग्य के साथ इसकी शक्ति भी क्षीण हो जाती है। चारों तरफ हार होती है। खुशामद बरबादी लाती है। इसलिए ऐसे जातक को खुशामदियों से बचकर रहना चाहिए।

**चौथे घर का फल**

यह मेल कुछ हद तक शुभ फल प्रदान करता है। एक से अधिक स्त्रियों से संपर्क न रखने पर बृहस्पति के शुभ फल प्राप्त होते हैं। संतान होने पर पत्नी से तलाक हो जाता है। जातक के एक से अधिक पत्नियाँ होना ही अशुभत्व की निशानी है। अशुभ फल होते हुए भी कोई स्त्री एक बालक को जन्म दे, तो संतान दर-दर की ठोकरें खाने वाली होती है। स्वयं का चरित्र अच्छा रखने से अशुभता कम होती है। अपनी पत्नी के साथ ही पुनः विवाह रचाना शुभ फलकारी होगा।

**पाँचवें घर का फल**

इसे ग्रह-स्थिति के कारण जातक संतान एवं विद्या की दृष्टि से भाग्यशाली रहता है। विद्या के कारण ही धनागम होता है। यदि जातक परायी स्त्री के साथ अवैध सम्बन्ध रखे, तो धन की चोरी, धन नाश बार-बार होता रहता है। इसके लिए अपना चाल-चलन एवं अचारण स्वच्छ रखें।

**छठे घर का फल**

ग्रहों के मेल के कारण संतान की भाग्यवृद्धि होती रहती है। इस सुख को बनाए रखने के लिए पत्नी अपने बालों में सोने की पिन लगाया करें। केतु से सम्बन्धित

सगे-सम्बन्धी या पुत्र (संतान) हो या जीवित न रहे और लड़की जन्म ले, तो भाग्य की हानि होती है। अपनी पत्नी के साथ झगड़ा न करें, उससे नफरत न करे, यही उपाय इसके लिए सहायक होता है।

**सातवें घर का फल**

बुध की वस्तु, उससे सम्बन्धित व्यवसाय या सगे-सम्बन्धियों का साथ जातक को मिलता है। जातक को रुपये-पैसे की कमी नहीं रहती। पैसा जाने के बाद भी आर्थिक तंगी महसूस नहीं होती। दत्तक संतान सुखी रहती है। नसीब चाहे जितना खराब हो, तो भी ठीक हो जाता है।

अशुभ प्रभाव हो, तो जातक के भाई-बंधु मौज उड़ाते हैं, परन्तु जातक दुःखी रहता है। स्त्रियों के झगड़े बरबादी का कारण बनते हैं। यदि मंगल चौथे घर में हो, तो बृहस्पति मंदा हो जाता है। जातक के संतान नहीं होती। जातक का धन भाई या दूसरे लोग हड़प लेते हैं।

**आठवें घर का फल**

आर्थिक दृष्टि से यह मेल सुखदायी नहीं होता। अन्य बातों में पूर्ण शुभ फल मिलता है। यहाँ बृहस्पति दूसरे घर का एवं शुक्र-आठवें घर का फल देता है।

**नौवें घर का फल**

उक्त ग्रह-स्थिति के कारण जातक भाग्यवान होता है। उसे दुनिया के सभी सुख प्राप्त होते हैं। बीसवें वर्ष में तीर्थयात्रा होती है। दोनों ग्रह अपने-अपने शुभ फल देते हैं। अशुभ स्थिति में मंदा हाल रहता है। उसकी पत्नी सदा दुःखी रहती है।

**दसवें घर का फल**

जातक की पुश्तैनी दौलत और जायदाद उसके काम नहीं आती। खुद की कमाई में ही बरकत रहती है। जातक नास्तिक एवं धर्महीन हो, तो पैसा आता-जाता रहता है।

13 से 15 साल की उम्र में परायी स्त्री जातक को बरबाद करती है। इस वजह से स्वास्थ्य गिर जाता है। माता-पिता भी दुःखी होते हैं। भाइयों से झगड़े होते हैं। परायी पीड़ा अपने सिर लेने के कारण निर्धन ही बना रहता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

ग्यारहवें घर में बृहस्पति और शुक्र का मेल हो, तो दोनों के घर अनुसार फल मिलते हैं। तीसरा घर खाली हो, तो जातक स्त्रियों का रसिया रहता है। उसे स्वप्नदोष भी होता रहता है। उपाय के तौर पर तेल को दान दें।

**बारहवें घर का फल**

बारहवें घर में शुक्र और बृहस्पति का मेल जातक को सुखी रखता है। उसे अदृश्य शक्ति की सहायता मिलती है। वह आध्यात्मिक बनता है।

## बृहस्पति व शनि का मेल

ऐसे जातक के भाग्य का निर्णय उसकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें घर के ग्रह करते हैं। ग्यारहवाँ घर खाली हो, तो जन्मकुंडली में जो शनि की स्थिति होगी, उसके अनुसार



जातक का भाग्य चलेगा। 34 वर्ष की उम्र तक पिता का साथ रहेगा। धन-सम्पत्ति के विषय में 43 वर्ष की उम्र तक दोनों ग्रहों का प्रभाव रहेगा।

यदि दोनों ग्रह शुभ हों, तो उत्तम फल प्राप्त होता है। शनि अशुभ और बृहस्पति शुभ घरों में हो, तो जातक स्वयं परेशान रहकर भी दूसरों का भला करता है। यह जातक जिसके लिए भी काम करता है उसे मालामाल बना देता है। यदि बृहस्पति दुर्बल और शनि शुभ घर में हो, तो जातक के दुःख-दर्द मिट जाते हैं।

सूर्य पहले घर में हो और शनि शुभ तथा बृहस्पति नीच का हो, तो जातक का कोई अंग-भंग हो जाता है, साथ ही धन-संपदा भी नष्ट होती है। दोनों नीच हों, तो शरीर अच्छा रहता है, किन्तु धन का नाश अवश्य होता है।

शनि-बृहस्पति पर जिस ग्रह की दृष्टि होगी, उस ग्रह की समयावधि में दोनों ग्रह जागेंगे। सूर्य 22, चंद्र 24, मंगल 28वाँ वर्ष बिगाड़ता है। इस समयावधि में ग्रह प्रभाव देखने को मिलता है।

जो जातक ईश्वर भक्त, कृतज्ञ एवं संतोषी स्वभाव का होता है, तो नीच घरों में बैठे हुए ग्रह भी अपना नीच प्रभाव नहीं दिखाते।

यदि बृहस्पति और शनि पर शुक्र की दृष्टि हो, तो जातक का धन केवल दिखावे के लिए होता है। घर में पत्नी आने के बाद ही पैतृक संपत्ति में वृद्धि होती है।

**पहले घर का फल**

जन्मकुंडली के पहले घर में बृहस्पति और शनि बैठे हुए हों, तो जातक साधु या उपदेशक बनकर एकांत में रहता है। शनि अगर अशुभ हो, तो धन एवं परिवार दोनों की बरबादी हो जाती है।

**दूसरे घर का फल**

इस ग्रह-स्थिति के कारण जातक विद्वान् और प्रसिद्ध होता है। उसे मान-सम्मान मिलता है एवं उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बृहस्पति और शनि दोनों इकट्ठे होने से चंद्र उच्च बनता है। इस कारण जातक सच्चा प्रेमी होता है।

चंद्र अशुभ होने पर बीमारी आती है। बृहस्पति की चीजें तथा खुद की तंदुरुस्ती एवं पिता की आयु के विषय में दोनों ग्रह अशुभ फल देते हैं। शनि की चीजें तथा सगे-सम्बन्धियों पर अशुभ प्रभाव पड़ता है। इस अशुभता को दूर करने के लिए शनि के उपाय सहायक होंगे।

**तीसरे घर का फल**

रुपये पैसे, धन-संपत्ति के विषय में जातक शुभ फल प्राप्त करता है। उसका जीवन सामान्य प्रयत्नों से सुखी बनता है। अगर अशुभ हो, तो इस घर का शनि निर्धनता देता है। शनि की समयावधि 9, 18, 36 वर्षों में शनि पिता, धन-दौलत सम्बन्धी अशुभ फल देता है।

**चौथे घर का फल**

इस घर का जातक समाज में विख्यात होता है। दूसरों को पीड़ा देने वाला व्यक्ति जातक के लिए शुभ बन जाता है। जातक लकवे का रोगी होता है। इसे सर्प भी डस सकता है।

**पाँचवें घर का फल**

अन्य ग्रहों के अनुसार जातक साधारण भाग्य वाला होता है। उसे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, किन्तु सूर्य के शुभ प्रभाव में न्यूनता आती है। बृहस्पति का व्यवसाय झगड़े का कारण हो सकता है। अपने से बड़े सरकारी अधिकारियों के खिलाफ मुकदमेबाजी में हानि होती है, चाहे मुकदमे का फैसला जातक के पक्ष में क्यों न हो।

**छठे घर का फल**

उक्त ग्रह-स्थिति के कारण जातक को पत्नी का सुख पूर्ण रूप से मिलता है। अशुभ होने पर पत्नी के सुख में कमी आती है। बृहस्पति बलवान एवं शनि अशुभ हो, तो जातक की ससुराल दरिद्री रहती है और पत्नी के साथ झगड़े होते रहते हैं।

**सातवें घर का फल**

यहाँ उपर्युक्त ग्रहों का मेल हो, तो शनि की चीजों के बारे में शुभ फल प्राप्त होते हैं। इन चीजों के लिए धन खर्च करने में धन में बरकत आती है। ऐसा जातक कुलीन, भले काम करने वाला होता है। अशुभ हो, तो बुध की चीजों के कारोबार एवं सम्बन्धियों द्वारा हानि होती है। लड़की के जन्म के बाद से खराब दिन शुरू होते हैं। बचपन में कष्ट रहते हैं। शनि पर अशुभ प्रभाव न पड़े, तो संपत्ति विषयक स्थिति अच्छी रहती है।

**आठवें घर का फल**

इस घर में स्थित ग्रहों के कारण सामान्य फल जातक को प्राप्त होता है। सामान्य धन-संपदा जातक के पास होती है। वह दीर्घायु होता है। इस घर का अशुभ फल नहीं होता। जातक का घर तबाह हो सकता है, पर जातक की मौत नहीं होती।

**नौवें घर का फल**

जातक का परिवार बड़ा होता है। उसके पास जो धन होता है उससे वह लोगों को तारता है। ऐसा जातक खाने-पीने के मामले में शौकीन रहता है। चतुर होने से लोगों में सम्मानित होता है। स्वयं के लिए उत्तम भाग्य के साथ उसका जन्म होता है। वह न पक्का धार्मिक और न पूरा दयालु ही होता है।

**दसवें घर का फल**

जातक उत्तम कार्यों को करने वाला और अपने लिए उत्तम भाग्यशाली रहता है। वह विख्यात होता है तथा गणेश जी की पूजा-अर्चना करने वाला होता है।

**ग्यारहवें घर का फल**

जातक की दोस्ती से सबका भला होता है। इसके भाग्य की बागडोर तीसरे घर के ग्रहों के हाथों में होती है। तीसरा घर खाली हो, तो शनि भाग्य-विधाता बनता है। शनि अशुभ हो और बुध भी नष्ट हो या अशुभ बने, तो भाग्य का कोई भरोसा नहीं होता। खुद के लिए धन नहीं मिलता, तरसना पड़ता है। सूर्य और बुध शुभ हो, तो जातक के पास विमान रखने की शक्ति रहती है।

**बारहवें घर का फल**

उपर्युक्त ग्रह-स्थिति वाला जातक भाग्यवान होता है। राहु-केतु का अशुभ फल उसे



नहीं मिलता। सातवें बृहस्पति और शनि का फल भी साथ ही मिलता है। विवाह के बाद ही जातक का भाग्योदय होकर प्रगति होती है। ऐसा जातक कभी सोने का दान करता है, तो कभी रात की नींद उसे नसीब नहीं होती। इस अशुभत्व को मिटाने के लिए चंद्र के उपाय सहायक होंगे।

## बृहस्पति व राहु का मेल

बृहस्पति और राहु वाला जातक बात का धनी होता है। जातक कभी किसी के आगे नहीं झुकता। इसकी दुनिया दुरंगी होती है। कभी आशावादी तो कभी निराशावादी होता है। 12 वर्ष के बाद का समय चक्र अधिक मंदा होता है। उम्र के 17 से 24 वर्ष तक का समय अच्छा रहता है।

25वें वर्ष में शादी होती है, उसका फल भी अच्छा मिलता है। 17वें वर्ष में बुध, 20, 22वें वर्ष में सूर्य, 24वें वर्ष में चंद्र तथा 28वें वर्ष में हो, तो यह समयावधि शुभ व्यतीत होती है। 28वें वर्ष से ग्रह अपना शुभ फल देना शुरू करते हैं। शनि की 36 वर्ष की अवधि में धन प्राप्त होता है। 48 वर्ष की उम्र में उसे संतान का पूर्ण सुख मिलता है।

इस जातक का जन्म धनवान के यहाँ हो, तो वह फकीर बन जाता है। गरीब के यहाँ जन्म ले, तो धनवान बनता है। यह परिवर्तन पुत्र जन्म के बाद शुरू होता है। दोनों ग्रह इकट्ठे हों, तो बनावटी बुध का प्रभाव प्रारंभ होता है। जातक को मुफ्त में शोहरत हासिल होती है। सातवें या बारहवें घर में यह मेल हो, तो जातक हर क्षेत्र में कुशल होता है। यह मेल पहले या छठे घर में हो, तो जातक के पास दैवी शक्ति रहती है।

**पहले घर का फल**

राहु और बृहस्पति के मेल वाला जातक धनवान होता है। उसकी बोई हुई फसल खराब हो जाए, तो भी उसे रोजी-रोटी की कमी नहीं रहती।

**दूसरे घर का फल**

उपर्युक्त ग्रह-स्थिति वाला जातक भलाई के अनेक काम करता है। वह गरीबों का मसीहा होता है। राहु जातक के पिता पर एवं उसके धन पर कोई बुरा असर नहीं डालता। राहु बृहस्पति के हुक्म से चलता है। किसी कारण से जातक गरीब हो जाता है, तो भी वह वैभवशाली जीवन जीने वाला साधु समान होता है। अगर आठवें घर में बृहस्पति और राहु के शत्रु ग्रह बैठे हों या आठवाँ घर अशुभ हो, तो जातक की संतान के लिए बुरा असर करता है।

**तीसरे घर का फल**

जन्मकुंडली के तीसरे घर में बृहस्पति और राहु का मेल हो, तो चंद्र का उत्तम प्रभाव देखने को मिलता है। बृहस्पति का अशुभ फल नहीं होता। बुध और केतु 34 वर्षों तक फल देते रहते हैं।

**चौथे घर का फल**

ऐसा जातक बहादुर होता है और शत्रुओं से उसका बचाव होता है। राहु की आयु साढ़े दस वर्ष से 21, 42 वर्षों के बाद राहु और बृहस्पति का तीसरे स्थान का फल देता है। इसके निवारण के लिए केतु का उपाय सहायक होता है।

**पाँचवें घर का फल**

उक्त ग्रह-स्थिति वाला जातक राज्याधिकारी, मुखिया, नेता या सेनापति बनता है। अशुभ होने पर उसे संतान सम्बन्धी बुरा फल मिलता है।

**छठे घर का फल**

यहाँ दोनों ग्रह अपने-अपने घरों के अनुसार फल देते हैं।

**सातवें घर का फल**

उपर्युक्त ग्रहों के मेल से जातक का ससुर या पति-पत्नी दोनों में से एक जीवित रहता है। दमे की बीमारी होती है। अशुभ वुध होने पर भाग्य मंदा रहता है। जवानी में सुख एवं आराम मिलता है।

**आठवें घर का फल**

जन्मकुंडली में वृहस्पति और राहु का मेल होने पर जातक सदा सुखी रहता है। झूठी आशाओं के कारण उसका जीवन दुःखी बनता है। बृहस्पति का उपाय सहायक होता है।

**नौवें, दसवें व ग्यारहवें घर का फल**

इन घरों में राहु और बृहस्पति का मेल हो, तो दोनों ग्रह घर अनुसार फल देते हैं।

**वारहवें घर का फल**

इस घर में वृहस्पति और राहु का मेल हो, तो जातक अक्लमंद होता है। कारीगरी के कामों से उसे खास लाभ नहीं मिलता।

**निवारण**

केतु के उपायों द्वारा राहु को ठीक करें। केतु भी अशुभ हो, तो चंद्र के उपाय करें। माता द्वारा किए गए चंद्र के उपाय कारगर होते हैं। 43 दिनों तक मंगल की वस्तुओं का दान करें। दूध से धोकर जौ पास में रखें। 43 दिनों तक उनको नदी में बहाएँ।

## वृहस्पति व केतु का मेल

केतु शुभ होने से संतान का सुख मिलता है। मामा की मृत्यु होती है। पड़ोसी का अशुभ होता है। किन्तु बृहस्पति (पिता-दादा) का अशुभ नहीं होता। केतु अशुभ हो और बृहस्पति और केतु इकट्ठे हों, तो 40 वर्षों तक दुश्मन जातक को दुःखी करते हैं। केतु के छठे घर में चंद्र और मंगल हो और बृहस्पति के मूल (नौवाँ या बारहवाँ घर) शुक्र, बुध, राहु हो और धर्म स्थान में पीला नीबू देने से लाभ होगा।

**पहले घर का फल**

बृहस्पति और केतु के मेल से जातक ऐश्वर्य संपन्न, धार्मिक, भोगी होता है। जातक जिस घर में आता है, उसे सुखी करता है।

**दूसरे घर का फल**

इस ग्रह-स्थिति का जातक लोगों का हमदर्द होता है। वह प्रगतिपथ पर आगे बढ़ता है। अशुभ हो, तो जातक खुदगर्ज एवं नसीब का खराब होता है।



**चौथे घर का फल**

ऐसे जातक का विद्याध्ययन पूर्ण होता है। उसे धन-दौलत का पूरा सुख मिलता है। वह माता-पिता की [illegible] करने वाला होता है। अशुभ हो, तो पुत्र प्राप्ति में विलंव होता है। संतान में कमी रहती है।

**छठे घर का फल**

इस ग्रह-स्थिति वाला जातक भाग्यशाली होता है। अगर दूसरा घर खाली हो, तो जातक को अपनी मृत्यु का अहसास पहले ही हो जाता है। अशुभ होने पर पहली संतान का सुख नहीं मिलता।

**सातवें घर का फल**

इस घर में बृहस्पति और केतु के मेल से जातक तपस्वी बनता है। भूखा नहीं मरता। अशुभ होने पर भी निर्धन नहीं होता। वह सातवें घर के अशुभ बृहस्पति का फल पाता है।

**आठवें घर का फल**

कुंडली के आठवें घर में वृहस्पति और केतु का मेल होने पर जातक आलसी, दरिद्री और दुःखी होता है।

**बारहवें घर का फल**

जन्मकुंडली के बारहवें घर में वृहस्पति और केतु का मेल होने पर जातक धनवान और सुखी होता है। अशुभ होने पर वह दुःख भोगता है।

शेष घरों में गृह-स्थिति के अनुसार फल मिलता है।

**निवारण**

1. केतु का उपाय करने से राहु की अशुभता मिट जाती है।
2. सोना शरीर पर धारण करना लाभ देगा।
3. लड़का नालायक निकलने पर चंद्र की उपासना करें।
4. जौ दूध से धोकर थोड़े दाने खुद के पास रखें और बाकी के नदी में प्रवाहित करें। 43 दिन यह प्रयोग करना चाहिए।

## शुक्र व शनि का मेल

इस मेल वाला जातक ऐशोआराम की जिंदगी जीता है। शुक्र व शनि का मेल 52 वर्ष तक रहता है। शुक्र का फल चार गुना हो, तो शनि का फल पाँच गुना मिलता है। तीसरे हिस्से का शनि अशुभ रहता है। वह खुद के साथी ग्रह पर बुरा असर नहीं डालता, बल्कि बारह वर्षों तक मदद करता है।

शुक्र और शनि के मेल में शनि जातक के पिता का द्योतक होता है। मंगल और केतु जैसा फल शुक्र और शनि का मेल देता है। जातक के घर में पूजा के लिए इष्ट देवता की मूर्ति होती है, यही इस मेल की निशानी है। इस मेल के समय बुध चुप रहता है। वह शुभ या अशुभ कोई फल नहीं देता। राहु व केतु भी शुभ फल देते हैं।

**पहले घर का फल**

इस गृह-योग वाला जातक आर्थिक दृष्टि से चिंतित रहता है। [illegible]भ ग्रह (मेल) होने पर घर-परिवार के विषय में फल मिलता है। जातक आ[illegible] आराम तलब होता है।

**तीसरे घर का फल**

शुक्र व शनि के मेल के फलस्वरूप इस घर में स्त्री या पुरुष दोनों को सुख मिलता है—स्त्री हो, तो पति सभी काम कर लेता है और पत्नी को आराम देता है। पुरुष हो, तो स्त्री सारे कामों की जिम्मेदारी संभालती है और पुरुष को आराम देती है अशुभ प्रभाव हो, तो जातक की कमाई और मेहनत दूसरों के काम आते हैं। उनको सुख व आराम मिलता है। जातक का चाचा बाजारू औरत का रसिया, वेश्यागामी होता है। यदि ऐसा नहीं हो, तो जातक की चाची उखड़े स्वभाव की व्यभिचारिणी होती है।

**चौथे घर का फल**

चौथे घर में शुक्र और शनि का मेल हो, तो अशुभ फल मिलते हैं। पैसों की चोरी होती हो, तो जातक पैसे रखने के लिए दुरंगा पर्स रखे। यदि आय कम होती दिखे, तो दसवें घर का उपाय करें। दसवें घर में सूर्य हो, तो रोज ताँबे का एक पैसा 43 दिनों तक पानी में प्रवाहित करें।

**नौवें घर का फल**

कुंडली के तीसरे घर में शुक्र और शनि का मेल हो, तो जातक का परिवार, पत्नी तथा लक्ष्मी का उत्तम सुख प्राप्त होता है।

**दसवें घर का फल**

कुंडली के दसवें घर में शुक्र और शनि का मेल हो, तो शनि की ताकत और हालत पर असर होता है। शुक्र स्त्री है तो शनि शराब। परिश्रम-प्रयत्नों के विषय में दोनों ग्रहों का उत्तम फल प्राप्त होता है। दुनियादारी में समाज के धक्के, प्रतिष्ठा, अप्रतिष्ठा वगैरह का बचाव होता है। जमीन-जायदाद खूब रहती है। जातक की कमाई पर जीवन साथी, संतानें तथा संगे सम्बन्धी आराम से निर्वाह करते हैं।

**बारहवें घर का फल**

कुंडली के बारहवें घर में शुक्र और शनि का योग हो, तो जातक का परिवार बड़ा होता है। शुक्र से सम्बन्धित व्यवसाय से अच्छा-खासा लाभ मिलता है।

**निवारण**

1. मकान की नींव में काले मसूर दबा दें।
2. शनि जन्मकुंडली के नौवें घर में बैठा हो, तो दूसरे घर में बैठे शुक्र के फल देता है।
3. दसवें घर मे शनि हो, तो जातक को अपने दामाद के लिए काफी खर्च करना पड़ता है। जातक के एक से अधिक मकान होते हैं। मृत्यु के समय उसे दुःख नहीं भोगना पड़ता।



[illegible]र में अशुभ दृष्टि में हों, तो नजदीकी रिश्तेदार जातक
[illegible]द्र लग्न और सूर्य घर में हो, तो जातक नपुंसक होता

## शुक्र व राहु का मेल

शुक्र और राहु इकट्ठे हों, तो शुक्र के दो हिस्से बुध और केतु में से एक हिस्सा बाकी रहता है। शुक्र और राहु के अशुभ फल जातक की गुदा के इर्द-गिर्द होते हैं। जिस घर में यह मेल होता है, उस घर से सम्बन्धित लक्ष्मी और पत्नी से सम्बद्ध फल होंगे।

**पहले घर का फल**

पहले घर में शुक्र और राहु की मेल हो, तो जातक को सदा अशुभ फल मिलते हैं, या उसकी पत्नी मानसिक रूप से रोगी रहती है।

**तीसरे घर का फल**

कुंडली के तीसरे घर में शुक्र और राहु का मेल हो, तो 34वें वर्ष की आयु तक बुध और केतु दोनों का अशुभ फल मिलता है।

**सातवें घर का फल**

कुंडली के सातवें घर में शुक्र और राहु का मेल हो, तो अशुभ फल मिलते हैं। दोनों ग्रह बरबाद हो जाते हैं। केतु भी माँ या ननिहाल को बरबाद करता है। चंद्र भी नष्ट हो जाता है। 24वाँ वर्ष बरबादी का होता है। ऐसा जातक खुदगर्ज एवं आशिक-मिजाज होता है।

**बारहवें घर का फल**

जन्मकुंडली के बारहवें घर में शुक्र और राहु का मेल हो, तो अशुभ फलों में जातक की पत्नी एवं लक्ष्मी राहु के प्रभाव से खराब हो जाती हैं। पत्नी के हाथों नीले रंग का फूल शाम को जमीन में दबवाना सहायक होगा।

नोट—शेष घरों में स्थानानुसार फल मिलता है।

## शुक्र व केतु का मेल

शुक्र और केतु का मेल अच्छा प्रभावशाली होता है। जातक को पत्नी एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। उसका वैवाहिक जीवन सुखी होता है। किसी कारणवश शुक्र और केतु दोनों दुर्बल बनते हों, तो वृहस्पति के उपायों द्वारा उन्हें बलवान बनाया जा सकता है।

**पहले घर का फल**

जन्मकुंडली के पहले घर में शुक्र और केतु का मेल अशुभ प्रभाव देता है, संतान प्राप्ति में अवरोध अवश्य उत्पन्न होता है, किन्तु जातक निःसंतान भी नहीं रहता।

**छठे घर का फल**

जन्मकुंडली के छठे घर में शुक्र और केतु दोनों ग्रहों के अशुभ फल मिलते हैं। सूर्य और बृहस्पति दुर्बल हों, तो जातक की पत्नी बंध्या रहती है। जातक बदनसीब रहता है।

**नौवें घर का फल**

यहाँ शुक्र अशुभ होता है। किन्तु केतु का साथ होता रहता है [illegible] का संयुक्त फल इस घर से सम्बन्धित चीजों के लिए अच्छा हो[illegible] आराम तर[illegible]

**बारहवें घर का फल**

कुंडली के बारहवें घर में शुक्र और केतु का मेल जातक एवं उसकी संतान को बहादुर बनाता है। जातक तंदुरुस्त, धनवान एवं सुखी होता है।

## शनि व राहु का मेल

शनि और राहु का मेल हो, तो शनि सर्प जैसा और राहु उसकी मणि जैसा होता है। यह मणि जिसके भी पास हो वह जहर उतार सकता है। शनि लोहा तो राहु चमकता पत्थर हैं। शनि और राहु का मेल इच्छाधारी नाग से कम नहीं होता। शनि और राहु शुभ हों, तो जातक के हाथ पर सर्प का चिह्न रहता है या शरीर पर काले रंग का पद्म-चिह्न होता है। तिल का बड़ा निशान हो, तो राहु के सामान्य शुभ मिलते हैं। अँगूठी से बड़ा निशान हो या लहसुन हो, तो ग्रहण समझें।

**दूसरे घर का फल**

दूसरे घर में शनि और राहु का मेल शुभ हो, तो जातक सबका तारनहार, मददगार होता है। यहाँ दोनों ग्रहों के अशुभ फल नहीं मिलते।

**नौवें घर का फल**

नौवें घर में शनि और राहु का मेल हो, तो जातक का परिवार बड़ा और धन-संपदा से समृद्ध रहता है। अशुभ स्थिति में पैतृक घर स्त्री से भ्रष्ट हो जाए, तो बृहस्पति बरबाद हो जाता है।

**निवारण**

शराब का प्रयोग न करें।

**बारहवें घर का फल**

बारहवें घर में शनि और राहु का मेल हो, तो जातक कुटिल राजनीतिज्ञ होता है। वह अपना हर रहस्य गुप्त रखकर सब काम चालाकी से करने वाला होता है। शनि का समय रात और राहु का समय ढलती साँझ होती है।

**निवारण**

बृहस्पतिवार को शाम को या शनिवार को दिन में बादाम एवं नारियल की गिरी आग में सेंकने से या तलने से शनि और राहु ग्रहों का अशुभ फल समाप्त हो जाता है। शनि और राहु तीसरे घर में हों और चंद्र ग्यारहवें घर में हो, तो जातक की माता मृत्युपर्यन्त स्वस्थ रहती है। बहते पानी में चावल बहाएँ।

## शनि व केतु का मेल

शनि और केतु के मेल के फल अच्छे मिलते हैं। मुख्य भाग शनि का होता है। 18 वर्ष की आयु के बाद जातक के नसीब का फैसला होता है। दूसरे घर में किसी अन्य



ग्रह से [illegible] होता है। जातक के पुत्र उत्पन्न करने की शक्ति अधिक [illegible] हैं। ऐसा [illegible] कबरा पशु लाएँ, तो शनि और केतु अशुभ बनते [illegible] शु घर में पाले।

**छठे घर [illegible]**

जन्म[illegible] घर में शनि और केतु का मेल हो और जातक की गरदन से नीचे की तरफ कोई रेखा पीठ को दो हिस्से में बाँटती हो, तो जातक की उम्र सत्तर वर्ष की होती है।

**आठवें घर का फल**

जन्मकुंडली के आठवें घर में शनि और केतु का मेल हो, तो वह शुभ फलदायिनी होती है। दोनों में से एक का यहाँ होना अशुभ रहता है। शनि और केतु के साथ मंगल भी हो, तो जातक पर बुरा असर पड़ता है। जातक मौका परस्त एवं मिथ्याभिमानी होता है।

**नौवें घर का फल**

कुंडली के नौवें घर में शनि और केतु का योग हो, तो जातक का परिवार विशाल होता है, साथ ही अपार धन-संपदा होती है।

अन्य घरों में दोनों का स्थानगत फल मिलता है।

## राहु व केतु का मेल

केतु सदा राहु के संकेत पर चलता है। केतु की घड़ी को चलवाने का काम करने वाली चाबी राहु के हाथ में है। नौवें व बारहवें घर में राहु और सूर्य इकट्ठे हों, तो सूर्य को ग्रहण लगता है। इसी तरह छठे या नौवें में चंद्र के साथ हो, तो चंद्र ग्रहण लगता है। केतु एक से छह घरों में हो, तो बेहतर चाल चलता है। राहु और केतु सभी ग्रहों को घुमाते हैं। इन दोनों को बृहस्पति चलाता है। इन सबको बुध घुमाता है। सारांश में, जैसी बुध की स्थिति होगी वैसा ही असर बृहस्पति-राहु-केतु का होगा।

शुक्र और बुध के अगले घरों में शुक्र बैठा हो, तो राहु का प्रभाव अशुभ होता है। पहले बुध बाद में शुक्र हो, तो केतु अशुभ नहीं होता।

राहु और केतु चौथे घर में हों, तो बुध और शनि का उच्च एवं शुभ प्रभाव होता है।

सूर्य और शनि का मेल हो, तो राहु का उच्च प्रभाव पड़ता है। इसी तरह शुक्र और शनि का मेल हो, तो केतु उच्च बनता है। बुध और सूर्य का मेल हो, तो स्वास्थ्य अच्छा रहता है। चंद्र और शनि का मेल केतु को नीच बनाता है।

बारहवाँ घर आकाश और छठा घर पाताल माना जाता है। बारहवें राहु को बृहस्पति के साथ एवं छठे केतु को बुध के साथ गिना गया है। 1 से 6 घर में केतु हो और राहु उसके बाद के घरों में हो, तो केतु शून्य और राहु नीच बनता है। बुध के अनुसार राहु और केतु के फल प्राप्त होते हैं। दोनों के स्वभाव निम्न तरीकों से जानने चाहिए–

1. चाँदी का टुकड़ा खुद की जेब में रखने से राहु का स्वभाव मालूम होता है।

2. गेहूँ या ताँबे में से कोई भी चीज ब्रह्म

इन उपायों में दोनों अपने-अपने स्वभाव प्र चिंतित रहता है केतु दोनों आठवें आते हैं, तो शनि को भी साथ में गि वर) है। जन्मकुंडली में शनि के स्थान से फल की प्राप्ति क आ आराम ह

**निवारण**

1. लग्न (पहले घर) में राहु हो, तो सूर्य का उपाय करें।
2. सातवें घर में राहु हो, तो शनि का उपाय करें।
3. दसवें घर में राहु के होने पर मंगल का उपाय करें।
4. चंद्रमा का उपाय मददगार साबित होगा।

❑❑❑



# ष्ट प्रभावों का निवारण

## ग्रह से सम्बन्धित सावधानियाँ

घर में ऐसा मन्दिर नहीं होना चाहिए जिसमें मूर्तियाँ रखी हों। जिसकी जन्मकुंडली में बृहस्पति सातवें घर में हो, उसके लिये तो यह बहुत ही अशुभ है। कागज पर छपे हुए चित्र रख सकते हैं।

यदि घर के किसी कोने में कोई ऐसी अँधेरी कोठरी हो, जिसमें वायु व प्रकाश के आवागमन का रास्ता ही न हो, तो उस कोठरी को छेड़ना नहीं चाहिए। ज्यों ही त्यों रहने दें। यदि उसमें खिड़कियाँ, रोशनदान आदि बना दिये जायेंगे, तो उनमें से वायु व प्रकाश के साथ घर में दुर्भाग्य प्रवेश कर जायगा और अशुभ घटनाएँ घटित होंगी।

कुछ पुराने घरों में गहने-नकदी आदि छिपाकर रखने के लिए अँधेरे और गुप्त स्थान बने हुए होते हैं। ऐसे स्थानों को खाली नहीं रखने चाहिएँ। वहाँ रखने योग्य कोई चीज पास में न हो, तो वहाँ थोड़े-बहुत सूखे मेवे रख देने चाहिएँ।

जिन घरों में कच्ची जगह बिल्कुल नहीं होती उनमें लक्ष्मी का निवास नहीं होता। विवाहित जीवन की खुशियाँ वहाँ से दूर ही रहती हैं। ऐसे घरों में शुक्र से सम्बन्धित वस्तुएँ रखने से दोष का शमन हो जाता है।

दक्षिणाभिमुख घर अशुभ माने जाते हैं। ऐसे घरों में पुरुषों को शान्ति बिल्कुल नहीं मिलती। सम्भव हो, तो ऐसे घरों का मुख्य द्वार किसी अन्य दिशा में बनाया जाय, तो सड़क से प्लाट के भीतर गैलरी बनाकर घर का मुख्य द्वार गैलरी में खोलना अच्छा रहता है।

## बालकों से सम्बन्धित निवारण

गर्भवती स्त्री की कलाई में, गर्भधारण करते ही, लाल रंग का धागा बाँध देना चाहिए। प्रसूति होने पर वह धागा माता की कलाई से खोलकर बच्चे की कलाई पर बाँध दें और माता की कलाई पर दूसरा लाल धागा बाँध दें। दोनों की कलाइयों पर ये धागे अठारह महीने तक बँधे रहें। जिन दम्पत्ति के बच्चे जीवित नहीं रहते हों उन्हें यह उपचार अवश्य करना चाहिए।

अच्छे बच्चे और समृद्धि प्राप्त करने के लिए गणेश जी की नित्य पूजा करें।

अपने भोजन का कुछ अंश कुत्ते, कौए और गायों को खिलाएँ।

एक दूध का बर्तन दूध से भरें और एक चीनी का बर्तन चीनी से भरें। गर्भवती स्त्री प्रसव काल से ठीक पहले इन दोनों बर्तनों को अपने हाथ से स्पर्श करे, तो बिना कष्ट के आसानी से प्रसव होता है। प्रसव के तुरंत बाद दूध और चीनी से भरे हुए बर्तन मन्दिर में दान कर दें। बर्तन भी वापस न लायें।

तन्दूर की बनी हुई मीठी रोटी, साधुओं और कुत्तों को खिलायें।

यदि किसी के बच्चे जीवित न रहते हों, [illegible] केतु समय नमकीन वस्तुएँ या नमक भी दान कर। [illegible] चिंतित रहता है [illegible] वर)

## दान और परोपकार

जिनकी कुण्डली में चंद्रमा छठे घर में हो [illegible] चाहिएँ। उन्हें जन-हित के लिए अपने खर्चे पर [illegible] बनवानी चाहिएँ। ऐसा करने से परिवार रूपी वृक्ष सूख जायेगा। [illegible] जायगा।

जन्मकुंडली में जो ग्रह उच्च के या बली हों, उनसे सम्बन्धित वस्तुए दान में देना बुद्धिमानी नहीं।

जिनकी जन्मकुंडली में शनि आठवें घर में हो, उन्हें धर्मशालाएँ नहीं बनवानी चाहिएँ। ऐसा कोई स्थान नहीं बनवाना चाहिए जहाँ यात्री रात में रुक सकें। ऐसा करने पर जातक अपना घर खो देगा और आर्थिक संकट में पड़ जायेगा।

जिनके पहले घर में शनि और पाँचवें घर में बृहस्पति हो, उन्हें ताँबे के पैसे दान नहीं करने चाहिएँ। अन्यथा बच्चों की मृत्यु का ताँता लग जायेगा।

यदि बृहस्पति 10वें घर में और चंद्रमा चौथे घर में हो, तो जातक को मन्दिर या गुरुद्वारा नहीं बनवाना चाहिए, अन्यथा झूठे अभियोग लगेंगे और मुकदमेबाजी में फँस जायेगा।

जिनके नौवें घर में शुक्र हो उन्हें छात्रों के लिए वजीफा और विधवाओं के लिए आर्थिक सहायता के कार्य नहीं करने चाहिएँ।

जिनके बारहवें घर में चन्द्रमा हो, उन्हें निःशुल्क शिक्षा देने वाले विद्यालय स्थापित नहीं करने चाहिएँ। महन्तों या धार्मिक पुरुषों को भोजन नहीं देना चाहिए। इसके अशुभ फल होते हैं।

जिनके सातवें घर में बृहस्पति हो, उन्हें मन्दिर के पुजारी को नये वस्त्र भेंट नहीं करने चाहिएँ।

## बच्चे को गोद लेना

निःसन्तान हों, तो भी अपने बड़े भाई का पुत्र गोद न लें। बड़े भाई की पुत्री का विवाह अपने खर्चे पर न करें। बड़ा भाई ऐसा कर सकता है। वह छोटे भाई के बच्चे को गोद ले सकता है। छोटे भाई की पुत्री का विवाह अपने खर्चे पर कर सकता है। इससे वह यश और पुण्य का भागी बनेगा।

यदि शनि अशुभ फल दे रहा हो, तो शनि की वस्तुएँ भतीजे या भतीजी के हाथों से दान दिलवाएँ।

## विशेष ज्ञातव्य

- अपने भोजन का कुछ अंश कौओं, कुत्तों और गायों को अवश्य खिलाएँ।
- रसोई घर के अन्दर बैठकर भोजन करने वाले पर राहु का दुष्प्रभाव नहीं होता।
- महीने में एक बार जानवरों को मधुकरी (मीठी रोटी) खिलायें। इससे जातक झगड़े-झँझटों, फिजूल के खर्चों और साध्य रोगों से बचा रहेगा।
- रात को सोते समय पानी से भरा हुआ बर्तन पलंग के नीचे रखें। सुबह उठकर उसे तुलसी के पौधे में या किसी पेड़ की जड़ में उड़ेल दें।



[illegible] उसके द्वारा युवावस्था में ही अपनी पत्नी [illegible] ती है।

[illegible] कन्या के मातृ-परिवार के लिए अशुभ होता है।

वर [illegible] या 9 वें 12 घरों में बुध-राहु-मेल हो, तो वह कन्या के मायके के लिए शुभ नहीं होता।

वर के लग्न में शुक्र-केतु का मेल हो, तो वह नपुंसक हो सकता है।

जिस वर के चौथे घर में सूर्य, सातवें घर में शनि, पाँचवें घर में शुक्र या दूसरे घर में चंद्रमा हो, उसके भी नपुंसक होने की सम्भावना होती है।

जिस वर के सूर्य छठे घर में, मंगल दसवें घर में या चंद्रमा पहले घर में और ग्यारहवें घर में बृहस्पति हो, वह काम-क्रीड़ा सम्बन्धी बुरी आदतों के कारण अपनी सारी दौलत नष्ट कर देता है।

जिसके दसवें घर में बृहस्पति और शुक्र हों या पहले घर में चन्द्रमा और ग्यारहवें घर में बृहस्पति हो, वह भी काम-क्रीड़ा सम्बन्धित बुरी आदतों के कारण अपनी सारी धन-दौलत नष्ट कर देता है।

## करामाती टोटके

छठे घर में शनि का फल अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है और मिश्रित भी हो सकता है। यदि बुरा अनुभव किया जाये तो—नदी के बहते पानी में नारियल या अखरोट प्रवाहित करना लाभदायक होता है।

यदि पिता (संयुक्त परिवार में) को सेहत या नौकरी के सम्बन्ध में बृहस्पति और शनि अशुभ फल देने लगें, तो शुद्ध सोना और केसर घर में रखना लाभदायक होता है।

जब सेहत और दौलत के सम्बन्ध में बृहस्पति और चंद्र खोटे फल देने लगें, तो घर मे चाँदी की थाली रखें या कोई चाँदी का खाली बर्तन घर में एक कोने में दबा दें।

सातवें घर में बृहस्पति और चंद्र का मेल अच्छा नहीं होता। इस दशा में व्याप [illegible] और दलाली से लाभ हो सकता है। अशुभ फल होने लगें, तो केतु की चीजें जमीन [illegible] दबायें या गर्दन में बाँधे। केतु का रत्न वैदूर्य है।

ग्यारहवे घर में भी बृहस्पति और चंद्र युति (मेल) शुभ नहीं होती। कुछ अ [illegible] सहायता पुत्री को, बुआ को, मामा को या जमादारनी को देना लाभदायक हो [illegible]

तीसरे घर में बृहस्पति और शुक्र अशुभ हैं। ऐसा होने पर मिट्टी के खिलौने ब [illegible] तथा बेचना और जहाँ सड़क बन रही हो, वहाँ मिट्टी बिछाना लाभदायक व्यवसाय होते हैं।

छठे घर में भी बृहस्पति और शुक्र युति बुरी होती है। ऐसी स्थिति में दुर्भाग्य का सामना करने के लिए स्त्री के बालों में कोई सोने की चीज पहनानी चाहिए।

यदि शुक्र से सम्बन्धित वस्तुओं का व्यवसाय किया जाय, तो बृहस्पति और शुक्र दोनों ही सहायक होंगे। परिस्थिति में शीघ्र सुधार होता दिखाई नहीं देगा, किन्तु संकट के समय और जब सहायता की अत्यन्त आवश्यकता हो, तब सहायता मिल जाती है।

आठवें घर में शुक्र और बृहस्पति [illegible] को गारे-मिट्टी का व्यवसाय चुनना चाहि[illegible] चिंतित रहता है [illegible] केतु आदि, मिट्टी के खिलौने बनाना, खरीदना [illegible] आराम [illegible] वर)

दसवें घर में बृहस्पति और शुक्र ना[illegible] भरोसा करो और धार्मिक कार्य करो।

बृहस्पति और शनि ग्यारहवें घर में हों, ता[illegible]ेगा। [illegible] जारअनैतिक कार्य करता है जिससे उसकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है और दान [illegible] के रोग लग जाते हैं। इसके निवारणार्थ चिकित्सक की देख-रेख में स्वर्ण-भस्म या [illegible] की भस्म का सेवन करें।

यदि पाँचवें घर में शनि और बृहस्पति का मेल हो, तो जातक को शराब से पूरी तरह परहेज करना चाहिए।

शनि और बृहस्पति का मेल जिस घर में हो, उस घर पर दृष्टि रखने वाले घर में जो ग्रह हों, उन्हें जगाने का प्रयास करें।

जब बृहस्पति और शनि साथ-साथ हों, तो बृहस्पति के अच्छे फल की आशा नहीं करनी चाहिए। यदि बारहवें घर में शनि और बृहस्पति के मेल (युति) के कारण अशुभ फल हो रहे हों, तो शनि को मनाना चाहिए।

## सावधानियाँ व निवारण

छठे और दसवें घर के विष से बचने के लिए कुंडली के पाँचवें घर को देखें। वहाँ स्थिति ग्रह के शत्रु ग्रह की वस्तुएँ जमीन के नीचे दबा दें। यदि जातक पैतृक घर में रह रहा हो, तो इन वस्तुओं को घर के अन्दर तब तक रखें, जब तक आठवाँ घर अशुभ फल देता रहे।

बृहस्पति दसवें घर में, शुक्र ग्यारहवें घर में, केतु आठवें घर में और शनि पाँचवें घर में हो, तो बेटे के वजन के बराबर वजन के आटे की रोटियाँ 25 से 48 दिन तक कुत्तों को खिलायें।

दूसरे और बारहवे घर में लाभदायक ग्रह हों, तो छठे घर के ग्रह को जगायें। इसके [illegible]ए अपने मामा या अपनी बेटियों का सहायता और सेवा करें।

[illegible]को [illegible] वर्ष फल जो ग्रह षष्ठ मे गोचर करे, वह जातक के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता [illegible]वह [illegible] उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएँ दान में देनी चाहिए।

[illegible] शनि और केतु सातवें घर के फल देते हैं। यदि वे अशुभ हो, तो उनका उपचार से दान दि[illegible] उनसे सम्बन्धित वस्तुएँ दान में दें और उनसे सम्बन्धित रिश्तेदारों की सेवा करें।

**विशे** जन्म-कुंडली में जो ग्रह ग्यारहवें में हो, वही गोचर से ग्यारहवें घर में या आठवें घर में आये, तो उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएँ न खरीदें, घर में लाकर के संभाल कर न रखें।

यदि तीसरा व पाँचवाँ घर खाली हों, तो दूसरे के माध्यम से नौवें को जगाया जा सकता है।

यदि दसवाँ घर खाली हो, तो चौथे [illegible] के ग्रह अच्छे फल नहीं देते। तब माता-पिता की सेवा करने से सहायता मिलेगी। दस अंधों को भोजन खिलायें। भोजन के लिए अन्धों को पैसे देने से लाभ नहीं होगा।